संस्कृत-अनुवाद-शिक्षा

A GUIDE
TO
SANSKRIT TRANSLATION

For use in Schools and Colleges.

लेखक

पं० रामचन्द्र कुशल, शास्त्री, बी. ए.,

अध्यापक, ओरियण्टल कालेज, लाहौर ।

प्रकाशक—

दास ब्रादर्स बुकसैलर्स,

अनारकली, लाहौर ।

] १९३३ [मूल्य १)

प्रकाशकः—
प्रोप्राइटर बाबू रामदास
दास ब्रादर्स, अनारकली लाहौर ।

मुद्रक—
श्रीमती सुशीला देवी
विद्या प्रकाश प्रेस, चङ्गड़ मुहल्ला, अनारकली, लाहौर

वक्तव्य

अनुवाद भाषा के ज्ञान की कसौटी है। जो एक भाषा से दूसरी भाषा में ठीक २ अनुवाद कर सकता है वह निस्सन्देह उस भाषा का ज्ञाता कहा जासकता है। क्योंकि भाषा का पूरा २ ज्ञान हुए बिना उसमें अन्य भाषा का यथार्थ और समुचित अनुवाद कर सकना संभव नहीं। इसी लिये वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अनुवाद को भी आवश्यक विषयों में स्थान दिया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने की प्रणाली सिखाना है। यद्यपि इस विषय की कई-एक छोटी-मोटी पुस्तकें उपलब्ध होती हैं तथापि वे सब प्रायः एक-देशी और उपयुक्त-पद्धति-शून्य हैं। एक में भी इस विषय का सर्वाङ्गपूर्ण समुचित विवेचन नहीं किया गया। किसी में व्याकरण की भरमार है; किसी में कोष की भान्ति शब्दों का संग्रह और उनके उदाहरणमात्र हैं; एवं किसी में संस्कृत तथा हिन्दी के वाक्यों तथा कुछ अभ्यासों का संग्रह है। किसी उपयुक्त क्रम को स्वीकार कर नियम-उपनियमों द्वारा अनुवाद की प्रक्रिया को पूर्णतया प्रतिपादन करने वाली अभी तक कोई पुस्तक नहीं लिखी गई। यह एक अभाव था, जिसकी पूर्ति का प्रयत्न प्रस्तुत पुस्तक द्वारा किया गया है।

इसमें हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण, सम्बन्धबोधक, योजक, कृदन्त आदि सब प्रकार के शब्दों तथा हिन्दी के विशिष्ट कालों और कारकों के प्रयोगों के

अनुवाद के संपूर्ण नियम तथा प्रकार यथासंभव अनुसन्धान पूर्वक लिखे गये हैं । संदिग्ध पदों, वाक्यों और कालों के अनुवाद का निर्णय, हिन्दी के कर्म-भाववाच्य तथा कर्मकर्तृ-वाच्य प्रयोगों के अनुवाद का ढंग तथा अन्य उपयोगी बातें यथाशक्य सरल और स्पष्ट करके लिखी गई हैं । संस्कृत-साहित्य से खोज २ कर संदिग्ध स्थलों में तथा अन्यत्र भी प्रमाणस्वरूप सुन्दर अर्थ पूर्ण वाक्य इसमें रक्खे गये हैं, जिनके द्वारा हिन्दी के विशिष्ट पदों या वाक्यों के अनुवाद का समुचित प्रकार समझाया गया है ।

मूल मोटे टाइप में रक्खा गया है और टिप्पणियां बारीक टाइप में । मूल में प्रथम तथा मध्यम कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिये उपयोगी भाग रक्खा गया है और टिप्पणियों में उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिये उपयोगी । विवादास्पद विषयों में विशेष विवेचन के लिये भी टिप्पणियां दी गई हैं ।

हिन्दी के वाक्यों के पदविन्यास-क्रम से बहुधा संस्कृत के वाक्यों का पदविन्यास-क्रम भिन्न भी होता है । इसलिये वैसे वाक्यों का पहले विद्यार्थियों की सुविधा के लिये हिन्दी के क्रम के अनुसार अनुवाद लिखकर अनन्तर ब्रैकटों में संस्कृत के प्रयोग के अनुसार वाक्य लिख दिये गये हैं । जैसे—

पृष्ठ ६० "ये वस्तुएं किसकी हैं = एतानि वस्तूनि कस्य सन्ति ? (कस्यैतानि वस्तूनि ?)

पृ० ६१ ऊंची अभिलाषाओं से क्या, यदि उद्योग न हो = उच्चैः अभिलाषैः किम्, यदि उद्योगो न भवेत् ।

(किमुच्चैरभिलाषैर्यदि नोद्योगः । नोद्योगश्चेत्किमुच्चैरभिलाषैः)

पृ० ९८ तुम्हारी लड़की कौनसी है ? =

तव कन्या का अस्ति ? (का तव कन्या ?)

पृ० ३०१ अब भीम से दुःशासन को बचा ।

इदानीं भीमात् दुःशासनं रक्ष । "रक्षेदानीं भीमात् दुःशासनम्"

इसमें क्रोध की बात कौनसी है ? = अत्र क्रोधस्य कारणं किमस्ति ? (किमत्र क्रोधस्य कारणम् ?)

ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट है कि यदि संस्कृत में हिन्दी के अनुसार पदविन्यास-क्रम रक्खा जाय तो रचना शिथिल रहती है, इसलिये उसे संस्कृत के प्रयोगानुसार रखना चाहिये ।

इसी प्रकार जहां एक से अधिक प्रकार से अनुवाद हो सकता है वहां दूसरे प्रकार ब्रेकटों में रक्खे गये हैं और किसी शब्द के लिये आनेवाले एक से अधिक उपयुक्त संस्कृत शब्द भी ब्रेकटों में रक्खे गये हैं ।

इस पुस्तक में जितना प्रतिपादन हुआ है उसमें संस्कृत अनुवाद का विषय संपूर्ण नहीं आ सका । इसलिये इस पुस्तक को 'प्रथम भाग' ही समझना चाहिये । अवशिष्ट विषय अनुवाद में संस्कृत के समासों और तद्धितों का उपयोग, * मुहावरों तथा

---

* "जैसे-जब अर्जुन ने शस्त्र त्याग दिये तब कृष्ण ने उसे उपदेश दिया" इसका अनुवाद "यदा अर्जुनेन शस्त्राणि त्यक्तानि तदा कृष्णस्तमुपादिशत्" इस प्रकार करने की अपेक्षा यदि "अर्जुने त्यक्तशस्त्रे कृष्णस्तमुपादिशत्" या "त्यक्तशस्त्रम् अर्जुनं कृष्ण उपादिशत्" इस प्रकार बहुव्रीहिस० से

लोकोक्तियों के अनुवाद की रीति और धातुकोष (जिसमें हिन्दी के धातुओं के लिये आनेवाले संस्कृत के धातु रहेंगे) द्वितीय भाग में लिखे जाएंगे।

इस पुस्तक का लेखन और मुद्रण प्रायः साथ-साथ हुए हैं। इसलिये शीघ्रताजनित अनवधानता के कारण और मेरे रुग्ण रहने से प्रूफशोधनव्यवस्था के ठीक न रहने से यत्र तत्र अशुद्धियां रह गई हैं। इसीलिये शुद्धिपत्र लगा दिया गया है। पृ० १६३, पं० १७ से पृ० १६५, पं० १३ तक का भाग और पृ० ३१८, पं० १३ से पृ० ३२० तक का भाग टिप्पणियां हैं, जो भूल से मूल के (मोटे) टाइप में छप गई हैं। क्रियाप्रकरण में पृ० १६२ से २०९ तक तथा कारकप्रकरण में अभ्यास (Exercises) नहीं दिये जा सके जो अगले संस्करण में लगा दिये जाएंगे।

अभी इस पुस्तक में कई त्रुटियां हैं। इसे अभी एक प्रकार का 'कच्चा चिट्ठा' ही समझना चाहिये। इस अवस्था में इसके प्रकाशन का उद्देश्य यही है कि विद्वान् इसका पर्यालोचन करके इसे त्रुटिशून्य एवं दोषनिर्मुक्त बनाने के लिये अपने सत्परामर्शों से मुझे अनुगृहीत करें तथा अग्रिम संस्करणों में इसके परिमार्जित होने तक विद्यार्थी भी इसका यथायोग्य उपयोग करें।

किया जाय तो वह थोड़े शब्दों में अधिक सुन्दर होगा। इसी प्रकार 'छः महीने का बच्चा। मंजीठ से रँगा हुआ कपड़ा' का अनुवाद 'षण्णां मासानां शिशुः। मञ्जिष्ठया रक्तं वासः, करने की अपेक्षा 'षाण्मासिकः शिशुः। माञ्जिष्ठं वासः' इस प्रकार तद्धित से किया जाय तो संक्षिप्त और अधिक सुन्दर होगा।—इत्यादि।

यह पुस्तक किसी विशेष श्रेणी के विद्यार्थियों के लिये नहीं बनाई गई अपितु अनुवाद का यथार्थ ज्ञान चाहनेवाले स्कूलों और कालेजों के, संस्कृत पाठशालाओं तथा विद्यालयों के संपूर्ण विद्यार्थी इससे लाभ उठा सकते हैं। अध्यापकमहोदयों से निवेदन है कि वे अपने विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकता के अनुसार उचित क्रम और पद्धति निर्धारित कर इसके द्वारा अभ्यास कराएं और मुझे भी उचित परामर्श लिख भेजने की कृपा करें।

लाहौर, विनीत—

२६ जून, १९३३. रामचन्द्र कुशल

संस्कृत-अनुवाद-शिक्षा

विषयसूची

विषय		पृष्ठ
उपक्रम		१
कारक और विभक्तियां	...	६
अनुवाद के प्रकार	...	१४
हिन्दी के शब्द और उनके अनुवाद के सामान्य नियम		१६
१. संज्ञाधिकरण		
पहला अध्याय		
व्यक्तिवाचक संज्ञाएं	...	१६
देशी तथा विदेशी व्यक्तिवाचक संज्ञाएं		२७
दूसरा अध्याय		
जातिवाचक संज्ञाएं	...	३६
तीसरा अध्याय		
भाववाचक संज्ञाएं	...	४०
अनुकरणवाचक शब्द	...	४२
पशुपक्षियों की बोलियों के वाचक शब्द		४३
बादल आदि की ध्वनियों के वाचक शब्द		४४
चौथा अध्याय		
१. संज्ञाओं के लिङ्ग	...	५१
कुछ विशेष ध्यान देने योग्य शब्द	...	५७
२. संज्ञाओं के वचन	...	

२. दूसरा अधिकरण

सर्वनाम

पहला अध्याय

उत्तमपुरुषवाचक सर्वनाम ... ७१

दूसरा अध्याय

मध्यमपुरुषवाचक सर्वनाम ... ७५

तीसरा अध्याय

अन्यपुरुषवाचक तथा निश्चयादिवाचक सर्वनाम ८४

(१) निश्चयवाचक सर्वनाम ... ८४

(२) अनिश्चयवाचक सर्वनाम ... ९०

(३) सम्बन्धवाचक सर्वनाम ... ९६

(४) प्रश्नवाचक सर्वनाम ... ९८

३. तीसरा अधिकरण

विशेषण ... १०४

पहला अध्याय

(१) गुणवाचक विशेषण ... १०५

सादृश्यवाचक विशेषण ... १०६

(२) सार्वनामिक विशेषण ... १११

दूसरा अध्याय

(३) संख्यावाचक विशेषण

(क) निश्चितसंख्यावाचक

१. गणनावाचक ... ११८

२. क्रमवाचक ... १२९

३. आवृत्तिवाचक ... १३२
४. समुदायवाचक ... १३३
५. प्रत्येक (विभाग) बोधक ... १३४
(ख) अनिश्चितसंख्यावाचक विशेषण ... १३६
६. परिमाणवाचक विशेषण ... १४२
(क) अनिश्चितपरिमाणवाचक ... १४२
(ख) निश्चितपरिमाणवाचक ... १४४

तीसरा अध्याय

विशेषणों की तुलना ... १५१
उत्तरावस्था (Comparative Degree) १५१
उत्तमावस्था (Superlative Degree) १५४

४. चौथा अधिकरण

क्रिया

पहला अध्याय

भूतकाल ... १६३

हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले भूतकाल के भेदों और उनके कई प्रकार के प्रयोगों के अनुवाद की रीति—

१. सामान्यभूत ... १६५
२. आसन्नभूत (या पूर्णवर्तमान) ... १७१
३. पूर्णभूत ... १७६
४. अपूर्णभूत ... १८१
५. संदिग्धभूत ... १८३
६. हेतुहेतुमद्भूत ... १८५
७. संभाव्यभूत ... १८९

दूसरा अध्याय

वर्तमानकाल

१. सामान्य वर्तमान ... १९३
२. संदिग्ध वर्तमान ... १९८
३. संभाव्य वर्तमान ... १९९

भविष्यत्काल

१. सामान्य भविष्यत् ... २००
२. संभाव्य भविष्यत् ... २०४

प्रवर्तनार्थक

१. प्रत्यक्षविधि ... २०९
२. परोक्षविधि ... २१३

तीसरा अध्याय

१. क्रियार्थक संज्ञा ... २१६
२. संयुक्त क्रिया ... २२०

चौथा अध्याय

(१) प्रेरणार्थक क्रिया ... २३५
(२) कर्मवाच्य और भाववाच्य ... २३७
(३) कर्मकर्तृवाच्य ... २४०

५. पांचवां अधिकरण

अव्यय

पहला अध्याय

(१) क्रियाविशेषण ... २४२
(१) स्थानवाचक ... २४२

(२) कालवाचक ... २४७

(३) परिमाणवाचक ... २४९

(४) रीतिवाचक ... २५१

(५) कुछ अन्य क्रियाविशेषण ... २५२

दूसरा अध्याय

(२) संबन्धबोधक ... २५५

(३) योजक ... २५७

(४) विस्मयादि-बोधक ... २६६

(क) हर्षबोधक ... २६६

(ख) शोकबोधक ... २६६

(ग) आश्चर्यबोधक ... २६८

(घ) अनुमोदन और स्वीकार बोधक २६८

(ङ) तिरस्कारबोधक ... २६६

(च) संबोधनबोधक ... २६९

६. छठा अधिकरण

पहला अध्याय

कृदन्त

१. कर्तृवाचक कृदन्त ... ३७१

२. भूतकालिक कृदन्त ... २७२

३. पूर्णक्रियाद्योतक कृदन्त ... २७५

४. वर्तमानकालिक कृदन्त ... २७९

५. अपूर्णक्रियाद्योतक कृदन्त ... २८०

६. तात्कालिक कृदन्त ... २८३

७. भविष्यत्कालिक कृदन्त ... २८५

८. पूर्वकालिक कृदन्त ... २८७

दूसरा अध्याय

कारक ... २९०

कर्मकारक ... ,,

करणकारक ... २९२

संप्रदानकारक ... २९५

अपादानकारक ... ३००

सम्बन्धकारक ... ३०५

अधिकरणकारक ... ३१३

संस्कृत-अनुवाद-शिक्षा ।

उपक्रम ।

——:o:——

एक भाषा में लिखी या कही हुई बात को दूसरी भाषा में प्रकट करना अनुवाद कहाता है।

[अनु=पीछे, वाद=कहना=पहले एक भाषा में लिखी या कही हुई बात को दूसरी भाषा में कहना या प्रकट करना ।]

इस पुस्तक में हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने के नियम बताए जाएंगे।

[क्योंकि इस पुस्तक का उद्देश्य अनुवाद सिखाना है, इसलिये इसमें व्याकरण के नियमों का, जिन्हें विद्यार्थी संस्कृत-व्याकरण में पढ़ते ही हैं, दोहराना व्यर्थ विस्तारमात्र होने के कारण उचित नहीं समझा गया। हां, विशेष नियमों की ओर स्थान स्थान पर संकेत कर दिया गया है, जिन्हें विद्यार्थी व्याकरण में भली भांति देख सकते हैं।]

अनुवाद का विषय-क्रम इस प्रकार रक्खा गया है:— संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण (अव्यय), संबन्ध-बोधक (अव्यय), योजक (अव्यय), द्योतक (अव्यय), कारकार्थ, कृदन्त, तद्धित, समास।

[ऊपर लिखा विषय-क्रम प्रायः हिन्दी-व्याकरण के विषय-क्रम के अनुसार रक्खा गया है। क्योंकि एक तो वह सरल है और विद्यार्थी अंग्रेज़ी तथा हिन्दी व्याकरणों द्वारा उससे परिचित भी होते हैं। दूसरे उपर्युक्त क्रम हिन्दी तथा

संस्कृत की वाक्यरचना की दृष्टि से बहुधा स्वाभाविक भी है। क्योंकि हिन्दी तथा संस्कृत के वाक्यों में पहले संज्ञा, सर्वनाम तथा उनके विशेषण आते हैं और पीछे क्रिया। जैसे–"मोहन अपने घर जाता है। वह बालक सुशील है।" "मोहनः स्वं गृहं गच्छति। सः बालकः सुशीलः अस्ति।"—इत्यादि*। यद्यपि क्रियाविशेषण आदि भी क्रिया से पहले ही प्रयुक्त होते हैं तथापि क्रियाविशेषणों का प्रतिपादन क्रिया के अनन्तर ही उचित है। क्रियाविशेषण अव्यय ही होते हैं, इसलिये उनके सजातीय संबन्धबोधक आदि दूसरे अव्ययों का भी उन्हीं के साथ प्रतिपादन करना युक्त है। अतः उपर्युक्त विषय-क्रम युक्तिसंगत भी प्रतीत होता है। और भी कई क्रम हो सकते हैं, किन्तु जटिल होने से दूसरा कोई क्रम इस पुस्तक में नहीं रक्खा गया।]

---

* यद्यपि संस्कृत में, वाक्य में पदों के रखने का क्रम नियत नहीं है और इसी कारण "मोहनः स्वं गृहं गच्छति" को हम इच्छानुसार "गच्छति मोहनः स्वं गृहम्" "स्वं गृहं गच्छति मोहनः" "गृहं गच्छति स्वं मोहनः" "मोहनः स्वं गच्छति गृहम्" इनमें से किसी भी रूप में कह सकते हैं, तथापि अर्थसबन्ध के अनुसार न्यायसंगत क्रम "मोहनः स्वं गृहं गच्छति" ही है। और इसमें प्रमाण है संस्कृत श्लोकों का अर्थ करते समय उनका 'अन्वय' लगाना। श्लोकों में प्रायः अर्थसंबन्ध का विचार न करके छन्द की पूर्ति के लिये पद आगे पीछे प्रयुक्त किये जाते हैं, परन्तु अर्थ करते समय उनका अन्वय लगाया जाता है, जिसमें पद अर्थसंबन्ध के अनुसार ऊपर बताये क्रम से ही रक्खे जाते हैं। जैसे— "लभेत वा प्रार्थयिता नवा श्रियं श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्" इसका अर्थसबन्ध के अनुसार अन्वय यों लगाया जाता है— प्रार्थयिता श्रियं लभेत नवा (लभेत, परं) श्रिया ईप्सितः कथं दुरापः भवेत्। इससे स्पष्ट है कि संस्कृत में भी अर्थसंबन्धानुसारी क्रम अवश्य है और वह प्रायः हिन्दी के क्रम के समान ही है।

१. हिन्दी और संस्कृत में (तथा अन्य भाषाओं में भी) क्रियाओं का अधिक प्रयोग कर्तृवाच्य (Active voice) में ही होता है, कर्मवाच्य (Passive voice) तथा भाववाच्य (Impersonal voice) में थोड़ा, इसलिये पहले २ कर्तृवाच्य का ही प्रयोग किया जाएगा। संस्कृत में कर्तृवाच्य क्रिया (और कर्तृवाच्य कृदन्त [क्तान्त, क्तवत्वन्त] क्रिया) कर्ता के अनुसार एकवचन, द्विवचन या बहुवचन होती है (अर्थात् कर्ता के एकवचन होने से क्रिया एकवचन, कर्ता के द्विवचन होने से क्रिया द्विवचन और कर्ता के बहुवचन होने से क्रिया बहुवचन होती है)। कर्मवाच्य क्रिया (और कर्मवाच्य कृत्य [तव्य आदि] तथा कृदन्त [क्तान्त] क्रिया) कर्म के अनुसार एकवचन आदि होती है और भाववाच्य क्रिया (और भाववाच्य कृत्य [तव्य आदि] तथा कृदन्त [क्तान्त] क्रिया) नियत एकवचन होती है।

हिन्दी में द्विवचन नहीं होता, परन्तु संस्कृत में होता है। इसलिये जहां दो का बोध होता हो वहां संस्कृत में अनुवाद करते हुए द्विवचन का प्रयोग करना चाहिये, हिन्दी के अनुसार बहुवचन का नहीं। जैसे—रामनाथ के दो नौकर। रामनाथस्य द्वौ सेवकौ। राम और श्याम हँसते हैं। रामश्यामौ (रामः श्यामश्च) हसतः। वह आंखें मीचता है=सः नेत्रे निमीलयति।

२. मैं और हम (संस्कृत में अस्मद् शब्द की प्रथमा के तीनों वचनों में क्रम से अहम्, आवाम्, वयम्) के अनुसार आने वाली क्रियाएं उत्तम पुरुष (First Person) में, तू और तुम (संस्कृत में युष्मद् शब्द की प्रथमा के तीनों वचनों में क्रम से त्वम्, युवाम्, यूयम्) के अनुसार आने वाली क्रियाएं मध्यम पुरुष

(Second Person) में और इससे अतिरिक्त सब शब्दों के अनुसार आने वाली क्रियाएं प्रथम या अन्य पुरुष (Third Person) में होती हैं—यह बात हिन्दी संस्कृत में समान ही है।

३. संस्कृत में भूतकाल के अर्थ में लिट् (परोक्षानद्यतन भूत), लङ् (अनद्यतन भूत), और लुङ् (सामान्य भूत) लकार का प्रयोग होता है, वर्तमान काल के अर्थ में लट् लकार का, भविष्यत् काल के अर्थ में लुट् (अनद्यतन भविष्यत्) और लृट् (सामान्य भविष्यत्) का, आज्ञा प्रार्थना आदि के अर्थ में लोट् और लिङ का और हेतुहेतुमद्भाव (Condition) में लृङ् (और लिङ्) का। इनमें से इस पुस्तक में सुगम होने के कारण प्रधानतया लट् (वर्तमान) लङ् (भूत), लृट् (भविष्यत्), लोट् और लिङ्(आज्ञा, प्रार्थना आदि)—इन पांच लकारों का प्रयोग किया गया है।

[भूतकाल के तीनों लकारों के प्रयोग में भेद यह है:— जो बात परोक्ष (होती हुई न देखी) हो और जो आज (गुज़री हुई आधी रात) से पहले हुई हो उसके लिये लिट् का प्रयोग किया जाता है। जो बात आज से पहले हुई हो उसके लिये लङ् का प्रयोग करते हैं। और साधारण भूतकाल का बोध कराने के लिये लुङ् आता है। इसी प्रकार भविष्यत् काल के दो लकारों में भी भेद है। साधारण भविष्यत् काल के लिये लृट् आता है परन्तु अनद्यतन (आज आधी रात के बाद होनेवाली) बात के लिये लुट् का प्रयोग होता है। विशेष आगे (क्रियाप्रकरण में) देखिये।]

उदाहरण।

[ऊपर लिखे अनुसार इन उदाहरणों में वर्तमानकाल में लट्, भूतकाल

में लङ्, भविष्यत्काल में लृट् और आज्ञा आदि अर्थ में लोट् तथा विधिलिङ् का प्रयोग किया गया है ।]

हँसना=हस् धातु (भ्वादि)

उत्तम पुरुष ।

वचन	वर्तमान	भूत	भविष्यत्	आज्ञा आदि
एक० में	हँसता हूं	हँसा था	हँसूंगा	हँसूं
अहम्	हसामि	अहसम्	हसिष्यामि	हसानि / हसेयम्
द्वि० हम	हँसते हैं	हँसे थे	हँसेंगे	हँसें
आवाम्	हसावः	अहसाव	हसिष्यावः	हसाव / हसेव
बहु० हम	हँसते हैं	हँसे थे	हँसेंगे	हँसें
वयम्	हसामः	अहसाम	हसिष्यामः	हसाम / हसेम

मध्यम पुरुष ।

वचन	वर्त०	भूत	भवि०	आज्ञा आदि
एक० तू	हँसता है	हँसा था	हँसेगा	हँस (हँसे)
त्वम्	हससि	अहसः	हसिष्यसि	हस / हसेः
द्वि० तुम	हँसते हो	हँसे थे	हँसोगे	हँसो
युवाम्	हसथः	अहसतम्	हसिष्यथः	हसतम् / हसेतम्
बहु० तुम	हँसते हो	हँसे थे	हँसोगे	हँसो
यूयम्	हसथ	अहसत	हसिष्यथ	हसत / हसेत

प्रथम या अन्य पुरुष ।

वचन		वर्त०	भूत०	भवि०	आज्ञा आदि
एक०	वह (बालक)	हँसता है	हँसा था	हँसेगा	हँसे
	सः (बालकः)	हसति	अहसत्	हसिष्यति	{ हसतु हसेत्
द्वि०	वे (बालक)	हँसते हैं	हँसे थे	हँसेंगे	हँसें
	तौ (बालकौ)	हसतः	अहसताम्	हसिष्यतः	{ हसताम् हसेताम्
बहु०	वे (बालक)	हंसते हैं	हँसे थे	हँसेगे	हँसें
	ते (बालकाः)	हसन्ति	अहसन्	हसिष्यन्ति	{ हसन्तु हसेयुः

४. कारक और विभक्तियां ।

१. कर्ताकारक—हिन्दी में इसकी विभक्ति (चिह्न) 'ने' कर्तृवाच्य में केवल सकर्मक धातु की भूतकाल की सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत तथा संदिग्धभूत क्रियाओं के साथ आती है। अन्यत्र कर्तृवाच्य में कर्ताकारक की कोई विभक्ति नहीं होती। इसके संस्कृत-अनुवाद में 'प्रथमा' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे—

उसने पानी पिया (कर्तृवा० सकर्मक सामान्यभूत)।
सः पानीयम् अपिबत् ।
मैंने फल खाए थे (कर्तृवा० सकर्मक पूर्णभूत)।
अहं फलानि अखादम् (अभक्षयम्)।
मोहन दूध पीता था (कर्तृवा० सकर्म० अपूर्णभू०)।
मोहनः दुग्धम् अपिबत् ।

श्याम लड़ा (कर्तृवा० अकर्मक सामान्यभूत)।
श्यामः अयुध्यत।
कुमार हँसता है (कर्तृवा० अकर्मक वर्तमान)।
कुमारः हसति।
वह धन कहां से देगा ? (कर्तृवा० सकर्मक भवि०)
सः धनं कुतः दास्यति।—इत्यादि॥

[यह नियम नहीं कि कर्तृवाच्य के अनुवाद में सर्वत्र कर्तृवाच्य का ही प्रयोग हो, किन्तु जहां जो वाच्य सुन्दर लगता हो वहां उसका प्रयोग किया जासकता है।]

भाववाच्य तथा कर्मवाच्य में हिन्दी में कर्ता की विभक्ति 'से' होती है, क्योंकि वहां कर्ता करणकारक में रक्खा जाता है। इसके संस्कृत-अनुवाद में 'तृतीया' विभक्ति आती है।

जैसे—मुझ से कैसे हँसा जाए (भाववाच्य)।
मया कथं हस्येत।
बच्चे से इतना दूध कैसे पिया जाए (कर्मवाच्य)।
बालकेन एतावत् दुग्धं कथं पीयेत।

२. कर्मकारक—हिन्दी में इसकी विभक्ति 'को' है। बहुधा अप्राणिवाचक कर्म के आगे इसका लोप रहता है। जैसे—वह दूध (को) पीता है इत्यादि। सर्वनाम शब्दों में 'को' के बदले एक-वचन बहुव० में क्रम से 'ए' और 'एं' भी लगता है। जैसे—उसे, तुझे, मुझे, उन्हें, तुम्हें, हमें। इसके संस्कृत-अनुवाद में 'द्वितीया' विभक्ति आती है। जैसे—

तुम घर को जाओ=यूयं गृहं गच्छत।
वह दूध पीता है=सः दुग्धं पिबति।

उसे (उसको) कह=तं कथय । मैंने उन्हें (उनको) बुलाया= अहं तान् आह्वयम् ।

श्याम मुझे (मुझको) और तुझे (तुझको) बुलाता है ।
श्यामः मां त्वां च आह्वयति (आकारयति) ।
ईश्वर तुम्हें (तुमको) और हमें (हमको) रोगों से बचाए ।
ईश्वरः युष्मान् अस्मांश्च रोगेभ्यः रक्षेत् (पालयेत्) ।

३. करणकारक—हिन्दी में इसकी विभक्ति 'से' है । इसके बदले 'के द्वारा' आदि भी आते हैं । इसके संस्कृत-अनुवाद में 'तृतीया' विभक्ति आती है। जैसे—

कुल्हाडे से लकड़ी फाड़ता है ।
कुठारेण काष्ठं विदारयति ।
बीमारी से दुबला हो गया था ।
रोगेण दुर्बलः अभवत् ।
प्रकृति से कोमल ।
प्रकृत्या कोमलः ।
वह किस प्रयोजन से आया था ?
सः केन प्रयोजनेन आगच्छत् (आगतः, आगतवान्, आयातः, आयातवान्) ?

[भूतकाल की क्रियाओं का अनुवाद यथायोग्य क्त और क्तवतु प्रत्ययान्त (कृदन्त) शब्दों (Past Participles) से भी किया जा सकता है । जैसे– ऊपर के उदाहरण में 'आया था' का अनुवाद 'आगच्छत्' क्रिया से एवं 'आगतः' क्तप्रत्ययान्त तथा 'आगतवान्' क्तवतुप्रत्ययान्त शब्दों से किया गया है । इसी प्रकार–"वह नियत समय घर पहुँच गया था । सः नियते समये गृहं प्राप्नोत् = प्राप्तः = प्राप्तवान्" । विशेषतः हिन्दी में जिन भूतकाल की क्रियाओं

के कर्ता में 'ने' विभक्ति रहती है, उनका अनुवाद अधिकतर क्तप्रत्ययान्त शब्दों से किया जाता है और विद्यार्थी इसमें कुछ सुगमता भी अनुभव करते हैं। जैसे— 'मैंने कहा' का अनुवाद अधिकतर 'अहम् अकथयम्' की अपेक्षा 'मया कथितम्' करते हैं; 'राम ने मेरा काम किया' का 'रामः मम कार्यम् अकरोत्' की अपेक्षा 'रामेण मम कार्यं कृतम्'; और 'केशव ने बहुत पुस्तकें पढ़ीं' का 'केशवः बहूनि पुस्तकानि अपठत्' की अपेक्षा केशवेन बहूनि पुस्तकानि पठितानि' —इत्यादि (विशेष आगे कृदन्तप्रकरण में देखिये)।

४. संप्रदानकारक—हिन्दी में इसकी विभक्ति 'को' है (इस के बदले 'के लिये, निमित्त, हेतु, अर्थ, वास्ते' भी आते हैं)। इसके संस्कृत-अनुवाद में 'चतुर्थी' विभक्ति आती है। जैसे—

भूखे को खाना दे।
बुभुक्षिताय भोजनं देहि।
गुरु को नमस्कार।
गुरवे नमस्कारः (नमः)।
राम पढ़ने के लिये पुस्तक मांगता है।
रामः पठनाय पुस्तकं याचते।
यह भोजन बालक के लिये (निमित्त, वास्ते) काफ़ी है।
इदं भोजनम् अस्मै बालकाय पर्याप्तम् (अलम्)।
राजा ने गुरु के लिये सवारी भेजी।
राजा गुरवे वाहनं प्रैषयत् (राज्ञा गुरवे वाहनं प्रेषितम्)।

५. अपादानकारक—हिन्दी में इसकी विभक्ति 'से' है। इसके संस्कृत-अनुवाद में 'पञ्चमी' विभक्ति आती है। जैसे—

बाग से फल लाओ।

उद्यानात् फलानि आनयत।

मोहन घर से कब आया?

मोहनः गृहात् कदा आगतः (आयातः, आगच्छत्)?

ज़मीन से अनन्त पदार्थ पैदा होते हैं।

भूमेः (पृथिव्याः) अनन्ताः पदार्थाः उत्पद्यन्ते।

प्रयाग से काशी जाऊंगा।

प्रयागात् काशीं गमिष्यामि।—इत्यादि।

६. संबन्ध—(इसको हिन्दी के वैयाकरणों ने कारक माना है। परन्तु संस्कृत के वैयाकरणों ने इसे कारक नहीं माना, क्योंकि इसका संबन्ध क्रिया से नहीं होता)। हिन्दी में इसकी विभक्तियां 'का, के, की' (और कुछ सर्वनामों में 'रा, रे, री') हैं। इनके संस्कृत-अनुवाद में 'षष्ठी' विभक्ति आती है। जैसे—

सिपाही का घोड़ा।

सैनिकस्य घोटकः (अश्वः)।

घर का सामान।

गृहस्य उपकरणम् (संभारः)।

तुम्हारा नौकर कहां है?

युष्माकं सेवकः कुत्र अस्ति?

मेरी पुस्तक ला।

मम पुस्तकम् आनय।—इत्यादि।

७. अधिकरणकारक—हिन्दी में इसकी विभक्तियां 'में' और 'पर' हैं। इनके संस्कृत-अनुवाद में 'सप्तमी' विभक्ति आती है। जैसे—

बर्तन में घी ।
पात्रे घृतम् ।
हाथ में कंगन, गले में माला ।
हस्ते कङ्कणम्, गले (कण्ठे) माला ।
सिर पर बोझा ।
शिरसि भारः ।
अटारी पर कबूतर ।
अट्टे कपोतः ।—इत्यादि ।

८. संबोधन—हिन्दी में इसकी कोई विभक्ति नहीं होती । हे ओ, अजी आदि संबोधन के द्योतक अव्यय शब्द के आदि में लगाए जाते हैं, वे भी सर्वत्र नहीं । इसके संस्कृत-अनुवाद में 'प्रथमा' विभक्ति ही आती है, जिसके द्विवचन और बहुवचन के रूप साधारण 'प्रथमा' विभक्ति के रूपों के समान ही होते हैं, केवल एकवचन के रूपों में संबोधन के कारण ('सु' विभक्ति के लोप आदि से) कुछ भेद होता है (जैसे—साधारण प्रथमा में 'रामः' संबोधन में 'राम', साधारण प्रथमा में 'हरिः' संबोधन में 'हरे' इत्यादि । उदाहरण—

बेटा, आओ चलें ।
पुत्र, (वत्स,) आगच्छ (एहि) गच्छाव ।

[तू शब्द या उसके अनुसार आनेवाली मध्यम पुरुष की एकवचन क्रिया से प्रायः निरादर या हलकापन प्रतीत होता है; इस कारण हिन्दी में बहुधा एक व्यक्ति के लिये भी 'तुम (बहुवचन)' या उसके अनुसार मध्यम पुरुष की बहुवचन क्रिया का प्रयोग किया जाता है । ऐसे वाक्यों के संस्कृत-अनुवाद में एकवचन का ही प्रयोग करना चाहिये । इसी लिये ऊपर के वाक्य में 'आओ' मध्यम

पु० बहुव० का अनुवाद 'आगच्छ' या 'एहि' मध्यम पु० एकव० क्रिया से किया गया है (विशेष सर्वनामप्रकरण में देखिये)।]

हे प्रभु, रक्षा करो।

हे प्रभो, रक्षां कुरु (रक्ष, पालय)।

अरे जड, तू इतना भी नहीं समझता।

अरे जड, (मूर्ख,) एतावत् अपि न बुध्यसे।

घसियारो, तुम (दोनों) आज कितना घास लाए थे?

घासहारौ, युवाम् (उभौ) अद्य कियन्तं घासम् आनीतवन्तौ।

लडको, बहुत खेल चुके, अब पढ़ो।

बालकाः, (यूयं) बहु क्रीडितवन्तः, इदानीं (अधुना, संप्रति) पठत

सरला, तुम कहां जाती हो?

सरले, त्वं कुत्र गच्छसि?

पुत्री, इधर आओ।

पुत्रि, इतः आगच्छ।

माता, तुम धन्य हो।

मातः, त्वं धन्या असि।

बहनो, विद्या ही तुम्हारा गहना है।

भगिन्यः, (स्वसारः,) विद्यैव युष्माकं भूषणम् अस्ति।

मित्रो, मुझे माफ़ करो।

मित्राणि*, मां क्षमध्वम्।

स्वामी, सेवक की ग़लती माफ़ करो।

स्वामिन्, सेवकस्य स्खलितं क्षमस्व।—इत्यादि।

ऊपर विभक्तियों के अनुवाद की साधारण रीति बताई गई है।

---

* दोस्त के अर्थ में मित्र शब्द संस्कृत में नपुंसक लिङ्ग होता है।

परन्तु सर्वत्र ही 'को' 'का' आदि देखकर उनका अनुवाद बिना विचारे 'द्वितीया' 'षष्ठी' आदि विभक्तियों से नहीं कर डालना चाहिये, किन्तु अर्थ के अनुसार जो विभक्ति ठीक हो उसका प्रयोग करना चाहिये। क्योंकि हिन्दी के कई वाक्य ऐसे होते हैं जिनके शब्दों में और विभक्ति होती है परन्तु उनके अनुवाद में और ही विभक्ति लगानी पड़ती है, तभी अनुवाद शुद्ध होता है, अन्यथा नहीं। जैसे—'उसको बुखार है' इसमें 'को' देखकर 'तं ज्वरः अस्ति' इस प्रकार 'द्वितीया' विभक्ति से अनुवाद करना सर्वथा अशुद्ध होगा। इसलिये यहां 'को' का अनुवाद 'षष्ठी' विभक्ति से करना होगा 'तस्य ज्वरः अस्ति'। 'शरीर का हलका, ज़बान का मीठा' यहां 'का' देखकर 'शरीरस्य † लघुः, वाण्याः (वाचः) मधुरः' इस प्रकार 'षष्ठी' विभक्ति से अनुवाद करना ठीक नहीं। यहां 'का' का अनुवाद 'तृतीया' विभक्ति से करना चाहिये। 'शरीरेण लघुः, वाण्या (वाचा) मधुरः'। इसी प्रकार 'हम सबको' लड़की के ब्याह के लिये घर जाना है। इसमें 'को' का अनुवाद 'द्वितीया' से 'अस्मान् सर्वान्' न करके तृतीया से करना चाहिये 'अस्माभिः सर्वैः कन्याया विवाहाय गृहं (गृहे)* गन्तव्यम्' 'एक ही गोली में शेर मार दिया' यहां 'में' का अनुवाद 'सप्तमी' से 'एकस्याम् एव गुलिकायाम्' न करके 'तृतीया' से करना चाहिये 'एकया एवं गुलिकया सिंहः मारितः (हतः, व्यापादितः)।' इत्यादि। इस प्रकार के वाक्यों के अनुवाद की रीति आगे (कारकार्थप्रकरण में) देखिये।

---

† यद्यपि संबन्धसामान्य में 'षष्ठी' मानकर इसे भी अशुद्ध नहीं कह सकते तथापि संस्कृत की प्रयोगपरिपाटी के अनुसार 'तृतीया' का ही प्रयोग उचित है।

* गमनार्थक धातुओं के कर्म में 'द्वितीया' और 'सप्तमी' दोनों विभक्तियां होती हैं।

अनुवाद के प्रकार

अनुवाद दो प्रकार का होता है—शब्दानुवाद (Literal translation) और भावानुवाद (Free translation) ।

किसी भाषा के वाक्यों के प्रत्येक शब्द का दूसरी भाषा में अनुवाद करना शब्दानुवाद कहाता है और प्रत्येक शब्द का अनुवाद न करके उन (वाक्यों) के भाव (अर्थ, अभिप्राय) को दूसरी भाषा में प्रकाशित करना भावानुवाद कहाता है। शब्दानुवाद की अपेक्षा भावानुवाद उत्कृष्ट माना जाता है। उदाहरण—

हद से ज्यादा कसरत लाभ की जगह हानि करती है।

सीमायाः अधिकः व्यायामः लाभस्य स्थाने हानिं करोति।

(शब्दानुवाद)

व्यायामे सीमातिक्रमो हानिं जनयति नतु लाभम्।

सीमातिक्रमेण कृतो व्यायामः हानये जायते।

अयथाबलं व्यायामः क्षयस्य निदानम्।

(भावानुवाद)

आरम्भ में अभ्यास न होने से शब्दानुवाद ही करना पड़ता है। क्रम से योग्यता बढ़ने पर भावानुवाद करने का अभ्यास करना चाहिये। साधारण भाषा का अनुवाद करना हो तो शब्दानुवाद से भी काम चल जाता है, परन्तु मुहावरेदार भाषा के अनुवाद में शब्दानुवाद से काम नहीं चलता प्रत्युत वैसा करने से बहुधा अर्थ का अनर्थ होजाता है। क्योंकि मुहावरे सब भाषाओं में भिन्न भिन्न होते हैं और जो मुहावरा जिस भाषा का हो उसी में उससे अर्थ का ठीक २ बोध होता है। दूसरी भाषा में उस का शब्दानुवाद करने से विवक्षित अर्थ नहीं प्रतीत होता। इस-

लिये मुहावरेदार भाषा का भावानुवाद ही करना चाहिये, शब्दानुवाद नहीं। जैसे—

१. बेटे को देख मां का दिल बाग बाग हो गया।
२. बड़ों की पगड़ी उतारने से बड़ाई नहीं होती।
३. अच्छे काम में आगा पीछा नहीं करना चाहिये।
४. एक ही गोली में शेर का काम तमाम कर दिया।
५. मुझे देखते ही वह नौ दो ग्यारह हो गया।

इनका शब्दानुवाद क्रम से निम्नलिखित होगा, जिससे विवक्षित अर्थ बिल्कुल प्रतीत नहीं होता प्रत्युत और ही बेसिरपैर का सा अर्थ बनजाता है :—

१. पुत्रं दृष्ट्वा मातुः हृदयम् उद्यानम् उद्यानं जातम्।
२. महताम् उष्णीषावतारणेन महत्त्वं न भवति।
३. सति कार्ये अग्रं पृष्ठं न करणीयम्।
४. एकस्याम् एव गुलिकायां सिंहस्य कार्यं सर्वं कृतम्।
५. मां पश्यन्नेव (दृष्ट्वैव) सः नव द्वौ एकादश संवृत्तः।

इनका भावानुवाद, जिससे विवक्षित अर्थ स्पष्ट समझ में आजाता है, इस प्रकार होगा :—

१. {
पुत्रं दृष्ट्वा (पश्यन्त्याः) मातुः हृदयमत्यन्तं प्रासीदत् (प्रसन्नमभवत्)
सुतदर्शनजनितेन प्रमोदेन मातुर्मनः परं विकसितमजायत।
पुत्रदर्शनेन मातुर्मनः सान्द्रानन्दनिर्भरमजायत।
तनयालोकनेन मातुर्मनोऽमन्दमानन्दमविन्दत।
तनयावलोकनजन्मना हर्षातिशयेन मातुर्मानसमतितरां सोल्लासमभवत्।

२. गुरूणां मानभङ्गेन (अनादरेण, तिरस्कारेण) महत्त्वं न जायते।
मान्यानामवमानो नोत्कर्षाय।

३. शुभे कर्मणि न विकल्पितव्यम्।
सत्कर्मणि विलम्बो (विकल्पः) नोचितः।
"शुभस्य शीघ्रम्"।

४. एकया एव गुलिकया सिंहः मारितः (हतः, व्यापादितः)।

५. मां पश्यन्नेव (दृष्ट्वैव) सः पलायितः (विद्रुतः, प्रणष्टः)।

भावानुवाद करने में जहां भाव को उत्तम रीति से प्रकट किया जा सकता है वहां रचना को इच्छानुसार मनोहर भी बनाया जा सकता है, जैसे ऊपर के उदाहरण नं० १ में।

हिन्दी के शब्द और उनके अनुवाद के सामान्य नियम

हिन्दी में शब्द चार प्रकार के होते हैं—तत्सम, तद्भव, देशी और विदेशी।

तत्सम

तत्सम या संस्कृतसम वे शब्द हैं जो हिन्दी में भी प्रायः उसी रूप में प्रयुक्त होते हैं जो रूप उनका संस्कृत में है। दूसरे शब्दों में, वे संस्कृत के ही शब्द हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं। जैसे राजा, माता, कवि, वृक्ष आदि। इसलिये संस्कृत-अनुवाद में वही शब्द (अथवा इच्छानुसार उनके समानार्थक दूसरे शब्द) रक्खे जा सकते हैं। जैसे—

राजा आया= राजा (नृपः) आगच्छत् (आगतः)

राजा का सेवक= राज्ञः (नृपस्य) सेवकः

माता ने कहा= { माता (जननी) अकथयत्।
मात्रा (जनन्या) कथितम्।

कवि का काव्य= कवेः (कवयितुः) काव्यम्।

नदी का जल= नद्याः (सरितः) जलम्।

वृक्ष की छाया= वृक्षस्य (पादपस्य) छाया।

तद्भव।

तद्भव (उससे अर्थात् संस्कृत से पैदा हुए) वे शब्द हैं जो संस्कृत से बिगड़कर बने हैं। जैसे– खेत (क्षेत्र से), मेह (मेघ से) दूध (दुग्ध से), हाथ (हस्त से)—इत्यादि। इनके संस्कृत-अनुवाद में वे संस्कृत शब्द जिनसे ये बने हैं (अथवा उनके समानार्थक दूसरे संस्कृत शब्द) रक्खे जा सकते हैं। जैसे—

खेत में मूसे= क्षेत्रे मूषकाः।

मेह बरसता है= मेघः (जलदः) वर्षति।

दूध पिओ= दुग्धं (पयः) पिबत।

हाथ का कंगन=हस्तस्य (करस्य) कङ्कणम्।

[व्यक्तिवाचक तथा जातिवाचक तद्भव संज्ञाओं के विषय में आगे (उनके प्रकरण) में देखो]।

देशी और विदेशी।

देशी शब्द हिन्दी के वे शब्द हैं जिनका संस्कृत से कोई सम्बन्ध नहीं। जैसे— होड़, पगड़ी, ऊधम, खलबली आदि, और विदेशी वे हैं जो दूसरे देशों की भाषाओं से हिन्दी में आए हैं।

जैसे—इम्तिहान, औरत (अरबी), आदमी, बाग़ (फ़ारसी), तोप, लाश (तुर्की), कमरा, पलटन (पोर्चुगीज़) कोर्ट, बोर्डिंग हाउस (अंग्रेज़ी) इत्यादि। इन शब्दों का संस्कृत से कोई सम्बन्ध नहीं। इसलिये इनके संस्कृत-अनुवाद में इनका समानार्थक कोई भी संस्कृत का शब्द औचित्य के अनुसार रक्खा जासकता है। (विशेष आगे देखिये)।

होड़ छोड़ दे=स्पर्धां त्यज।

सफेद पगड़ी=शुभ्रम् ऊष्णीषम्।

ऊधम न मचा=कोलाहलं (कलकलं) मा कुरु।

सभा में खलबली मच गई=सभायां संक्षोभः (विप्लवः) संजातः।

आज उसका इम्तिहान है=अद्य तस्य परीक्षा (परीक्षणम्) अस्ति।

औरत का स्वभाव=स्त्रियाः (नार्याः, योषितः) स्वभावः।

जानवरों में आदमी सर्वश्रेष्ठ है=सर्वेषु जीवेषु मनुष्यः (मानवः, मनुजः, पुरुषः, नरः) श्रेष्ठः।

बाग़ में फूल खिले हैं=उद्याने (उपवने, आरामे) पुष्पाणि विकसितानि सन्ति।

तोप का गोला=शतघ्न्याः गोलकः।

यह किसकी लाश है ? =अयं कस्य शवः अस्ति ?।

बड़ा कमरा=विशालं प्रकोष्ठकम्।

महाराज की पलटन=महाराजस्य सेना (चमूः, अनीकम्, पताकिनी, पृतना)

सब गवाह कोर्ट में हाजिर हों=सर्वे साक्षिणः न्यायालये (धर्माधिकरणे) उपतिष्ठन्तु।

बोर्डिङ्ग हाउस में कितने विद्यार्थी रहते हैं ?=छात्रावासे (छात्रालये) कति विद्यार्थिनो निवसन्ति ?।

१. संज्ञाऽधिकरण।

पहला अध्याय।

व्यक्तिवाचक संज्ञाएं।

(१) तत्सम व्यक्तिवाचक संज्ञाएं।

राम, कृष्ण, मोहन, राजनारायण, रवीन्द्रनाथ, मदनमोहन आदि व्यक्तिवाचक संज्ञाएं तत्सम (संस्कृत) हैं। जैसा कि पहले लिखा गया है, ये अनुवाद में इसी रूप में रक्खी जाती हैं। जैसे—

राम की पत्नी सीता थी।

रामस्य पत्नी सीता आसीत्।

कृष्ण की माता देवकी थी।

कृष्णस्य माता देवकी आसीत्।

रवीन्द्रनाथ की कविता अद्‌भुत है।

रवीन्द्रनाथस्य कविता अद्‌भुता अस्ति।—इत्यादि।

नीचे लिखी व्यक्तिवाचक संज्ञाएं तत्सम हैं:—

देशनाम—काश्मीर, चीन, ब्रह्मा—आदि।

नगरनाम—मथुरा, काशी, अयोध्या, गया, द्वारका, हरिद्वार, वृन्दावन, जालन्धर, विलासपुर–आदि।

नदीनाम—गङ्गा, गोदावरी, ब्रह्मपुत्र (पुं०)—आदि।

पर्वतनाम—हिमालय, विन्ध्याचल–आदि।

सभा आदि के नाम—काशीनागरीप्रचारिणी सभा, सनातनधर्म, आर्यसमाज, हरिद्वारसेवासमिति, शान्तिनिकेतन, आनन्दभवन-आदि।

संस्कृत-अनुवाद में इनके लिए यही शब्द रक्खे जाते हैं। उदाहरण—

काश्मीरदेश भूलोक का स्वर्ग है।
काश्मीरदेशो भूलोकस्य स्वर्गः अस्ति।
चीनदेश में रेशम बहुत होता है।
चीनदेशे कौशेयं बहु भवति।
ब्रह्मा में बौद्ध मंदिर बहुत हैं।
ब्रह्मदेशे बौद्धमन्दिराणि बहूनि सन्ति।

जालन्धर में गाड़ी चढ़कर हरिद्वार गया। वहां स्नान करके सांझ की गाड़ी से चलकर मथुरा वृन्दावन देखे। वहां से चलकर अयोध्या और काशी में एक एक दिन रहकर गया चला गया।

जालन्धरे वाष्पशकट्याम् (वाष्पयाने) आरुह्य हरिद्वारम् अगच्छम्। तत्र स्नानं कृत्वा (स्नात्वा) सायंवाष्पशकट्या प्रस्थाय मथुरावृन्दावने (मथुरां वृन्दावनं च) अपश्यम्। ततः प्रस्थाय अयोध्यायां काश्यां च एकमेकं दिनं वासं कृत्वा (उषित्वा) गयाम् अगच्छम्।

गंगा हिमालय से निकलती है और गोदावरी विन्ध्याचल से।
गङ्गा हिमालयात् निर्गच्छति (प्रभवति), गोदावरी च विन्ध्याचलात्।
काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ने बहुत पुस्तकें प्रकाशित की हैं।
काशीनागरीप्रचारिण्या सभया बहूनि पुस्तकानि प्रकाशितानि।
सनातनधर्म और आर्यसमाज के सिद्धान्तों में बहुत थोड़ा भेद है।

सनातनधर्मस्य आर्यसमाजस्य च सिद्धान्तेषु अत्यल्पो भेदोऽस्ति।

हरिद्वारसेवासमिति ने हैज़े से पीड़ित लोगों की बहुत सेवा की।

हरिद्वारसेवासमित्या विषूचिकया पीडितानां लोकानां महती सेवा कृता।

शान्तिनिकेतन में शिक्षा का बहुत अच्छा इन्तज़ाम है।

शान्तिनिकेतने शिक्षाया अत्युत्तमः प्रबन्धः अस्ति।

आनन्दभवन से प्रयाग शहर की शोभा है।

आनन्दभवनेन प्रयागनगरस्य शोभा अस्ति।

(२) तद्भव व्यक्तिवाचक संज्ञाएं।

साधारण मनुष्यों, नगरों आदि के तद्भव नामों का संस्कृत-अनुवाद में उतना ही परिवर्तन करना चाहिये जितने से कि उनके पहचानने में बाधा न हो। जैसे—'रामसरनदास' को संस्कृत-अनुवाद में 'रामशरणदास' 'रघुवरदयाल' को 'रघुवरदयालु' 'रनजीतसिंह' को 'रणजित्सिंह' 'जैपुर' को 'जयपुर' कर देना चाहिये। परन्तु 'भगवानदीन' को 'भगवद्दत्त' 'कर्तारपुर' को 'कर्तृपुर' नहीं करना चाहिये, क्योंकि 'भगवद्दत्त' से 'भगवानदीन' और 'कर्तृपुर' से 'कर्तारपुर' का बोध नहीं हो सकता।

इतिहासप्रसिद्ध प्राचीन मनुष्यों, नगरों, नदियों आदि के तद्भव नामों को अनुवाद में संस्कृत रूप में ही लिखना उचित है। जैसे—

	तद्भव (हिन्दी)		संस्कृत
मनुष्यनाम—	बलदाऊ जी	=	बलदेव
	ऊधो	=	उद्धव
	सूपनखा	=	शूर्पणखा
	प्रिथीराज	=	पृथ्वीराज

जैचन्द	=	जयचन्द्र
परताप	=	प्रताप
सांगा	=	संग्रामसिंह—इत्यादि।
देश नाम—फारस	=	पारसीक
कन्धार	=	गान्धार
बलख	=	बाल्हिक
टर्की	=	तुरुष्क (वनायु)
सिंध	=	सिन्धुदेश
बंगाल	=	वङ्ग
गुजरात	=	गुर्जर
तिलंगाना	=	त्रिलिङ्ग (त्रिकलिङ्ग)
उड़ीसा	=	ओड्र (उत्कल)
जावा	=	यवद्वीप—इत्यादि
नगरनाम—टैक्सिला	=	तक्षशिला
सिरीनगर	=	श्रीनगर
मटन	=	मार्तण्ड
बारामूला	=	वाराहमूल
जम्मू	=	जम्बू
कुल्लू	=	कुलूत †
थानेसर	=	स्थानेश्वर (स्थाण्वीश्वर)
कैथल	=	कपिष्ठल
कन्नौज	=	कान्यकुब्ज
बनारस	=	वाराणसी

† 'कुल्लू' नगर का भी नाम है और इलाके का भी, जैसे 'जम्मू'।

पटना	=	पाटलिपुत्र
उज्जैन	=	उज्जयिनी
भिलसा	=	विदिशा
तिरहुत	=	तीरभुक्त (क्ति)
नदिया	=	नवद्वीप
काञ्जीवरम्	=	काञ्चीपुरम्
नदीनाम—सिंध	=	सिन्धु
रावी	=	इरावती
व्यास	=	विपाशा
सतलुज	=	शतद्रु (शुतुद्रि)
जमना	=	यमुना
सरजू	=	सरयू
नर्बदा	=	नर्मदा
चंबल	=	चर्मण्वती
बेतवा	=	वेत्रवती
सोन	=	शोण (पुं०)—इत्यादि
पर्वतनाम—आबू	=	अर्बुद (अर्बुदाचल)
सेवालिक	=	सपादलक्ष—इत्यादि।

सूचना—इनमें भी जो अधिक प्रसिद्ध और प्राचीन हैं एवं जिनके संस्कृत नाम अधिक प्रसिद्ध हैं उनके अनुवाद में संस्कृत शब्दों का रखना अधिक आवश्यक है। क्योंकि संस्कृत में उनका हिन्दी (तद्भव) रूप में लिखना खटकता है। जैसे—'बलदाऊ' 'परताप' 'जमना' 'सरजू' 'सिंध' 'उज्जैन' आदि को संस्कृत में

'बलदेव' 'प्रताप' 'यमुना' 'सरयू' 'सिन्धु' 'उज्जयिनी' आदि न लिखकर 'बलदाऊ' 'परताप' 'जमना' आदि लिखना बहुत बुरा प्रतीत होता है। परन्तु जो अधिक प्रसिद्ध नहीं अथवा जिनके संस्कृत नाम अधिक प्रचलित नहीं उनका हिन्दी (तद्भव) रूप में भी लिख सकते हैं। जैसे जिरहुत, जावा, आदि को संस्कृत-अनुवाद में इन्हीं शब्दों से भी लिख सकते हैं। प्रायः संस्कृत में रक्खे जानेवाले अन्य भाषाओं के शब्दों के आगे यथायोग्य 'नाम' 'इत्याख्य' 'नगर' 'ग्राम' आदि शब्द लगाए जाते हैं। जैसे—

सांगा=सांगानामा, सांगा इत्याख्यः नृपः।

तिरहुत=तिरहुतनगरम्, तिरहुत इत्याख्यं (नामकं) नगरम्।

पट्टी=पट्टीग्रामः, पट्टी इत्याख्यः (नामकः) ग्रामः।—इत्यादि।

(विशेष आगे देखिये)

उदाहरण—

रामदयाल और गुरुचरनसिंह की आपस में मित्रता है।

रामदयालो: गुरुचरणसिंहस्य च परस्परं मित्रता अस्ति।

रनजीतसिंह बड़ा राजनीतिज्ञ था।

रणजितसिंहः महान् राजनीतिज्ञः आसीत्।

कर्तारपुर जालन्धर के नज़दीक ही है।

कर्तारपुरं जालन्धरस्य समीप एव अस्ति।

जैपुर की चित्रकारी मशहूर है।

जयपुरस्य चित्रकर्म प्रसिद्धम् अस्ति।

कविवर भगवानदीन जी ने रामचन्द्रिका की व्याख्या बनाई।

कविवरेण भगवानदीनेन रामचन्द्रिकाया व्याख्या रचिता।

श्रीकृष्ण ने बलदाऊ जी से सलाह कर ऊधो जी को गोकुल भेजा।

श्रीकृष्णेन बलदेवेन सह मन्त्रयित्वा उद्धवः गोकुलं प्रेषितः ।

सूपनखा को देख सीता डर गई ।

शूर्पणखां दृष्ट्वा सीता भयं प्राप्ता (भीता) ।

जैचन्द और प्रिथीराज की आपस में सख़्त दुश्मनी थी ।

जयचन्द्रस्य पृथ्वीराजस्य च परस्परं (मिथः) महान् द्वेषः (प्रबलं वैरम्) आसीत् ।

टर्कों से चलकर फ़ारस, कंधार, बलख़ की सेर करके सिंध पहुंचने में एक महीना गुज़र गया ।

तुरुष्केभ्यः(तुरुष्कदेशात्) प्रस्थाय पारसीकान्†, गन्धारान्†, वाह्लिकांश्च† (पारसीकदेशं, गन्धारदेशं, वाह्लिकदेशं च) भ्रान्त्वा (भ्रमित्वा) सिन्धुदेशे प्राप्तौ एको मासः व्यतीतः ।

बंगाल में चावल बहुतायत से होते हैं ।

वङ्गेषु (वङ्गदेशे) तण्डुलाः बाहुल्येन (आधिक्येन) भवन्ति ।

जावा के बौद्ध मन्दिर कारीगरी के नमूने हैं ।

यवद्वीपस्य बौद्धमन्दिराणि शिल्पकलायाः आदर्शाः सन्ति ।

सिंध का पाट बहुत चौड़ा है ।

सिन्ध्वाः मध्यम् अतिविशालम् अस्ति ।

सतलुज से व्यास और इन दोनों से रावी मिलती है ।

शतद्र्वा (शुतुद्र्या) विपाशा (विपाट्) एताभ्यां (द्वाभ्यां)* च इरावती मिलति (संगच्छते) ।

---

†ये शब्द बहुवचन में आते हैं और इनके आगे 'देश' शब्द जोडने पर एकवचन में।

*ऐसे स्थलों में 'दोनों' का अनुवाद 'द्वाभ्यां' आदि अलग करने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि 'दो' का अर्थ द्विवचन से ही निकल आता है। इसलिये 'इन दोनों से' का अनुवाद केवल 'एताभ्यां' ही पर्याप्त है ।

बेतवा बुन्देलखण्ड में और चंबल राजपूताने में बहती है ।

वेत्रवती बुन्देलखण्डे चर्मण्वती च राजपुत्रदेशे (राजस्थाने) वहति ।

अयोध्या सरजू के किनारे है ।

अयोध्या सरय्वाः तटे अस्ति (विद्यते) ।

पुराने ज़माने में टैक्सिला एक मशहूर यूनीवर्सिटी थी ।

प्राचीने काले (पुरा) तक्षशिला एकः प्रसिद्धो विश्वविद्यालयः आसीत् ।

कोहमरी के रास्ते श्रीनगर जाएं तो पहले बारामूला आता है ।

(यदि) मरीपर्वतमार्गेण श्रीनगरं गच्छेम तर्हि प्रथमं वाराह-मूलमागच्छति ।

हम एक दिन जम्मू रहकर मटन यात्रा को चल पड़े ।

वयम् एकं दिनं जम्वां वासं कृत्वा (उषित्वा) मार्तण्ड-(मटन-) यात्रायै प्रस्थिताः ।

कुल्लू के कम्बल मशहूर हैं ।

कुलूतस्य कम्बलाः प्रसिद्धाः सन्ति ।

उज्जैन ने विक्रम, पटने ने चन्द्रगुप्त और कन्नौज ने हर्षवर्धन के कारण बहुत प्रसिद्धि पाई ।

उज्जयिन्या विक्रमस्य पाटलिपुत्रेण चन्द्रगुप्तस्य, कान्यकुब्जेन च हर्ष-वर्धनस्य कारणात् महती प्रसिद्धिः प्राप्ता ।

कैथल और थानेसर का बहुत थोड़ा अन्तर है ।

कपिष्ठलस्य स्थानेश्वरस्य ‡ च अत्यल्पमन्तरम् †

---

‡ 'हर्षचरित' में महाकवि बाण ने इसे 'स्थाण्वीश्वर' लिखा है ।

† ऐसे वाक्यों में 'अस्ति' क्रिया बिना कहे या लिखे भी जानी जासकती है ।

नदिया न्यायशास्त्र का घर है।
नवद्वीपं न्यायशास्त्रस्य निकेतः (गृहम्)।

(३) देशी तथा विदेशी व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ

देशी तथा विदेशी व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को अनुवाद में उनके अपने रूप में ही रखना चाहिये, उनमें कोई परिवर्तन नहीं करना चाहिये। भौं ूशाह, गुलाबराय, करीमबख़्श, न्यूटन, पार्कर, ढ़ाका, आस्ट्रेलिया, मिस्सीसिपी (नदी), मैंचेस्टर आदि अनुवाद में इसी रूप में रक्खे जाएंगे। परन्तु 'एलैग्ज़ैंडर' के लिये 'अलक्ष्येन्द्र' और 'मैक्समूलर' के लिये 'मोक्षमूलर' शब्द कल्पित किये गये हैं और संस्कृतज्ञों में प्रचलित भी हो गये हैं। इसलिये इनको संस्कृत में दोनों रूपों में लिख सकते हैं। परन्तु 'लाहौर' के लिये कल्पित किया गया 'लवपुर*' शब्द सर्वसाधारण में भी प्रचलित हो गया है। इसलिये संस्कृत में 'लाहौर' को 'लवपुर' लिखना ही अधिक उचित है।

[संस्कृत के लेखकों में यह प्रवृत्ति चली आ रही है कि वे दूसरी भाषाओं की व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को उनके अपने रूप में न रखकर यथासंभव संस्कृत के रूप में ढाल देते हैं। जैसे "शिवराजविजय" (अम्बिकादत्तव्यासरचित गद्य काव्य) में 'औरंगज़ेब' को 'अवरङ्गजीव' करके लिखा है 'अफ़ज़लख़ां' को

---

*'लवपुर' शब्द की कल्पना भ्रमात्मक ही है, किसी ऐतिहासिक या भाषा-विज्ञानसंबन्धी तथ्य के आधार पर नहीं, ऐसा बहुतों का मत है। जैन लेखों में 'लाहौर' का संस्कृत नाम 'लाभपुर' आता है। इसका 'लाभ' को 'लाह' और 'पुर' को 'उर' होकर सन्धि होजाने से 'लाहोर' और उच्चारण-विकार से 'लाहौर' बन सकता है, परन्तु 'लवपुर' से 'लाहौर' बनना संभव नहीं।

'अपजलखान'—इत्यादि । इसी प्रकार 'श्रीगान्धीचरित' (चारुदेव शास्त्री एम. ए. रचित गद्यकाव्य) में 'अहमदाबाद' को 'अमदाबाद' 'अफ्रीका' को 'आफ्रीका' 'नौसारी' को 'नवश्री' एवं 'साबरमती' को 'शबरवती' लिखा है । यह प्रवृत्ति अनुकरणीय नहीं कही जासकती । क्योंकि ऐसा करने से विवक्षित व्यक्तियों का बोध होने में बाधा उपस्थित होती है । जैसे जब तक पहले न बता दिया जाय कि 'नौसारी' के लिये 'नवश्री' शब्द का प्रयोग किया जाएगा, या प्रकरण से किसी प्रकार 'नौसारी' का बोध न हो सकता हो तब तक 'स नवश्रियं गतः' कहने से 'वह नौसारी गया' इस प्रकार 'नौसारी' का बोध नहीं हो सकता । एक भाषा के शब्दों का दूसरी भाषा में जाकर उसके बोलनेवालों की उच्चारणशक्ति आदि कारणों से न्यूनाधिक परिवर्तन अवश्य हो जाता है, और उससे उनके बोध में बाधा भी उपस्थित होती है । परन्तु स्वभावतः ऐसा होना और बात है और जानबूझकर करना और बात (पहला दोष अपरिहार्य है और दूसरा स्वयं किया जाता है) ।]

परन्तु जिन देशी विदेशी व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के लिये संस्कृत शब्द मिलते हैं, उनके अनुवाद मे संस्कृत शब्द ही रखने उचित हैं । जैसे—

देशनाम	संस्कृत	नदीनाम	संस्कृत
ग्रीस	यवन	जेलहम	वितस्ता
बिहार	मगध	चनाब	चन्द्रभागा—इत्यादि ।
बरार	विदर्भ	नगरनाम	संस्कृत
		अलाहाबाद	प्रयाग—इत्यादि ।
आसाम	कामरूप (प्राग्ज्योतिष) इत्यादि ।		

ऊपर लिखे यवन आदि तथा पहले लिखे काश्मीर, चीन,

तुरुष्क, पारसीक, गान्धार, वाह्लिक, वङ्ग आदि देशनाम संस्कृत में बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे—'अस्ति विदर्भेषु पद्मपुरं नाम नगरम्' [मालतीमाधव] ('बरार' में पद्मपुर नाम नगर है)-इत्यादि। इन शब्दोंके आगे 'देश' शब्द लगा देने से इनका एकवचन में प्रयोग होता है। जैसे— विदर्भेषु=विदर्भदेशे, मगधाः=मगधदेशः —इत्यादि।

इस प्रकार ऊपर लिखे गये विशेष शब्दों को छोड़कर साधारणतः व्यक्तिवाचक संज्ञाएं संस्कृत-अनुवाद में अपने असली रूप में ही रक्खी जाती हैं।

(क) संस्कृत में इनका प्रयोग करने के लिये इनसे अर्थसम्बन्ध के अनुसार विभक्तियां लगाने का साधारण प्रकार यह है:—

(१) संज्ञा के आगे नाम, नामक, नामधेय, आख्य संज्ञ, संज्ञक आदि नामवाचक शब्द अथवा इनके पहले 'इति' लगाकर इतिनाम, इतिनामक, इत्याख्य आदि शब्द पुंलिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग में और नाम्नी, नामिका, नामधेया, आख्या, संज्ञा, संज्ञिका अथवा इतिनाम्नी, इतिनामिका, इत्याख्या आदि शब्द स्त्रीलिङ्ग में जोड़कर उनसे अर्थानुसार विभक्तियां लगाई जाती हैं और 'नगर' आदि विशेष्यवाचक शब्द भी साथ लगाये जाते हैं। पहले शब्द का लिङ्ग 'नगर' आदि विशेष्य के अनुसार पुं० स्त्री० आदि होता है। जैसे—

मेरा भाई कलकत्ता में रहता है।

मम भ्राता कलकत्तानाम्नि (कलकत्तेतिनाम्नि) नगरे निवसति। इसी प्रकार कलकत्तानामके-नामधेये-संज्ञे-संज्ञके नगरे, कलकत्ताख्ये नगरे इत्यादि, कलकत्तेतिनामके-नामधेये-संज्ञे नगरे-इत्यादि।

मम भ्राता कलकत्तानाम्न्यां (कलकत्तेतिनाम्न्याम्) नगर्यां निवसति। इसी प्रकार कलकत्तानामिकायाम्, कलकत्तेतिनामिकायाम्, कलकत्ताख्यायाम्, कलकत्तेत्याख्यायाम् नगर्याम्—इत्यादि।

(२) कभीर संज्ञा के आगे केवल 'इति' लगाकर विशेष्य साथ लगाया जाता है। जैसे—

मम भ्राता कलकत्तेति नगरे (नगर्याम्) निवसति।

"पाईति (पाई + इति) धर्मपत्नी धीरवरस्याऽस्य" (प्राचीनलेखमाला, भा० ३, पृ० ७, पं०६)।

(३) संज्ञा के आगे विशेष्य जोड़ा जाता है। जैसे—

मम भ्राता कलकत्तानगरे (कलकत्तानगर्याम्) निवसति।

(४) संज्ञा के बाद 'इति' के साथ इदम् या 'एतत्' शब्द जोड़कर उससे अर्थानुसार विभक्तियां लगाई जाती हैं (इतीदम्, इत्येतत् [नपुं०], इत्ययम्, इत्येषः [पुं०], इतीयम, इत्येषा [स्त्री०] आदि) और विशेष्य नहीं लगाया जाता। परन्तु 'इतीदम्' आदि का लिङ्ग विशेष्य के अनुसार ही होता है। जैसे—

मम भ्राता कलकत्ता इत्यस्मिन् (कलकत्ता इत्येतस्मिन, कलकत्ता इत्यत्र) निवसति।

"भट्टिकाव्यम्। तुकाराम जावजी इत्यनेन.........मुद्रापितम्"

(ख) दूसरा प्रकार है इन संज्ञाओं से ही विभक्तियां लगाकर इनके रूप संस्कृत शब्दों जैसे बना लेना। जैसे—

मौंडूशाहः, साबरमतीः, अहमदाबादम्—इत्यादि।

[इस प्रकार विभक्तियां कुछ ही शब्दों से लगाई जासकती हैं, सबसे नहीं। क्योंकि कई शब्दों के रूप विभक्ति लगाने पर बहुत विकृत होजाते हैं और

उनसे शीघ्र अर्थबोध भी नहीं होता। जैसे 'कलकत्ता' शब्द को पुंलिङ्ग मानकर (जैसा कि हिन्दी में माना जाता है) उससे यदि विभक्ति लगाई जाय तो संस्कृत के 'हाहा' शब्द की तरह 'तृतीया' एक वचन का रूप 'कलकत्ता' होगा, 'पञ्चमी' 'षष्ठी' के एकव० का रूप 'कलकत्तः' और 'सप्तमी' के एकव० का 'कलकत्ति' होगा। इसी प्रकार एकारान्त, ओकारान्त आदि शब्दों के रूप भी बहुत विकृत तथा भद्दे बनते हैं और अर्थ की भी शीघ्र प्रतीति नहीं होती। जिस प्रकार के शब्दों से विभक्तियां लगाई जासकती हैं वे नीचे दिये जाते हैं।]

(क) भौंदूशाह, करीमबख्श आदि अकारान्त पुंलिङ्ग संज्ञाओं के रूप प्रथमा आदि विभक्तियों में संस्कृत के राम, बालक आदि शब्दों के समान बनाये जाते हैं। जैसे—भौंदूशाहः (प्रथमा) भौंदूशाहम् (द्वितीया), भौंदूशाहेन (तृतीया)—इत्यादि। इसी प्रकार करीम बख्श ने=करीमबख्शेन—इत्यादि। इंग्लैण्ड=इंग्लैण्डः=न्यूज़ीलैण्ड=न्यूज़ीलैण्डः, यूरोप=यूरोपः, रूस=रूसः, जापान=जापानः—इत्यादि।

(ख) शहर और गांव की वाचक अकारान्त संज्ञाओं का प्रयोग नपुंसकलिङ्ग में करना चाहिये। जैसे—अहमदाबाद=अहमदाबादम्। सूरत=सूरतम्। हाथरस=हाथरसम्। अजमेर=अजमेरम्। लण्डन=लण्डनम्, पैरिस=पैरिसम्, वीनिस=वीनिसम्—इत्यादि।

["मोऽवासकं नाम ग्रामः" (प्राचीनलेखमाला भाग १, पृ० १५, पं० १८) "खौराच्छकं नाम ग्रामः" (प्राची० लेख० भाग १, पृ० १५, पं० २०) "अस्ति ब्रह्मदत्तं नाम नगरम् तत्र किल काम्पिल्यो नाम राजा" "राजा ब्रह्मदत्तो नगरं काम्पिल्यम्" (स्वप्नवासवदत्त ४ अङ्क) इत्यादि प्रयोगों के अनुसार नगरग्रामवाचक शब्दों का नपुंसकलिङ्ग में प्रयोग करना उचित प्रतीत होता है।

[अकारान्त स्त्रीलिङ्ग गुलनार, नज़ीर, बेगम आदि संज्ञाओं को कोई कोई

आकारान्त (गुलनारा, नज़ीरा, बेगमा) बनाकर उनके रूप 'शाला' शब्द की तरह बनाते हैं-नजीरा, (प्र०, नजीराम् (द्वि०) नजीरया (तृ०) नजीरायै (च०) इत्यादि। परन्तु ऐसा करने का अधिक प्रचार नहीं है।]

(ग) आकारान्त पुंलिङ्ग शहरों के नामों को 'नगरी' विशेष्य की अपेक्षा से स्त्रीलिङ्ग मानकर उनके रूप 'शाला' शब्द की तरह बनाने का प्रचार है। संस्कृत के विद्वान् ऐसा प्रयोग करते हैं—स कलिकातायाम् (अथवा कलकत्तायाम्) निवसति।—इत्यादि। इसी के अनुसार ढाका में=ढाकायाम्। छिंदवाड़ा में=छिंदवाड़ायाम्। बड़ौदा में=बड़ौदायाम्-इत्यादि। परन्तु जो इसप्रकार प्रयोग करना पसंद नहीं करते वे कलकत्ता में, ढाका में आदि के लिये कलकत्तानगरे (नगर्याम्, पुर्याम्) ढाकानगरे (नगर्याम्, पुर्याम्) इत्यादि ही प्रयोग करते हैं।

(घ) शहरों के नामों के अतिरिक्त आकारान्त पुंलिङ्ग व्यक्ति-वाचक संज्ञाओं को ह्रस्व (अकारान्त) करके उनके रूप 'बालक' शब्द की तरह बनाने की प्रथा देखने में आती है। जैसे—"बप्पाय प्रथिताय····" (प्रा०ले० भा०१, पृ०४१, पं०४) 'बप्पा' (रावल) शब्द को ह्रस्व करके उसका चतुर्थी का रूप 'बालक' शब्द (बालकाय) की तरह 'बप्पाय' बनाया गया है।

(ङ) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञाओं के रूप 'शाला' शब्द की तरह बनाए जाते हैं। जैसे—मीरा ने कहा=मीरया कथितम्, ज़ेबुन्निसा की सहेली=जेबुन्निसायाः सखी। अमेरिका में सब देशों से अधिक धन है—अमेरिकायां सर्वेभ्योदेशेभ्योऽधिकं धनमस्ति। अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, रूमानिया, अरेबिया, असीरिया, साइबेरिया, कुस्तुन्तुनिया आदि के भी रूप इसी प्रकार बनाए जाते हैं।

(च) ईकारान्त तथा ऊकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों को कोई कोई ह्रस्व करके उनसे 'हरि' तथा 'भानु' शब्द के समान विभक्तियां लगाते हैं। जैसे—"चोडिर्भीमः पिन्नचोडिर्यशस्वी" (प्राचीन ले० मा० भा० ३, पृ० ७ पं० ६), "श्रीसोड्ढदेवेन मठाय दत्तं हेमाद्रिना" (प्रा० ले० मा० भा० २, पृ० १५६, पं० १)। इसी के अनुसार—भंवी ने कहा=भंविना कथितम्। जोखू ने पूछा=जोखुना पृष्टम्—इत्यादि। और कोई कोई ईकारान्त शब्दों को 'दण्डिन्' के समान इनन्त बनाकर विभक्तियां लगाते हैं। जैसे—"कथानायकस्य श्रीगान्धिनो राद्धान्तः" (श्रीगान्धिचरितम्, पृ० २ टिप्पणी)। इसी के अनुसार वास्वानी की राय=वास्वानिनः मतम्— इत्यादि। परन्तु ऐसे शब्दों का प्रयोग पहले बताए गए साधारण प्रकार से ही किया जाना उचित है। जैसे—भंवीत्येतेन कथितम्। जोखू इत्येतेन पृष्टम्—इत्यादि।

(छ) ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञाओं के रूप 'नदी' शब्द की तरह बनाए जाते हैं। जैसे—भागी ने (एक औरत का नाम) कहा= भाग्या कथितम्। दिल्ली में रहते हैं=दिल्ल्यां वसन्ति। गौहाटी से आया= गौहाट्याः आगतः। बम्बई की जनसंख्या=बम्बय्याः जनसंख्या। जोधाबाई का बेटा=जोधाबाय्याः पुत्रः—इत्यादि।

[इनमें बम्बय्याः, जोधाबाय्याः आदि प्रयोग जिनको पंसद न हों या खटकते हों वे इनकी बजाय 'बम्बईनगरस्य' 'जोधाबाईदेव्याः' (अथवा जोधाबाई-राज्ञ्याः)—इस प्रकार लिख सकते हैं। ('बम्बई' के लिये 'मुम्बयी' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जैसे—"मुम्बय्यां निर्णयसागराख्ये यन्त्रालये मुद्रितम्")।

इसी प्रकार दूसरे प्रकार के अनुसार विभक्तियां लगाकर बनाए हुए और भी जो जो प्रयोग खटकते हों उनकी बजाय पहले प्रकार के अनुसार (नाम, इतिनाम आदि शब्द या विशेष्य लगाकर बनाए हुए) रूप लिखे जासकते हैं। दोनों प्रकारों में से जिस प्रकार के अनुसार वाक्यरचना अच्छी बने उसी प्रकार का अवलम्बन करना चाहिये।]

यथासंभव इन्हीं (ऊपर बताए) दोनों प्रकारों के अनुसार नहरू, सैयद, मोटर, बाइसिकल आदि देशी विदेशी जातिवाचक संज्ञाओं से भी विभक्तियां लगाई जाती हैं।

उदाहरण—

गोरामल और करीमबख्श दोनों एक ही स्कूल में पढ़ते हैं=
गोरामलः करीमबख्शश्च द्वावपि एकस्यामेव पाठशालायां पठतः।
साबरमती अहमदाबाद में है=
साबरमतीः अहमदाबादे अस्ति।
छंगन का बाप जलालपुरजट्टां में रहता है=
छंगनस्य पिता 'जलालपुरजट्टां' इत्यत्र (इत्याख्ये पत्तने) निवसति।
आस्ट्रेलिया में गेहूं बहुत होता है=
आस्ट्रेलियायां गोधूमो बहुः भवति (उत्पद्यते)।
जापान ने बड़ी तरक्की पाई है=
जापानेन (जापानदेशेन) महती उन्नतिः प्राप्ता (महान् अभ्युदयः= उत्कर्षः अधिगतः)।
मेरा भाई त्रिचनापली में रहता है=
मम भ्राता त्रिचनापल्यां वसति।

ग्रीस का प्रतापी सम्राट् एलैग्ज़ैण्डर=

यवनानां (यवनदेशस्य) प्रतापी सम्राट् अलक्ष्येन्द्रः (एलैग्ज़ैण्डरः)।

बिहार की राजधानी पटना है=

मगधानां (मगधदेशस्य), राजधानी पाटलिपुत्रम् अस्ति।

आसाम में गौहाटी प्रसिद्ध नगर है=

कामरूपेषु (कामरूपदेशे) गौहाटीः (गौहाटीत्येतत्) प्रसिद्धं नगरमस्ति।

जेहलम और चनाब के बीच के भूभाग को 'चज' कहते हैं=

वितस्तायाः चन्द्रभागायाश्च मध्यवर्तिनं भूभागं 'चज'नाम्ना कथयन्ति।

पहले अल्लाहाबाद यू० पी० की राजधानी थी, अब लखनऊ है=

पू॰ (पुरा) प्रयागः संयुक्तप्रदेशस्य राजधानी आसीत्, इदानीं लखनऊनगरम् (लक्ष्मणपुरम्) अस्ति।

अभ्यास १.

१. चित्तौड़ का किला जैमल और फत्ता की बहादुरी का साक्षी है। २. मेवाड़ की स्वतन्त्रता के लिये भामाशाह ने अपनी सारी संपत्ति परताप के पैरों पर रख दी। ३. कोट कमालिया कमालखाँ का बसाया हुआ है। ४. आजकल मुहम्मद सआदतखाँ कमालिये का रईस है। ५. चनाब की नहर बनने से चन्योट और झंग के जंगली इलाके आबाद हो गये हैं। ६. खानगढ़ मुलतान के नवाब मुज़फ्फरखाँ की बहन खानबीबी ने बसाया था। ७. सरहिंद लुधियाना और अंबाला के बीच में है।

८. पञ्जाब के लोग बड़े मिलनसार होते हैं। ९. यह लल्लो और कालू की कारस्तानी हैं। १०. बम्बई में चौपाटी का नज़ारा अद्भुत है।

दूसरा अध्याय।

जातिवाचक संज्ञाएं।

मनुष्य, पशु, पक्षी, पुरुष, स्त्री, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, राजा, प्रजा, सभा, सेना, गृह, वस्त्र, शस्त्र आदि तत्सम संज्ञाएं हैं। ये संस्कृत-अनुवाद में इसी रूप में प्रयुक्त होती हैं, यह पहले लिख दिया गया है। परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं कि यदि हिन्दी में ये शब्द आएं तो उनके संस्कृत-अनुवाद में अवश्य इन्हीं को रक्खा जाय, किन्तु इच्छानुसार यही शब्द अथवा इनके समानार्थक (पर्याय) और शब्द प्रयुक्त किये जा सकते हैं। हिन्दी में 'ब्राह्मण' शब्द है तो उसके संस्कृत-अनुवाद में इच्छानुसार वही (ब्राह्मण) शब्द अथवा उसका समानार्थक 'विप्र' या 'द्विज' शब्द रक्खा जा सकता है। जैसे—ब्राह्मण की बड़ाई ज्ञान से होती है=ब्राह्मणस्य (विप्रस्य, द्विजस्य) महत्ता (प्रशंसा) ज्ञानेन भवति।

घोड़ा आदि संज्ञाएं 'घोटक' आदि संस्कृत शब्दों से बनी होने के कारण तद्भव हैं। यहां भी यह नियम नहीं कि 'घोड़ा' शब्द के संस्कृत-अनुवाद में वही शब्द (घोटक) रक्खा जाय, जिससे कि वह बना है, किन्तु घोटक, अश्व, वाजी आदि घोड़े का वाचक कोई भी शब्द रक्खा जासकता है। जैसे—

प्रताप के घोड़े 'चेतक' ने अपनी जान देकर उसकी जान बचाई= प्रतापस्य घोटकेन (अश्वेन, वाजिना) 'चेतकेन' स्वं जीवनं दत्त्वा तस्य जीवनं रक्षितम् ।

अपवाद—परन्तु मालवीय, दुब्वे, नहरू, सैयद आदि अवान्तर जातिवाचक संज्ञाओं के संस्कृत-अनुवाद में (व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के समान) मालवीय आदि तत्सम शब्दों के लिये वही (मालवीय आदि) शब्द रक्खे जाते हैं । जैसे—मदनमोहन मालवीय = मदनमोहनः मालवीयः ।

दुब्वे आदि तद्भव शब्दों के लिये उनके मूल संस्कृत शब्द 'द्विवेद' आदि रक्खे जाते हैं । जैसे – दुर्गाप्रसाद दुब्वे= दुर्गाप्रसादः द्विवेदः (इसी प्रकार चौबे=चतुर्वेदः, ओझा (झा)= उपाध्यायः, बैनर्जी=वन्द्योपाध्यायः; मुकर्जी=मुखोपाध्यायः, चैटर्जी=चट्टोपाध्यायः, ठाकुर=ठक्कुरः इत्यादि) ।

नहरू, सैयद आदि देशी तथा विदेशी शब्दों के लिये वही (नहरू, सैयद आदि) शब्द 'उपनाम' 'उपाख्य' 'उपाह्व' अथवा 'इत्युपनाम' 'इत्युपाख्य' 'इत्युपाह्व' आदि शब्दों में से कोई एक शब्द आगे जोड़कर विशेष्य के पहिले रक्खे जाते हैं। जैसे—मोतीलाल नहरू=नहरूपनामा (नहरूपाख्यः) मोतीलालः । सैयद करीमशाह=सैयदोपनामा (सैयदोपाख्यः, सैयदेत्युपाख्यः) करीमशाहः । घनश्यामदास बिड़ला= बिडलोपनामा (बिडलोपाह्वः, बिडलेत्युपाख्यः) घनश्यामदासः । मनहर वरवे=वरवे इत्युपाख्यः मनहरः – इत्यादि ।

जिन देशी, विदेशी जातिवाचक शब्दों के लिये संस्कृत शब्द मिलते हैं या वर्तमान में कल्पित किये गये और प्रचलित हो गये हैं, उनका अनुवाद उन शब्दों से ही किया जायगा । जैसे—गीदड़,

मैना, उड़द, जहाज़, फ़सील, शबील, किताब, तख्त, यूनिवर्सिटी, कालेज, कोर्ट आदि के लिये यथाक्रम शृगालः, सारिका, माषाः, पोतः (वहित्रम्), प्राचीरम्, प्रपा, पुस्तकम्, सिंहासनम्, विश्वविद्यालयः, विद्यालयः, धर्माधिकरणम् (न्यायालयः) आदि संस्कृत शब्द मिलते हैं, और रेलगाड़ी आदि के लिये अर्थानुसार वाष्पयान (वाष्पशकटी) आदि संस्कृत शब्द कल्पित किये जाकर प्रचलित हो गये हैं। जैसे—

रेलगाड़ी = वाष्पयानम् (वाष्पशकटी)
रेलवे लाइन = लोहमार्गः
हवाई जहाज़ = वायुयानम् (आकाशयानम्)
लेजिस्लेटिव कौंसिल=व्यवस्थापिका (पक) सभा
,, ऐसेम्बली=व्यवस्थापिका (पक) महासभा
सैक्रेटरी आफ स्टेट फार इण्डिया=भारतसचिवः
प्राविंस = प्रदेशः
ज़िला = प्रान्तः*
प्रैज़िडेंसी = मण्डलम
सब्जैक्ट्स कमेटी= विषयनिर्धारिणी सभा (समितिः)
ऐग्ज़ेक्टिव् कमेटी= कार्यकारिणी सभा (समितिः)
कान्फ्रेंस = सम्मेलनम्—इत्यादि।

---

*कई 'प्राविंस' के लिये भी 'प्रान्त' शब्द का प्रयोग करते हैं; जैसे—संयुक्तप्रान्त=(संयुक्तप्रदेश)। इसी प्रकार कई 'मण्डल' शब्द का प्रयोग 'ज़िले' के लिये भी करते हैं; जैसे—ज़िला होश्यारपुर के लुहारा गांव का रहनेवाला=होश्यारपुरमण्डलान्तर्गतलुहाराग्रामवास्तव्यः।

परन्तु जिन मोटर, बाइसिकल आदि के लिये संस्कृत शब्द नहीं मिलते और वर्तमान में कल्पित भी नहीं हुए, उनके संस्कृत-अनुवाद में वही (मोटर आदि) शब्द (यथासंभव केवल अथवा यान आदि विशेष्य आगे लगाकर) रखने चाहिये। उनका प्रयोग नपुंसकलिङ्ग में करना चाहिये। जैसे—

तुम्हारी मोटर मज़बूत है=युष्माकं मोटरं (मोटरयानम्)दृढमस्ति।
यहां बहुत बाइसिकल हैं=अत्र बहूनि बाईसिकलानि सन्ति।
अमरीका में बने मोटरसाइकल बढ़िया होते हैं=अमरीकायां (अमेरिकायां) निर्मितानि मोटरसाइकलानि उत्तमानि भवन्ति—इत्यादि।

[कई विद्वान् पाजामा, मोटर आदि के लिये शब्दसादृश्य रखनेवाले (शब्दों में मिलतेजुलते) पादायाम: (पावों तक लंबा वस्त्र), मृत्तर: (मृत्=मट्टी [सड़क] को तर जानेवाली गाड़ी) आदि, और बाइसिकल (बाइ=दो साइ-कल=पहिये=दो पहियोंवाला) आदि के लिये अर्थसाम्य रखनेवाले (समानार्थक) 'द्विचक्रयानम्' या 'द्विचक्रिका' आदि संस्कृत शब्द कल्पना करते हैं। ऐसी कल्पनाएं प्राय: उपयोगशून्य होती है। क्योंकि इसप्रकार के कल्पित शब्द प्रयोग में तभी लाये जाते हैं जब ये प्रचलित होजाते हैं। जैसे—रेलगाड़ी के लिये 'वाष्पशकटी' शब्द प्रचलित हो गया है और इसलिये यह प्रयुक्त भी होता है। परन्तु यदि कोई किसी शब्द के लिये इच्छानुसार कोई संस्कृत शब्द कल्पना करके प्रयोग करे तो उस शब्द से (प्रचार न होने के कारण) विवक्षित पदार्थ का बोध नहीं होता और बोध के बिना उसका प्रयोग करना व्यर्थ है—उसका कोई उपयोग नहीं। इसलिये पाजामा, मोटर आदि के लिये पादायाम:, मृत्तर: आदि के स्थान 'पाजामासंज्ञकं (पाजामेत्याख्यं) वस्त्रम्,' 'मोटरम् (मोटरयानम्)' लिखना ही उपयुक्त है।]

अभ्यास २.

१ गायनाचार्य विष्णुदिगम्बर पलुस्कर ने उत्तरी हिन्दुस्तान के तमाम बड़े शहरों में संगीत का प्रचार किया । २. राजपूताने में स्त्रियां लाख की चूड़ियाँ बहुत पहनती हैं । ३. बनिये की कमाई ब्याह या मकान में खर्च हो जाती है । ४. ऊँटों के ब्याह में गधे गवैये । ५. हरविलास शारदा ने बालविवाह रोकने के लिये बड़ी कोशिश की है । ६. धोबी कपड़े लाया है । ७. इस गली में चमार, लुहार, सुनार और बढ़ई रहते हैं । ८. मुहम्मद-शाह चिश्ती, कृष्णनाथ कच्चू और श्यामसुन्दर चोपड़ा एक ही स्कूल में पढ़ते थे । ९. तेरा भाई किस कालेज में पढ़ता है । १०. मेरा भतीजा आगरा यूनीवर्सिटी में पढ़ता है ।

तीसरा अध्याय ।

भाववाचक संज्ञाएं ।

भोजन, भजन, गमन, ज्ञान, गति, शुद्धि, बुद्धि, वृद्धि, आलाप, प्रताप, प्रभाव, उद्गम, जप, विनय, इच्छा, क्रिया, मधुरता, धैर्य, प्रभुत्व, चातुरी, महिमा आदि भाववाचक संज्ञाएं तत्सम हैं । संस्कृत-अनुवाद में इच्छानुसार इन्हीं शब्दों को अथवा इनके समानार्थक (पर्याय) अन्य शब्दों को रख सकते हैं । जैसे— तुम्हारी वृद्धि हो=तव वृद्धिः (अभ्युदयः) अस्तु । तेरी इच्छा पूरी हो=तव इच्छा पूर्णा (अभिलाषः=मनोरथः पूर्णः) भवतु—इत्यादि ।

पढ़ना, करना, जे, धीरज, लाज, नींद, बूझ, राज, उठान आदि

तद्भव हैं, जिनके मूल संस्कृत शब्द क्रम से पठन, करण, जय, धैर्य, इच्छा, निद्रा, बोध, राज्य, उत्थान हैं। संस्कृत-अनुवाद में इच्छानुसार इनके मूल संस्कृत शब्दों को अथवा इनके समानार्थक दूसरे शब्दों को रख सकते हैं। जैसे – पढ़ना अति कठिन है=पठनम् (अध्ययनम्) अतिकठिनम् अस्ति। उसे इतनी बूझ नहीं है=तस्य एतावान् बोधः (एतावत् ज्ञानम्) नास्ति।–इत्यादि।

विदेशी भाववाचक शब्दों के लिये आजकल बहुत से संस्कृत शब्द निरन्तर प्रयोग से प्रचलित (रूढ) हो गये हैं। अनुवाद में उन्हीं का प्रयोग होना चाहिये। जैसे—

नॉन-कॉऑपरेशन=असहयोगः
मूवमैंट=आन्दोलनम्।
प्रोग्राम=कार्यक्रमः
इन्तज़ाम=प्रबन्धः*—इत्यादि।

---

*संस्कृतसाहित्य में 'प्रबन्ध' शब्द का 'इन्तज़ाम' के अर्थ में प्रयोग नहीं आता। परन्तु वर्तमान में संस्कृतज्ञ इस अर्थ में इसका प्रयोग करते हैं, क्योंकि हिन्दी में यह इस अर्थ में प्रचलित हो गया है। संस्कृत में 'इन्तज़ाम' के लिये 'संविधा' 'संविधान' शब्द आते हैं "सर्वस्तत्संभावना-संविधा उपकल्पिताः" (उसके सत्कार का सब इन्तज़ाम कर दिया गया है)। परन्तु 'व्यापार' शब्द का हिन्दी में तिजारत के अर्थ में प्रयोग होने पर भी संस्कृतज्ञ संस्कृत में इसका इस अर्थ में प्रयोग नहीं करते, इसलिये 'तिजारत' के लिये संस्कृत में 'व्यापार' शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिये। संस्कृत में 'व्यापार' शब्द 'क्रिया (कार्य)' के अर्थ में ही आता है। जैसे "किंव्यापारो महर्षिः" (महर्षि क्या [कार्य] कर रहे हैं)।

देशी भाववाचक संज्ञाओं में से अनुकरणवाचक छनछन, झनझनाहट, गड़गड़ाहट आदि के लिये संस्कृत शब्द नीचे लिखे प्रकारों से बनाये जाते हैं:—

(१) कोमलशब्दवाचक 'झनझन्' आदि के आगे 'अत्' और कर्कशशब्दवाचक 'गडगड' आदि के आगे 'आत्' जोड़कर (और 'झनझन' आदि के 'न' को 'ण' करके) और आगे 'कार' 'कृति' या 'कृत' लगाकर छणछणत्कारः, छणछणत्कृतिः, छणछणत्कृतम्, गडगडात्कारः, गडगडात्कृतिः, गडगडात्कृतम्—आदि शब्द बनाए जाते हैं। छणछणत्कार आदि के स्थान केवल छणत्कार आदि का प्रयोग अधिक होता है।

(२) 'छणछणत्' 'गडगडात्' आदि के आगे 'इति' लगाकर और यथायोग्य 'रणित' 'ध्वनि' आदि विशेष्य जोड़कर छणछणदिति रणितम्, गडगडादिति ध्वनिः—इत्यादि प्रयोग बनाए जाते हैं।

(३) 'छणछण्', 'झणझण्' आदि के आगे 'इति' लगाकर छणछणिति, झणझणिति या केवल छणिति, झणिति आदि शब्द प्रयोग किये जाते हैं। इसी प्रकार 'छमछम' आदि के लिये 'छमच्छमिति' या 'छमच्छमिति' आदि भी। जैसे—"स्वचरणविनिविष्टैर्नूपुरैर्नर्तकीनां झणिति रणितमासीत्तत्र चित्रं कलञ्च" "नूनं छमच्छमिति बाष्पकणाः पतन्ति"। इत्यादि।

(४) छनछन, झनझन, आदि कोमल शब्दवाचकों के 'न' को 'ण' करके आगे यथायोग्य कोमल शब्दवाचक 'रणित', 'निनद' आदि लगाये जाते हैं। जैसे—छणछणरणितम्, झणझणनिनदः-इत्यादि। कर्कशशब्दवाचकों पटपट, गडगड आदि को दीर्घान्त ('पटपटा,

गडगडा' आदि) बनाकर आगे यथायोग्य शब्द, नाद, ध्वनि आदि विशेष्य जोड़े जाते हैं। जैसे—पटपटाशब्दः(नादः, ध्वनिः, ध्वानः), गडगडाशब्दः (नादः, ध्वनिः, ध्वानः), किलकिलाशब्दः (किलकारी), हलहलाशब्दः (होहल्ला)—इत्यादि।

(५) पटपट करना, गड़गड़ करना, किलकना (किलकारी मारना) आदि के लिये आनेवाले पटपटाय् (पटपटायते), गडगडाय् (गडगडायते), किलाकिलाय् (किलकिलायते) आदि नामधातुओं के 'क्त' प्रत्ययान्त रूपों का भी प्रयोग किया जाता है—पटपटायितम्, गडगडायितम्, किलकिलायितम्। इसी प्रकार छणछणायितम् (छनछन), झणझणायितम् (झनझन), छलछलायितम् (छलछल)—इत्यादि।

कुछ एक पशुओं और पक्षियों की बोलियों के लिये संस्कृत में विशेष शब्द आते हैं। जैसे—

घोड़े का हिनहिनाना = हेषितम्, ह्रेषितम्, हेषा, ह्रेषा
हाथी का चिंघाड़ना = बृंहितम्
कुत्ते का भौंकना = भषणम्, भषितम्, बुक्कनम्
शेर का दहाड़ना = गर्जितम्, गर्जनम्, नादः
बैल का गर्जना = गर्जितम्, गर्जनम्, नादः
गाय का रँभाना = रम्भितम्, रम्भणम् (तन्द्रनम)
गीदड़ आदि का शब्द = वाशितम्, रुतम्
भेड़िये का शब्द = बुक्कनम्, रेषणम्, रेषा
कोयल हंस आदि का शब्द = कूजितम्, कूजनम्
भौंरों का गूंजना = गुञ्जितम्, गुञ्जनम्
मोर की कूक = केका

बादल आदि के शब्द के लिये संस्कृत में प्रायः नीचे लिखे शब्द आते हैं:—

बादल का गर्जना = गर्जितम् (गर्जनम्), स्तनितम्
सितार वीणाआदि का शब्द=रणितम्, क्वणितम्, निनदः
गहनों का शब्द = शिञ्जितम्, रणितम्
धनुष का शब्द = विस्फारः
पेट का शब्द (गुड़गुड़ाना)=कर्दनम्
पत्तों, कपड़ों आदि का शब्द=मर्मरः
ढोल का शब्द =डमरः
अन्य अनुकरणवाचक शब्द ये हैं :—
भौंरों का शब्द = झङ्कारः
कोयल की कूक = कुहूरुतम्
धनुष का शब्द = टङ्कारः
घण्टा आदि का शब्द (टन टन)=टङ्कारः (टणत्कारः)
गाय का रँभाना = हंभारवः (हंभाशब्दः)
सूअर का गुर्राना = घुर्घुरायितम्
क्रोधसूचक शब्द = हुङ्कारः (हुङ्कृतिः, हुङ्कृतम्)
चूंचूं (पक्षियों के बच्चों आदि का शब्द)=चुङ्कारः (चुङ्कृतम्)
उल्लू आदि का 'घू घू' शब्द=घूत्कारः

उदाहरण—

शेरों की दहाड़ और हाथियों की चिंघाड़ से जंगल काँप उठा=सिंहानां गर्जितेन (नादेन) हस्तिनां बृंहितेन च वनम् प्राकम्पत ।

गहनों की छनछन सुनाई देती है=

भूषणानां छणत्कारः (छणत्कृतम् , छणच्छणदिति [छणिति] रणितम्, छणच्छणरणितम् , छणच्छणायितम्) श्रूयते । इत्यादि ।

हिन्दी की भाववाचक कृदन्त संज्ञाओं का अनुवाद प्रायः अन (ल्युट्), अ (घञ्, अप्) और ति (क्तिन्) प्रत्ययान्त शब्दों से किया जाता है ।

ना, न, आन आई और आवा प्रत्ययान्त व्यापार (क्रिया) वाचक शब्दों का अनुवाद प्रधानतया अन (ल्युट्) प्रत्ययान्त शब्दों से किया जाता है। (मेरा वहां जाना आवश्यक है=मम तत्र गमनम् आवश्यकम्-इस प्रकार 'जाना' के लिये 'गमन' अनप्रत्ययान्त शब्द का ही प्रयोग किया जाता है। मम तत्र गतिरावश्यकी-इस प्रकार 'गति' 'तिप्रत्ययान्त शब्द' का प्रयोग कोई बिरला ही करताहै)। जैसे—

जाना=गमनम्, सोना=शयनम्, देना=दानम्—इत्यादि ।

हिन्दी के आई, पन, औती, आपा, आन, आहट, ई, आयत आदि-प्रत्ययान्त तद्धित शब्दों का अनुवाद ता, त्व, य (ष्यञ्), इमन् (इमनिच्)आदि प्रत्ययान्त तद्धित शब्दों से किया जाता है। जैसे—

आई—गहराई=गम्भीरता, गम्भीरत्वम् गाम्भीर्यम् ।

ढिठाई=धृष्टता, धृष्टत्वम्, धार्ष्ट्यम् ।

रुखाई=रूक्षता, रूक्षत्वम्, रौक्ष्यम् ।

चतुराई=चतुरता, चतुरत्वम्, चातुर्यम् ।

पन—कालापन=कृष्णता, कृष्णत्वम् , कार्ष्ण्यम् ।

ढीलापन=शिथिलता, शिथिलत्वम् , शैथिल्यम् ।

बड़प्पन=महत्ता, महत्त्वम् , महिमा (इमन्) ।

हलकापन=लघुता, लघुत्वम् , लघिमा, लाघवम् (अण्) ।

भरापन (बड़ाई)=गुरुता, गुरुत्वम्, गरिमा, गौरवम् (अण्)
औती-बुढ़ौती=वृद्धता, वृद्धत्वम् (वार्धकम्, वार्धक्यम्)।
आपा-बुढ़ापा= ,, ,, ,, ,,
मोटापा=स्थूलता, स्थूलत्वम्, स्थौल्यम्।
आन-ऊँचान=उच्चता, उच्चत्वम्।
चौड़ान=विशालता, विशालत्वम्।
आहट-कड़वाहट=कटुता, कटुत्वम् काटवम् (अण्)।
चिकनाहट=चिक्कणता, चिक्कणत्वम्,
ई—चोरी=चौर्यम् (चोरता, चोरत्वम्)।
जवानी=यौवनम् (युवता, युवत्वम्), तरुणता, तरुणत्वम्, तारुण्यम्, तरुणिमा।
आयत-बहुतायत=बहुत्वम् (भूमा), बहुलता, बहुलत्वम्, बाहुल्यम्।

[ष्यञ् प्रत्यय प्रायः सब गुणवाचक तथा कुछ संज्ञावाचक अकारान्त शब्दों से होता है, परन्तु प्रयोग इसका कुछ ही शब्दों में देखा जाता है। क्योंकि इसके योग से बहुत से शब्द भद्दे और श्रुतिकटु हो जाते हैं, शोभा नहीं देते। जैसे—=धाष्टर्यम्, काष्र्ण्यम्, कृत्स्न से कात्स्न्र्यम्, उच्च से औच्च्यम्, चिक्कण से चैक्कण्यम्, वृद्ध से वार्द्धयम्, इत्यादि। इमनिच् प्रत्यय भी बहुत से गुणवाचक शब्दों से आता है, परन्तु इसका भी प्रयोग कुछ ही शब्दों में देखा जाता है (जैसा कि ऊपर के उदाहरणों में दिखाया गया है)। ई (ङीष्) उन सब शब्दों से आता है जिन में ष्यञ् प्रत्यय होता है। जैसे—चातुर्य=चातुरी, माधुर्य=माधुरी—इत्यादि। अण् प्रत्यय भी कुछ ही शब्दों से आता है। अकारान्त शब्दों से जैसे—'कुशल' से कौशलम् (कुशलत्वम्,

कुशलता, कौशल्यम्), 'निपुण' से **नैपुणम्** (निपुणत्वम्, निपुणता, नैपुण्यम्), 'पुरुष' से **पौरुषम्** (पुरुषत्वम्, पुरुषता), 'चपल' से **चापलम्** (चपलत्वम्, चपलता, चापल्यम्) । उकारान्त शब्दों से, जैसे--'गुरु' से **गौरवम्** 'लघु' से **लाघवम्**, 'मृदु' से **मार्दवम्**, (मृदुता, मृदुत्वम्, म्रदिमा)--इत्यादि । कुछ शब्दों से **अक** (वुञ्) प्रत्यय भी आता है । जैसे--'सहाय' से **साहायकम्** (साहाय्यम्, सहायता, सहायत्वम्), 'रमणीय' से **रामणीयकम्** (रमणीयत्वम्, रमणीयता)--इत्यादि । (विशेष व्याकरण में देखें) ।

उदाहरण—

उसका करना न करना बराबर है=तस्य करणम् अकरणं च समानम् ।

उन दोनों का आपस में लेनदेन है=तयोः द्वयोः परस्परम् आदानप्रदानम् अस्ति ।

दुश्मनों ने चढ़ाई की=शत्रुभिः आक्रमणं कृतम् । कुएं की खुदाई शुरू करदी=कूपस्य खननम् आरब्धम् ।

लड़कों की पढ़ाई का कैसा हाल है ?=बालानां पठनस्य कीदृशो वृत्तान्तः ?

रिश्तेदारों का बुलावा आया है=सम्बन्धिनाम् आमन्त्रणम् आगतम् ।

पठानों का पहिरावा अच्छा नहीं=पठानानां परिधानं शोभनम् नास्ति ।

इन कपड़ों की रंगाई क्या है=एतेषां वस्त्राणां रञ्जनमूल्यं किम् ?

तुम्हारी लिखावट अच्छी नहीं=तव लेखः शोभनो नास्ति ।

भले काम में बहुत रुकावटें आती हैं=सत्कार्ये बहवः प्रतिबन्धा आपतन्ति ।

वहां मेरी पहुँच नहीं=तत्र मम गतिः नास्ति ।

बिजली की चमक बहुत तेज़ है=विद्युतः प्रकाशः अतितीव्रः विद्यते ।

समझ से किया काम सफल होता है=बुद्ध्या (विचारेण) कृतं कार्यं सफलं भवति ।

जाँच से साबित होजाता है कि भलों की सीख से लाभ ही होता है=परीक्षया (परीक्षणेन) सिद्धं भवति यत् सतां (सज्जनानाम्) शिक्षया लाभ एव भवति ।

आज कितनी खरीद हुई ?=अद्य कियान् क्रयः जातः ?

मुश्किल से बचाव हुआ=कृच्छ्रेण रक्षा जाता ।

हररोज़ तुम्हारी झिड़कियां कैसे सहूं=प्रतिदिनं युष्माकं भर्त्सनानि (भर्त्सनाः) कथं सहेय ।

ईश्वर तुम्हारी बढ़ती करे=ईश्वरः युष्माकं वृद्धिं कुर्यात् ।

इन चीज़ों की गिनती करो=एषां वस्तूनां गणनां कुरु ।

तेल की मालिश से शरीर पुष्ट होता है=तैलस्य मर्दनेन (अभ्यङ्गेन) शरीरं पुष्टं भवति ।

जवाहिरात की जगमगाहट से आंखें चुंधिया गईं=रत्नानां प्रकाशेन (प्रदीप्त्या, उद्द्योतेन) नेत्रे प्रतिहते जाते ।

यहां समुन्दर की गहराई ज्यादा है=अत्र समुद्रस्य गाम्भीर्यम् अधिकमस्ति ।

रामलाल, ढिठाई छोड़दे=
रामलाल धृष्टतां त्यज (परिहर, मुञ्च)।

उसने रुखवाई से जवाब दिया=
स रौक्ष्येण उत्तरं दत्तवान् ।

बड़प्पन से आदर और हलकेपन से तिरस्कार होता है=
महत्त्वेन(महिम्ना, गौरवेण) आदरः लघुत्वेन (लाघवेन) च तिरस्कारः भवति (जायते ।

बुढ़ौती (बुढ़ापे) में लकड़ी के सहारे बिना चलना कठिन है=
वृद्धत्वे (वार्धक्ये, वार्धके) यष्ट्या अवलम्बं विना गमनं कठिनम् (दुःशकम्)।

इस मकान की उँचान और चौड़ान कितनी है?=
अस्य भवनस्य उच्चता विशालता च कियती (किंपरिमाणा) ?

कड़वाहट के कारण मैं यह दवाई नहीं खा सकता=
काटवस्य (कटुतायाः) कारणात् अहम् इमाम् ओषधिम् भोक्तुं न शक्नोमि।

चोरी मत कर=चौर्यं मा कुरु।

जब तक जवानी है तब तक धन कमाले=
यावत् यौवनम् (तारुण्यम्) तावत् धनम् अर्जय।

बंगाल में चावल बहुतायत से होते हैं=
बङ्गेषु (वङ्गदेशे) ताण्डुला बाहुल्येन (भूम्ना) भवन्ति ।

अभ्यास ३.

१. छापाखाने की गड़गड़ाहट से जी घबराता है। २. पायजेबों की झनझन और चूड़ियों की छनछन। ३. दिन को कौओं की 'काँ काँ' और रात को उल्लुओं की 'घू घू' के कारण नींद नहीं आती। ४. यह चिल्लाहट किसकी? ५. यह पटाखा किधर हुआ? ६. इस पहाड़ की चढ़ाई मुश्किल है। ७. तेरी पण्डिताई देख ली। ८. यहां सरदी ज्यादा नहीं होती। ९. महल की सजावट बढ़िया है। १०. तुझे क्या बीमारी है? ११. खुशकिस्मती से बचाव हो गया। १२. गरीबी बड़ा पाप है। १३. दिलबहलाव के लिये यह बाजा खरीदा है। १४. सब भाइयों का आपस में मनमुटाव है। १५. लड़कपन खेल में खोया। १६. भूखप्यास के मारे जान निकल रही है। १७. बीमारी का इलाज करना चाहिये। १८. झगड़ा न कर। १९. हीरों की जगमगाहट से अंधेरा दूर हो गया। २०. कच्ची दाख में खटास होती है।

——:o:——

चौथा अध्याय ।

१. संज्ञाओं के लिङ्ग ।

हिन्दी में दो ही लिङ्ग होते हैं—पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग। परन्तु संस्कृत में (इंग्लिश, मराठी आदि के समान) तीन लिङ्ग होते हैं—पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग , और नपुंसकलिङ्ग ।

कौन संस्कृत शब्द किस लिङ्ग में आता है—यह जानने के लिये निश्चित नियम नहीं स्थिर किये जा सकते; क्योंकि एक ही वस्तु के वाचक संस्कृत शब्द भिन्न २ लिङ्गों में आते हैं। जैसे—शरीर के वाचक शब्दों में से 'शरीर' नपुंसक में, 'काय' पुंलिङ्ग में, 'देह' पुं० नपुं० में, 'तनु (तनू)' और 'मूर्ति' स्त्रीलिङ्ग में आते हैं। यहां तक कि जिनमें पुरुषत्व और स्त्रीत्व के कारण भेद स्पष्ट है उनके वाचक शब्द भी नियत रूप से पुंलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में न आकर भिन्न २ लिङ्गों में आते हैं। जैसे—औरत (जिसमें स्त्रीत्व स्पष्ट है) का वाचक 'दार' शब्द पुंलिङ्ग और 'कलत्र' शब्द नपुंसकलिङ्ग है। इसी कारण "व्याकरण-महाभाष्य" में यह फसला दे दिया गया है कि लिङ्ग-ज्ञान के लिये नियम नहीं बनाये जा सकते; क्योंकि (जीवित-भाषाओं में) शब्दों का लिङ्ग उनके प्रयोग करने वाले लोगों के अधीन होता है—"लिङ्गमशिष्यं लोकाश्रयत्वाल्लिङ्गस्य" ।

इसलिये संस्कृत शब्दों का लिङ्ग-ज्ञान संस्कृतकोष से, संस्कृत पढ़ते समय कौन शब्द किस लिङ्ग में प्रयुक्त हुआ है—इस बात का ध्यान रखने से तथा निरन्तर अभ्यास और प्रयोग से ही हो सकता है (लिङ्गानुशासन के नियमों से भी लिङ्ग-ज्ञान में कुछ सहायता मिल सकती है)। साधारणतः इतना कहा जा सकता है कि प्राणिवाचक शब्दों में से (इनगिने दार, कलत्र आदि शब्दों को छोड़ कर) पुरुष-वाचक शब्दों का पुंलिङ्ग में और स्त्रीवाचक शब्दों का स्त्रीलिङ्ग में प्रयोग करना चाहिये।

पुंलिङ्ग शब्दों से स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाने में प्रधानतया जो प्रत्यय लगते हैं वह नीचे उदाहरणसहित लिखे जाते हैं (विशेष नियम व्याकरण के 'स्त्रीप्रत्यय' प्रकरण में देख लेने चाहिये):—

पुंलिङ्ग शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने में आ (टाप् आदि), और ई (ङीप् आदि) प्रत्यय लगते हैं:—

'आ' (टाप् आदि)—

कुछ अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने में 'आ' प्रत्यय आता है। जैसे—

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
बाल	बाला
महोदय	महोदया
प्रिय	प्रिया
क्षत्रिय	क्षत्रिया
वैश्य	वैश्या

शूद्र	शूद्रा
चटक (चिड़ा)	चटका (चिड़ी)
मूषिक (चूहा)	मूषिका (चूही)
अश्व	अश्वा
गत (गया)	गता (गई)—इत्यादि ।

पाठक, बालक आदि 'क' कारान्त शब्दों से 'आ' प्रत्यय लगने पर 'क' के पूर्ववर्ती 'अ' को 'इ' हो जाती है (परन्तु यह अन्त का 'क' प्रत्यय का होना चाहिये) । जैसे—

पुं०—	स्त्री०—
पाठक	पाठिका
अध्यापक	अध्यापिका
बालक	बालिका
उपदेशक	उपदेशिका
पुत्रक	पुत्रिका
नायक	नायिका
गायक	गायिका—इत्यादि ।

[नर्तक, रजक आदि कुछ शब्द अपवाद हैं, जिनसे 'ई' आता है— नर्तकी, रजकी इत्यादि ।]

'ई' (ङीप् आदि) —

(क) जाति का बोध करानेवाले ब्राह्मण, सिंह, व्याघ्र, हंस, मयूर आदि अकारान्त शब्दों से तथा कुछ अन्य अकारान्त शब्दों से 'ई' प्रत्यय आता है । जैसे—

पुंलिङ्ग—	स्त्रीलिङ्ग—
ब्राह्मण	ब्राह्मणी
सिंह	सिंही

व्याघ्र	व्याघ्री
हंस	हंसी
मयूर	मयूरी
पुत्र	पुत्री
देव	देवी
कुमार	कुमारी
दास	दासी
नद	नदी
सुन्दर	सुन्दरी
तरुण	तरुणी
चतुर्थ	चतुर्थी
लौकिक	लौकिकी
भागिनेय (भानजा)	भागिनेयी
दयामय	दयामयी

[मुख, केश आदि अवयववाचक शब्द जिनके अन्त में होते हैं, ऐसे बहुव्रीहिसमासवाले अकारान्त शब्दों से विकल्प से 'ई' होता है (पक्ष में 'आ' होता है) । जैसे--चन्द्रमुख—चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा, सुकेश—सुकेशी सुकेशा इत्यादि ।]

स्त्री (औरत, घरवाली) के अर्थ में जातिबोधक अकारान्त शब्दों से 'ई' होता है । जैसे—

ब्राह्मण (की स्त्री)	ब्राह्मणी
क्षत्रिय (की स्त्री)	क्षत्रियी
वैश्य (की स्त्री)	वैश्यी

शूद्र (की स्त्री) शूद्री
गोप [ग्वाला] (की स्त्री) गोपी—इत्यादि ।

कुछ अकारान्त शब्दों से स्त्री के अर्थ में 'आनी' (आनुक्, ङीष्) प्रत्यय होता है । जैसे—

इन्द्र (की स्त्री)	इन्द्राणी
वरुण (की स्त्री)	वरुणानी
भव [शिव] (की स्त्री)	भवानी } * (पार्वती)
रुद्र [शिव] (की स्त्री)	रुद्राणी } * (पार्वती)
आचार्य (की स्त्री)	आचार्यानी
उपाध्याय [अध्यापक](की स्त्री)	उपाध्यायानी (उपाध्यायी)
मातुल [मामा] (की स्त्री)	मातुलानी (मातुली)

(ख) ऋकारान्त शब्दों से 'ई' आता है:—

हिन्दी	मूलसंस्कृत रूप	स्त्रीलिङ्ग
दाता	दातृ	दात्री
कर्ता	कर्तृ	कर्त्री
घाता	घातृ	घात्री
हर्ता	हर्तृ	हर्त्री—इत्यादि ।

'पितृ' (पिता) तथा 'भ्रातृ' (भ्राता) शब्दों से 'ई' प्रत्यय नहीं होता । 'पितृ' का स्त्रीलिङ्ग रूप 'मातृ' (माता) है और 'भ्रातृ' का 'स्वसृ' (स्वसा, भगिनी) है ।

(ग) व्यञ्जनान्त शब्दों से 'ई' आता है:—

---

*इसीप्रकार मृडानी, शर्वाणी (पार्वती) ।

हिन्दी	मूलसंस्कृत रूप	सं० स्त्री०
भगवान्	भगवत्	भगवती
श्रीमान्	श्रीमत्	श्रीमती
महान्	महत्	महती
ज्ञानी	ज्ञानिन्	ज्ञानिनी
शुभकारी	शुभकारिन्	शुभकारिणी—इत्यादि ।

(घ) गुरु, लघु, मृदु, पटु आदि गुणवाचक शब्दों से विकल्प से 'ई' आता है । जैसे:—

पुं०	स्त्री०
गुरु	गुर्वी, गुरु ।
लघु	लघ्वी, लघु ।
साधु	साध्वी, साधु ।
मृदु	मृद्वी, मृदु ।
पटु (होश्यार)	पट्वी, पटु ।
बहु	बह्वी, बहु—इत्यादि ।

[कुछ उकारान्त शब्दों से 'ऊ' भी होता है । जैसे—पंगु (लंगडा) —पंगू । भीरु (डरपोक)—भीरू । (करभोरु—करभोरू, वामोरु—वामोरू)—इत्यादि ।]

कुछ विशिष्ट स्त्रीवाचक (स्त्रीप्रत्ययान्त) शब्दः—

पुं०	स्त्री०	पुं०	स्त्री०
मनुष्य	मनुषी	विद्वस् (विद्वान्)	विदुषी
नृ (नर)	नारी	सूर्य	सूरी (सूर्य की स्त्री)

पुं०	स्त्री०	पुं०	स्त्री०
युवन् (युवा)	युवति	सखि (सखा)	सखी
	युवती,	श्वसुर (ससुर)	श्वश्रू (सास)
	यूनी	पति	पत्नी—इत्यादि
श्वन् (श्वा=कुत्ता)	शुनी		
राजन् (राजा)	राज्ञी		

(विशेष व्याकरण के स्त्रीप्रत्यय-प्रकरण में देखिये)

अभ्यास ४.

नीचे लिखे शब्दों से स्त्रीलिङ्ग शब्द बनाओ:—

सारस, विडाल, गज, महाराज, युवराज (की स्त्री), हस्ती, पितामह, अभिमानी, कृष्ण, अनुचर, कमलवदन, मनोहर, नन्दन, पौत्र, सहोदर, काक, सुवर्णकार, मलिन, अरुण, निर्धन, कृपण, मृगाक्ष, सुमुख, पाचक, सेवक, सिद्ध, शान्त, श्याम।

कुछ विशेष ध्यान देने योग्य शब्द।

यहां हमें विशेषतः उन तत्सम (संस्कृत) शब्दों के विषय में ध्यान दिलाना है, जो संस्कृत में और लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं और हिन्दी में और लिङ्ग में। विद्यार्थी उन शब्दों का संस्कृत में प्रयोग करते समय भी हिन्दी के अभ्यास के अनुसार उन्हें उसी लिङ्ग में लिख देते हैं जिसमें कि वे हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं और इस प्रकार अशुद्धि कर बैठते हैं।

वे शब्द ये हैं:—

अग्नि, आय, ऋतु, मृत्यु, रास, उपाधि, व्याधि, समाधि,

विधि, निधि, परिधि, जय, धातु, महिमा, गरिमा, कालिमा आदि इमनिच्-प्रत्ययान्त, राशि, शपथ, सन्तान ये–शब्द हिन्दी में स्त्री-लिङ्ग में आते हैं, परन्तु संस्कृत में ये पुंलिङ्ग हैं।

वस्तु, पुस्तक सामर्थ्य, संस्कृत, कुशल, ज्योति (सं० ज्योतिष्), आयु (सं० आयुष्)–ये हिन्दी में स्त्रीलिङ्ग में आते हैं (पुस्तक, सामर्थ्य शब्द कहीं २ पुंलिङ्ग में भी आते हैं), परन्तु संस्कृत में ये नपुंसकलिङ्ग हैं।

हिन्दी में 'वर्षा' (बारिश) शब्द स्त्रीलिङ्ग में आता है। जैसे—'आज वर्षा होगी। संस्कृत में इसके स्थान पर 'वर्ष' अकारान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग में आता है, जैसे—'अद्य वर्षं (वृष्टिः) भविष्यति'।

[संस्कृत 'वर्षा' शब्द स्त्रीलिङ्ग बहुव० बरसात के अर्थ में आता है; जैसे—बरसात में=वर्षासु।]

आत्मा, देह, पवन, विनय, घास, श्वास, समाज, कलम—ये शब्द हिन्दी में पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों में आते हैं, परन्तु संस्कृत में ये पुंलिङ्ग ही हैं।

तारा, देवता, व्यक्ति, घण्टा–ये शब्द हिन्दी में पुंलिङ्ग में आते हैं, परन्तु संस्कृत में ये स्त्रीलिङ्ग हैं।

अभिलाषा, चर्चा—ये शब्द हिन्दी में स्त्रीलिङ्ग हैं, परन्तु संस्कृत में ये (अकारान्त—अभिलाष, चर्च) पुंलिङ्ग हैं। (चर्चा शब्द संस्कृत में भी स्त्रीलिङ्ग में आता है, परन्तु बहुत

कम; जैसे—'औचित्यविचारचर्चा')।

['मित्र' शब्द को विद्यार्थी प्रायः पुंलिङ्ग में लिख देते हैं। 'दोस्त' का वाचक 'मित्र' शब्द संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग है। जैसे—मोहन मेरा मित्र है=मोहनः मम मित्रम् अस्ति। पुंलिङ्ग 'मित्र' शब्द का अर्थ 'सूर्य' है। जैसे—"तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम्" (ऋग्वेद)]

ऊपर लिखे शब्दों में से जय, विनय, पवन आदि अकारान्त शब्दों में गलती होना कम संभव है; क्योंकि संस्कृत में अकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग नहीं होते। परन्तु दूसरे शब्दों में असावधानी से अवश्य ग़लती हो जाती है। इसलिये प्रयोग करते समय इन शब्दों का ध्यान रखना चाहियें।

उदाहरण—

धुकती अग्नि में ज़रा सा तेल डालो, झट जल उठेगी=
धूमायमाने अग्नौ स्तोकं तैलं क्षिप, झटिति प्रज्वलिष्यति।
तुम्हारी आय कितनी है ?=तव आयः कियान् अस्ति ?
ये लोग ठण्डी ऋतुओं में कुछ काम नहीं करते=
एते (जनाः) शीतेषु ऋतुषु किमपि कार्यं न कुर्वन्ति।
अभिमन्यु की मृत्यु का शोक मत करो=
अभिमन्योः मृत्योः शोकं मा कुरुत।
"कैसी रास रचाई व्रजवासी रसिया, गोकुल में"=
व्रजवासिन् रसिक, (त्वया) गोकुले कीदृशो रासः रचितः।
लंबी व्याधियों ने मेरा शरीर ग्रस लिया है=
दीर्घैः व्याधिभिः मम शरीरं ग्रस्तम्।

दवाई खाने की क्या विधि है ?=ओषधिभक्षणस्य कः विधिः ?
अपनी जय से किसे खुशी नहीं होती=
स्वेन (स्वकीयेन) जयेन कस्य हर्षः न जायते ।

सारी धातुओं में कौन ज्यादा कीमती है=
सर्वेषु (सकलेषु) धातुषु कः (कतमः) बहुमूल्यतमः ।

इतनी महिमा और किस की है=
एतावान् महिमा अन्यस्य कस्य अस्ति ।
ये सब रत्नों की राशियां अब तेरी हो गईं=
एते सर्वे रत्नानां राशयः इदानीं (संप्रति) तव जाताः ।
सिंह पाँचवीं राशि है=सिंहः पञ्चमो राशिः अस्ति ।
कितनी शपथें कीं, फिर भी उसे विश्वास न हुआ=
अनेके शपथाः कृताः, तथापि तस्य विश्वासो न जातः ।
मेरी सब संतानें जीती हैं=मम सर्वे सन्तानाः जीवन्ति ।
ये वस्तुएं किसकी हैं ?=एतानि वस्तूनि कस्य सन्ति?=
(कस्यैतानि वस्तूनि ?) ।

ये पुस्तकें मेरी हैं=एतानि पुस्तकानि मम सन्ति ।
लंबी आयु और सुखी जीवन पुण्यों का फल है=
दीर्घम् आयुः, सुखि (सुखसंपन्नं) जीवनं च पुण्यानां फलम् ।
इस गोरी देह में काली आत्मा निवास करती है=
अस्मिन् गौरे देहे कृष्णः आत्मा निवसति ।
(अस्मिन् निर्मले देहे मलिनः (पापरुचिः) आत्मा निवसति) ।
इतनी विनय से भी वह प्रसन्न न हुआ=
एतावता विनयेनापि स प्रसन्नो नाऽभवत् ।

ठण्डी पवन वह रही है=शीतलः पवनः वहति।

पशु हरी घास चर रहे हैं=पशवः हरितं घासं चरन्ति।

वह लंबी श्वास छोड़कर कहने लगा=स दीर्घं श्वासं मुक्त्वा कथयितुमारब्धः।

यहां की आर्यसमाज का सालाना जलसा परसों होगा=
अत्रत्यस्य आर्यसमाजस्य वार्षिकोत्सवः परश्वः भविष्यति।

इन तारों में आनन्दमय देवता रहते हैं=
एतासु तारासु आनन्दमय्यो देवता निवसन्ति।

एक व्यक्ति आया=एका व्यक्तिः* आगता।

ऊँची अभिलाषाओं से क्या, यदि उद्योग न हो=
उच्चैः अभिलाषैः किम्, यदि उद्योगो न भवेत्।
(किमुच्चैरभिलाषैर्यदि नोद्योगः। नोद्योगश्चेत्किमुच्चैरभिलाषैः)

अजी, आज किसकी लंबी चर्चा चल रही है=
अङ्ग, अद्य कस्य दीर्घश्चर्चः प्रवर्तते।

किसकी सामर्थ्य है=कस्य सामर्थ्यम् अस्ति।

तेरी संस्कृत अच्छी है=तव संस्कृतं साधु।

सच बता नहीं तो तेरी कुशल नहीं=
सत्यं प्रतिपादय (कथय), अन्यथा ते कुशलं नास्ति (न ते कुशलम्)।

चांद की निर्मल ज्योति=चन्द्रस्य निर्मलं ज्योतिः।

अभ्यास ५.

नीचे लिखे वाक्यखण्डों को शुद्ध करोः—

प्रज्वलितायाम् अग्नौ। शीतायाम् ऋतौ। प्रबलाभिः व्या-

*"व्यक्तिस्तदा सा प्रथमाऽभिधेया" (नैषध ३।२३)

धिभिः एतया विध्या । सुवर्णचूर्णाभिः निधिभिः । तस्यां राशौ । एताभिः धातुभिः । प्रसिद्धायां महिमायाम् । एताः रत्नराशयः । विविधाभिः वस्तुभिः । निर्मलायाम् आत्मायाम् । प्रकाशमानेषु तारेषु । प्रसन्नेषु देवतासु । उच्चया अभिलाषया ।

—:o:—

२. संज्ञाओं के वचन ।

हिन्दी में दो वचन होते हैं—एकवचन (एक वस्तु का बोध कराने वाला) और बहुवचन (एक से अधिक वस्तुओं का बोध कराने वाला) । परन्तु संस्कृत में तीन वचन हैं--एकवचन, द्विवचन, बहुवचन ।

(क) एकवचन एक का बोध कराने के लिये आता है । जैसे--
राम जाता है=रामः गच्छति ।

कभी २ एकवचन जाति का भी बोध कराता है । जैसे--
मनुष्य (मनुष्य जाति) जीवों में श्रेष्ठ है=
मनुष्यः जीवेषु (जीवानां) श्रेष्ठः ।
कुत्ता (कुत्ता जाति) स्वामिभक्त होता है=
कुक्कुरः (श्वा) स्वामिभक्तः ।

(ख) द्विवचन दो का बोध कराने के लिये आता है । जैसे—
राम और लक्ष्मण = रामलक्ष्मणौ (रामो लक्ष्मणश्च) ।

जहां दो का बोध होता हो वहां संस्कृत में द्विवचन का प्रयोग करना चाहिये, हिंदी के अनुसार बहुवचन का नहीं । जैसे–
श्याम, हाथ धो डाल=श्याम, हस्तौ प्रक्षालय ।

उसके पाँव कोमल हैं=तस्य पादौ कोमलौ स्तः।
सुन्दर आँखें=सुन्दरे अक्षिणी (नेत्रे) ।

(ग) बहुवचन संस्कृत में दो से अधिक का बोध कराने के लिये आता है। जैसे—
तीन लोक=त्रयः लोकाः। लोग कहते हैं=लोकाः (जनाः) कथयन्ति।

कभी २ बहुवचन जाति का भी बोध कराता है। जैसे—
मनुष्य (मनुष्य जाति) जीवों में श्रेष्ठ हैं=मनुष्याः जीवेषु श्रेष्ठाः ।
कुत्ते (कुत्ता जाति) स्वामिभक्त होते हैं=कुक्कुराः (श्वानः) स्वामि-भक्ता भवन्ति।

आदर के लिये भी बहुवचन आता है। जैसे—
श्रीशङ्कराचार्य कहते हैं=श्रीशङ्कराचार्याः आहुः (कथयन्ति)।
ये मेरे गुरु हैं=इमे मम गुरवः ।

हिंदी में आदरार्थ बहुवचन का प्रयोग बहुत होता है और संस्कृत में कम। इसलिये विशेष स्थलों को छोड़ कर साधारणतः हिन्दी के आदरार्थ बहुवचन का अनुवाद एकवचन से ही करना चाहिये। जैसे—

राजा के बड़े बेटे आये हैं=
राज्ञः ज्येष्ठः पुत्रः समागतः ।
इस विषय में कालिदास यों कह गये हैं=
अस्मिन् विषये कालिदासः एवम् उक्तवान् ।
कण्व ऋषि तो ब्रह्मचारी हैं=
कण्व ऋषिस्तु ब्रह्मचारी अस्ति ।
महाराज कल जाएंगे=

महाराजः श्वः गमिष्यति ।

मोहन के पिता कब आए=

मोहनस्य पिता कदा आगतः ।

महात्मा गान्धी सत्याग्रह के जन्मदाता हैं=

महात्मा गान्धीः* सत्याग्रहस्य जन्मदाता (उपज्ञाता) अस्ति ।

गायत्री देवी आदर्शपत्नी हैं=

गायत्री देवी आदर्शपत्नी अस्ति ।

[स्त्रियों के नामों के आगे आनेवाले 'बाई' शब्द का अनुवाद 'देवी' शब्द से किया जाता है। जैसे—मथुराबाई=मथुरादेवी । गोदाबाई= गोदादेवी "गोदादेव्यास्तु गर्भजः" ।]

हिंदी में आदरार्थ बहुवचन में संज्ञाओं के आगे जी, साहब, महाराज आदि शब्द लगाए जाते हैं। इनके अनुवाद में यथा-योग्य महोदय, महाशय, महाभाग आदि शब्द रखने चाहियें। जैसे—

श्रीयुत महावीर प्रसादजी ने सरस्वती का संपादन बड़ी योग्यता से किया=

श्रीयुतेन महावीरप्रसादमहाभागेन (महोदयेन) सरस्वत्याः संपादनं परमया योग्यतया कृतम् ।

बाबूजी कहां हैं ?=बाबूमहोदयः कुत्र (क्व) अस्ति ।

मौलवीजी बड़े हँसमुख हैं=मौलवीमहाशयः परमः (नितरां) हसमुखः† (स्मितपूर्वाभिभाषी) अस्ति ।

---

*गन्धा एव गान्धाः (स्वार्थे अण्) गान्धाः अस्य सन्तीति गान्धी-इस प्रकार 'गान्धी' शब्द को संस्कृत बना लिया जाय तो इसके रूप 'दण्डिन्' शब्द की तरह होंगे।

†हसः (हासः) मुखे यस्य सः (बहुव्रीहि) ।

मिश्रजी बड़े बुद्धिमान् हैं=
मिश्रमहोदयः महाबुद्धिमान् ।
रानी साहबा बड़ी उदार हैं=
राज्ञीमहोदया परमोदारा अस्ति ।

पिता, गुरु आदि शब्दों के साथ आनेवाले 'जी' शब्द के अनुवाद में 'पाद' या 'चरण' शब्द रखना चाहिये । आदर के लिये प्रयोग किये गये ये ('पाद' 'चरण') शब्द नित्य बहुवचन में आते हैं । जैसे—

पिता जी कल आएंगे=
पितृपादाः (चरणाः) श्वः आगमिष्यन्ति ।
माता जी की आज्ञा से आया हूं=
मातृपादानाम् आज्ञया आगतोऽस्मि ।
गुरु जी पढ़ा रहे हैं=गुरुचरणाः (पादाः) पाठयन्ति ।

ऋषियों मुनियों के लिये आनेवाले 'जी' शब्द का अनुवाद यथायोग्य 'महर्षि, महामुनि' शब्दों से करना चाहिये । जैसे—

नारद जी लोगों का दुख दूर करने के लिये सर्वत्र घूमा करते हैं=

महामुनिः नारदः लोकानां दुःखं नाशयितुं सर्वत्र परिभ्रमति (विचरति) ।

परन्तु जब 'महर्षि या महामुनि' शब्द पहले ही विद्यमान होता है तब 'जी' का अनुवाद नहीं किया जाता । जैसे—महामुनि नारद जी=महामुनिः नारदः ।

'महाराज' शब्द जब किसी राजा के नाम के साथ आता है तब अनुवाद में भी वही रक्खा जाता है । जैसे—

रनजीतसिंह महाराज=रणजित्सिंहः महाराजः अथवा महाराजो रणजित्सिंहः ।

परन्तु जब 'महाराज' अथवा 'जी महाराज' शब्द देवता अथवा साधुसंन्यासी के लिये आए तब अनुवाद में इसके लिये यथायोग्य भगवान् (विशेषतः देवताओं के लिये), पूज्यपाद महामान्य आदि शब्द संज्ञा के पहले रखने चाहिये । इनके लिये आनेवाले केवल 'जी' शब्द के लिये भी भगवान् आदि शब्द ही रखने चाहिये । जैसे—

श्रीसत्यनारायण महाराज की जय=
भगवान् श्रीसत्यनारायणः जयति ।
इन्द्र महाराज मेघों के मालिक हैं=
भगवान् इन्द्रः मेघानाम् अधिपतिः ।
श्रीस्वामी विवेकानन्द जी का अमेरिका में बड़ा आदर है=
पूज्यपादस्य श्रीविवेकानन्दस्वामिनः अमेरिकायां महान् आदरः ।
श्रीस्वामी रामकृष्ण परमहंस जी महाराज सिद्ध पुरुष थे=
पूज्यपादः श्रीस्वामिरामकृष्णः परमहंसः सिद्धपुरुष आसीत् ।
स्वामी रामतीर्थ जी ने जापान में भी बहुत व्याख्यान दिये ।
पूज्यपादेन स्वामिरामतीर्थेन (रामतीर्थस्वामिना) जापानेऽपि बहूनि व्याख्यानानि दत्तानि ।

अत्यन्त आदरणीय साधुसंन्यासियों के लिये आनेवाले 'महाराज' 'जी महाराज' शब्द के अनुवाद में 'पाद, चरण, भगवत्पाद, भगवच्चरण' शब्द बहुवचन में रक्खे जाते हैं । ('भगवत्पाद' या 'भगवच्चरण' शब्द के पहले प्रायः 'आचार्य' शब्द नहीं

लगाते)। जैसे—

श्रीशङ्कराचार्य महाराज का वेदान्तभाष्य सर्वमान्य है=
श्रीशङ्कराचार्यपादानां (श्रीशङ्करभगवत्पादानाम्) वेदान्तभाष्यं सर्वमान्यम् ।

परन्तु जब 'महाराज' या 'जी महाराज' शब्द साधारण व्यक्तियों के लिये आते हैं तब इनका अनुवाद यथायोग्य 'महोदय, महाभाग या महाशय' शब्द से किया जाता है। जैसे—

पांडे जी महाराज, आज किधर से आना हुआ=
पाण्डेयमहोदय, अद्य कुतः आगमनं जातम् (आगम्यते)।

[आजकल मध्यम पुरुष में (विशेषतः उसके एकवचन में) कर्तृ-वाच्य का प्रयोग शिष्ट (सभ्य) नहीं प्रतीत होता; इसकारण कर्मवाच्य का प्रयोग करना चाहिये । इससे शिष्टता प्रकट होती है । इसलिये 'पाण्डेयमहोदय, कुत आगच्छसि' की अपेक्षा 'पाण्डेयमहोदय, कुतः आगम्यते' कहना उचित है। इसी प्रकार 'पण्डित जी, इधर आओ= पण्डितमहोदय, इत आगच्छ' की बजाय 'पण्डितमहोदय, इतः आगम्यताम्' कहना चाहिये ।]

प्राण (उसका पर्याय असु), अक्षत, लाजा (संस्कृत लाज अकारान्त पुं०) शब्द हिंदी की तरह संस्कृत में भी बहुवचन में ही आते हैं। जैसे—

उसके प्राण संकट में हैं=
तस्य प्राणाः (असवः) संकटे वर्त्तन्ते ।

पूजा के लिये अक्षत ला=
पूजायै अक्षतान् आनय।

विवाह में लाजाओं से भी होम करते हैं=

विवाहे लाजैः अपि होमं कुर्वन्ति ।

[बरसात, बालू, पानी, स्त्री और घर के वाचक स्त्रीलिङ्ग 'वर्षा', 'सिकता,' 'अप्' और पुंलिङ्गदार 'गृह' शब्द बहुवचन में आते हैं (परन्तु 'वर्षा' के साथ 'ऋतु' शब्द जोड़ कर बना हुआ 'वर्षर्तु' शब्द एकवचन में आता है) । जैसे—बरसात में जंगल हरे हो जाते हैं=वर्षासु (वर्षर्तौ) वनानि हरितानि जायन्ते । नदियों के किनारे बालू बहुत होती है=नदीनां तटे सिकताः प्रभूताः (बाहुल्येन) भवन्ति । बहुत पानी मत पी = प्रभूताः (बह्वः, बह्वीः) अपः मा पिब । राम की स्त्री सीता=रामस्य दाराः सीता । यह हमारा घर है=इमे अस्माकं (नः) गृहाः ।]

हिन्दी में दाम, होश, हिज्जे, भाग्य, दर्शन, समाचार ये शब्द बहुवचन में आते हैं (कभी २ समाचार और भाग्य शब्द एकवचन में भी आते हैं) । इनके संस्कृत-अनुवाद में एकवचन रखना चाहिये (भाग्य शब्द कभी २ संस्कृत में भी बहुवचन में आता है) । जैसे—

इन किताबों के क्या दाम हैं ?

एतेषां पुस्तकानां किं मूल्यम् ?

अब इसके होश कायम हैं=

इदानीम् अस्य चेतना (बुद्धिः) स्थिरा अस्ति (वर्तते) ।

इन लफ्ज़ों के हिज्जे करो=

एषां शब्दानां वर्णक्रमं कथय ।

यह भाग्यों का फेर है=

अयं भाग्यस्य (भाग्यानां) विपर्ययः ।

फिर कब दर्शन होंगे=

पुनः कदा दर्शनं भविष्यति ।

कहिये क्या समाचार हैं ?
कथ्यताम्, को वृत्तान्तः ?

[हिन्दी में 'लोग' शब्द भी बहुवचन में ही आता है। इसका अनुवाद 'लोक' या 'जन' शब्द से किया जाता है। ये (लोक और जन शब्द) एकवचन और बहुवचन दोनों में आते हैं। जैसे--लोग कहते हैं = लोकाः कथयन्ति (लोकः कथयति) अथवा जनाः कथयन्ति (जनः कथयति)।

गर्मियों में पानी सूख जाता है, जाड़ों में बर्फ गिरती है—इत्यादि में ऋतुवाचक 'गर्मियों में' 'जाड़ों में' (बहुवचन) का अनुवाद एकवचन से किया जाता है-ग्रीष्मर्तौ (ग्रीष्मे)जलं शुष्यति । शीतर्तौ (शिशिरे) हिमं पतति।]

हिन्दी में कभी २ (अधिकता वा समूह को सूचित करने के लिये) संज्ञाओं का एकवचन में प्रयोग होता है । उनके अनुवाद में बहुवचन का प्रयोग करना चाहिये। जैसे—

इस साल केला बहुत हुआ =
अस्मिन् वर्षे कदलीफलानि प्रभूतानि (बाहुल्येन) जातानि ।
आजकल नारंगी महँगी है=
अद्यत्वे (एषु दिवसेषु) नारङ्काणि महार्घाणि सन्ति।
रामनारायण के पास बहुत रुपया है=
रामनारायणस्य पार्श्वे (सविधे) प्रभूतानि रूप्यकाणि सन्ति (प्रभूतं धनमस्ति)—इत्यादि।

["मेले में केवल शहर का आदमी आया' 'इसमें एकवचन 'आदमी' शब्द का अनुवाद यदि 'नर' आदि शब्दों से किया जाय तो बहुवचन आएगा

और यदि 'लोक' वा 'जन' शब्द से किया जाय तो एकवचन या बहुवचन दोनों आ सकते हैं। जैसे--मेलके केवलं नगरवास्तव्याः (नगरस्थाः) नराः (लोकाः, जनाः) आयाताः। मेलके केवलं नगरवास्तव्यो लोकः (जनः) [नगरलोकः, नगरजनः] आयातः।]

अभ्यास ६.

१. ये घण्टे कहां बज रहे हैं ? २. नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने सलाह की। ३. यह मोटा तारा कौन है ? ४. इस जंगल में सियार बहुत होता है। ५. मुझे देखते ही उसके होश उड़ गये (फ़ाख़्ता हो गये)। ६. चौबे जी महाराज आज भांग ज़्यादा तो नहीं पी ली ? ७. श्रीरामानुजाचार्य महाराज वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक हैं। ८. राजा साहब कब आएंगे ? ९. आपकी कुशल चाहिये। १०. तेरी अभिलाषा पूरी हो। ११ स्वामी हंसस्वरूप जी महाराज दर्शनशास्त्र के बड़े विद्वान् थे। १२. इस घाती के दाम कहा। १३. मास्टर जी पढ़ा रहे हैं। १४. माता जी बुला रही हैं। १५. आपके दादा साहब ख़ुश हैं ? १६. सीता जी रामचन्द्र जी के साथ वन को गईं। ठकुराइन बड़ी दयालु हैं। पण्डाइन और पुरोहितानी बाग में टहल रही हैं १९. गीदड़ियां शोर मचा रही हैं। २०. यह मेरा भानजा है। २१ आपकी ही चर्चा चल रही है। २२. आज चौधरी साहब नव्वाब-साहब से मिलने गये हैं।

—:o:—

दूसरा अधिकरण ।

सर्वनाम ।

पहला अध्याय ।

उत्तमपुरुषवाचक सर्वनाम ।

मैं—

हिन्दी में उत्तमपुरुषवाचक सर्वनाम 'मैं' है। इसके लिये संस्कृत में 'अस्मद्' शब्द आता है । जैसे—

मैं आता हूं=अहम् (एकव०) आगच्छामि ।

हम दोनों ही आते हैं=आवां (द्विव०) द्वावेव आगच्छावः ।

हम सभी आते हैं=वयं (बहुव०) सर्व एव आगच्छामः ।

और कारकों में प्रयोग—

मुझे देख=मां पश्य ।

हमें क्यों सताता है=अस्मान् किं कदर्थयसि (पीडयसि) ।

हमने क्या किया=अस्माभिः किं कृतम् ।

मुझे रुपये दे=मह्यं रूप्यकाणि देहि ।

सोहन का हमसे दूसरा कौन है=

सोहनस्य अस्मत् अन्यः कोऽस्ति ।

यह बच्चा ही हम दोनों का सहारा है=
अयं वत्सः (बालः) एव आवयोः (द्वयोः) अवलम्बः (आश्रयः)।
मुझ में बहुत दोष हैं=मयि बहवो दोषाः सन्ति।

हिन्दी में साधारण लोग भी प्रायः अपने लिये उत्तमपुरुष बहुवचन 'हम' का प्रयोग करते हैं। ऐसे प्रयोगों का अनुवाद एकवचन से करना चाहिये। जैसे—

कालू—हमें क्या पूछते हो=मां किं पृच्छसि।
लल्लो—हमें नींद सता रही है=मां निद्रा बाधते।
लौंगी—मालकिन, हमें काहे झिड़कती हो=स्वामिनि, मां किमर्थं भर्त्संयसि, (अधिक्षिपसि)—इत्यादि।

इनसे अतिरिक्त नीचे दिखाए गये बहुवचन प्रयोगों का अनुवाद बहुवचन से ही करना चाहिये (क्योंकि वैसे प्रयोग संस्कृत में भी बहुवचन में ही आते हैं)। जैसे—

यह हमने पहले कह दिया है=
एतत् अस्माभिः पूर्वम् उक्तम् (प्रतिपादितम्)।
(ग्रन्थकार का बहुवचन प्रयोग)

हम कल के पर्चे में बता चुके हैं=
वयं ह्यस्तने पत्रे प्रत्यपादयाम।
(संपादक का बहु० प्र०)

दुष्यन्त—तुम्हारे दर्शन से ही हमारा सत्कार हो गया=
दुष्यन्तः—युष्माकं दर्शनेनैव अस्माकं सत्कारः संवृत्तः (वयं जातसत्काराः)।
(राजा का बहु० प्र०)

हम गरीब हैं, क्या करें=
वयं निर्धनाः स्मः, किं कुर्याम ।
(कुटुम्ब के संबन्ध से बहु० प्र०)

मेरा क्या दोष है, यह तो हमारा कुलधर्म है=
मम को दोषः, अयं तु अस्माकं कुलधर्मः ।
(कुल के सम्बन्ध से बहु० प्र०)

हवा के बिना हम पलभर भी जी नहीं सकते=
वायुं विना वयं क्षणमात्रमपि जीवितुं न शक्नुमः ।
(मनुष्य या प्राणी जाति के संबन्ध से बहु० प्र०)

हम भारतीयों में एकता नहीं है=
अस्मासु भारतीयेषु एकता (संहतिः) नास्ति ।
(देश के सम्बन्ध से बहु० प्र०)

रावण—इन्द्र भी हमारा चेरा है=
रावणः—इन्द्रोऽपि अस्माकं प्रेष्यः (दासः) ।
(अभिमान में बहु० प्र०)

सेनापति—हम दुश्मनों की धज्जियां उड़ा देंगे=
सेनापतिः—वयं शत्रून् खण्डशः करिष्यामः
(क्रोध में बहु० प्र०)

['हम' के साथ बहुत्व का बोध कराने के लिये 'लोग' शब्द लगाया जाता है—हम लोग । उसका अनुवाद 'वयं लोकाः' न करके केवल 'वयम्' करना चाहिये ।

साधु कहा करते हैं—"अपने राम जाते हैं" इत्यादि । इस 'अपने राम' का भी अनुवाद 'वयम्' से करना चाहिये—वयं गच्छामः ।

अतिशय आदर सूचित करने के लिये 'मैं' के बदले सेवक, दास, आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार का प्रयोग संस्कृत में भी होता है। जैसे—"अनुगृह्यताम् अयं जनः" इस जन पर (अर्थात् मुझ पर) कृपा करें।

कहिये, यह दास क्या करे=

कथ्यताम् (आज्ञाप्यताम्), अयं दासः किं करोतु।]

अभ्यास ७.

१. मैं वहां गया था। २. जब मुझे होश आया तो मैं हस्पताल में लेटा हुआ था। ३. यह तो मेरी साइकल है। ४. कीमत मुझसे लो। ५. हम (दोनों) सगे भाई हैं। ६. हमें क्या होगे? मुझ में कई कमियां हैं। ७. मालिक, हमारा क्या कसूर है? ८. जाओ, हमें पता नहीं। ९. हम गरीबों में इतनी तौफ़ीक कहां? १०. हम लोग इतना तो समझते हैं। ११. अपने राम को तो इन झमेलों से कोई सरोकार नहीं।

—:o:—

दूसरा अध्याय ।

मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम ।

तू—

हिन्दी में मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम 'तू' है। इसके लिये संस्कृत में 'युष्मद्' शब्द आता है। जैसे—'तू' कहां जाता है= त्वं कुत्र गच्छसि। तुम (दोनों) कहां जाते हो=युवां (द्वावपि) कुत्र गच्छथः। तुम (सब) कहां जाते हो=यूयं (सर्वे) कुत्र गच्छथ।

अन्य कारकों में प्रयोग—

तुझे पूछता हूं=त्वां पृच्छामि।

महाराज तुम्हें बुलाते हैं=

महाराजः युष्मान् आह्वयति।

तुमने क्या किया=युष्माभिः किं कृतम्।

यह फल तुझे देता हूं=इदं फलं तुभ्यं ददामि।

तुमसे पाया तुम्हीं को देता हूं=

युष्मत् प्राप्तं युष्मभ्यमेव ददामि।

तेरा घर कहां है=तव गृहं कुत्र अस्ति।

तुझ में क्या गुण है ?=त्वयि को गुणः ?

हिन्दी में तिरस्कार, छोटापन या क्रोध सूचित करने के

लिये अथवा देवता या ईश्वर के लिये 'तू' (एकवचन) का प्रयोग होता है और अन्यत्र 'तू' (एकवचन) के बदले बहुधा 'तुम' (बहुवचन) का ही प्रयोग होता है । इस (एक के लिये आनेवाले 'तुम' बहुव०) का अनुवाद एकवचन से करना चाहिये । जैसे—

श्याम, तुम कहां जाते हो?=
श्याम, त्वं कुत्र गच्छसि ?
तू तो हमारा मित्र है; आओ हम तुम साथ ही चलें=
त्वं तु अस्माकं मित्रम् असि; आगच्छ (एहि) वयं त्वं (त्वं वयं) च सहैव गच्छेम ।
बेटी, कहो तुम क्या चाहती हो?=
पुत्रि, कथय, त्वं किम् इच्छसि ?
लड़के, तुम्हारा क्या नाम है?=
बालक, तव किं नाम ?

[बहुत्व बोधित कराने के लिये बहुधा 'तुम' के साथ 'लोग' शब्द लगाया जाता है—तुम लोग । इसका अनुवाद केवल 'यूयम्' होना चाहिये, 'यूयं लोकाः' नहीं ।]

['युष्मद्' 'अस्मद्' के द्वितीया, चतुर्थी, षष्ठी के त्वा, मा, ते, मे आदि दूसरे (छोटे) रूपों के प्रयोग में प्रायः भूलें होजाया करती हैं । इसलिये नीचे लिखे नियमों का ध्यान रखना चाहिये—

(क) वाक्य के आरम्भ में इनका (त्वा, मा आदि का) प्रयोग नहीं होता । जैसे—

मुझे मत पूछो=माम् ('मा' नहीं) मा पृच्छ ।
हमारी (दोनों की) मित्रता है=आवयोः ('नौ' नहीं) मित्रता (सख्यम्) अस्ति ।

तुम्हारा भाई कहां है=तव ('ते' नहीं) भ्राता कुत्र अस्ति ।

हमारी रक्षा करो=अस्मान् ('नः' नहीं) रक्ष ।

तुम्हें किताबें दूंगा = युष्मभ्यम् ('वः' नहीं) पुस्तकानि दास्यामि—इत्यादि ।

(ख) च, वा, एव, हा, अह और ह के साथ योग होने पर इनका प्रयोग नहीं होता । जैसे—

श्याम ने उसे और मुझे बुलाया = श्यामः तं मां ('मा' नहीं) च आह्वयत ।

हाय मेरी बुरी किस्मत !=हा मम ('मे' नहीं) मन्दभाग्यम् !

यह हिस्सा तुम्हारा ही है=अयं भागः तव एव ('ते एव' नहीं) ।

यह मोहन का या तुम्हारा (तुम दोनों का) कहना मानेगा=

अयं मोहनस्य युवयोः ('वां' नहीं) वा कथनं स्वीकरिष्यति—इत्यादि ।

परन्तु जब च, वा आदि का इनसे 'योग' (सम्बन्ध) नहीं होता तब इनका प्रयोग हो सकता है । जैसे—मोहन और मणिलाल मेरे मित्र हैं=मोहनो मणिलालश्च मे मित्रे । इसमें 'च' का संबन्ध मोहन और मणिलाल के साथ है—यह इन दोनों को मिलाता है, 'मे' के साथ इसका संबन्ध नहीं । इसलिये यहां 'मे' का प्रयोग शुद्ध है ।

(ग) श्लोक के पाद के आदि में भी इनका प्रयोग नहीं होता । इसलिये—'नः' कृष्णः सर्वदाऽवतु, 'नः' पायादेकरदनः—इनमें श्लोकपाद के आदि में आने के कारण 'नः' अशुद्ध है । इसके बदले 'अस्मान्' होना चाहिये था ।

(घ) साधारण (एक क्रिया वाले) वाक्य में 'त्वा' 'मा' आदि का प्रयोग विकल्प से होता है, परन्तु अन्वादेश (एक बार कह कर उसी को फिर कहने) में केवल इन्हीं ('त्वा, मा' आदि) का प्रयोग होता है। जैसे—धाता ते (अथवा 'तव' भक्तोऽस्ति, तस्मै ते ('तव' नहीं) नमः (अन्वादेश)—इत्यादि।

(च) सम्बोधन के अनन्तर इनका प्रयोग नहीं होता, परन्तु यदि सम्बोधन के बाद उसका विशेषण विद्यमान हो या सम्बोधन से पहले कोई और पद हो तब इनका प्रयोग हो जाता है। जैसे—ईश्वर मेरी रक्षा करो=ईश्वर, मम ('मे' नहीं) रक्षां कुरु। इसमें सम्बोधन 'ईश्वर' के अनन्तर आने के कारण 'मे' नहीं हुआ। परन्तु 'हरे दयालो नः पाहि' में 'नः' शुद्ध है; क्योंकि यहां 'हरे' संबोधन के बाद उसका विशेषण 'दयालो' विद्यमान है और "सर्वदा रक्ष देव, 'नः'" में भी 'नः' ठीक है; क्योंकि यहां 'देव' संबोधन के पहले और पद 'रक्ष' विद्यमान है।]

आदरार्थक 'आप' शब्द।

आदर के लिये 'तुम' के बदले 'आप' शब्द आता है। हिन्दी के वैयाकरणों ने इसे मध्यमपुरुषवाचक सर्वनाम माना है। इसका अनुवाद अन्यपुरुष (प्रथमपुरुष) वाचक 'भवत्' ('भा' धातु 'डवतु' प्रत्ययान्त) शब्द से एकवचन में करना चाहिये। जब 'आप' 'शब्द' किसी अधिक आदरणीय व्यक्ति के लिये आए तब इसका अनुवाद 'आर्य' शब्द से करना चाहिये। जैसे—

आप कब आएंगे ?= भवान् (आर्यः) कदा आगमिष्यति ?
आपको किसने बुलाया था ? = भवन्तं कः आह्वयत् ?
आपने क्या किया ? = भवता किं कृतम् ?

आपको क्या दूं ? = भवते किं यच्छेयम् (दद्याम्)

यह आपका रिश्तेदार है = अयं भवतः सम्बन्धी ।

आप में सब गुण हैं=भवति (आर्ये) सर्वे गुणाः सन्ति ।

[कहीं २ 'आप' के लिये 'भाव' शब्द भी आता है । जैसे—

"चिरस्य खलु भावो दृश्यते"=आप बहुत देर बाद दिखाई दिये हैं ।

(चतुर्भाणी धूर्तविट संवाद पृ० १२)

"भावेन स्वयमेवात्मा दर्शितः"=आपने खुद ही दर्शन दे दिये ।

(च० धूर्त० पृ० १४) इत्यादि ।]

परन्तु जब 'आप' शब्द दो या बहुतों के लिये आता है तब इसका अनुवाद द्विवचन और बहुवचन से किया जाता है । जैसे—

आप (दोनों) की कब से मित्रता है ?=

भवतोः कदाप्रभृति मित्रता (सख्यम्) अस्ति ।

आप सब कहां जाते हैं ?=

भवन्तः सर्वे कुत्र (क्व) गच्छन्ति ?

[कभी २ अधिक आदरयोग्य व्यक्ति के लिये आने वाले 'आप' शब्द के 'अनुवाद' में 'भवत्' शब्द बहुवचन में भी रक्खा जाता है । जैसे—(राजा के प्रति) आप लोकव्यवहार को भली भांति जानते हैं=भवन्तः लोकव्यवहारं सम्यक् जानन्ति । "भवन्त एव सुतरां लोकवृत्तनिष्णाताः" (शाकुन्तल ५ अङ्क)

राजा के लिये आने वाले 'आप' शब्द का अनुवाद एकवचन 'देव' शब्द से भी किया जाता है । जैसे—आप सब कुछ जानते हैं = देवः सर्वं जानाति "सर्वं जानाति देवः" (साहित्यदर्पण) "इति श्रुत्वा देवः प्रमाणम्"

(शाकुन्तल ६ अङ्क)

बहुत्व बोधित कराने के लिये 'आप' के साथ 'लोग' शब्द आता है—

आप लोग। इसका अनुवाद केवल 'भवन्तः' किया जाता है, 'भवन्तो लोकाः' नहीं।]

राजा, विशिष्ट पदाधिकारी आदियों के प्रति अधिक आदर जताने के लिये महाराज, श्रीमान्, सरकार, हुज़ूर आदि शब्द आते हैं। उनके अनुवाद में एकवचन का प्रयोग करना चाहिये। 'सरकार' शब्द जब राजा के लिये आए तब इसका अनुवाद 'महाराज' या 'देव' शब्द से करना चाहिये और जब विशिष्ट पदाधिकारी के लिये आए तब 'मान्यवर' या 'श्रीमान्' शब्द से। 'हुज़ूर' शब्द का अनुवाद 'अत्रभवत्' शब्द से करना चाहिये।

पहले महाराज उतरें=प्रथमं महाराजः अवतरतु।

श्रीमान् जो चाहें सो करें=

श्रीमान् यत् इच्छति तत्करोतु।

(राजा के प्रति) जो सरकार का हुक्म=

यः (यथा) देवस्य (महाराजस्य) आदेशः।

(यद् देवः आज्ञापयति। यथाऽऽज्ञापयति देवः)

(पदाधिकारी के प्रति) सरकार का हुक्म सबने सुन लिया=

श्रीमतः (मान्यवरस्य) शासनं सर्वैः श्रुतम् (आदेशः सर्वैः श्रुतः)

जो हुज़ूर की राय सो मेरी राय=

यद् अत्रभवतः मतं तन्मम मतम्।

(यदत्रभवतो मतं तन्ममापि)

निजवाचक 'आप' शब्द।

निजवाचक सविभक्तिक 'आप' शब्द का अनुवाद 'आत्मन्' वा 'स्व' शब्द से किया जाता है। जैसे—

वह अपने को भूल गया=
सः आत्मानं व्यस्मरत् (विस्मृतवान्)।
अपने लिये भी कुछ कर=
आत्मने (स्वस्मै) अपि किञ्चित् कुरु।
अपने से अधिक प्यारा और कौन है=
आत्मनोऽधिकः प्रियोऽन्यः कोऽस्ति।
अपना मतलब पूरा कर=
आत्मनः प्रयोजनं साधय।
अपने से अपने में खुश=
आत्मना आत्मनि तुष्टः।
(आत्मन्येवात्मना तुष्टः)

["राजपूत वीर अपने आपको भूल गये" इसमें 'अपने आपको' का अनुवाद केवल 'आत्मानम्' या 'स्वम्' ही करना चाहिये 'आत्मनः (स्वस्य) आत्मानम्' नहीं—राजपुत्रवीराःआत्मानं व्यस्मरन् (विस्मृतवन्तः)।]

निर्विभक्तिक 'आप' का अनुवाद 'स्वयम्' या 'स्वतः' शब्द से किया जाता है। जैसे—

धनुष आप ही चढ़ गया=
धनुः स्वयमेव अधिज्यम् (आरोपितम्, रूढमौर्वीकम्) अभवत्।
मैं आप वहीं से आया हूं=
अहं स्वयम् (अहमपि) तत एव आयातोऽस्मि।
मैं आप ही वहां पहुंच जाऊंगा=
अहं स्वतः (स्वयम्) एव तत्र प्राप्स्यामि।
वह आप ही आजाएगा=
सः स्वतः (स्वयम्) एव आगमिष्यति।

तब मैं आप (खुद) अपने को भूल जाऊंगा=

तदा अहं स्वयम् आत्मानं विस्मरिष्यामि।

कभी २ 'आप' का अनुवाद 'आत्मना' या 'स्वेन' से भी किया जाता है। जैसे—

भगवान्, तुम आप ही जगत को बनाते हो और आप ही मिटाते हो=

भगवन्, त्वम् आत्मना (स्वेन) एव जगत् सृजसि (रचयसि) आत्मना एव च संहरसि ।

ध्रुव आप ही चढ़ गया=

ध्रुवः आत्मना (स्वेन) एव अधिरूढ्यम् (आरोपितम्) अजायत।

| 'अपने आप' का भी अनुवाद 'स्वयम्' 'स्वतः' या 'आत्मनैव' 'स्वेनैव' से किया जाता है। जैसे—मैं अपने आप आना चाहता था= अहं स्वयम् (स्वयमेव आत्मनैव) आगन्तुकामः (आगन्तुमनाः) आसम्।

'अपना निज का' या केवल 'निज का' का अनुवाद 'आत्मीय' 'स्वीय,' 'स्वकीय,' 'निज' (कभी २ 'आत्मनः') से किया जाता है। जैसे—यह मेरा निज का (अपना निज का) काम है=इदं मम आत्मीयं (स्वीयं, स्वकीयं, निजं) कार्यम्। मैं तुम्हें एक अपने निज के काम में लगाना चाहता हूं=अहं त्वाम् एकस्मिन् आत्मीये (आत्मनः) कार्ये व्यापारयितुम (नियोक्तुम्) इच्छामि।

कभी २ 'अपने आप' और 'आपही' का अनुवाद, 'स्वभावादेव (स्वभावेनैव)' या 'प्रकृत्यैव' से किया जाता है। जैसे—नवजात शिशु अपने आप (आपही) माता का स्तन पीने लगजाते हैं=नवजाताः

(सद्योजाताः) शिशवः स्वभावादेव (स्वभावेनैव, प्रकृत्यैव) मातुः स्तनं पातुं प्रवर्तन्ते ।

इसी प्रकार 'आप से आप' और 'आप ही आप' का भी अनुवाद 'स्वाभावादेव (स्वभावेनैव)' या 'प्रकृत्यैव' से किया जाता है। जैसे—पंख उगने पर पक्षियों के बच्चे आप से आप (आप ही आप) उड़ना जान जाते हैं=पक्षेषु उत्पन्नेषु पक्षिणां शिशवः (पक्षिशावकाः) स्वभावादेव (स्वभावेनैव, प्रकृत्यैव) उड्डयनं विजानन्ति ।

नाटक में आनेवाले 'आप ही आप (मन में)' के लिये संस्कृत में 'आत्मगतम्' और 'स्वगतम्' शब्द आते हैं। जैसे—इन्द्र—(आप ही आप) नारद जी सारी पृथ्वी पर इधर उधर फिरा करते हैं=इन्द्रः—(आत्मगतम्=स्वगतम्) महामुनिर्नारदः सर्वस्यां (सकलायां) पृथ्व्याम् इतस्ततः विचरति (परिभ्रमति, पर्यटति) ।

अभ्यास ८.

१, क्या तुम्हारी ग़लती नहीं है? २. मैं तुम्हारी महाराज के पास सिफ़ारिश करूंगा। ३. मैं तुमको तुम्हारी पगड़ी वापस दे दूंगा। ४. तुम अपने आप वहां आजाना । ५. मोहन तुम्हें आपही बुलालेगा । ६. आप अपने काम का फ़िकर करें । ७. हे जगदीश, अन्तर्यामी, हमारी रक्षा कर। ८. यह तुम्हारा ही दोष है । ९. इसमें तुम्हारी और मेरी एक राय है। १०. यह रूमाल तुम्हारा है या मेरा । ११. जो सरकार की मर्ज़ी। १२. आप मालिक हैं । १३. यह आप लोग क्या कहते हैं। १४. यह मेरा अपना निज का काम है । १५. मैं बुलाने नहीं-आऊंगा, तुम अपने आप आजाना ।

तीसरा अध्याय ।

अन्यपुरुषवाचक तथा निश्चयादिवाचक सर्वनाम ।

मैं, तू तथा आदरवाचक आप के अतिरिक्त वह, यह आदि सब सर्वनाम (तथा सब संज्ञाएं) अन्यपुरुषवाचक हैं। इनके निश्चयवाचक आदि चार भेद हैं, जिनके अनुवाद के विषय में विशेष वक्तव्य नीचे लिखा जाता है:—

(१) निश्चयवाचक सर्वनाम ।

यह—

'यह,' के लिये संस्कृत में 'इदम्' और 'एतत्' शब्द आते हैं। इनके प्रयोग में यह भेद है कि समीपता के अर्थ में 'इदम्' आता है और अतिशय समीपता के अर्थ में 'एतत्'—"इदमस्तु सन्निकृष्टं समीपतरवर्ति चैतदो रूपम्"। जैसे—

यह लड़का किसका है ?=अयं बालः कस्य अस्ति ?
(कस्याऽयं बालः ?)

यह मैं आया=अयमहमागतः ।

यह जाता हूं=एष गच्छामि ।

यह किताब लो=एतत् पुस्तकं गृहाण।
इस माधवीलता को क्यों नहीं सींचती=
इमां माधवीलतां किं न सिञ्चसि।
ये पंछी उड़ रहे हैं=इमे (एते) पक्षिगः उड्डीयन्ते (उत्पतन्ति)
ये फल लो=एतानि फलानि गृहाण।

इसके आदरार्थ बहुवचन का अनुवाद—"ये (यह) श्रीशङ्कराचार्य हैं=इमे श्रीशङ्कराचार्याः सन्ति"—इत्यादि विशेष स्थलों को छोड़ सर्वत्र एकवचन में करना चाहिये। जैसे—

ये महाराज दशरथ हैं=अयम् (एष) महाराजो दशरथः।
यह (ये) महाप्रतापी भीष्म हैं। इनका यश चारों ओर फैला है=
अयं महाप्रतापः भीष्मः। अस्य यशः चतसृषु दिक्षु (सर्वतः) व्याप्तम्।

[बोलने में 'ये' के बदले आदर के लिये आदरणीय व्यक्ति की ओर हाथ से संकेत करके 'आप' शब्द का प्रयोग किया जाता है। इसका अनुवाद 'अत्रभवत्' शब्द से "आप शारदामठ के शङ्कराचार्य हैं=अत्रभवन्तः शारदामठस्य (शारदामठाधीशा) शङ्कराचार्याः" इत्यादि विशेष स्थलों को छोड़कर एकवचन में करना चाहिये। जैसे—

आप गवर्नमेन्ट कालेज के प्रोफैसर हैं=
अत्रभवान्, राजकीयमहाविद्यालयस्याध्यापकः।]

नीचे लिखे अर्थों में आनेवाले 'यह' का अनुवाद नपुंसकलिङ्ग एकवचन में किया जाता है:—

(क) सामान्य अर्थ में—

यह आपको ही शोभा देता है=
इदं भवतः एव शोभते।

(ख) वाक्यार्थ के लिये—

यह कौन जानता था कि बुढ़ापे में मेरी यह दशा होगी=

इदम् (एतत्) को जानाति स्म यद् वार्धके मम एषा दशा भविष्यति ।

परन्तु जहां वाक्यार्थ के लिये आनेवाला 'यह' उसके आगे आनेवाले किसी शब्द (विशेष्य) का विशेषण होता है वहां अनुवाद में नपुंसकलिङ्ग और एकवचन के प्रयोग का नियम नहीं रहता। वहां 'इदम्' 'एतत्' के लिङ्ग, वचन विशेष्य के अनुसार होते हैं। जैसे—

यह मेरा निश्चय है कि घर ही ठहरूंगा=

अयं मे (मम) निश्चयो यत् गृहे एव स्थास्यामि ।

यह मेरी इच्छा है कि तीर्थों के दर्शन करूं=

इयं मे वाञ्छा यत् तीर्थानि पश्येयम् ।

(ग) उद्धरण के लिये—

"जैसे चाहते हो करो"—यह कह कर वह चला गया=

"यथेच्छसि (तथा) कुरु"— एतदुक्त्वा सः अगच्छत् ।

[वाक्यार्थ और उद्धरण के लिये आनेवाले 'यह' के लिये संस्कृत में 'इति' शब्द आता है। कभी २ 'इति' के साथ 'इदम्' या 'एतत्' का भी प्रयोग होता है। जैसे—

बुढ़ापे में मेरी यह दशा होगी, यह कौन जानता था=

वार्धके मम एषा दशा भविष्यति—इति (इत्येतत्) को जानाति स्म ।

"जैसे चाहते हो करो"—यह कहकर वह चला गया=

"यथेच्छसि (तथा) कुरु"—इत्युक्त्वा (इत्येतदुक्त्वा) सः अगच्छत् ।

"यह कौन जानता था कि बुढ़ापे में मेरी यह दशा होगी" इस प्रकार के 'कि' वाले वाक्यों का "इदं को जानातिस्म—वृद्धावार्धके…" इस प्रकार अनुवाद शब्दानुवादमात्र ही है, संस्कृत के ढंग पर नहीं। संस्कृत के वाक्यप्रयोग के अनुसार अनुवाद करने में 'कि' वाले वाक्य को 'कि' को उड़ाकर पीछे रखना चाहिये। जैसे—वार्धके मम एषा दशा भविष्यति—इति को जानाति स्म। इसी प्रकार—यह मेरा निश्चय है कि घर ही ठहरूंगा= गृहे एव स्थास्यामि—इति (इत्येषः) मे निश्चयः—इत्यादि।]

निर्देश के लिये भी 'यह' आता है। इसके अनुवाद में 'इदम्' और 'एतत्' के पहले प्रायः 'इति' लगाया जाता है। जैसे—कृष्णा, यह द्रौपदी का नाम है=कृष्णा—इत्येतत् (इति) द्रौपद्याः नाम (कृष्णा—इत्येषा द्रौपद्याः संज्ञा)।

परन्तु देना खाना आदि 'ना' प्रत्ययान्त भाववाचक संज्ञाओं के अनन्तर आनेवाले निर्देशार्थक 'यह' को अनुवाद में छोड़ देना चाहिये (इसका अनुवाद नहीं करना चाहिये)। जैसे—

अधिकार पाकर गरीबों को सताना, यह बड़ों को शोभा नहीं देता=

अधिकारं प्राप्य दीनानां पीडनं महतां न शोभते।

अपच में खाना, यह बड़ी मूर्खता है=

अजीर्णे भोजनं परमा मूर्खता—इत्यादि।

[ऊपर के वाक्यों में 'यह' का अनुवाद 'इति' के साथ 'इदम्' या 'एतत्' शब्द जोड़कर भी किया जाता है। जैसे—'अधिकारं प्राप्य दीनानां-पीडन मितीदम् (इत्येतत्) महतां न शोभते। अजीर्णे भोजनमितीयम्

(इत्येषा) परमा मूर्खता । केवल 'इदम्' 'एतत्' शब्द से भी अनुवाद हो सकता है, परन्तु इसमें वाक्य का क्रम बदलकर पीछे के वाक्य में 'यत्' लगाना होता है । जैसे—इदम् (एतत्) महतां न शोभते यदधिकारं प्राप्य दानानां पीडनम् । एषा परमा मूर्खता यदजीर्णे भोजनम् ।]

['यह' के अर्थ में संस्कृत में 'अदस्' शब्द का भी प्रयोग आता है। जैसे—"असौ महेन्द्रद्विपदानगन्धी·········वायुः······आचामति स्वेदलवान् मुखे ते"। असौ वायुः······यह वायु··(रघुवंश) । "निवेदनमदः···" निवेदन यह है—इत्यादि ।]

वह—

'वह' के लिये संस्कृत में 'तत्' और 'अदस्' शब्द आते हैं। दोनों के प्रयोग में भेद यह है कि 'तत्' 'परोक्ष' पदार्थ के लिये आता है और 'अदस्' दूरवर्ती पदार्थ के लिये—"अदसस्तु विप्रकृष्टे तदिति परोक्षे विजानीयात्" । जैसे—

वह आया=सः (असौ) आगतः ।

उसका मन शुद्ध है=तस्य मनः शुद्धम् (निर्मलम्) ।

उनको बुलाओ=तान् आह्वय ।

वे किताबें यहां लाओ=तानि पुस्तकानि अत्र आनय ।

उस लोक में फल होगा=अमुष्मिन् लोके फलं भविष्यति ।

इसके आदरार्थ बहुवचन का अनुवाद प्रायः सर्वत्र एकवचन में किया जाता है। जैसे—

वे (वह) (स्वा० रामतीर्थ) आपमस्त थे=
सः आत्मारामः आसीत् ।

शेक्सपीयर उनका (कालिदास का) मुकाबला नहीं कर

सकता=शैक्‌पीयरः तस्य तुलां न आरोहति ।

[हिन्दी में कभी २ 'वे' के बदले आदर के लिये 'आप' शब्द आता है। इसका अनुवाद 'तत्रभवत्' शब्द से विशेष स्थलों को छोड़कर सर्वत्र एकवचन में करना चाहिये। जैसे—जब महाराज रणजीतसिंह ने फ्रंटीयर फतह किया तब आपकी कीर्ति चारों ओर फैल गई=यदा महाराजो रणजित्सिंहः सीमाप्रान्तं पराजयत तदा तत्रभवतः कीर्तिः सर्वतः प्रासरत् (व्याप्नोत) ।]

हिन्दी में पहले कहे हुए दो पदार्थों में से पहले के लिये 'वह' शब्द आता है जिसका अनुवाद 'पूर्व' या 'एक' शब्द से करना चाहिये और दूसरे के लिये 'यह' शब्द आता है, जिसका अनुवाद 'पर' या 'अन्य' ('अपर') शब्द से करना चाहिये। जैसे—

शराब और दौलत में इतना ही भेद है कि इसके पीने से मद होता है और उसके पाने से=

मद्ये धने च एतावानेव भेदः (एतावदेव अन्तरम्) यत् पूर्वस्य (एकस्य) पानेन मदो जायते, परस्य (अन्यस्य) प्राप्त्या (लाभेन) ।

[संस्कृत में भी इसी प्रकार के प्रयोग आते हैं । जैसे—"गुणोदोषौ बुधो गृह्णन् इन्दुक्ष्वेडाविवेश्वरः । शिरसा श्लाघते पूर्वं परं कण्ठे नियच्छति ।" (सुभाषित) "योऽस्ति यस्य यदा मांसमुभयोः पश्यतान्तरम् । एकस्य क्षणिका प्रीतिरन्यः प्राणैर्वियुज्यते ।" (हितोपदेश १) "एको ययौ चैत्ररथप्रदेशान् सौराज्यरम्यान् अपरो विदर्भान् ॥" (रघुवंश ५।६०)-इत्यादि ।]

सो—

'सो' का अनुवाद भी 'तत्' या 'अदस्' शब्द से होता है। जैसे—सो सुन राजा के मन सोच हुआ=तत् श्रुत्वा राज्ञः मनसि

चिन्ता अजायत । आपने जो कहा सो मैंने मनजूर किया= भवता यत् कथितं तत् मया स्वीकृतम् ।

[जब 'सो' का प्रयोग योजक (अव्यय) के रूप में होता है तब इसका अनुवाद अर्थ के अनुसार 'तत् (तस्मात्)' या 'अतः' से किया जाता है। जैसे--तुम मोहन से कभी नहीं बोलते; सो क्या तुम भी नाराज़ हो= त्वं मोहनेन कदापि न भाषसे; तत् (तस्मात्) किं त्वमपि क्रुद्धः (रुष्टः) असि। इम्तहान नज़दीक आगया; सो यह खेल का समय नहीं=परीक्षा आसन्ना; अतः अयं क्रीडनस्य समयो नास्ति (अतो नायं क्रीडायाः कालः)।]

(२) अनिश्चयवाचक सर्वनाम ।

कोई--

'कोई' के अनुवाद के लिये 'किम्' शब्द के पुंलिङ्ग रूप 'क' और स्त्रीलिङ्ग रूप 'का' से विभक्ति लगाकर अनन्तर 'चित्' 'चन' या 'अपि' शब्द जोड़े जाते हैं। जैसे—

दरवाज़े पर कोई खड़ा है=
द्वारे कश्चित् [कः+चित्] (कश्चन, कोऽपि) तिष्ठति ।
यह भेद कोई और न जाने=
इदं रहस्यं कश्चित् अन्यो न जानीयात् ।
किसी को मत सता=
कमपि (कञ्चित्, कञ्चन) मा पीडय (बाधस्व) ।
कोई आई है=काचित् (काचन कापि) आगता ।
किसी बुढ़िया ने कहा=कयाचित् (कयाचन, कयापि) वृद्धया कथितम् ।

'सब कोई' और 'हर कोई' का अनुवाद 'सर्व' शब्द से एक वचन या बहुवचन में किया जाता है। जैसे—

वहां सब कोई (हर कोई) संस्कृत बोलता है=
तत्र सर्वः संस्कृतं भाषते (तत्र सर्वे संस्कृतं भाषन्ते)।

कभी २ इनका अनुवाद यः कश्चित् (कश्चन, कोऽपि) पुं० और या काचित् (काचन, कापि) स्त्री० से भी किया जाता है। जैसे—

हर कोई ऐसा नहीं कर सकता (कर सकती)=
यः कश्चित् (कश्चन, कोऽपि (या काचित्=काचन=कापि) एवं कर्तुं न प्रभवति।

['कोई एक' का अनुवाद 'कोई' के समान ही होता है। जैसे—कोई एक कहता था=कश्चित् (कश्चन, कोऽपि) कथयति स्म (अकथयत्)। वहां कोई एक बुढ़िया खड़ी थी=तत्र काचित् (काचन, कापि) वृद्धा स्थिता आसीत्।]

आदरार्थ बहुवचन 'कोई' का अनुवाद एकवचन में करना चाहिये और साथ कोई प्रतिष्ठासूचक शब्द ('महानुभाव' आदि) लगाना चाहिये। जैसे—

मोहन के घर कोई आए हैं=मोहनस्य गृहे कश्चित् महानुभावः आगतः।

'बहुत्व' के अर्थ में बहुधा 'कोई' दो बार (कोई कोई) आता है। इसका अनुवाद बहुवचन में करना चाहिये। जैसे—

कोई कोई दिन में भी सोते हैं=

केचित् (केचन) दिनेऽपि स्वपन्ति।
किसी किसी का मत है=
केषाञ्चित् (केषाञ्चन) मतमस्ति।

['कोई न कोई' का अनुवाद 'कोई' के समान ही किया जाता है। जैसे--कोई न कोई अवश्य आएगा=कश्चित् (कश्चन) अवश्यम् आगमिष्यति।]

संख्या और परिमाणात्मक शब्द के पहले आनेवाले 'कोई' (लगभग) का अनुवाद 'आसन्न' या 'उप' से किया जाता है। जैसे—

इस पुस्तक के कोई (लगभग) चार सौ पृष्ठ हैं=
अस्य पुस्तकस्य आसन्नशतचतुष्काणि शतचतुष्कस्य आसन्नानि, उपशतचतुष्काणि पृष्ठानि ?

["नदी किसे कहते हैं ?" इस प्रकार के वाक्यों का अनुवाद यों होता है--कं पदार्थं नदीति कथयन्ति (नदीत्याचक्षते) ?=नदीत्येष कः पदार्थः ?=नदीत्वं नाम किम् ?।]

'कोई भी' के अनुवाद में 'कश्चित्' कश्चन, 'काचित्' 'काचन' के साथ 'अपि' लगाया जाता है, परन्तु 'कोऽपि' 'कापि' आदि के साथ नहीं। क्योंकि ये 'कोई' और 'कोई भी' दोनों अर्थों में आते हैं। जैसे—यहां कोई भी नहीं आया=अत्र कश्चिदपि (कश्चनापि, कोऽपि) न आगतः।

परन्तु "कोई भी हो" "मैं कोई भी होऊं" इत्यादि वाक्यों में 'कोई भी' का अनुवाद 'यो वा को वा' पुं० 'या वा का वा' स्त्री० से

करना चाहिये—यो वा को वा (या वा का वा) भवतु। अहं यो वा को वा (या वा का वा) भवामि। "यो वा को वा भवाम्यहम्" (वेणीसंहार ३ अङ्क)।

कई—

'कई' का अनुवाद "कई कहते हैं" इत्यादि वाक्यों में 'केचित्' या 'एके' करना चाहिये—केचित् (एके) कथयन्ति। कई रोते हैं, कई हँसते हैं=केचित् (एके) रुदन्ति, केचित् (एके) हसन्ति। परन्तु "कालिदास ने कई ग्रन्थ बनाए" इत्यादि वाक्यों में कई का अनुवाद 'अनेक' 'बहु' प्रभूत' आदि शब्दों से करना चाहिये— कालिदासेन अनेके (बहवः, प्रभूताः) ग्रन्थाः रचिताः (निर्मिताः)।

कुछ—

'कुछ' का अनुवाद 'किम्' (नपुं०) शब्द के साथ 'चित्' 'चन' या 'अपि' लगाकर (किञ्चित्, किञ्चन, किमपि) किया जाता है। जैसे—

कुछ पूछूं ?=किञ्चित् (किञ्चन, किमपि) पृच्छेयम् ?

घी में कुछ है ?=घृते किञ्चित् (किञ्चन, किमपि) अस्ति।

श्यामा के मन में कुछ और ही है=

श्यामाया मनसि किञ्चित् (किञ्चन, किमपि) अन्यदेव अस्ति।

[जहां 'कुछ' क्रियाविशेषण के रूप में आता है वहां भी इसका अनुवाद 'किञ्चित्' 'किञ्चन' या 'किमपि' ही किया जाता है। जैसे—

दर्द पहले से कुछ कम है=पीडा पूर्वतः (पूर्वापेक्षया) किञ्चित् (किञ्चन, किमपि) न्यूना अस्ति।

पगड़ी कुछ लंबी है=उष्णीषं किञ्चित् (किञ्चन) दीर्घम् अस्ति ।

दोनों की शकल कुछ कुछ मिलती है=

द्वयोः (उभयोः) आकृतिः किञ्चित् किञ्चित् संवदति ।

मुहावरे के रूप में आनेवाले 'कुछ' का अनुवाद 'किञ्चित्' से नहीं किया जाता; या तो इसे अनुवाद में छोड़ दिया जाता है या यथायोग्य खलु आदि से इसका अनुवाद किया जाता है । जैसे—

हिन्दी कुछ संस्कृत तो है नहीं=

हिन्दीः (हिन्दीभाषा, हैन्दवी भाषा) खलु संस्कृतं नास्ति (न खलु हिन्दीः संस्कृतम्) ।

हम कुछ लड़ते नहीं हैं=

वयं खलु न कलहायामहे (न खलु वयं कलहायामहे) ।

'सब कुछ' का अनुवाद केवल 'सर्वम्' और 'बहुत कुछ' का अनुवाद केवल 'बहु' और 'कुछ न कुछ' का अनुवाद केवल यत् किञ्चित्' ('किञ्चन' 'किमपि') किया जाता है, 'सर्वं किञ्चित्', 'बहु किञ्चित्' और 'किञ्चित् न किञ्चित्' नहीं । जैसे—

हम सब कुछ समझते हैं=वयं सर्वं बुध्यामहे ।

मैं बहुत कुछ जानता हूं=अहं बहु जानामि ।

कुछ न कुछ करता ही है=यत् किञ्चित (यत् किञ्चन,) करोत्येव ।

'कुछ का कुछ' का अनुवाद 'अन्य' शब्द के आगे 'एव' लगाकर करना चाहिये । ('अन्य' शब्द विशेष्य के अनुसार पुं० स्त्री० या नपुं० रखना चाहिये) । जैसे—

बिमारी से वह कुछ का कुछ हो गया=

रोगेण सः अन्यः एव जातः (अवस्थान्तरम्, रूपान्तरं गतः) ।

सास की शिक्षा के प्रभाव से वहू कुछ की कुछ हो गई=
श्वश्वाः शिक्षायाः प्रभावेण वधूः अन्या एव (अन्यादृशी एव) संवृत्ता ।
आपने कुछ का कुछ समझ लिया=भवता अन्यदेव बुद्धम् ।

'कुछ' का अर्थ जहां 'थोड़ा' होता है वहां इसका अनुवाद 'अल्प' 'स्तोक' आदि अल्पार्थक शब्दों से और कभी २ 'कतिचित् (चन)' शब्द से किया जाता है । जैसे—

कुछ ही लोग धनी हैं=अल्पाः (स्तोकाः, विरलाः) एव जनाः धनिनः सन्ति ।
कुछ ही पुस्तकें खरीदी हैं=कतिचिदेव (अल्पान्येव, स्तोकान्येव) पुस्तकानि क्रीतानि ।

जहां 'कुछ' का अर्थ 'अनिर्वचनीय' (अज्ञात) होता है वहां इसका अनुवाद केवल 'किमपि' से किया जाता है (किञ्चित् या किञ्चन से नहीं) । जैसे—यह 'कुछ' है = इदं किमपि अस्ति ।

'कुछ—कुछ' का अनुवाद 'किम्' शब्द से 'चित्' और 'चन' लगाकर और कहीं २ 'अन्यत्' शब्द से भी किया जाता है । जैसे—

कुछ तुम जानते हो कुछ मैं भी जानता हूं=
किञ्चन् त्वं जानासि (जानीषे), किञ्चत् अहमपि जानामि (जाने) ।
एक कुछ कहता है और दूसरा कुछ=एकः अन्यत् कथयति (वदति), द्वितीयः (अपरः) अन्यत् ।

'कुछ भी' का अनुवाद 'किञ्चित्' 'किञ्चन' के साथ 'अपि' लगाकर किया जाता है । परन्तु 'किमपि के साथ और 'अपि' नहीं लगाया जाता; क्योंकि 'किमपि' 'कोई' और 'कोई भी' दोनों अर्थों में आता है ।

जैसे—उसने कुछ भी नहीं दिया=तेन किञ्चिदपि (किञ्चनापि, किमपि) न दत्तम् ।

परन्तु "कुछ भी हो" "कुछ भी करे" इत्यादि में 'कुछ भी' का अनुवाद 'यद्वा तद्वा' से करना चाहिये—यद्वा तद्वा भवतु (यद् भाव्यं तद्भवतु)। यद्वा तद्वा करोतु (यदिच्छति तत् करोतु)।]

(३) सम्बन्धवाचक सर्वनाम ।

जो—

जो के लिये संस्कृत में 'यत्' शब्द आता है (पुं० 'य' स्त्री० 'या' और नपुं० 'यत्')। जैसे—

जो तुमने किया सो अच्छा=यत् त्वया कृतं तत् साधु (वरम्, शोभनम्)।

जो लड़की मेहनत से पढ़ेगी उसे इनाम देंगे=

या कन्या परिश्रमेण पठिष्यति तस्यै पारितोषिकं दास्यामः ।

जो घर रहेगा वह मिठाई पाएगा=

यः गृहे स्थास्यति सः मिष्टान्नं प्राप्स्यति ।

वह औरत कौन है जिसका मन गहने नहीं चाहता=

सा स्त्री का (का सा स्त्री) यस्या मनो भूषणानि न वाञ्छति (यस्या मनो भूषणेभ्यो न स्पृहयति)।

जल्दी चलो जिससे ठीक समय पर पहुंच जाएं=

शीघ्रं गच्छत येन नियते समये प्राप्नुयाम ।

जो जो कहा सो किया=यद् यत् कथितं तत्कृतम् ।

"इनमें से जो समझदार हो उसे भेज दो" इत्यादि वाक्यों

के अनुवाद में 'जो' के लिये 'यत्' शब्द के स्थान में दो में से एक के जतलाने के लिये 'यतर' (पुं० यतर, स्त्री० यतरा, नपुं० प्रथमा द्वितीया एकव० में यतरत्, अन्यत्र यतर) और 'वह' के लिये 'तत्' के स्थान में 'ततर' (पुं० स्त्री० आदि में 'यतर' के समान), बहुतों में से एक के जतलाने के लिये 'यतम' और 'ततम' (पुं० स्त्री० आदि में दोनों 'यतर' के समान) का भी प्रयोग होता है। जैसे—अनयोः यः (यतरः) बुद्धिमान् (चतुरः) तं (ततरं) प्रेषय। एषां यः (यतमः) बुद्धिमान् तं (ततमं) प्रेषय—इत्यादि।

['यत्' के साथ उसके सम्बन्धी 'तत्' या उसके समानार्थक 'ततर' आदि का आना आवश्यक है, परन्तु जहां 'यत्' उत्तर (दूसरे) वाक्य में आता है वहां पहले वाक्य में 'तत्' का आना आवश्यक नहीं। इसलिये "जो जो कहते हो, करता हूं" इसके अनुवाद में या तो "यद् यत् कथयसि तत् तत् (तत्) करोमि" इस प्रकार 'करोमि' (करता हूं) के पहले 'तत्' रखना चाहिये या वाक्य का क्रम बदल देना चाहिये। जैसे—"करोमि यद् यत् कथयसि"। इस प्रकार 'यत्' के दूसरे वाक्य में आने से पहले वाक्य "करोमि" में 'तत्' नहीं रक्खा गया।

जब 'जो' योजक के रूप में प्रयुक्त होता है तब इसका अनुवाद अर्थ के अनुसार 'यदि' और 'यत्' से किया जाता है। जैसे—जो आज्ञा हो तो जाऊं=यदि आज्ञा स्यात् तर्हि गच्छेयम्। हर किसी की सामर्थ्य नहीं जो चलती गाड़ी को रोक सके=सर्वस्य (यस्य कस्यचित्) सामर्थ्यं नास्ति यत् चलन्तीं वाष्पशकटीं निरोद्धुं शक्नुयात्=(नहि सर्वः [यः कश्चित्] चलन्तीं वाष्पशकटीं निरोद्धुं प्रभवति=नहि सर्वे चलन्त्याः वाष्पशकट्याः निरोधे समर्थाः)—इत्यादि।

निश्चय के अर्थ में 'जो' (क्रियाविशेषण) का अनुवाद निश्चयार्थक 'खलु' से करना चाहिये। जैसे—यह जो हूं=अयं खलु अस्मि (अयमस्मि खलु)।]

प्रश्नवाचक सर्वनाम ।

कौन—

'कौन' (कौनसा, कौनसी) के लिये संस्कृत में 'किम्' शब्द आता है (पुं० 'क' स्त्री 'का' नपुं० 'किम्') । जैसे—

वहां कौन है=तत्र कोऽस्ति ? (कस्तत्र ?)

आप कौन हैं ?=को भवान् ?

यह गहना किसने दिया=इदं भूषणं को दत्तवान् ।

वह कौन है ?=असौ कः? (कोऽसौ ?)

बुढ़िया, तुम कौन हो=वृद्धे, त्वं काऽसि ।

इसमें पाप कौन है और पुण्य कौन है ?=
अस्मिन् (अत्र) पापं किम् पुण्यञ्च किम् ?

सभा में कौन कौन आए थे=सभायां के के आगता आसन् ?

किस किस को बुलाऊं ?=कं कम् आह्वयेयम् ?

तूने कौन कौन से पुण्य किये हैं ?=त्वया कानि कानि पुण्यानि कृतानि ?

तुम्हारी लड़की कौनसी है ?=तव कन्या का अस्ति ? (का तव कन्या ?)

इसमें क्रोध की बात कौनसी है=अत्र क्रोधस्य कारणं किमस्ति ? (किमत्र क्रोधस्य कारणम् ?)

[कभी २ कौन, कौनसा, कौनसी का अनुवाद 'कतम' शब्द से भी किया जाता है (पुं० कतम, स्त्री० कतमा, नपुं० प्रथमा, द्वितीया एकव० कतमत् अन्यत्र 'कतम') । जैसे—तुम्हारा घर कौनसा है ?=तव गृहं कतमत् ?* (कतमत् तव गृहम् ?) । इनमें कौनसी (कौन) कन्या

---

* यद्यपि "वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच्" इससे जातिविषयक प्रश्न में ही 'डतमच्' प्रत्यय विधान किया है तथापि महाभाष्यकार ने

विदुषी है ?=आसु (आसाम्) कतमा (का) कन्या विदुषी ? । इन लड़कों में कौनसा (कौन) होश्यार है ?=एषु बालेषु (एषां बालानाम्) कतमः (कः) पटुः ? दो में से एक के विषय में जहां प्रश्न हो वहां कौन, कौनसा (सी) के लिये 'कतर' शब्द आता है (पुं० कतर, स्त्री० कतरा, नपुं० प्रथमा, द्वितीया एकव० कतर अन्यत्र कतरत्)। जैसे—उन (दोनों) में से कौनसा (कौन) पहलवान है ?=तयोः (द्वयोः) कतरः (कः) मल्लः ? इन (दोनों) में से कौनसा (कौन) कुल अच्छा है ? अनयोः (द्वयोः) कतरत् कुलं साधु ? ।]

[जब 'कौन' क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तब इसका अनुवाद 'कुतः' से किया जाता है । जैसे—आपको सत्सङ्ग कौन दुर्लभ है ?=भवतः (षष्ठी) सत्सङ्गः कुतो दुर्लभः ?]

क्या—

'क्या' का अनुवाद 'किम' से किया जाता है । जैसे—
आप 'क्या' खाएंगे ?=भवान् किं भक्षयिष्यति ? ।
तू यह क्या करता है ? त्वम् इदं किं करोषि ? ।
उन्होंने क्या क्या किया ? तैः किं किं कृतम् ?
वाह क्या कहना है !=अहो किं कथ्यताम् ।
हम कौन थे क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी=
वयं के आस्म, किं जाताः, इतः परं च किं भविष्यामः ।

"आत्मा क्या है ? ज्ञान क्या है ? विद्या क्या है ?" इस प्रकार के वाक्यों का अनुवाद विशेष्य (आत्मा आदि) के अनुसार 'किम्' शब्द को पुं०, नपुं० या स्त्री० में रखकर "आत्मा कः; ज्ञानं किम; विद्या का" इस प्रकार किया जाता है,

---

'जातिपरिप्रश्ने' का प्रत्याख्यान कर दिया है । इसलिये जाति से अतिरिक्त प्रश्न में भी 'कतम' शब्द आता है ।

अथवा

"किम्" आत्मत्वम्; किं ज्ञानत्वम्; किं विद्यात्वम् (आत्मत्वं नाम किम्; ज्ञानत्वं नाम किम्; विद्यात्वं नाम किम्)" इस प्रकार विशेष्य से 'त्व' (तद्धित भाववाचक प्रत्यय नपुं०) लगा कर और उसके अनुसार 'किम्' को नपुंसक में रखकर।

"क्या हुआ जो इस लड़ाई में हम हारे।" इस प्रकार के वाक्यों में 'क्या हुआ' का अनुवाद 'किं जातम्' की अपेक्षा 'न भयम्' 'का चिन्ता' आदि करना उचित है। जैसे—न भयं (का चिन्ता) यदि अस्मिन् युद्धे वयं पराजिताः (पराजयं प्राप्ताः)।

"भला हम दास लेके क्या करेंगे ?" इस प्रकार के वाक्यों में 'क्या करेंगे' का अनुवाद 'किं करिष्यामः' की जगह 'को लाभः' 'किं प्रयोजनम्' 'न प्रयोजनम्' आदि से भी किया जाता है। इसके अनुसार सारे वाक्य का अनुवाद यों होगा—

ननु वयं दासं गृहीत्वा किं करिष्यामः।

ननु दासस्य ग्रहणे (ग्रहणेन) अस्माकं को लाभः ? (किं प्रयोजनम् ?)

दासस्य ग्रहणेन अस्माकं न प्रयोजनम् (कार्यम्) ?

(किं प्रयोजनमस्माकं दासग्रहणेन ?

न प्रयोजनमस्माकं दासग्रहणेन)।

कभी २ प्रश्न और आश्चर्य अर्थ में 'क्या' का द्योतक के समान प्रयोग होता है, तब भी इसका अनुवाद 'किम्' (अव्यय) से ही किया जाता है। जैसे—

क्या गाड़ी चली गई ?=किं वाष्पयानं गतम् ?

क्या तुमको चिह्न नहीं दिखाई देते !=

किं त्वया चिह्नानि न दृश्यन्ते ! (किं न पश्यसि चिह्नानि !)

प्रश्नार्थक 'क्या' का अनुवाद प्रश्नार्थक 'अपि' 'ननु' आदि अव्ययों से भी किया जाता है। जैसे—

अपि (ननु) वाष्पयानं गतम् ?

["वह आदमी क्या है, राक्षस है"—इस प्रकार के वाक्यों में क्या का अनुवाद 'न' से करना चाहिये। जैसे—सः मनुष्यो नास्ति, राक्षसोऽस्ति (राक्षसोऽसौ, न मनुष्यः)। धन तो क्या, इस काम में तन भी लगा देंगे=न केवलं धनम्, तनुमपि अस्मिन् कर्मणि विनियोजयिष्यामः।

"ऊषा क्या देखती है कि चहुं ओर बिजली चमकने लगी।" इस प्रकार का वाक्यविन्यास हिन्दी में ही होता है। संस्कृत के अनुसार इसका अनुवाद यों होगा—उषाः चतसृषु दिक्षु (सर्वतः) विद्युतम् दीपितुमारब्धां (दीप्यमानाम्) अपश्यत् (उषाः किं पश्यति यत् विद्युत् दीपितुमारब्धा—यों नहीं)।

"घोड़े दौड़ते क्या हैं, उड़ते हैं" इस प्रकार के वाक्यों में क्या का अनुवाद यथायोग्य 'न-मन्ये' या केवल 'नु' से करना चाहिये। जैसे—घोटकाः (अश्वाः) न धावन्ति, मन्ये उड्डीयन्ते। अश्वाः(वाजिनः) धावन्त्युड्डीयन्ते नु। ऐसे वाक्यों का अनुवाद और प्रकार से भी किया जा सकता है। जैसे—धावन्तः अश्वाः वेगप्रकार्षाद् उड्डीयन्ते इव।—इत्यादि।

"क्या अच्छी बात है!" इस प्रकार के वाक्यों में 'क्या' का अनुवाद यथायोग्य 'अति' 'नितराम्' 'परम' आदि शब्दों से करना चाहिये। जैसे—अतिशोभनम् अभिधानम्=अत्यनुरूपम् (नितरामनुरूपम्) उक्तम्=अतिरुचिरमुपन्यस्तम्=अतिरमणीय उपन्यासः।

इसी प्रकार "क्या ही अच्छा कहा है!" "क्या खूब कही!" इत्यादि में भी 'क्या' का अनुवाद ऊपर लिखी रीति से ही करना चाहिये।

जैसे—अतिसुष्ठु खल्विदमुक्तम्=परमरमणीयेयं सूक्तिः। अतिविचित्रम् अभिहितम् (उपन्यस्तम्)—इत्यादि।

जहां 'क्या' का अर्थ अशक्यता होता है वहां इसका अनुवाद यों किया जाता है—चोर मुझे क्या लूटेंगे=चौराः मां लुण्ठितुं न शक्नुवन्ति (प्रभवन्ति), चोराणां मम लुण्ठने का शक्तिः। उसके मारने से परलोक क्या बिगड़ेगा=तस्य मारणेन (हत्यया, घातेन) परलोकविघातः (परत्र सद्गतिनाशः) न शक्यः—इत्यादि।

जहां 'क्या' निश्चय के अर्थ में आता है वहां इसका अनुवाद निश्चयार्थक अव्यय 'खलु' से करना चाहिये। जैसे—मां, मैं यह क्या बैठी हूं?=मातः, अहमियमस्मि खलु आसीना। सिपाही वहां क्या जारहा है=सैनिकः तत्र खलु गच्छति।

'क्या—क्या' का अनुवाद 'च' से करना चाहिये। क्या राजा, क्या प्रजा सब उसका आदर करते थे=राजा प्रजा च सर्वे तस्य आदरं कुर्वन्ति स्म (तम् आद्रियन्ते स्म)। क्या मनुष्य और क्या जीवजन्तु, मैंने अपना सारा जन्म इन्हीं का भला करने में गँवा दिया=मनुष्याणाम् अन्येषां च जीवानाम् उपकारे (हिताचरणे) एव मया स्वीयं सर्वम् आयुः (जीवनं) यापितम्।

'क्या से क्या' का अनुवाद 'अवस्थान्तरम्' 'दशान्तरम्' आदि के साथ 'गम्' 'प्राप्' आदि धातुओं की क्रिया लगाकर ('अन्य' शब्द से 'एव' लगाकर भी) किया जाता है। जैसे—हम आज क्या से क्या हुए=वयमद्य (इदानीम्) अवस्थान्तरं (दशान्तरं) गताः (प्राप्ताः)। (वयमिदानीम् अन्ये एव जाताः)।]

अभ्यास

१ उसने लैंप बुझा दिया। २ यह तो सरसों है। ३ जो दूसरों के लिये गढ़ा खोदता है वह खुद उसमें गिरता है। ४ यह

वही आदमी आगया है जिसे याद कर रहे थे । ५ यह लो आपकी चिट्ठी है । ६ इस लड़के के दांत साफ नहीं हैं । ७ वह लड़का बड़ा मेहनती है । ८ इन पंछियों की चोंचें टेढ़ी हैं । ९ मैं, तुम और वह इकट्ठे अमृतसर चलेंगे । १० सब अपनी अपनी जगह पर बैठो । ११ इस लड़की के भाई कितने हैं ? १२ कोई भिखारिन दरवाजे पर खड़ी है । १३ यह घोड़ी किसकी है ? १४ ये लड़के क्या पूछना चाहते हैं ? १५ यह मेरा नियम है कि बिना नहाए कुछ न खाऊंगा । १६ आपका नाम लक्ष्मणराव है, आप बीणा बजाने में एक हैं । १७ मैं देखलूंगा तुम क्या करते हो, यह कह कर वह चला गया । १८ ओं, यह महामन्त्र है । १९ घर फूंक कर होली मनाना, यह तुम्हें ही शोभा देता है । २० जब राणा प्रताप ने देखा कि लड़की के हाथ से रोटी बिल्ला छीन लेगया और वह भूखी चिल्ला रही है तब आपको असीम दुःख हुआ । २१ परशुराम और राम दोनों विष्णु के अवतार हैं, वह ब्राह्मणवंश में हुए और यह क्षत्रियवंश में । २२ बच्चे जो देखते हैं सो सीखते हैं । २३ वह तो गया, सो आओ हम भी चलें । २४ मेरा गांव यहां से कोई चार कोस है । २५ कई रास्ते हैं । २६ एक हाथ से इतना बड़ा मुद्गर उठा लेना कुछ हंसी खेल थोड़े ही है । २७ वे तुम्हारे कौन होते हैं । २८ कुछ न कुछ करता रहे तो सब कुछ कर लेता है । २९ कुछ ही दिनों में वह कुछ का कुछ हो गया । ३० कुछ भी हो मुझे तो जाना ही है । ३१ इनमें कौनसी पगड़ी तुम्हारी है । ३२ क्या मूरख क्या पण्डित सभी मौत के मुंह में जाते हैं । ३३ दो दिन बुखार आया और तुम्हारी शकल क्या से क्या हो गई । ३४ घर क्या है, सराय है ।

तीसरा अधिकरण।

विशेषण।

पहला अध्याय।

विशेषणों के अनुवाद में इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि जो लिङ्ग, वचन और विभक्ति विशेष्य में हो वही विशेषण में भी रखनी चाहिये। जैसे—

सुन्दर लड़का = सुन्दरो बालः।

सुन्दर मुख = सुन्दरं मुखम्।

सुन्दर स्त्री = सुन्दरी स्त्री।

अच्छे जूते = शोभने उपानहौ। (स्त्री० द्वि०)

अच्छे कपड़े = शोभनानि वस्त्राणि।

ऊपर के उदाहरणों में सुन्दर आदि विशेषणों के लिङ्ग, वचन आदि मुख आदि विशेष्यों के अनुसार हैं।

परन्तु विशेषण के रूप में आने वाले संज्ञा शब्दों का लिङ्ग विशेष्यके अनुसार नहीं होता, उनका अपना ही लिङ्ग रहता है और विशेष स्थलों को छोड़ कर वचन भी प्रायः एकवचन ही रहता है। जैसे—

महापुरुष सच्चाई के घर होते हैं =

महापुरुषाः सत्यस्य सदनं (गृहं) भवन्ति।*

---

* "अकलितमहिमानः केतनं मङ्गलानां कथमपि भुवनेऽस्मिंस्त्वादृशाः संभवन्ति" (मालतीमाधव)

मोहन उसका प्रीतिपात्र है=

मोहनः तस्य प्रीतिपात्रमस्ति ।

इनमें 'महापुरुषाः' और 'मोहनः' विशेष्य पुंलिङ्ग हैं । परन्तु उनके समानाधिकरण विशेषण 'सदन' और 'प्रीतिपात्र' नपुंसकलिङ्ग हैं । 'महापुरुषाः' बहुवचन है, परन्तु 'सदनम्' एकवचन ।

वे (दो या सब) परस्पर मित्र हैं=तौ परस्परं मित्रे स्तः । ते परस्परं मित्राणि सन्ति ।—इत्यादि विशेषस्थलों में विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाले संज्ञाशब्द ('मित्र') का वचन विशेष्य ('ते' और 'तौ') के अनुसार आता है, सर्वत्र वैसा नहीं होता ।

(१) गुणवाचक विशेषण

रंग, आकार, दशा, देश, काल, स्थान, दिशा, गुण, आदि के वाचक सब विशेषण गुणवाचकों के अन्तर्गत हैं :—

रंग—काला, पीला, नीला (कपड़ा)=कालः (कृष्णः), पीतः, नीलः (पटः), इत्यादि ।

आकार—गोल (गेंद)=गोलः (गेन्दुकः), सुडौल (शरीर)= सुबन्धं (शरीरम्), इत्यादि ।

दशा—बीमार (बच्चा)=रोगी (बालकः), दुबला (शरीर) =दुर्बलं (शरीरम्), गीला (कपड़ा)=आर्द्रं (वस्त्रम्), इत्यादि ।

काल—नया (घर)=नवम् (गृहम्),पुराना (कपड़ा)=पुराणः (पटः), वर्तमान (दशा)=वर्तमाना (दशा), इत्यादि ।

स्थान—बाहरी, भीतरी हिस्सा=बाह्यः आभ्यन्तरः भागः, ऊंचा पहाड़=उच्चः (तुङ्गः) पर्वतः, इत्यादि ।

दिशा—पूर्वी, दक्षिणी, पच्छमी उत्तरी देश=पूर्वः (प्राच्यः, प्राग्भवः, पौरस्त्यः), दक्षिणः (दाक्षिणात्यः), पश्चिमः (पाश्चात्यः) उत्तरः (औदीच्यः, उदग्भवः) देशः, इत्यादि ।

[पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर विशेषण प्रायः देश (स्थान) और दिशावाचक विशेष्यों के लिये ही प्रयोग में आते हैं । मनुष्य आदि के लिये तो प्राच्य, दाक्षिणात्य आदि ही आते हैं ।]

देश—हिन्दुस्थानी, चीनी, युरोपियन, अमरीकन, मनुष्य= हिन्दुस्थानीयः (भारतवर्षीयः, भारतीयः), चीनः (चीनदेशीयः), युरोपीयः, अमेरिकादेशीयः मनुष्यः ।

जङ्गली जानवर=वन्यः (आरण्यः) जीवः ।

[देशवाचक शब्द से ज, जन्म, भव, वास्तव्य आदि जोड़ कर भी देशवाची विशेषण बनाए जाते हैं । जैसे—

भारतजः, भारतजन्मा, भारतभवः, भारतवास्तव्यः, मनुष्यः, इत्यादि ।]

सादृश्य—सा, जैसा, सरीखा,—इनके योग से बनने वाले सादृश्य-वाचक विशेषणों का अनुवाद सदृश, तुल्य, सम, समान आदि के योग से बने विशेषणों से किया जाता है । जैसे—

मोहन शकल से सोहनसा (सोहनजैसा, सोहनसरीखा) नहीं है=

मोहनः आकृत्या (आकारेण) सोहनसदृशः (सोहनतुल्यः, सोहनसमः, सोहनसमानः) नास्ति ।

इसी प्रकार मोहन का सा-ऐसा-जैसा=मोहनसदृशः-तुल्यः-समानः-समः, इत्यादि ।

कुछ सर्वनामों से बनने वाले सादृश्यवाचक विशेषणों के

लिये संस्कृत शब्द इस प्रकार आते हैं :—

मुझसा
मुझजैसा
मुझसरीखा } =मादृशः, मत्सदृशः, मत्समः, मत्समानः, मत्तुल्यः।

हमसा
हमजैसा
हमसरीखा } =अस्मादृशः, अस्मत्सदृशः, अस्मत्समः, अस्मत्समानः, अस्मत्तुल्यः।

इसी प्रकार—

तुझसा-आदि=त्वादृशः, त्वत्सदृशः-इत्यादि।

तुमसा-आदि=युष्मादृशः-युष्मत्सदृशः-इत्यादि।

आपसा-आदि=भवादृशः, भवत्सदृशः-इत्यादि।

ऐसा, इससा-आदि=ईदृशः, एतादृशः, एतत्सदृशः*-इत्यादि।

वैसा, उससा-आदि=तादृशः, तत्सदृशः-इत्यादि।

कैसा, किससा-आदि=कीदृशः*।

जैसा, जिससा-आदि=यादृशः*।

इसी प्रकार—तेरे जैसा, तुम्हारे ऐसा (जैसा), आप ऐसा, मेरे जैसा, हमारे जैसा, उसकासा, उनकासा आदि के लिये भी क्रम से ऊपर लिखे त्वादृशः, युष्मादृशः, भवादृशः, मादृशः, अस्मादृशः, तादृशः, आदि ही आते हैं।

---

* 'ईदृशः' 'इदम्' शब्द से तथा 'एतादृशः' 'एतद्' शब्द से बनता है। 'एतत्सदृशः' आदि के समान 'इदम्' शब्द से 'इदंसदृशः' आदि शब्द भी बनते हैं, परन्तु प्रयोग में प्रायः नहीं आते। इसी प्रकार 'किम्' और 'यद्' शब्द से 'किंसदृशः' 'यत्सदृशः' आदि भी बनते हैं, परन्तु प्रयोग में ये भी प्रायः नहीं आते।

'दृश' का हलन्त (क्विप् प्रत्ययान्त) रूप 'दृश्' (क्), भी होता है। जैसे—मादृशः=मादृक्, मत्सदृक्, अस्मादृशः=अस्मादृक, अस्मत्सदृक्, तादृशः=तादृक्, तत्सदृक्, इत्यादि।

'दृश' का स्त्रीलिङ्ग रूप 'दृशी' होता है। जैसे मुझसी-जैसी-सरीखी=मादृशी। इसी प्रकार अस्मादृशी, कीदृशी, तादृशी, सदृशी, आदि।

[सादृश्यवाचक विशेषणों का अनुवाद संज्ञा या सर्वनाम के आगे 'इव' या 'यथा' (सादृश्यवाचक अव्यय) लगा कर भी किया जाता है। जैसे—

अमरसिंह प्रतापसा (-जैसा-सरीखा) वीर नहीं था=

अमरसिंहः प्रताप इव=प्रतापो यथा (=प्रतापसदृशः-समः-समानः-तुल्यः) वीरो नाऽऽसीत्।

मोहन शकल से मुझसा (मेरे जैसा) है=

मोहनः आकृत्या अहमिव (मादृशः, मत्सदृशः, मम समः, मया तुल्यः) अस्ति।

'ऐसा वैसा' का अनुवाद यथायोग्य 'यादृश तादृश' 'साधारण', 'क्षुद्र' 'पृथग्जन' आदि शब्दों से करना चाहिये। जैसे—

ऐसे वैसे आदमी को उपदेश नहीं देना चाहिये=

"उपदेशो न दातव्यो यादृशे तादृशे जने" *।

मैं ऐसे वैसे को कुछ नहीं समझता=

अहं यादृशं तादृशं न किञ्चिद् गणयामि।

ऐसी वैसी कोई चीज नहीं खानी चाहिये=

यादृशं तादृशं किमपि वस्तु न भोज्यम्।

---

* संप्रदान में 'चतुर्थी' की जगह 'सप्तमी' का भी प्रयोग होता है—"विवक्षाऽधीनानि कारकाणि"।

उसे ऐसा वैसा न समझो=
तं यादृशं तादृशं (साधारणम्, क्षुद्रम्, पृथग्जनम्) मा गणय (जानीहि)
यह कहानी ऐसी वैसी नहीं=
इयं कथा यादृशी तादृशी (साधारणी) नास्ति।
(नेयं कथा यादृशी तादृशी)

'जैसे का तैसा' 'जैसी की तैसी' का अनुवाद 'यथापूर्वम्' या 'पूर्ववत्' से करना चाहिये। जैसे—

वह जैसे का तैसा ठहरा रहा।
स यथापूर्वम् (पूर्ववत्) अवस्थितः।
उसकी हालत जैसी की तैसी थी।
तस्य दशा यथापूर्वम् (पूर्ववत्) आसीत्-इत्यादि]

गुणवाचक विशेषणों से हीनता या न्यूनता के अर्थ में "सा' प्रत्यय (कभी २ 'जैसा' शब्द) लगाया जाता है। जैसे— बड़ासा, ऊंचासा-इत्यादि। उनके अनुवाद में साधारणतः विशेषण के आदि में 'किञ्चित्' जोड़ा जाता है। जैसे—

घर बड़ासा बनवाओ।
गृहं किञ्चिद् विशालं निर्मापय।
ऊंचीसी दीवार बीच में खड़ी है।
किञ्चिदुच्चा भित्तिः मध्ये स्थिताऽस्ति।

परन्तु बहुधा अनुवाद में 'सा' को छोड़ ही देते हैं (इसका अनुवाद नहीं करते) और इस कारण "घर बड़ासा…" "ऊंची सी दीवार…" का अनुवाद "गृहं किञ्चिद् विशालं…", "किञ्चिदुच्चा भित्तिः…" के स्थान केवल "गृहं विशालं…" उच्चा भित्तिः…" ही करते हैं।

परन्तु जब ये ('बड़ासा' आदि) विशेषण दि (दी)

रखना, होना आदि कुछ क्रियाओं के साथ विधेय * विशेषण के रूप में आते हैं, तब इनके अनुवाद में विशेषण के आगे 'इव' लगाया जाता है। जैसे—

यह चान्दी खोटीसी दि (दी) खती है=

इदं रजतं दुष्टमिव दृश्यते।

वह तो काला सा मालूम होता है=

स तु कृष्ण इव प्रतीयते (लक्ष्यते)

मेरा सिर भारीसा हो गया है=

मम शिरो गुरुकमिव जातम्।—इत्यादि।

[इसी प्रकार संज्ञा शब्दों से भी हीनता (न्यूनता या अनिश्चय) अर्थ में 'सा' (जैसा) आता है। इसका भी अनुवाद 'इव' से ही करना चाहिये। जैसे—

जोतसी उतर रही है=ज्योतिरिव अवतरति।

जाड़ासा लग रहा है=शीतमिव बाधते।—इत्यादि।]

कुछ उदाहरण—

तुर्कों और रूसियों का जबर्दस्त जंग हुआ।

तुरुष्काणां (तुरुष्कदेशीयानां) रूसीयानां (रूसदेशीयानां) च प्रबलं

---

* विशेषण जब विशेष्य के पहले आता है तब वह 'उद्देश्यविशेषण' कहलाता है, इसमें विशेषण का विशेष्य के साथ पूर्वसिद्ध सम्बन्ध बोधित होता है। जैसे—वीर लोग प्राणों की परवाह नहीं करते=वीराः जनाः प्राणानामपेक्षां न कुर्वन्ति (प्राणांस्तृणाय मन्यन्ते)। परन्तु जहां विशेष्य के साथ सम्बन्ध बताना ही वाक्य का उद्देश्य होता है वहां विशेषण विशेष्य के बाद आता है। ऐसे विशेषण को "विधेयविशेषण" कहते हैं। जैसे—अर्जुन महावीर था=अर्जुनः महावीरः आसीत्।

(प्रचण्ड) युद्धमजायत।

जपानी* कारीगरी में युरोप वालों से काम नहीं है—

जापानीया: (जापानदेशीया:, जापानजा:—भवा:) शिल्पे युरोपीयेभ्य: (युरोपदेशीयेभ्य:, युरोपजेभ्य:—भवेभ्य:) न न्यूना:।

पुरबियो में गरीबी ज्यादा है=

पूर्वीयेषु (पूर्वदेशीयेषु) दारिद्र्यम् (निर्धनत्वम्) अधिकमस्ति।

पच्छिमवालों और पूरबवालों के रस्म-रिवाजों में बहुत फर्क है=

पाश्चात्यानां प्राच्यानां च प्रथासु महत् अन्तरमस्ति।

तुमसी (जैसी-सरीखी) बेटी सब के हो=

त्वादृशी (त्वादृक्, त्वत्सदृशी त्वत्सदृक्, त्वत्समा, त्वत्तुल्या) पुत्री (तनया, आत्मजा) सर्वस्य (सर्वेषां) स्यात्।

उससा (—जैसा-सरीखा, उसकासा) मित्रद्रोही कभी सुख नहीं पाता=

तादृश: (तादृक्, तत्सदृश:, तत्सदृक्—सम:-समान:-तुल्य:) मित्र-द्रोही कदाऽपि सुखं न लभते।

ऐसा कुल है=ईदृशं (ईदृक्, एतादृशम्, एतादृक्) कुलमस्ति।

२ सर्वनामिक विशेषण।

मैं, तू, आप—इनको छोड़ शेष सर्वनाम विशेषण के रूप

---

* जापानी, हिन्दुस्तानी आदि शब्दों को 'जापान:, हिन्दुस्थानम्। अस्यास्ति देश:' इति 'जापानी' हिन्दुस्थानी' इस प्रकार 'इनि' प्रत्ययान्त (जापानिन्, हिन्दुस्थानिन्) मान कर संस्कृत में भी प्रयुक्त कर सकते हैं। जैसे—जापानियों की बहादुरी=जापानिनां वीरता। रूसियों ने बगावत की= रूसिभि: क्रान्ति: कृता—इत्यादि। परन्तु संस्कृतसाहित्य में ऐसे प्रयोग आते नहीं॥

में भी प्रयुक्त होते हैं । जैसे—वह आया=सः आगतः, कोई गया=कश्चिद् गतः, कौन है ?=कोऽस्ति ? क्या है ?=किमस्ति—इत्यादि में वह (सः) आदि सर्वनाम हैं । परन्तु नीचे लिखे उदाहरणों में 'वह' आदि विशेष्यों के साथ आकर उनकी दूर होना, परोक्ष होना आदि विशेषता प्रकट करते हैं, इसलिये विशेषण हो जाते हैं—

वह घर मेरा है=तत् गृहं मम (मदीयम्) अस्ति ।

वह लड़का लाहौर है=सः कुमारः लवपुरेऽस्ति ।

यह औरत फूहड़ है=इयम् (एषा) स्त्री मूर्खाऽस्ति ।

आप (दो) में से जो पुरुष निडर हो वह वहां जाए=

भवतोः यः (यतरः) पुरुषो निर्भयः स्यात् सः (ततरः) तत्र गच्छेत् ।

आप में से जिस आदमी को भूख हो वह यह फल खाले=

भवतां यस्य (यतमस्य) पुरुषस्य बुभुक्षा स्यात् सः (ततमः) एतानि फलानि भक्षयेत् ।

कौन आदमी ?=कः मनुष्यः ?

कौन बात ? का वार्ता ।

कौन कपड़ा ?=किं (कतमत्) वस्त्रम् (वसनं, वासः) ?

उन (दो) में कौन (कौनसा) आदमी चतुर है=

तयोः कः (कतरः) पुरुषः चतुरः ।

इन में से कौन (कौनसा) आदमी ताकतवर है=

एषां कः (कतमः) पुरुषो बलवान् ।

कोई भैंसा आरहा है=कश्चित् महिषः आगच्छति ।

कोई गाय लाओ=काञ्चित् गाम् आनय ।

कोई कपड़ा पड़ा है=किमपि वस्त्रं पतितमस्ति ।

क्या नाम ?=किं नाम (का संज्ञा) ?

क्या पदार्थ ?=कः पदार्थः ?।

क्या हालत ?=का दशा ?

["तुम भी क्या आदमी हो ! आप भी क्या बात कहते हैं ! यह भी क्या लड़की है ! इस प्रकार के वाक्यों में 'क्या' का अनुवाद विचित्र, अद्भुत, आदि शब्दों से करना चाहिये। जैसे-त्वमपि विचित्रः (अद्भुतः) पुरुषोऽसि । भवानपि विचित्राम् (अद्भुताम्)वार्तां कथयति । इयमपि विचित्रा (अद्भुता) कन्या ।]

कुछ उपाय है ?=अस्ति कश्चित् उपायः ?

कुछ बात सुनी ?=श्रुता काचित् वार्ता ?

कुछ तनखाह मिली ?=लब्धं किञ्चित् वेतनम् ? इत्यादि ।

[संस्कृत में प्रश्नार्थक वाक्यों में क्रिया प्रायः पहले रक्खी जाती है। इसीलिये ऊपर के वाक्यों में वैसा किया गया है ।]

दूसरे सार्वनामिक विशेषण वे हैं जो सर्वनामों से बनते हैं। इनमें से मुझसा-जैसा—सरीखा, ऐसा, जैसा, वैसा, कैसा, आदि सादृश्यवाचकों के अनुवाद का प्रकार पहले (गुणवाचक विशेषणों में) बताया गया है, शेष का नीचे बताया जाता है:—

इतना=एतावत् ('एतत्' से), इयत् ('इदम्' से) (पुं० एतावान्, इयान्,स्त्री० एतावती, इयती, नपुं० एतावत्, इयत्) । जैसे—

इतना खर्च=एतावान् (इयान्) व्ययः ।

इतनी ज़मीन=एतावती (इयती) भूमिः ।

इतना धन=एतावत् (इयत्) धनम् ।

उतना =तावत् (पुं० तावान्, स्त्री० तावती, नपुं० तावत्) । जैसे—

उतना **स्वाद**=तावान् **स्वादः** ।

उतनी **मट्टी**=तावती **मृत्** (**मृत्तिका, मृत्स्ना**)

उतना **नमक**=तावत् **लवणम्** ।

जितना=यावत् (पुं० यावान्, स्त्री० यावती, नपुं० यावत्)
जैसे—

जितना **स्वाद**=यावान् **स्वादः** ।

जितनी **बारिश**=यावती **वृष्टिः** ।

जितना **घी**=यावत् **घृतम्** ।

कितना=कियत् (पुं० कियान्, स्त्री० कियती, नपुं० कियत्)
जैसे—कितना **वक्त**=कियान् **समयः (कालः)** । कितनी **दाल**=कियती **दालिः** । कितना **दूध**=कियत् **दुग्धम्** ।

["जितना नाम बढ़ता है उतना मान बढ़ता है।" इस प्रकार के वाक्यों में **'जितना' 'उतना'** का अनुवाद **'यथा' 'तथा'** से भी किया जाता है।
जैसे—

यावती (यथा) ख्यातिर्वर्धते तावान् (तथा) मानो वर्धते ।

(ख्यात्या सह [समं] मानो वर्धते) ।

"विद्या पाने पर कैसा आनन्द होता है" इस प्रकार के वाक्यों में **'कैसा'** का अनुवाद **'महत्' 'परम'** आदि शब्दों से करना चाहिये (जैसे—विद्यायाः प्राप्तौ (विद्यायां प्राप्तायां) **महान् (परमः)** आनन्दः जायते ।

"**कैसा ही (कितना ही)** अच्छा काम करूं मालिक नाराज़ ही रहता है"—इस प्रकार के वाक्यों में **'कैसा' ('कितना')** का अनुवाद 'कीदृश' या 'कियत्' शब्द से नहीं करना चाहिये। ऐसे वाक्यों का अनुवाद इस प्रकार किया जाता है :—

कामम् अत्यन्तमवधानेनापि (प्रतिदत्ततयापि) कार्यं कुर्यां तथापि स्वामी कुपित एव (अप्रसन्न एव) आस्ते ।

(अतिचातुर्येणापि कार्यं कुर्वाणे मयि स्वामी न प्रसीदति) इत्यादि ।

"मेरे जितने प्रजाजन हैं उनमें से किसी को भी अकालमृत्यु नहीं आती"—इस प्रकार के वाक्यों का अनुवाद "मम यावन्तः प्रजाजनाः सन्ति तेषु (तेषां) कमपि अकालमृत्युर्नागच्छति (न ग्रसति) (=तेषु कोऽपि अकालमृत्युं न प्राप्नोति)—इस प्रकार करने की अपेक्षा "मम प्रजाजनेषु (प्रजाजनानाम्) कमपि······(मम प्रजाजनानां प्रजाजनेषु कोऽपि······) इस प्रकार करना अधिक संस्कृत-प्रयोगानुसारी है ।

'कितने ही' का अनुवाद 'अनेक' या 'बहु' शब्द से बहुवचन में किया जाता है । जैसे—

कितने ही लोग मांस खाते हैं=

अनेके (बहवः)जनाः मांसं भक्षयन्ति (अश्नन्ति)

कितनों ही की राय है=

अनेकेषां (बहूनां) मतमस्ति ।

उसने कितनी ही किताबें लिखी हैं=

तेन अनेकानि (बहूनि) पुस्तकानि लिखितानि (निर्मितानि) ।

कितनी ही औरतें आई हैं=

अनेकाः (बहवः, बह्व्यः,) स्त्रियः समागताः सन्ति ।

'कितने एक' और 'कुछ एक' का अनुवाद यथायोग्य 'कतिपय' और विभक्त्यन्त 'कति' तथा 'किम्' (पुं० 'क' स्त्री० 'का' नपुं० 'किम्') शब्द के आगे 'चित्' लगाकर किया जाता है । जैसे—

कितने एक (कुछ एक) लोग यह भी कहते हैं=

कतिपये (कतिपयाः, कतिचित्, केचित्) इदमपि कथयन्ति (आहुः, वदन्ति, ब्रुवन्ति) ।

कुछ एक महीनों के बीतने पर फिर मुहम्मदगोरी उतनी ही फौज लेकर चढ़ आया=

कतिपयानां (कतीनाञ्चित्) मासानाम् अपगमे (अवसाने, अन्ते) (=कतिपय [कतिचिद्] मासापगमे, कतिपय [कतिचिद्] मासावसाने, कतिपय [कतिचिद्] मासानन्तरम्) मुहम्मदगोरी: पुन: तावतीमेव सेनामादाय अभ्यायात् ।

"मुनि ऐसे क्रोधी हैं कि दक्षिणा न मिलने पर शाप देने को तय्यार हो जायंगे"—इस प्रकार के वाक्यों में 'ऐसा' शब्द का अनुवाद 'ईदृश' 'एतादृश' या 'एवंविध' करने की अपेक्षा 'तथा' शब्द से करना अधिक अच्छा है । ऐसा करने पर 'कि' का अनुवाद 'यत्' की बजाय 'यथा' से करना चाहिये । जैसे—

मुनय: तथा क्रोधिन: (क्रोधशीला:) सन्ति यथा दक्षिणाया अलाभे (अप्राप्तौ) शापं दातुम् (शप्तुम्) उद्यता: भविष्यन्ति ।]

'अपना' का अनुवाद 'आत्मीय' 'स्व (स्वीय)' और 'निज (नैज)' शब्दों से किया जाता है । जैसे—

अपना भाई=आत्मीय: (स्व:, स्वीय:, निज:, नैज:) भ्राता ।

अपनी बहन=आत्मीया(स्वा, स्वीया, निजा, नैजी) भगिनी (स्वसा)।

अपना घर=आत्मीयं (स्वं, स्वीयम्, निजं, नैजं) गृहम् ।

आत्मज्ञानी अपने पराये में भेद नहीं देखते=

आत्मज्ञानिन: (आत्मज्ञा:, आत्मविद:) आत्मीये परकीये च भेदम् (अन्तरम्) न पश्यन्ति ।

अभ्यास

१ गाढ़ा कपड़ा । २ अमरीकन लोग बड़े मालदार होते हैं । ३ पुरानी बातें जाने दो । ४ घरू आदमियों से क्या शर्म । ५ तुम जैसे बेतमीज़ और बेसब्र को लानत के सिवा और क्या मिलेगा । ६ इस कपड़े का रंग मटियाला है । ७ यह आपका अपना घर है ।

८ ऐसा घोर पाप। ९ कुछ महमान नाराज़ हैं। १० कुछ रुपये हैं ? ११ जितना काम करोगे उतने पैसे पाओगे। १२ यह कलम किसकी है? १३ खाना कुछ हलका खाना चाहिए। १४ नर्मसी रोटी दो। १५ कालूसा नटखट लड़का कैसे क़ाबू आयेगा। १६ तेज़ मिर्च। १७ आखिरी इम्तहान। १८. पराया घर। २० जैसा अन्न वैसा मन।

———.

दूसरा अध्याय ।

(३) संख्यावाचक विशेषण ।

(क) निश्चित संख्यावाचक ।

१. गणनावाचक ।

१ एक = पुं० एकः
स्त्री० एका
नपुं० एकम्
२ दो = पुं० द्वौ (उभौ)
स्त्री० द्वे (उभे)
नपुं० द्वे (उभे)
३ तीन = पुं० त्रयः
स्त्री० तिस्रः
नपुं० त्रीणि
४ चार = पुं० चत्वारः
स्त्री० चतस्रः
नपुं० चत्वारि
५ पांच = पञ्च
६ छः = षट्
७ सात = सप्त
८ आठ = अष्ट, अष्टौ

९ नौ = नव
१० दस = दश
१२ ग्यारह = एकादश
१२ बारह = द्वादश
१३ तेरह = त्रयोदश
१४ चौदह = चतुर्दश
१५ पंद्रह = पञ्चदश
१६ सोलह = षोडश
१७ सत्रह = सप्तदश
१८ अठारह = अष्टादश
१९ उन्नीस = (नवदश)
एकोनविंशतिः
एकान्न (दून) विंशतिः
२० बीस = विंशतिः
२१ इक्कीस = एकविंशतिः
२२ बाईस = द्वाविंशतिः

२३ तेईस = त्रयोविंशतिः
२४ चौबीस = चतुर्विंशतिः
२५ पच्चीस = पञ्चविंशतिः
२६ छब्बीस = षड्विंशतिः
२७ सत्ताईस = सप्तविंशतिः
२८ अठाईस = अष्टाविंशतिः
२९ उंतीस = (नवविंशतिः) एकोनत्रिंशत्
एकान्न (दून) त्रिंशत्
३० तीस = त्रिंशत्
३१ इकत्तीस = एकत्रिंशत्
३२ बत्तीस = द्वात्रिंशत्
३३ तेंतीस = त्रयस्त्रिंशत्
३४ चौंतीस = चतुस्त्रिंशत्
३५ पैंतीस = पञ्चत्रिंशत्
३६ छत्तीस = षट्त्रिंशत्
३७ सैंतीस = सप्तत्रिंशत्
३८ अड़तीस = अष्टत्रिंशत्
३९ उंतालीस = (नवत्रिंशत्) एकोनचत्वारिंशत्
एकान्न (दून) चत्वारिंशत्
४० चालीस = चत्वारिंशत्
४१ इकतालीस = एकचत्वा-रिंशत्
४२ बयालीस = द्वि (द्वा) चत्वारिंशत्
४३ तेंतालीस = त्रिचत्वारिंशत्
त्रयश्चत्वारिंशत्
४४ चौवालीस = चतुश्च-त्वारिंशत्
४५ पैंतालीस = पञ्चचत्वा-रिंशत्
४६ छियालीस = षट्चत्वा-रिंशत्
४७ सैंतालीस = सप्तचत्वा-रिंशत्
४८ अड़तालीस = अष्टचत्वा-रिंशत्
४९ उनचास = (नवचत्वा-रिंशत्) एकोनपञ्चाशत्
एकान्न (दून) पञ्चाशत्
५० पचास = पञ्चाशत्
५१ इक्यावन = एकपञ्चाशत्
५२ बावन = द्वि (द्वा) पञ्चाशत्
५३ तिरपन = त्रि (त्रयः) पञ्चाशत्
५४ चौवन = चतुःपञ्चाशत्
५५ पचपन = पञ्चपञ्चाशत्
५६ छप्पन = षट्पञ्चाशत्

५७ सत्तावन = सप्तपञ्चाशत्
५८ अट्ठावन = अष्ट (ष्टा) पञ्चाशत
५९ उनसठ = (नवपञ्चाशत्)
एकोनषष्टि:
एकान्न (दून) षष्टि:
६० साठ = षष्टि:
६१ इकसठ = एकषष्टि:
६२ बासठ = द्वि (द्वा) षष्टि:
६३ तिरसठ = त्रि (त्रय:) षष्टि:
६४ चौंसठ = चतु:षष्टि:
६५ पैंसठ = पञ्चषष्टि:
६६ छियासठ = षट्षष्टि:
६७ सड़सठ = सप्तषष्टि:
६८ अड़सठ = अष्ट (ष्टा) षष्टि:
६९ उनहत्तर = (नवषष्टि:)
एकोनसप्तति:
एकान्न (दून) सप्तति:
७० सत्तर = सप्तति:
७१ इकहत्तर = एकसप्तति:
७२ बहत्तर = द्वि (द्वा) सप्तति:
७३ तिहत्तर = त्रि (त्रय:) सप्तति:
७४ चौहत्तर = चतु:सप्तति:
७५ पचहत्तर = पञ्चसप्तति:
७६ छिहत्तर = षट्सप्तति:

७७ सतहत्तर = सप्तसप्तति:
७८ अठहत्तर = अष्ट (ष्टा)
सप्तति:
७९ उनासी = (नवसप्तति:)
एकोनाशीति:
एकान्ना (दूना) शीति:
८० अस्सी = अशीति:
८१ इक्यासी = एकाशीति:
८२ बयासी = द्व्यशीति:
८३ तिरासी = त्र्यशीति:
८४ चौरासी = चतुरशीति:
८५ पचासी = पञ्चाशीति:
८६ छियासी = षडशीति:
८७ सत्तासी = सप्ताशीति:
८८ अट्ठासी = अष्टाशीति:
८९ नवासी = (नवाशीति:)
(उनानवे) एकोननवति:
एकान्न (दून) नवति:
९० नब्वे = नवति:
९१ इक्यानवे = एकनवति:
९२ बानवे = द्वि (द्वा) नवति:
९३ तिरानवे = त्रिणवति:
त्रयोणवति:
९४ चौरानवे = चतुर्नवति:

९५ पचानवे = पञ्चनवतिः
९६ छियानवे = षण्णवतिः
९७ सत्तानवे = सप्तनवतिः
९८ अट्ठानवे = अष्ट (ष्टा)नवतिः
९९ निन्नानवे = नवनवतिः
एकोनशतम्
एकान्न (दून, शतम्
१०० सौ = शतम्*

[उन्नीस, उंतीस, उंतालीस आदि के लिये नवदश, नवत्रिंशत्, नवचत्वारिंशत् आदि का प्रयोग प्रायः नहीं होता। इनके स्थान एकोनविंशतिः, एकोनत्रिंशत्, एकोनचत्वारिंशत्, आदि का ही प्रयोग होता है। इसका कारण यह है कि उन्नीस आदि शब्द एकोनविंशति आदि से बने हैं, इसलिये स्वभावतः इनके लिये एकोनविंशति आदि का ही प्रयोग होता है, नवदश आदि का नहीं।]

जैसे 'दश' 'विंशति' आदि के पहले 'एक' 'द्वि' आदि के जोड़ने से 'एकादश' 'द्वादश' 'एकविंशति' 'द्वाविंशति' आदि शब्द बनते हैं और उनका अर्थ एक अधिक दस = दस और एक (अर्थात् ११ ग्यारह), दो अधिक दस = दस और दो (अथात् १२ बारह) एक अधिक बीस = बीस और एक (अर्थात् २१ इक्कीस दो अधिक बीस = बीस और दो (अर्थात् २२ बाइस) आदि

---

* संस्कृत में सांकेतिक शब्दों से भी संख्या बोधित की जाती है। जैसे—चन्द्र = १, नयन = २, अग्नि = ३, वर्ण = ४, भूत = ५, रस = ६, ऋषि = ७, वसु = ८, ग्रह = ९, इत्यादि। इस प्रकार में अङ्क बाईं ओर से रक्खे जाते हैं "अङ्कानां वामतो गतिः"। उदा० सम्वत् १९८९ = ग्रह-वसु-ग्रह-चन्द्र (बांई ओर रखने से १९८९) संख्याको विक्रमाब्दः।-इत्यादि।

आर्यभट आदि के ज्योतिषग्रन्थों में संख्या के लिये अक्षरों का प्रयोग किया गया है। जैसे—"चा = ६मनवः छा = ७ याताः संघय इह रथ = २७ मितानि युगानि।" इत्यादि (द्वितीय आर्यभट)।

होता है। इसी प्रकार 'शतम्' के पहले 'एक' से 'नवनवति' तक की संख्याएं जोड़ने से एक सौ एक, एक सौ दो आदि अर्थ होता हैः- १०१ एक सौ एक=एकशतम्।

१०२ एक सौ दो=द्विशतम्।

११६ एक सौ सोलह=षोडशशतम्।

१४० एक सौ चालीस=चत्वारिंशच्छतम्।

१८६ एक सौ छयासी=षडशीतिशतम्।

१९९ एक सौ निन्नानवे=नवनवतिशतम्। इत्यादि।

जैसे—यजुर्वेद की शाखाएं एक सौ एक हैं="एकशतम् अध्वर्युशाखाः" (वै॰ महाभाष्य)।

एक सौ एक, एक सौ दो आदि के लिये 'एक' आदि संख्याओं के अनन्तर 'उत्तर' या 'अधिक' शब्द जोड़ कर 'एकोत्तरं (र) शतम्, एकाधिकं (क) शतम्, द्व्युत्तरं (र) शतम्, द्व्यधिकं (क) शतम्, आदि का प्रयोग अधिक देखने में आता है। कई (साधारण विद्यार्थी या साधारण संस्कृतज्ञ) १एकशतम्, द्विशतम् आदि का

---

१ जैसे 'द्व्युत्तरं शतम्, या 'द्व्यधिकं शतम्'=द्विशतम्-इस प्रकार विग्रह करके 'मध्यमपदलोपी समास' द्वारा 'द्वि' और 'शत' आदि के बीच के उत्तर' या 'अधिक' शब्द का लोप करने से बने हुए 'द्विशतम्' आदि का 'दो अधिक सौ अर्थात् एक सौ दो' आदि अर्थ होता है। उसी प्रकार 'द्विगुणितं (गुणं) शतम्' या 'द्विरावृत्तं शतम्=द्विशतम्'-इस प्रकार विग्रह करके 'मध्यमपदलोपी समास' द्वारा बीच के 'गुणित, गुण' या 'आवृत्त' शब्द का लोप करने से बने हुए 'द्विशतम्' आदि का 'दोगुना सौ अर्थात् दो सौ' आदि अर्थ भी हो सकता है (यद्यपि इनका इस अर्थ में प्रयोग प्रायः देखने में नहीं आता)। परन्तु 'मध्यमपदलोपी समास' यदि न किया जाय तो 'दो सौ' आदि के अर्थमें 'द्विगुसमास' के द्वारा (द्वयोः शतयोः

एक सौ, दो सौ आदि के लिये ही प्रयोग करते हैं, एक सौ एक, एक सौ दो आदि के लिये नहीं। परन्तु संस्कृतसाहित्य में इन (एकशतम्,द्विशतम्, आदि) का एक सौ"दो सौ'आदि के अर्थ में प्रयोग बहुत ही कम पाया जाता है-"एकशतं (एक सौ) षष्ठ्यर्था:")।

एक सौ, दो सौ आदि के लिये संस्कृत शब्द ये हैं:—

एक सौ = शतम् (एकं शतम्)

दो सौ = शते (द्विशती, शतद्वयम्, शतद्वयी, शत-द्वितयम्, शतद्वितयी, शतद्विकम्)

तीन सौ = त्रिशती (शतत्रयम्, शतत्रयी, शतत्रितयम्, शतत्रितयी)

चार सौ = शतु:शती (शतचतुष्टयम्, शतचतुष्टयी, शतचतुष्कम्)

समाहार:) 'द्विशती' आदि स्त्रीलिङ्ग शब्द बनते हैं ("अकारान्तोत्तरपदो द्विगुः स्त्रियामिष्टः")।

एक सौ ग्यारह और एक हज़ार ग्यारह से लेकर एक सौ अट्ठावन और एक हज़ार अट्ठावन तक की संख्याओं का अनुवाद **एकादशं शतम्, एकादशं सहस्रम्** आदि से भी किया जाता है, अर्थात् सौ या हज़ार से ऊपर की ग्यारह आदि संख्याओं के लिये एकादशम्, (एकादश के लिये), 'विंशम्' (विंशति के लिये); त्रिंशम्, (त्रिंशत् के लिये), 'चत्वारिंशम्' (चत्वारिंशत् के लिये), और 'पञ्चाशम्' (पञ्चाशत् के लिये) शब्द आते हैं (इन 'एकादशम्' आदि का अर्थ सौ या हज़ार से अधिक ग्यारह आदि होता है)। जैसे—एक सौ चौदह=**चतुर्दशं शतम्**। एक हज़ार उन्नीस=**एकोनविंशं सहस्रम्**। एक हज़ार चौबीस=**चतुर्विंशं सहस्रम्**। एक सौ छत्तीस=**षट्त्रिंशं शतम्**। एक सौ अड़तालीस=**अष्टचत्वारिंशं शतम्**। एक हज़ार सत्तावन=**सप्तपञ्चाशं शतम्**, इत्यादि ॥

पांच सौ = पञ्चशती (शतपञ्चकम्)
छः सौ = षट्शती (शतषट्कम्)
सात सौ = सप्तशती (शतसप्तकम्)
आठ सौ = अष्टशती (शताष्टकम्)
नौ सौ = नवशती (शतनवकम्)
हज़ार = सहस्रम् (दशशती, शतदशकम्)
दस हज़ार = दश सहस्राणि (सहस्रदशकम्, अयुतम्)
लाख = लक्षम् ।
दस लाख = दश लक्षाणि (लक्षदशकम्, प्रयुतम्)
करोड़ = कोटिः ।
दस करोड़ = दश कोटयः (कोटिदशकम्, अर्बुदम्)
अर्ब = अर्बम् [अर्बुदम्] (अब्जम्)
दस अर्ब = दश अर्बाणि (खर्वम्)
खर्ब = खर्वम् (निखर्वम्)
दस खर्ब = दश खर्वाणि (महापद्मम्)
नील = नीलम् (शङ्कुः)
दस नील = दश नीलानि (जलधिः)
पद्म = पद्मम् (अन्त्यम्)
दस पद्म = दश पद्मानि (मध्यम्)
संख = शङ्खम् (परार्धम्)

['अर्ब' और 'नील' के अनुवाद में स्पष्ट बोध के लिये वही शब्द भी रक्खे जा सकते हैं, जैसे कि ऊपर रक्खे गये हैं (अर्बम्, नीलम्) । यद्यपि संस्कृत में अर्बुद और संख्या के लिये आता है तथापि हिन्दी में आने वाला 'अर्ब' शब्द 'अर्बुद' से ही बना प्रतीत होता है; इसलिये 'अर्ब' के लिये 'अर्बुद' भी लिखा जा सकता है । 'खर्ब' शब्द संस्कृत का ही है । भेद इतना

है कि संस्कृत में यह और संख्या के लिये आता है और हिंदी में और के लिये। 'नील' शब्द भी संस्कृत का ही है परन्तु संख्या के लिये इसका प्रयोग संस्कृत में देखने में नहीं आता।]

नारद पुराण (अध्याय ५४ श्लोक १३-१४), भास्कराचार्य तथा हेमचन्द्राचार्य के मत से 'इकाई' से लेकर संख तक अठारह संख्याओं के लिये ये संस्कृत शब्द हैं :—

१ इकाई	= एकम्	१० अर्ब	= अब्जम्
२ दहाई	= दशकम्	११ दह(दस)अर्ब	= खर्वम्
३ सैंकड़ा	= शतम्(शतकम्)	१२ खर्व	= निखर्वम्
४ हज़ार	= सहस्रम्	१३ दह(दस)खर्व	= महापद्मम्
५ दह(दस) हज़ार	= अयुतम्	१४ नील	= शङ्कुः
६ लाख	= लक्षम्	१५ दह(दस)नील	= जलधिः
७ दह(दस) लाख	= प्रयुतम्	१६ पद्म	= अन्त्यम्
८ करोड़	= कोटिः	१७ दह(दस)पद्म	= मध्यम
९ दह(दस)करोड़	= अर्बुदम्	१८ संख	= परार्धम्

(महावीराचार्य के मत में 'परार्ध' से भी अधिक(चौबीस) संख्या स्थान हैं।)

'अढ़ाई' और 'साढ़े' के लिये 'सार्ध' शब्द आता है. 'पौन (पौना)' के लिये 'पादोन' और 'सवा' के लिये 'सपाद'। जैसे—

(क) अढ़ाई सौ=सार्धे शते (सार्धं शतद्वयम्, सार्धा शतद्वयी= द्विशती)।

(ख) साढ़े तीन सौ=सार्धानि त्रीणि शतानि, (सार्धं शतत्रयम् सार्धा त्रिशती, सार्धा शतत्रयी)।

(घ) पौन (पौना) सौ=पादोनं शतम्।

पौने चार सौ=पादोनानि चत्वारि शतानि (पादोनं शत-चतुष्कम्, पादोना शतचष्टयी)।

इसीप्रकार किसी संख्यामें से जो संख्या कम बतानी हो उस के साथ'ऊन'शब्द लगाया जाता है। जैसे-बीस कम सौ=विंशत्यूनं शतम्। चालीस कम हज़ार=चत्वारिंशदूनं सहस्रम्-इत्यादि।

[इसी प्रकार पौन रुपया=पादोनं रूप्यकम्। सवा सेर=सपादः सेरः। अढ़ाई आने=सार्धौ आणकौ (सार्धमाणकद्वयम्, सार्धा आणकद्वयी) साढ़े तीन पाव=सार्धाः त्रयः पादाः(सार्धं पादत्रयम्, सार्धा पादत्रयी)—इत्यादि।

तिहाई=तृतीयांशः, तृतीयभागः, चौथाई=चतुर्थांशः, चतुर्थभागः। जैसे—एक तिहाई चावल मुझे दिये, दो तिहाई आप लिये=एकस्तृतीयांशः, (तृतीयभागः) तण्डुलानां मह्यं दत्तः, द्वौ तृतीयांशौ (तृतीयभागौ) च स्वयं गृहीतौ=(तण्डुलानाम् एको भागः स्वयं गृहीतः, द्वौ भागौ च मह्यं दत्तौ)।

(हिन्दी में 'तिहाई' चौथाई' शब्द विशेषण रूप में प्रयुक्त होते हैं और इसी लिये 'चावल' के साथ समान विभक्ति और वचन में प्रयुक्त हुए हैं। परन्तु इनके अनुवाद'तृतीयांश,चतुर्थांश'शब्द संज्ञा हैं,विशेषण नहीं। इसीलिये 'चावल' के अनुवाद में 'तण्डुलानाम्', षष्ठी विभक्ति लगाई गई है)।

"इस व्यापार में मेरा चार आने हिस्सा है" इत्यादि में 'चार आने' आदि का अनुवाद 'चतुर्थो भागः' 'एको भागः' आदि किया जाता है। जैसे—अस्यां वाणिज्यायां मम चतुर्थो भागः (एको भागः) अस्ति।]

गणनावाचक विशेषणों के विशेष प्रयोगों का अनुवाद इस प्रकार है—

(क) 'एक' को छोड़ अन्य संख्यावाचक शब्दों के बाद 'एक' लगाने पर उसका अर्थ 'लगभग' हो जाता है, ऐसे शब्दों के अनुवाद में 'आसन्न' या 'उप' शब्द संख्यावाचक शब्दों के आदि में जोड़ा जाता है। 'आसन्न' शब्द अलग भी आता है,

परन्तु 'उप' का संख्यावाचक के साथ समास हो जाता है और समास होने पर 'द्वि' 'दशन्' आदि इकारान्त तथा हलन्त संख्यावाचक शब्द अकारान्त हो जाते हैं। जैसे—

दो एक घड़े = उप (आसन्न) द्वाः घटाः।

तीन एक चारपाइयां = उपत्राः (आसन्नत्राः)—खट्वाः।

बारह एक ब्राह्मण = उप(आसन्न)द्वादशाः ब्राह्मणाः।

बीस एक गायें = उप(आसन्न)विंशाः (विंशतेरासन्नाः) गावः।

एक जगह तीस एक, दूसरी जगह पचास एक वृक्ष हैं = एकस्मिन् स्थाने 'एकत्र' उप(आसन्न)त्रिंशाः, द्वितीये उप(आसन्न,चत्वारिंशाः, तृतीये उपआसन्नपञ्चाशाः वृक्षाः सन्ति।

सठ एक पोलीस वाले =

उप (आसन्न) षष्ठाः रक्षिणः (रक्षापुरुषाः)।

सत्तर एक घोड़े =उप(आसन्न)सप्ताः घोटकाः (अश्वाः)।

अस्सी एक आम = उप(आसन्ना)शीतानि आम्राणि।

पचानवे एक बराती = उप(आसन्न)पञ्चनवताः वारयात्रिकाः।

सौ एक सिपाही = उप(आसन्न)शताः सैनिकाः।

हज़ार एक रुपये = उप(आसन्न)सहस्त्राणि रूप्यकाणि—इत्यादि।

[एक आध (एकाध) का अनुवाद 'पुं० एकोऽर्धो वा स्त्री० एकार्धा वा, नपुं० एकमर्धं वा' किया जाता है। जैसे—एक आध रोटी—एकाऽर्धा वा रोटिका इत्यादि।]

(ख) एकदो=एकद्व, दोतीन=द्वित्र, तीनचार=त्रिचतुर, चारपांच=चतुःपञ्च, पांचछः=पञ्चष, छःसात=षट्सप्त, सातआठ=सप्ताष्ट, आठनौ=अष्टनव, नौदस=नवदश, दस-

ग्यारह = दशैकादश, दसबीस = दशविंश, बीसबाईस = विंशतिद्वाविंश, पच्चीसतीस = पञ्चविंशतित्रिंश, तीसचालीस = त्रिंशच्चत्वारिंश, पचाससाठ = पञ्चाशत्षष्ट, साठसत्तर = षष्टिसप्तत, सत्तर अस्सी = सप्तत्यशीत, अस्सीनब्बे = अशीतिनवत, सौ डेढ़ सौ = शतसार्धशत, सौ दो सौ = शतद्विशत इत्यादि। जैसे—

चारपांच खिलौने =
चतुःपञ्चानि क्रीडनकानि।
दसबारह औरतें =
दशद्वादशाः स्त्रियः—इत्यादि।

[बीमारी अब उन्नीसबीस है—इत्यादि वाक्यों में 'उन्नीसबीस' का अनुवाद 'न्यून' आदि शब्दों से करना चाहिये। जैसे—रोगः साम्प्रतम् (इदानीम्) न्यूनः (अस्ति साम्प्रतं विशेषः)।

'तीन पांच' का अनुवाद 'कलह' 'विवाद' आदि शब्दों से या 'कलहाय' 'वि+वद्' आदि धातुओं से करना चाहिये। जैसे—ज्यादा तीनपांच की तो मारूंगा = अधिकं कलहं (विवादं)करिष्यसि (कलहायिष्यसे, विवदिष्यसे) चेत् ताडयिष्यामि।

'तीनतेरह होना' का अनुवाद परा (ला) + अय् (भ्वादि, आत्मनेपद) वि+द्रु (भ्वादि, परस्मैपद) आदि धातुओं से किया जाता है। जैसे—वे पोलीस को देखते ही तीन तेरह हो गये = ते रक्षापुरुषान् (रक्षिणः) पश्यन्त एव (दृष्ट्वैव)पलायन्त (व्यद्रवन्, पलायिताः, विद्रुताः) = दृष्टमात्रेषु रक्षापुरुषेषु (रक्षापुरुषदर्शनसमकालमेव) ते प्रनष्टाः।]

(ग) बीसों, पचासों, सैंकड़ों आदि (अनिश्चयवाचक विशेषणों) का अनुवाद संख्यावाचक शब्दों से 'शः' (शस् प्रत्यय) लगा कर किया जाता है। जैसे—

बीसों दूध के घड़े हर रोज़ आते हैं =
विंशतिशो दुग्धस्य घटाः प्रतिदिनमागच्छन्ति।
पचासों आदमी यहां आते हैं=
पञ्चाशच्छो जनाः अत्राऽऽगच्छन्ति।
सैंकड़ों रुपये उड़ा दिये =
शतशो रूप्यकाणि वृथा व्ययितानि।
हज़ारों, लाखों और कभी २ करोड़ों रुपये का माल बिक जाता है =
सहस्रशः, लक्षशः, कदाचित् कदाचिच्च कोटिशो रूप्यकाणां भाण्डं (वस्तुजातं) विक्रीयते (कर्मकर्तरि प्रयोगः)।

२. क्रमवाचक विशेषण।

संख्यावाचक शब्दों से बनने वाले क्रमवाचक (पहला, पहली आदि) विशेषणों के लिये संस्कृत शब्द नीचे लिखे जाते हैं (यहां क्रम से पुं० स्त्री० नपुं० लिङ्गों में प्रथमा विभक्ति के एकवचन के रूप दिये जाते हैं):—

पहला (ली) = प्रथमः (आद्यः, आदिमः), प्रथमा (आद्या, आदिमा), प्रथमम् (आद्यम्, आदिमम्)।
दूसरा (री) = द्वितीयः, द्वितीया, द्वितीयम्।
तीसरा (री) = तृतीयः, तृतीया, तृतीयम्।
चौथा (थी) = चतुर्थः, चतुर्थी, चतुर्थम्
(तुर्यः, तुर्या, तुर्यम्)
(तुरीयः, तुरीया, तुरीयम्)।
पांचवां (वीं) = पञ्चमः, पञ्चमी, पञ्चमम्।
छठा (ठी) = षष्ठः, षष्ठी, षष्ठम्।

सातवां (वीं) = सप्तमः, सप्तमी, सप्तमम् ।

आठवां (वीं) = अष्टमः, अष्टमी, अष्टमम् ।

नौवां (वीं) = नवमः, नवमी, नवमम् ।

दसवां (वीं) = दशमः, दशमी, दशमम् ।

आगे ग्यारहवां (वीं) से लेकर अठारहवां (वीं) तक के लिये पहले लिखे एकादश (एकादशन्) आदि के अजन्त रूप 'एकादशः, एकादशी, एकादशम्' आदि आते हैं और उन्नीसवां (वीं) के लिये (नवदश [नवदशन्] से नवदशः, नवदशी, नवदशम् और) 'एकोनविंशति' शब्द से 'एकोनविंशतितमः, एकोनविंशतितमी, एकोनविंशतितमम्' आते हैं ।

इसके आगे बीसवां (वीं) आदि के लिये 'विंशति' आदि संख्यावाचक शब्दों से पुं० और नपुं० में 'तम' और स्त्री० में 'तमी' लगाकर 'विंशतितमः, विंशतितमी, विंशतितमम्—आदि शब्द बनाए जाते हैं । जैसे—

तीसवां अध्याय = त्रिंशत्तमोऽध्यायः ।

साठवीं पल्टन = षष्टितमी सेना ।

सौवां साल = शततमं वर्षम् (शततमो वत्सरः) ।

इसी प्रकार हज़ारवां (वीं), लाखवां (वीं), करोड़वां (वीं), = सहस्रतमः-मी-मम्, लक्षतमः-मी-मम्, कोटितमः-मी-मम्—इत्यादि ।

बीसवां (वीं), तीसवां (वीं), चालीसवां (वीं), पचासवां (वीं), आदि के लिये 'विंशतितमः-मी-मम् आदि के अतिरिक्त विंशः, विंशी, विंशम्, त्रिंशः-शी-शम्, चत्वारिंशः-शी-शम्, पञ्चाशः-शी-शम्, आदि भी आते हैं, और इसी के अनुसार उन्नीस के लिये 'एकोनविंशः-शी-शम्' भी । जैसे—

बाईसवां जन्मदिन (बाईसवीं सालगिरह)=
द्वाविंशं(द्वाविंशतितमम्) जन्मदिनम् ।
चौंतीसवां सालाना जलसा =
चतुस्त्रिंश: (चतुस्त्रिंशत्तम:) वार्षिकोत्सव: ।

उंचासवें और पचपनवें साल में आपको अचानक धनलाभ होगा =

एकोनपञ्चाशे (एकोनपञ्चाशत्तमे),पञ्चपञ्चाशे (पञ्चपञ्चाशत्तमे) च वर्षे भवत: अकस्मात् धनलाभो भविष्यति ।—इत्यादि ।

साठवां (वीं), सत्तरवां (वीं), अस्सीवां (वीं), नव्वेवां (वीं), के लिये षष्टितम: (मी) आदि तमान्त ही शब्द आते हैं,विंश:(शी) आदि के समान षष्ट: (षष्टी) आदि नहीं । परन्तु इनके आगे की इकासठवां (वीं) आदि संख्याओं (क्रमवाचकों) के लिये विंश:(शी), विंशतितम: (मी) आदि के समान एकषष्ट: (ष्टी), एकषष्टितम: (मी) आदि दोनों रूप आते हैं । जैसे—

सत्तरवां सालाना जलसा =
सप्ततितम: ('सप्तत:' नहीं) वार्षिकोत्सव: ।

इस लिस्ट में अस्सीवीं लड़की के नम्बर कितने हैं ?=

अस्यां नामावल्याम् अशीतितम्या: ('अशीत्या:' नहीं) बालिकाया: अङ्का: (परीक्षालब्धाङ्का:) कति ?

आज मेरी उमर का नव्वेवां साल शुरू हुआ है=
अद्य मम आयुष: नवतितम: ('नवत:' नहीं) वत्सर: आरब्ध: ।
मुझे चौहत्तरवां साल गुज़र रहा है =
मम चतु:सप्तत: ('चतु:सप्ततितम:' भी) वत्सर: व्यत्येति ।
छयासीवीं पल्टन गोरखों की है =

षडशीती ('षडशीतितमी' भी) पृतना गोरक्षागामस्ति।--इत्यादि।

३. आवृत्तिवाचक।

संख्याशब्दों से बनने वाले आवृत्ति तथा परत वाचक दुगुना, दुहरा आदि विशेषणों का अनुवाद 'द्वि' आदि संख्याशब्दों के आगे 'गुण' शब्द जोड़ कर बनने वाले 'द्विगुण' आदि शब्दों से किया जाता है। जैसे—

आवृत्तिवाचक--

दुगुना धन = द्विगुणं धनम्।

तिगुनी शक्कर = त्रिगुणा शर्करा।

पचासगुने ज्यादा आदमी = पञ्चाशद्गुणाः अधिकाः* जनाः।

सौगुनी लम्बाई = शतगुणा दीर्घता।

तुम सम्पत्ति चाहे उससे हज़ारगुनी, लाखगुनी या करोड़गुनी भी ज्यादा कमालो पर कीर्त्ति नहीं पा सकते =

त्वं सम्पत्तिं कामं तस्मात् (तमपेक्ष्य-तदपेक्षया) सहस्रगुणां, लक्षगुणां, कोटिगुणां वा अधिकाम् * उपार्जय, परं कीर्तिं प्राप्तुं (लब्धुम्) न शक्नोषि (प्रभवसि)।

['गुण' के स्थान में 'गुणित' शब्द भी लगाया जाता है। जैसे—मेरी रात मानो सौगुनी गुज़री = "शतगुणितेव गता मम त्रियामा (रात्रिः)"—इत्यादि।]

---

* हिन्दी में ऐसे वाक्यों में आने वाले 'ज्यादा' शब्द को संस्कृत-अनुवाद में छोड़ देना चाहिये ('अधिक' शब्द से उसका अनुवाद नहीं करना चाहिये); क्योंकि उसका अर्थ गुणान्त शब्दों से ही बोधित हो जाता है। इसलिये 'पञ्चाशद्गुणा जनाः' '...संपत्तिं... कोटिगुणां ..उपार्जय' ऐसा अनुवाद होना चाहिये, 'अधिक' शब्द रखने की आवश्यकता नहीं।

परतवाचक—

यह रस्सी इकहरी है और यह दुहरी =

इयम् (एषा) रज्जुः एकगुणा इयम् (एषा)च द्विगुणा(द्विगुणिता) ।

ब्रह्मचारी तिहरी मूंज की तड़ागी पहनते हैं =

ब्रह्मचारिणः त्रिगुणां मुञ्जस्य, (मुञ्जमयीं, मौञ्जीं)मेखलां धारयन्ति ।

[परतवाचकों में 'गुण' या 'गुणित' के स्थान 'आवृत्त' या 'आवर्तित' शब्द भी जोड़े जाते हैं। इन शब्दोंके जोड़ने से पहले 'द्वि' 'त्रि' को 'द्विः' 'त्रिः' कर लिया जाता है। जैसे—दुहरी रस्सी = द्विरावृत्ता(द्विरावर्तिता, द्विगुणा, द्विगुणिता) रज्जुः। तिहरी दामन = त्रिरावृत्तं (त्रिरावर्तितं, त्रिगुणं, त्रिगुणितं दाम।—इत्यादि।]

४. समुदायवाचक

दोनों, तीनों, चारों, बीसों, चालीसों, पचासों आदि 'ओं' वाले समुदायवाचकों (और 'दोनों के दोनों' आदि इनकी द्विरुक्तियों) के अनुवाद में संख्यावाचक शब्दों के आगे प्रायः अपि लगाया जाता है। जैसे—

मेरे दोनों (दोनों के दोनों) हाथ रुके हैं =

मम द्वावपि हस्तौ रुद्धौ स्तः ।

आठों (आठों के आठों) लड़के भाग गये =

अष्टापि (अष्टावपि) बालाः पलायिताः ।

उस मकान के बड़े कमरे में यह बीसों (बीसों के बीसों) आदमी खुले सो सकेंगे =

तस्य भवनस्य महति प्रकोष्ठे एते विंशतिरपि जनाः सावकाशं स्वपितुं शक्ष्यन्ति ।

चालीसों (चालीसों के चालीसों) चोर पकड़े गये = चत्वारिंशदपि चौराः गृहीताः (अगृह्यन्त)।—इत्यादि ।

[मैंने सोलहों आने खर्च कर दिये=मया षोडशापि आणका: व्ययिता:। परन्तु 'यह बात सोलहों आने सच है'=इयं वार्ता पूर्णतया सत्या।]

५. प्रत्येक (विभाग) बोधक।

'प्रत्येक' और 'हर एक' का अनुवाद 'सर्व' या उसके पर्याय 'सकल' आदि शब्दों मे बहुवचन में किया जाता है और उसके अनुसार विशेष्य भी बहुवचन में रक्खा जाता है। जैसे-

इस पल्टन का प्रत्येक सिपाही लगभग तीस वर्ष का है= अस्या: सेनाया: सर्वे(सकला:, समस्ता:) सैनिका: त्रिंशद्वर्षदेशीया: (आसन्नत्रिंशद्वर्षा:)।

इस क्लास का हर एक लड़का होश्यार है=
अस्या: श्रेण्या: (कक्षाया:) सर्वे बाला: (वटव:) पटव: सन्ति।
हर एक सुनार बुलाया जाय=
सर्वे स्वर्णकारा: आहूयन्ताम्।-इत्यादि।

कभी २ इनके अनुवाद में 'प्रति' विशेष्यके पहले जोड़ा जाता है। 'प्रति' के विशेष्य के पहले जोड़ने से 'अव्ययीभाव समास' होकर एक शब्द बन जाता है। अव्ययीभाव समास हो जाने पर शब्द अव्यय हो जाता है, उसका रूप नपुंसकलिङ्ग प्रथमा विभक्ति के एकवचन के समान हो जाता है; उससे कोई विभक्ति नहीं लगाई जाती *। जैसे—

---

* परन्तु अकारान्त शब्दों से अव्ययीभाव समास होने पर भी पञ्चमी विभक्ति लगाई जाती है तथा 'तृतीया' और 'सप्तमी' विभक्तियां विकल्प से आती हैं। जैसे—अपदिशम् (दिशोर्मध्ये)। पञ्चमी—अपदिशात्, तृतीया—अपदिशम्, अपदिशेन, सप्तमी—अपदिशम्, अपदिशे।

हर एक लड़के को लड्डू दो=

प्रतिबालकं (सर्वेभ्यो बालकेभ्यः) मोदकान् देहि (मोदका दीयन्ताम्)

प्रत्येक घर में लड़ाई झगड़ा होता है=

प्रतिगृहं (सर्वेषु गृहेषु = कुटुम्बेषु) कलहो भवति।-इत्यादि। कभी २ इनका अनुवाद विशेष्य की द्विरुक्ति (दोहराने) से भी किया जाता है। जैसे—

प्रत्येक (हर एक) घर में प्रेम निवास करे=

गृहे गृहे (प्रतिगृहम्, सर्वेषु गृहेषु) प्रेम (प्रेमा) निवसेत्।

प्रत्येक पहाड़ में मणियां नहीं होतीं=

"शैले शैले (सर्वेषु शैलेषु) न माणिक्यम्"—इत्यादि।

परन्तु "हर एक ब्राह्मण को सौ रुपया दो" इसका अनुवाद "सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः शतं रूप्यकाणि देहि" इस प्रकार नहीं करना चाहिये; क्योंकि इसका अर्थ 'सब ब्राह्मणों को सौ रुपया (केवल एक सौ रुपया सब ब्राह्मणों को बांट कर) दो' यह होगा, न कि 'हर एक ब्राह्मण को सौ सौ रुपया दो'। इसलिये ऐसे वाक्यों का अनुवाद विशेष्य के पहले 'प्रति' जोड़ कर या 'प्रत्येक' 'हर एक' के लिये 'सर्व, समस्त' आदि शब्द रखकर संख्या अथवा परिमाणवाचक शब्द की द्विरुक्ति से करना चाहिये। जैसे—

प्रतिब्राह्मणं शतं रूप्यकाणि देहि

अथवा

सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः शतं शतं रूप्यकाणि देहि।

'हर रोज़' 'हर घड़ी' आदि का अनुवाद भी विशेष्य के पहले 'प्रति' जोड़ कर अथवा विशेष्य की द्विरुक्ति से किया जाता है। जैसे—

भैंस को हर रोज़ खली दो=

महिष्यै प्रतिदिनं खली (खलिः, खलं) दीयताम् ।

उस दिन से वह हर रोज़ हमारे यहां आने लगा=

तस्मात् दिनात् स प्रतिदिनम् (दिने दिने) अस्माकं गृहे आगन्तुमारब्धः ।

हर घड़ी वहां जाना अच्छा नहीं=

प्रतिघटि (वारं २, पुनः २, मुहुः २) तत्र गमनं न शोभनम् (नोचितम्) ।--इत्यादि ।

(ख) अनिश्चितसंख्यावाचक विशेषण ।

एक--

अनिश्चितसंख्यावाचक 'एक' का अनुवाद 'एक' ही से और कभी २ विभक्त्यन्त 'किम्' (पुं० कः, स्त्री० का, नपुं० किम्) शब्द के आगे 'चित्' लगाकर किया जाता है । जैसे—

एक ब्राह्मण आया=एकः (कश्चित्) ब्राह्मणः आगतः ।

एक बुढ़िया कहती थी=एका वृद्धा कथयति स्म (अकथयत्) ।

एक छकड़ा जा रहा है=एकं शकटं गच्छति ।

एक जङ्गल में एक शेर रहता था=

एकस्मिन् (कस्मिंश्चित्) वने एकः सिंहः प्रतिवसति स्म ।

"एक रोता है, एक हंसता है" इस प्रकार के वाक्यों में दूसरे 'एक' का अनुवाद 'अपर' शब्द से करना चाहिये । जैसे—एको हसति, अपरो रोदिति ।

एक अन्दर जाते हैं, एक बाहर जाते हैं=

एके अन्तः गच्छन्ति (प्रविशन्ति), अपरे बहिः गच्छन्ति (निर्गच्छन्ति) ।

कनक (सोने) में कनक (धतूरे) से सौगुनी मादकता है। एक के खाने से मद होता है और एक के पाने से ही=

कनके (सुवर्णे) कनकात् (धत्तूरात्) शतगुणा मादकता। एकस्य भक्षणेन मदो जायते, अपरस्य प्राप्त्यैव (लाभेनैव)।

[कहीं २ 'एक' का अनुवाद 'केवलम्' किया जाता है। जैसे-एक आधा सेर गेहूं का आटा चाहिये=केवलं सेरार्धं(सेरार्धमात्रम्) गोधूमचूर्णम् इष्यते। एक पचास रुपये दो=केवलं पञ्चाशत् रूप्यकाणि देहि। एक तुम्हारे ही दुःख से हम दुखी हैं=केवलं तवैव दुःखेन वयं दुःखिनः स्मः।]

दूसरा—

दूसरा का अनुवाद 'अन्य' (पुं० अन्य, स्त्री अन्या, नपुं० प्रथमा, द्वितीया एकव० अन्यत्, अन्यत्र अन्य) शब्द से और कभी २ 'अपर' और 'द्वितीय' शब्द से भी किया जाता है। जैसे—

यह दूसरी बात है=इयम् अन्या वार्ता (इदमन्यत्)।

एक देता है, दूसरा लेता है=

एको ददाति, अन्यः (अपरः) गृह्णाति।

प्रतिष्ठा के लिये दो विद्याएं हैं, एक शस्त्रविद्या, दूसरी शास्त्रविद्या=

प्रतिष्ठायै द्वे विद्ये स्तः (द्वे विद्ये प्रतिष्ठायै), एका शस्त्रविद्या, द्वितीया (अन्या, अपरा) शास्त्रविद्या।

"हमें दूसरा न समझो" इत्यादि वाक्यों में 'दूसरा' का अनुवाद 'पर' शब्द से करना चाहिये। जैसे—

अस्मान् परान् माऽवगच्छ

(माऽस्मान् परान् प्रतिपद्यस्व)। तुम्हें मुझे दूसरा समझना उचित नहीं="न मां परं सम्प्रतिपत्तुमर्हसि" (कुमारसम्भव)।

['एक-दूसरा' का अनुवाद 'परस्पर' 'अन्योन्य' या 'इतरेतर' शब्द से किया जाता है। जैसे—

लड़के **एक-दूसरे** से लड़ते हैं =

बालाः **परस्परं (परस्परेण, अन्योऽन्यम्, अन्योऽन्येन, इतरेतरम्, इतरेतरेण)** कलहायन्ते।

धर्म के कामों में **एक-दूसरे** का हाथ बँटाना चाहिये =

धर्मकार्येषु **परस्परं (परस्परस्य, अन्योऽन्यम्, अन्योऽन्यस्य, इतरेतरम्, इतरेतरस्य)** साहाय्यं कर्तव्यम्।

बुरे लड़के **एक-दूसरे** को गालियां देते हैं =

दुष्टाः बालाः **परस्परं (परस्परस्मै, अन्योऽन्यम्, अन्योऽन्यस्मै, इतरेतरम्, इतरेतरस्मै)** गालीः ददति।

वे **एक-दूसरों** से वैर करते हैं = ते **परस्परम् (अन्योऽन्यम्, इतरेतरम्, परस्परान्, अन्योऽन्यान्, इतरेतरान्)** द्विषन्ति।—इत्यादि॥]

और—

'और' का भी अनुवाद 'अन्य' शब्द से ही किया जाता है। जैसे—मेरे और भी भाई हैं = मम अन्येऽपि भ्रातरः सन्ति।

मेरी और बहनें भी पढ़ी लिखी हैं =

मम अन्याः भगिन्यः (स्वसारः) अपि विदुष्यः (पण्डिताः) सन्ति।

एक नारङ्गी और दो = एकं नारङ्गकम् अन्यत् देहि।

इस शहर में और कितने ब्राह्मणों के घर हैं ? =

अस्मिन् नगरे अन्यानि कति (कति अन्यानि) ब्राह्मणानां गृहाणि ?

["इस डलिया में बीसपचीस ही आम और हैं" इस प्रकार के वाक्यों में **'और हैं'** का अनुवाद **'अन्यानि सन्ति'** की अपेक्षा **'अवशिष्यन्ते'** करना अधिक ठीक है। जैसे—अस्यां करण्डिकायां विंशतिपञ्चविंशान्येव आम्राणि अवशिष्यन्ते।

'और का और' का अनुवाद केवल 'अन्य' शब्द से या उसके आगे 'एव' लगाकर करना चाहिये। जैसे—

तुम्हें कहा और, और तुम ने किया और का और =

त्वम् अन्यत् उक्तः, त्वया च अन्यत् (अन्यदेव) कृतम् (बीच का 'और' योजक अव्यय है जिसके लिये 'च' आया है)।]

सब—

'सब' के लिये 'सर्व' शब्द (या इसके समानार्थक विश्व, सकल, समस्त आदि शब्द) आते हैं। जैसे—

सब बैल = सर्वे बलीवर्दाः (वृषाः, वृषभाः)।

सब लड़कियाँ = सर्वाः बालिकाः।

सब घर = सर्वाणि गृहाणि।

मैं सब हाल जानता हूं = अहं सर्वं वृत्तं जाने (वेद)।

इसी प्रकार—

सब लोग = विश्वे (सर्वे) लोकाः।

सब फौज़ = समस्ता सेना।

बीमारी की सब अलामतें = रोगस्य सकलानि लक्षणानि।

['सब कोई' और 'सब कुछ' में 'कोई' और 'कुछ' का अनुवाद नहीं किया जाता। जैसे—

सब कोई अपनी बड़ाई चाहते हैं =

सर्वे ('सर्वे केचित्' नहीं) स्वं महिमानम् इच्छन्ति (अभिलषन्ति, काङ्क्षन्ति, वाञ्छति)।

हम सब कुछ समझते हैं =

वयं सर्वं ('सर्वं किञ्चित्' नहीं) बुध्यामहे (जानीमहे, विद्मः)।

'सब का (के, की) सब' का अनुवाद केवल 'सर्व' शब्द या उसके आगे 'एव' लगाकर किया जाता है। जैसे—

सब का सब काफ़ला सो गया =

सर्वः (सर्व एव) वणिक्सार्थः सुप्तः (निद्रितः, निद्रां गतः)।

सब के सब लड़के लौट आये =
सर्वे बालाः प्रतिनिवृत्ताः ।
यहां की सब की सब औरतें फूहड़ हैं =
अत्रत्याः सर्वाः (सर्वा एव) स्त्रियः मूर्खाः सन्ति ।

'सारा' शब्द का अनुवाद भी 'सब' शब्द के समान ही करना चाहिए और 'सारा का सारा, सारे के सारे, सारी की सारी' का 'सब का (के, की) सब' के समान । जैसे—

सारे करेले = सर्वाणि (सकलानि) कारवेल्लानि ।
सारी पूरियां = सर्वाः (समस्ताः) पूरिकाः ।
सारे सेठ = सर्वे श्रेष्ठिनः ।
सारे के सारे वृक्ष काट दिये =
सर्वे (सर्वे एव) वृक्षाः कृत्ताः (छिन्नाः) ।
सारी की सारी कलियां खिल गईं =
सर्वाः (सर्वा एव) कलिकाः व्यकसन् (विकसिताः, विकासं गताः) ।
सारा का सारा नगर मेले में शामिल हुआ था =
सर्वं (सर्वमेव) नगरं मेलके संमिलितम् (उपस्थितम्) अभूत् ।]

बहुत—

'बहुत' के लिये 'बहु' 'प्रभूत' आदि शब्द आते हैं । जैसे—
बहुत हिरन = बहवः हरिणाः ।
बहुत भैंसें = बहवः (बह्व्यः) महिष्यः ।
बहुत खीरे = बहूनि (प्रभूतानि) त्रापुषाणि ।

['बहुतसा (सी)' 'बहुतसारे (री)' 'बहुतेरे (री)' और 'बहुत कुछ' का अनुवाद भी केवल 'बहु' 'प्रभूत' आदि शब्दों से ही किया जाता है ('बहुसदृश, बहु सर्व, और बहु किञ्चित्' से नहीं) । 'बहुत

से (सी)' 'बहुतेरे (री)' का अनुवाद 'अनेक' शब्द से भी किया जात है। जैसे—

'बहुतसे गांव उजड़ गये =
बहवः (अनेके) ग्रामाः शून्यतां (निर्जनतां) गताः।
बहुतसे लोगों की राय है =
बहूनाम् (अनेकेषाम्) जनानां मतमस्ति।
बहुतसी औरतें सीना सीखती हैं =
बह्वः (बह्वयः, अनेकाः) स्त्रियः सीवनं* (स्यूतिं) शिक्षन्ते।
बहुतेरे उपाय हैं = बहवः (प्रभूताः, अनेके) उपायाः सन्ति।

'कई' का अनुवाद 'अनेक' शब्द से किया जाता है—यह पहले लिखा जा चुका है।

'अनेकों' का अनुवाद 'अनेकशः' किया जाता है (और कभी २ नानाविध, नानाप्रकार, अनेकविध, और अनेकप्रकार शब्द भी इसके लिये आते हैं)। जैसे—

अनेकों बीमारियां = अनेकशः (अनेकविधाः, अनेकप्रकाराः, नानाविधाः, नानाप्रकाराः) रोगाः।]

'थोड़ा (ड़ी)' के लिये 'अल्प' शब्द आता है। जैसे—

थोड़े आदमी = अल्पाः (अल्पे) जनाः।
थोड़ी मूलियां = अल्पानि मूलकानि।
थोड़ी दवाइयां = अल्पाः ओषधयः।

---

* सिव् (सीव्) धातु का ल्युट् (अन) प्रत्यय का एक रूप 'सीवन' और दूसरा रूप 'सेवन' भी होता है, परन्तु सीने के अर्थ में 'सेवन' का प्रयोग करने से बहुधा 'सेव्' धातु के रूप 'सेवन' (सेवा करना) का भ्रम हो जाता है, इसलिये 'सीवन' शब्द का ही प्रयोग करना चाहिए।

['ज्यादा' के लिये 'अधिक' शब्द आता है और 'कम' के लिये 'न्यून' (और कभी २ 'अल्प') शब्द आता है। जैसे—

ज्यादा दिन = अधिकानि दिनानि।

मेरे पास रुपये कम हैं = मम सविधे रूप्यकाणि न्यूनानि (अल्पानि) सन्ति।

इस टोकरे में आम उससे कम हैं =

अस्मिन् करण्डके आम्राणि ततः (तदपेक्षया) न्यूनानि सन्ति।]

कुछ–

'कुछ' का अनुवाद 'कतिपय' शब्द से और कभी २ विभक्त्यन्त 'किम्' से 'चित् (चन)' लगाकर किया जाता है। जैसे–

कुछ लोग = कतिपये (याः) (कतिचित्) जनाः।

कुछ ही लोगों का विश्वास है =

कतिपयानामेव (केषाञ्चिदेव) जनानां विश्वासोऽस्ति।

कुछ फल = कतिपयानि (कतिचित्) फलानि।

कुछ तारे = कतिपयाः (कतिचित्) ताराः (तारकाः)।

४. परिमाणवाचक विशेषण

(क) अनिश्चित परिमाणवाचक

'परिमाण (तौल या माप) वाचक' विशेषणों में सब, सारा (समूचा), बहुत, बहुतसा (सी), बहुतसारा (री) बहुतेरा (री), थोड़ा, ज्यादा, और, कम, कुछ, ज़रा, पूरा, अधूरा, काफ़ी–इत्यादि अनिश्चित परिमाणवाचक हैं। इनमें से 'सब' से लेकर 'कम'

तक का अनुवाद वही है जो पहले (अनिश्चित संख्यावाचक विशषणों)में बताया गया है।

'समूचा' का अनुवाद 'सारा' के समान;

'बहुतसा (सी)' आदि का 'बहुत' के समान (परन्तु विशेषतः इनके लिये 'प्रभूत' शब्द अधिक उपयुक्त है);

'कुछ' और 'ज़रा' का 'किञ्चित्' और 'ईषत्' अव्ययों और कभी २ 'अल्प' शब्द से;

'पूरा' का 'पूर्ण' शब्द से;

'अधूरा' का 'अपूर्ण' शब्द से;

और 'काफ़ी' का 'पर्याप्त' शब्द से। जैसे—

सब (सारा) दूध = सर्व (समस्तम्, सकलम्) दुग्धम्।

बहुत तेल = बहु (प्रभूतं) तैलम्।

बहुतेरा बाजरा = प्रभूतो वार्जरः।

बहुतसी (बहुत सारी) फुल्लियां = प्रभूताः लाजाः।

ज्यादा मूंग = अधिकाः मुद्गाः।

और पानी = अन्यत् पानीयम्।

थोड़ा भूसा = अल्पं तुसम्।

कुछ उड़द दो = अल्पान् (स्तोकान्, ईषत्,) माषान् देहि।

ज़रा भात लाओ = किञ्चित् (ईषत्) भक्तम् आनय।

पूरा आनन्द = पूर्णः आनन्दः।

अधूरा काम = अपूर्णं कार्यम्।

[कभी २ 'बहुतसा (सी)' और 'बहुत कुछ' का अनुवाद 'बहु' शब्द के उत्तरावस्था (Comparative Degree) के रूप 'भूयस्' और 'बहुतर' से भी किया जाता है। जैसे—

इस काम में तुम्हें बहुत सा लाभ होगा =

अस्मिन् कार्ये तव भूयान् (बहुतरः) लाभो भविष्यति ।

बहुत कुछ आशा = भूयसी (बहुतरा) आशा ।

इसी प्रकार 'थोड़ासा (सी)' और ज़रा सा (सी)' का अनुवाद बहुधा 'अल्प' शब्द के उत्तरावस्था के रूप 'अल्पीयस्' या 'अल्पतर' से किया जाता है (और कभी २ 'ईषदिव' या 'किञ्चिदिव' से)। जैसे--

थोड़ासा (ज़रासा) साग दो =

अल्पीयः (अल्पतरं, ईषदिव, किञ्चिदिव) शाकं देहि ।

शक्कर ज़रासी है =

शर्करा अल्पीयसी (अल्पतरा) अस्ति ।]

(ख) निश्चितपरिमाणवाचक

'सेर,' 'गज' आदि निश्चित परिमाणवाचक विशेषण हैं। इनमें से कुछ के लिये संस्कृत शब्द हैं। परन्तु जिनके लिये संस्कृत शब्द नहीं हैं उनके अनुवाद में उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे—

तुलामान (तौल)

रत्ती = रक्तिका, गुञ्जा ।

माशा = माषकः (माषः)

तोला = तोलकः (तोलः)

छटांक = षट्टङ्कः

पाव = पादः ।

धड़ी = घटिका ।

पैसा = पणकः (पणः)

आना = आणकः (आणः)

दुअन्नी = द्व्याणकी (द्व्याणी)

चुअन्नी = चतुराणकी (चतुराणी)

अठन्नी = अष्टाणकी (अष्टाणी)

रुपया = रूप्यकम् (रूपकम्)

मोहर = निष्कः (दीनारः)

मूल्यमान

कौड़ी = वराटिका (वराटः, वराटकः)

पाई = पादिका

माप—

अङ्गुल = अङ्गुलम्
फुट = पादः
बालिश्त = वितस्तिः
हाथ = हस्तः
कोश = क्रोशः

कालमान

पल = पलम्
छिन = क्षणः
पहर = प्रहरः (यामः)
सैकण्ड = विकला
मिनट = कला
घण्टा = घण्टा (होरा)
दिनरात = अहोरात्रः
हफ्ता = सप्ताहः
पाख = पक्षः
महीना = मासः
बरस = वर्षम् (वत्सरः, संवत्सरः, अब्दः, समा, शरत्)

मण, सेर, औंस, ग्रेन, गज़, फरलांग, मील, डालर, शिलिंग आदि के लिये संस्कृत शब्द नहीं हैं। इसलिये अनुवाद में स्पष्ट-प्रतिपत्ति के लिये इन्हीं शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

"इहैव धूपवेलार्थं गुग्गुलस्य मणद्वयम्" (प्राचीनलेखमाला १ भाग १९४ पृ० २३ पं०) "द्व्यङ्केन्दुसंख्यैर्धटकैश्च सेरस्तैः पञ्चभिः स्याद् धटिका च ताभिः। मणोऽष्टभिस्त्वालमगीरशाह-कृताश्च संज्ञा निजराज्यपूर्षु ॥" (आलमगीरराज्यसमये वैक्रमाष्टादशशतके लीलावत्यां प्रक्षिप्तः श्लोकः)॥

इन शब्दों को पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों में प्रयोग कर सकते हैं। क्योंकि दोनों में से एक के रखने में कोई विशिष्ट प्रमाण नहीं है। हां ऊपर के श्लोक में 'मण' और 'सेर' शब्दों का पुंलिङ्ग में प्रयोग किया गया है और इनके अनुसार

औरों का भी पुंलिङ्ग में ही प्रयोग किया जाय–यह बात आजाती है तथापि नपुंसक लिङ्ग में इनके प्रयोग का कोई बाधक नहीं है। इसलिये औंसः, औंसम्, मीलः, मीलम्, डालरः, डालरम्—आदि दोनों लिङ्गों में प्रयुक्त किये जासकते हैं। इनका प्रयोग करने के तीन प्रकार हैं:—

(क) परिमाण (तौल या माप) वाचक शब्द के आगे 'परि-मित', 'मित' या 'मात्र' (स्त्री० मात्री) 'परिमाण' या 'मान' शब्द जोड़कर उसे परिमेय (जिस वस्तु का तौल या माप बताना हो) वाचक शब्द के साथ समान लिङ्ग और विभक्ति में रखना। जैसे—

चार मन मोठ=

चतुर्मण (मणचतुष्क)परिमिताः(=मिताः=मात्राः=परिमाणाः=मानाः) मकुष्ठाः।

छः तोले सोना=

षट्तोलकपरिमितम् (=मितम=मात्रम्=परिमाणम्=मानम) सुवर्णम्।

दस हाथ आंगन=

दशहस्तपरिमितम् (=मितम्=मात्रम्=परिमाणम्=मानम्) अङ्गनम्।

दसगज़ कपड़ा=

दसगजपरिमितम् (=मितम्—इत्यादि) वस्त्रम्।

चार घड़ी रात=

चतुर्घटिकापरिमिता (=मिता=मात्री=परिमाणा=माना) रात्रिः।

बीस रुपये मोल =
विंशतिरूप्यकपरिमितम् (= मितम्—इत्यादि) मूल्यम् ।
सौ मील रास्ता =
शतमीलपरिमितः (= मितः—इत्यादि, मार्गः

(ख) परिमेय (जिसका तोल या माप बनाना हो) वाचक शब्द को षष्ठी विभक्ति में रखना । जैसे—

चार मन बाजरा = वार्जरस्य चत्वारो मणाः ।
धड़ी खली = खल्याः (खलेः, पिण्याकस्य) धटिका ।
चार सेर चिड़वे लाओ =
चिपिटानां चतुरः सेरान् आनय ।
डेढ़ पाव मटर = हरेणूनां (सतीनकानां) सार्धः पादः ।
चार तोले चांदी = रजतस्य चत्वारः तोलकाः ।
अब तीन घण्टे दिन बाकी है =
सांप्रतं दिनस्य तिस्रः घण्टाः (होराः) शिष्यन्ते ।

(ग) परिमाणवाचक और परिमेयवाचक शब्दों को समान विभक्ति में रखना । जैसे—

एक मण धान = मणो व्रीहयः (व्रीहिः) ।*
सेर चावल = सेरः तण्डुलाः (तण्डुलः) ।*

---

* धान, चावल, उड़द आदि अन्नवाचक शब्दों के लिये आने वाले व्रीहि, तण्डुल, माष आदि शब्द बहुवचन और एकवचन दोनों में प्रयुक्त होते हैं और हिन्दी में भी प्रायः ऐसा ही होता है । जैसे-अबके उड़द बहुत हुआ = अबके उड़द बहुत हुए = अस्मिन् वर्षे (एषमः) माषः बहुः (बाहुल्येन) अभवत् (माषाः बहवः अभवन्) । "न शालेः स्तम्बकरिता वप्तुर्गुणमपेक्षते" (मुद्राराक्षस) । "तुषैरपि परिभ्रष्टा न प्ररोहन्ति शालयः" (पञ्चतन्त्र ।

पांच छटांक घी लाओ = पञ्च षट्टङ्कान् घृतम् आनय ।

तीन औंस टिंचर आयोडीन =

त्रयः औंसाः (त्रीणि औंसानि) टिंचर आयोडीनम् (टिंचर आयोडीनाख्यमौषधम्)।

तीन माशा सोना = त्रयो माषकाः सुवर्णम् ।

इस छड़ी की लंबाई चार हाथ है =

अस्याः यष्टिकायाः दीर्घता चत्वारो हस्ताः ।

दो पहर रात गुजरी = द्वौ प्रहरौ * रात्रिर्गता ।—इत्यादि ।

पहले दो प्रकारों का प्रयोग अधिक होता है ।

इसी प्रकार—

दो ढेर गेहूं बाकी है =

द्वौ राशी (स्तूपौ) गोधूमः शिष्यते =

द्विराशि (स्तूप) मितः = राशि (स्तूप) द्वयमात्र गोधूमः शिष्यते ।

(गोधूमस्य द्वौ राशी (स्तूपौ शिष्येते) ।

अभी भी एक छकड़ा फल हैं =

अद्यापि एकं शकटं (एकशकटपरिमाणानि = मितानि, = मात्राणि) फलानि सन्ति । इत्यादि ॥

[हिन्दी के समान संस्कृत में भी प्रायः सभी विशेषण क्रियाविशेषण के

---

* मणो व्रीहयः, सेरः तण्डुलाः, षट्टङ्काः घृतम्, त्रयः औंसाः आयोडीनम्, त्रयो माषकाः सुवर्णम्, चत्वारो हस्ताः दीर्घता, द्वौ प्रहरौ रात्रिः—इत्यादि प्रयोगों की अर्थसङ्गति 'लक्षणावृत्ति' द्वारा होती है— यह बात वै० महाभाष्य के अनुसार मञ्जूषा, मनोरमा आदि में स्पष्ट प्रतिपादन की गई है ।

रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं और तब इनका रूप 'नपुंसकलिङ्ग एकवचन' जैसा ही रहता है। जैसे–

अच्छा गाता है = साधु (शोभनं) गायति।
मीठा बोलता है = मधुरं वदति।
तू इतना क्यों डरता है = त्वम् एतावत् किं बिभेषि।
टेढ़े मत चलो = कुटिलं मा गच्छ।
यह बच्चा पीला पेशाब करता है = अयं शिशुः पीतं मूत्रति।
बहुत ऊंचे मत चढ़ो = अत्युच्चं (अत्युच्चैः) मा आरोह।
बहुत समझाया = बहु बोधितः।
पण्डित थोड़ा बोलते हैं = पण्डिताः अल्पं भाषन्ते।
उसने पहले से सौगुना पराक्रम किया =
तेन पूर्वतः शतगुणं पराक्रान्तम्।—इत्यादि।]

अभ्यास

१—पांच हजार छः सौ सिपाही, बीस लाख पच्चीस सौ घर। २—पांच सौ पचास शक्कर की बोरियां। ३—दो करोड़ बारह लाख बयासी हजार सत्तर रुपये। ४—२४०२३०२३४ पैसों के कितने रुपये होते हैं? ५—चार कम चार सौ बराती। ६—बीसवीं सदी की सभ्यता। ७—यह तो उसका लाखवां हिस्सा भी नहीं। ८—इन बिल्डिगों पर कोई साढ़े तीन करोड़ रुपया खर्च हुआ है। ९—पौने चार सेर रुई। १०—सवा पच्चीस सेर अनार। ११—खिचड़ी में दो तिहाई चावल और एक तिहाई दाल डालना। १२—दादा की उमर अस्सीपचासी साल है। १३—पचास साठ औरतें। १४—दुगुना नमक। १५—इससे दसगुना चौड़ा मकान। १६—चौहरी रस्सी। १७—लाखों मन गेहूं आस्ट्रेलिया से आता है। १८—मनों दूध और बोरियों खांड खतम

हो गई ।१९–थोड़ा पानी । २०–बहुत बर्तन । २१—कुछ लोग । २२–कई घोड़े । २३—कुछ माखन । २४—कुछ पूरियां । २५–हर एक (एक एक) भिखमंगे को एक एक कंबल और दो दो रुपये दिये । २६–प्रत्येक बर्तन में चार सेर घी है । २७—कालेज यहां से एक मील है । २८–मैं घड़ी-एक ठहर कर सोऊंगा । २९–बड़े घाट पर इतनी भीड़ थी कि कई लोग बिना नहाए ही वापस आए । ३०—उनमें कईएक विद्वान् भी थे । ३१–तुमसे बहुत सी बातें पूछनी हैं ।

————

तीसरा अध्याय ।

विशेषणों की तुलना

उत्तरावस्था (Comparitive Degree)

उत्तरावस्था में दो की तुलना करके उनमें एक की अधिकता या न्यूनता दिखाई जाती है। इसके अनुवाद में विशेषण से 'तर (तरप्)' या 'ईयस् (ईयसुन्)' * प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—

---

* 'ईयस्' और 'इष्ठ' प्रत्यय आने पर शब्द के अन्तिम स्वर का, और उसके परे यदि कोई व्यञ्जन हो तो उसका भी लोप हो जाता है। जैसे—

महत्+ईयस्—'महत्' के अन्तिम स्वर 'ह' के बीच के 'अ' और परवर्ती व्यञ्जन 'त्' दोनों का लोप हो जाने से मह्+ईयस्=महीयस् (महीयान्) बनता है। इसी प्रकार महत्+इष्ठ=मह्+इष्ठ=महिष्ठ। लघु+ईयस् = लघ्+ईयस्=लघीयस् । लघु+इष्ठ=लघ्+इष्ठ=लघिष्ठ—इत्यादि।

'ईयस्' और 'इष्ठन्' के पूर्ववर्ती मतुप् (मत्, वत्) और विनि (विन्) प्रत्ययों का भी लोप हो जाता है (और ऊपर के नियम के अनुसार शब्द के अन्तिम स्वर और यदि हो तो उसके परवर्ती व्यञ्जन का भी लोप हो जाता है)। जैसे—

बुद्धिमत्+ईयस्=बुद्ध्+ईयस्=बुद्धीयस्। इसी तरह बुद्धिमत्+इष्ठ=बुद्धिष्ठ। बलवत्+ईयस् = बलीयस्, बलवत् + इष्ठ = बलिष्ठ। यशस्विन्+इष्ठ=यशिष्ठ।—इत्यादि।

मोहन श्याम से बुद्धिमान् है =
मोहनः श्यामात् ×बुद्धिमत्तरः ।
मोहन श्याम से कमज़ोर है = मोहनः श्यामात् दुर्बलतरः ।
मारने वाले से पालने वाला बड़ा होता है =
मारकात् पालको महत्तरः (महीयान्)
तुम्हारा लड़का तो राजकुमार से भी अधिक सुन्दर है =
तव कुमारस्तु राजकुमारात् अपि सुन्दरतरः (मनोज्ञतरः) ।

'ईयस्' तथा 'इष्ठ' परे होने पर विशेषण की 'ऋ'को, यदि उसके पहले कोई व्यञ्जन हो, तो'र्' हो जाता है । जैसे—कृश + ईयस् = क्रशीयस्, कृश + इष्ठ = क्रशिष्ठ । इसी प्रकार 'मृदु' से म्रदीयस्, म्रदिष्ठ, 'पृथु' से प्रथीयस्, प्रथिष्ठ—इत्यादि ।

'ईयस्' और 'इष्ठ' केवल गुणवाचक विशेषणों से ही आते हैं, संज्ञाशब्दों से नहीं । संज्ञाशब्दों की तुलना में 'तरप्' 'तमप्' आते हैं । जैसे—मित्रतरः मित्रतमः, पाचकतरः, पाचकतमः ।

इन (दो) में से कौन तुम्हारा अधिक मित्र है =
अनयोः कः (कतरः) तव मित्रतरः ।
इनमें कौन सब से बढ़कर रसोइया है =
एषु (एषां) कः (कतमः) पाचकतमः ।—इत्यादि ।

× कहीं २ तुलना में'पञ्चमी के स्थान में तृतीया'विभक्ति का भी प्रयोग देखने में आता है । जैसे—"को नु स्वन्ततरो मया" (मुझसे अच्छे परिणाम वाला और कौन है) । "मम प्राणैः प्रियतरं पुत्रम्" (मेरे प्राणों से अधिक प्यारे पुत्रको) । रामायण ४।२२।६ । "स चेन्ममार सृञ्जय चतुर्भद्रतरस्त्वया" (हे सञ्जय यदि तुमसे चारगुना सुखसम्पन्न वह मर गया) । 'नास्ति मया कश्चिदल्पभाग्यतरो भुवि' (मुझसे कम भाग्यवाला पृथ्वी पर और कोई नहीं)—इत्यादि ।

मथुरावाले पटनेवालों से अधिक धनवान् हैं =
मथुराः पाटलिपुत्रकेभ्य आढ्यतराः (धनवत्तराः)।

हिन्दुस्तान में इस समय और देशों की अपेक्षा सच्चे सावधान बहुत कम हैं =

हिन्दुस्थाने (भारते) इदानीम् (अद्यत्वे) अन्यदेशेभ्यः (अन्य-देशापेक्षया) अन्वर्थाः सावधानाः (अप्रमादिनः) न्यूनतराः (अल्पतराः, अल्पीयांसः)।

तुम्हारी हालत मेरी बनिस्बत अच्छी है=
तव दशा मत् (मत्तः, मदपेक्षया) वरतरा (वरीयसी)

अधिकता बोधित करने के लिये 'बढ़कर' और 'कहीं' शब्द आते हैं। इनका अनुवाद भी 'तर' (या 'तम') से ही हो जाता है (अलग 'वर्धित्वा' और 'क्वचित्' न करना चाहिए)। जैसे—

शक्कर से बढ़कर शहद मीठा होता है=
शर्करायाः मधु (माक्षिकं) मधुरतरं भवति।
मोहन से श्याम कहीं (कहीं अधिक) सुखी है=
मोहनात् श्यामः सुखितरः।—इत्यादि।

परन्तु तुलना में जब 'बढ़कर' और 'उतरकर' केवल आते हैं (इनके आगे कोई विशेषण नहीं आता) तब इनका अनुवाद यथाक्रम 'अधिक' और 'न्यून' शब्दों से या 'अतिरिच्यते (अति+रिच्)' विशिष्यते (वि+शिष्)' क्रियाओं से (अर्थानुसार कालमें) किया जाता है। जैसे—

पढ़ने में राम श्याम से बढ़कर और मोहन से उतरकर है=
रामः पठने श्यामादधिको मोहनाच्च न्यूनः अस्ति।

उत्तमावस्था (Superlative Degree)

उत्तमावस्था में दो से अधिक पदार्थों की तुलना करके उन सब से एक को अधिक या न्यून बताया जाता है। इसके अनुवाद में विशेषण से 'तम (तमप्)' या 'इष्ठ (इष्ठन्)' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—

कलकत्ता हिन्दुस्थान के सब नगरों से में) बड़ा है = कलकत्तानगरं भारतवर्षस्य सर्वेषां नगराणां* (सर्वेषु नगरेषु) महत्तमम् (महिष्ठम्, विशालतमम्)।

सब से बड़ी हानि=महत्तमा (महिष्ठा) हानिः।

हिन्दी में विशेषणों की द्विरुक्ति (दोहराने) से या द्विरुक्त विशेषणों में से पहले के आगे 'से' (अपादानविभक्ति) लगाकर भी उत्तमावस्था प्रकट की जाती है। इस प्रकार के प्रयोगों का अनुवाद पूर्ववत् विशेषणों से 'तम' या 'इष्ठ' लगाकर अथवा विशेषणों की द्विरुक्ति से† करना चाहिये (इस द्विरुक्ति में दोनों का समास हो जाता है)। जैसे—

---

* उत्तमावस्था में 'षष्ठी या सप्तमी' विभक्ति आती है, परन्तु कहीं२ 'पञ्चमी' विभक्ति का भी प्रयोग मिलता है। जैसे—"संप्रति तु सुन्दरीणां शतादपि सुहृद्विशिष्टतमः" (मृच्छकटिक ४। २५) "धान्यानां संग्रह उत्तमः सर्वसंग्रहात्" इत्यादि।

† यह द्विरुक्ति पाणिनि के "प्रकारे गुणवचनस्य" (८।१।१२) सूत्र से होती है। इसका अर्थ इस प्रकार किया गया है—सादृश्ये द्योत्ये गुणवचनस्य द्वे स्तस्तच्च कर्मधारयवत्; कर्मधारयवदुत्तरेष्वित्यधिकारात्"(सादृश्य सूचित करना हो तो गुणवाचक शब्द की द्विरुक्ति होती है और उसका कर्मधारय के समान समास हो जाता है)। उदाहरण दिया है— "पटुपटुः"

बड़े बड़े पण्डित = महत्तमाः पण्डिताः ।

महामहान्तः पण्डिताः ।

अच्छे से अच्छे गहने = शोभनतमानि भूषणानि ।

शोभनशोभनानि भूषणानि ।

जिसका अर्थ किया है "पटुसदृशः, ईषत्पटुरिति यावत्" । पटु (चतुर) सा अर्थात् कुछ पटु । इससे स्पष्ट है कि पाणिनि के नियम से यह द्विरुक्ति 'न्यूनता' के अर्थ में होती है, 'अधिकता या अतिशय' के अर्थ में नहीं । परन्तु संस्कृतसाहित्य में इस प्रकार की द्विरुक्ति का प्रयोग प्रायः सर्वत्र 'अतिशय' के अर्थ में पाया जाता है, न्यूनता के अर्थ में कोई प्रयोग देखने में नहीं आता । हां, "एकोऽपि त्रय इव भाति कन्दुकोऽयं कान्तायाः करतलरागरक्तरक्तः ।" इसमें 'रक्तरक्तः' इस द्विरुक्ति को 'रक्त (लाल) सा या कुछ रक्त' इस प्रकार 'न्यूनता' के अर्थ में लिया जा सकता है, परन्तु यहां भी 'अतिशय' का अर्थ (अतिशयरक्त) लेने में कोई बाधा नहीं, प्रत्युत अलङ्कारशास्त्र की दृष्टि से यहां 'अतिशय' का अर्थ ही उपयुक्त है ।

'अतिशय' के अर्थ में कुछ उदाहरण ये हैं—"गाढोत्कण्ठालुलितलुलितैरङ्गैस्ताम्यतीति" (मालतीमाधव १ । १८) इसके व्याख्याकार इसका अर्थ यों लिखते हैं—"लुलितलुलितैर्मदनसंतापेन अत्यन्तकलुषितैः" (त्रिपुरारि) । "अतिम्लानकान्तिभिः" (जगद्धर) । "क्षामक्षामकपोलमाननम्" (शकुन्तला) क्षामक्षामौ कृशतरौ, पूर्वं कृशावधुना कृशतरौ कपोलौ यत्र तदाननम्" (राघवभट्ट) । "स्वाविकी कृशता विरहजनितदुःखेन अतिशयेन जाता" (श्रीनिवास) । इसी प्रकार "ललितललितैर्ज्योत्स्नाप्रायैरकृत्रिमविभ्रमैरकृतमधुरैरम्बानां मे कुतूहलमङ्गकैः" (उत्तररामचरित ।)

ऊपर के उदाहरणों में सब द्विरुक्तियां 'अतिशय' के अर्थ में हैं, व्याख्याकारों ने भी उनका वैसा ही अर्थ किया है । इससे स्पष्ट है कि पाणिनिके द्वारा

अक्लमन्दों की तरकीबों से मुश्किल से मुश्किल काम आसानी से हो जाते हैं=

'न्यूनता' के अर्थ में विधान किये जाने पर भी ये द्विरुक्तियां प्रायः 'अतिशय' के अर्थ में ही प्रयोग की जाती हैं। अतएव दुर्घटवृत्तिकार ने भी "भीतभीत इव शीतमयूखः" इसमें भारवि के "भीतभीतः" प्रयोग को "आधिक्ये द्वे वाच्ये" इस वार्तिक से 'आधिक्य (अतिशय)' के अर्थ में सिद्ध किया है और प्रौढमनोरमाकार ने (शायद उक्तवार्तिक का होना अप्रामाणिक मानकर या तत्त्वबोधिनीकार के अनुसार वैसे वार्तिक के प्रसिद्ध न होने से "तादृशवार्तिकस्याऽप्रसिद्धत्वात्" "भीतेभ्योऽपि भीतः (भीतभीतः) अतिभीत इत्यर्थः" (डरे हुओं से भी डरा हुआ अर्थात् अत्यन्त डरा हुआ)–इस प्रकार सिद्ध किया है। जैसे भी हो 'अतिशय' के अर्थ में उक्त द्विरुक्त प्रयोग व्याकरण की दृष्टि से संगत हैं और वैसे भी दोहराने या बार २ कहने से अर्थ की अधिकता की प्रतीति स्वाभाविक है –"अभ्यासे हि भूयस्त्वमर्थस्य भवति यथाऽहो दर्शनीयाऽहो दर्शनीयेति न न्यूनत्वम्" (वे. सू. अध्यासभाष्ये भामती) दोहराने पर अर्थ की अधिकता की प्रतीति होती है, न्यूनता की नहीं; जैसे–'अहो दर्शनीया' को दोहराने से 'अधिक दर्शनीय (सुन्दरी)' यही अर्थ होता है न कि 'कम दर्शनीय')।

परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि 'न्यूनता' के अर्थ में द्विरुक्ति सर्वथा नहीं होती। अवश्य होती है और इसमें पाणिनि का पूर्वोक्त नियम "प्रकारे गुणवचनस्य" ही प्रमाण है। (संभव है पाणिनि के समय में न्यूनता के अर्थ में ही द्विरुक्ति का प्रयोग होता हो, अनन्तर अधिकता के अर्थ में उसका प्रयोग होने लग गया)। न्यूनता के अर्थमें द्विरुक्ति का प्रयोग हिन्दी में भी होता है। जैसे–यह काला काला(=काला सा=कुछ काला)क्या है। इसका अनुवाद (न्यूनता के अर्थ में) द्विरुक्ति से ही करना चाहिये:–इदं कृष्णकृष्णं किम् ? (किमिदं कृष्णकृष्णम् ?)।

बुद्धिमतां युक्तिभिः कठिन (दुष्कर) तमान्यपि=कठिनकठिनान्यपि (अत्यन्त कठिनान्यपि, अतिदुष्कराण्यपि) कार्याणि सौकर्येण (अनायासं) सम्पद्यन्ते ।

गुस्से से लाल लाल आंखें निकलकर बोला =

क्रोधेन रक्ततमे=रक्तरक्ते (अतिरक्ते) अक्षिणी विस्फार्य अकथयत् (अवदत्) ।—इत्यादि ।

स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त ऊकारान्त शब्दों के अन्तिम ईकार ऊकार 'तर, तम' परे होने पर प्राय: ह्रस्व हो जाते हैं । जैसे—सुकुमारी—सुकुमारितरा, सुकुमारितमा । पङ्गू–पङ्गुतरा,पङ्गुतमा इत्यादि ।*

---

* (क) पुंलिङ्ग शब्दों से 'ई' (ङीप्, ङीष्, ङीन्) प्रत्यय लगकर बनने वाले अनेकाच् (एक से अधिक स्वरों वाले) शब्दों का अन्तिम ईकार 'तर' और 'तम' प्रत्यय परे होने पर ह्रस्व हो जाता है । जैसे:—

सुन्दरी—सुन्दरितरा, सुन्दरितमा । सुकेशी–सुकेशितरा, सुकेशितमा । ब्राह्मणी–ब्राह्मणितरा, ब्राह्मणितमा । पट्वी—पट्वितरा, पट्वितमा-इत्यादि ।

(ख) ऊकान्त और एकाच् (एक स्वर वाले) ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्तिम ऊकार तथा ईकार 'तर' और 'तम' परे होने पर विकल्प से ह्रस्व होते हैं । जैसे—पङ्गू (लँगड़ी)पङ्गुतरा,पङ्गुतमा और पङ्गूतरा,पङ्गूतमा इत्यादि । स्त्री–स्त्रितरा, स्त्रितमा और स्त्रीतरा, स्त्रीतमा—इत्यादि ।

(ग)उगित्(उकार या ऋकार जिनका लुप्त होजाता है)मतुप,शतृ,वसु आदि प्रत्ययों से बने हुए शब्दों का अन्तिम ईकार 'तर' और 'तम' परे होने पर विकल्प से ह्रस्व और लुप्त । जैसे (मतुप्) बुद्धिमती-बुद्धिमतितरा, बुद्धिमतितम, बुद्धिमत्तरा, बुद्धिमत्तमा । बलवती—बलवतितरा, बलवतितमा, बलवत्तरा, बलवत्तमा । (शतृ) जयन्ती, जयन्तितरा, जयन्तितमा,

[कभी २ अतिशय के अर्थ में विशेषण से 'तर' 'तम' लगाए बिना भी 'अतिशय' का अर्थ प्रकट किया जाता है। जैसे— "पाषाणात् कठिनं हृदयम्" पत्थर से (ज़्यादा) कड़ा दिल। वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि। लोकोत्तराणां चेतांसि" अलौकिक पुरुषों के हृदय वज्र से भी (अधिक) कठोर और फूलसे भी (अधिक) कोमल होते हैं। "छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः" सब विद्यार्थियों में मैत्र (अधिक) चतुर है— इत्यादि। इसलिए मोहन श्याम से बुद्धिमान् है। मारनेवाले से पालनेवाला बड़ा है—इत्यादि वाक्यों का अनुवाद दोनों प्रकार से मोहनः श्यामात् **बुद्धिमत्तरः**, मारकात् पालको **महत्तरः (महीयान्)** (जैसा पहले लिखा गया है) और मोहनः श्यामात् **बुद्धिमान्**। मारकात् पालको **महान्**, इस प्रकार 'तर' 'तम' लगाए बिना भी किया जा सकता है। परन्तु इस प्रकार के ('तर' 'तम' बिना)प्रयोग बहुत कम मिलते हैं। इसलिए अतिशय के अर्थ में विशेषण से 'तर' 'तम' लगाकर ही प्रयोग करना अच्छा है।]

श्रेष्ठ या उत्तम के अर्थ में उत्तमावस्था (Superlative degree) **यथायोग्य अग्रसर, धौरेय मूर्धन्य, चूडामणि, शिरोमणि आदि शब्दों से प्रकट की जाती है। जैसे—त्वमर्हता-मग्रसरः स्मृतोसि नः'** हम तुम्हें योग्य व्यक्तियों में श्रेष्ठ मानते हैं। इत्यादि। **इसी प्रकार—कलकत्ता हिन्दुस्तान में सब नगरों से** श्रेष्ठ है=**कलिकाता भारते सर्वेषां नगराणां** मूर्धन्यम्।—**इत्यादि।**

[कभी २ संज्ञा शब्दों से भी 'तुलना या अतिशय' के अर्थ में 'तर' 'तम' लगाए जाते हैं। जैसे—

"अतो दुःखतरं नु किम्" इससे बढ़कर दुःख क्या हो सकता है।

जयत्तरा, जयत्तमा। (वसु) विदुषी, विदुषितरा, विदुषितमा, विद्वत्तरा विद्वत्तमा इत्यादि।

"सन्तोषः स्वर्गतमः" सन्तोष सब से उत्तम स्वर्ग है इत्यादि।

कभी २ उत्तमावस्था बोधक 'इष्ठ' प्रत्ययान्त विशेषणों से भी (दो अथवा अधिक अतिशययुक्त वस्तुओं में से एक का और अधिक अतिशय बोधित करने के लिये) 'तर' 'तम' लगाए जाते हैं। जैसे— "अयमनयोर्ज्येष्ठतरः" (यह इन दोनों में ज्येष्ठ (बड़ा) है)। "वमनद्रव्याणां मदनफलानि श्रेष्ठतमानि" [चरक, कल्पस्थान, १ अध्याय] (उल्टी लाने वाली चीज़ों में मैनफल सब से श्रेष्ठ हैं)। इत्यादि।]

कुछ विशेषणों से 'ईयस्' और 'इष्ठ' प्रत्ययान्त शब्द निपातन से (अनियमितरूप से) बनते हैं। जैसे—

(स्वरूपावस्था) विशेषण	उत्तरावस्था (ईयस्)	उत्तमावस्था (इष्ठ)
अन्तिक	नेदीयस्	नेदिष्ठ
अल्प	कनीयस् (अल्पीयस्)	कनिष्ठ (अल्पिष्ठ)
उरु	वरीयस्	वरिष्ठ
क्षिप्र	क्षेपीयस्	क्षेपिष्ठ
क्षुद्र	क्षोदीयस्	क्षोदिष्ठ
गुरु	गरीयस्	गरिष्ठ
दीर्घ	द्राघीयस्	द्राघिष्ठ
दूर	दवीयस्	दविष्ठ
प्रशस्य	श्रेयस्, ज्यायस्	श्रेष्ठ, ज्येष्ठ
प्रिय	प्रेयस्	प्रेष्ठ
बहु	भूयस्	भूयिष्ठ
बहुल	बंहीयस्	बंहिष्ठ

युवन्	यवीयस् कनीयस्	यविष्ठ कनिष्ठ
बाढ	साधीयस्	साधिष्ठ
वृद्ध	वर्षीयस् ज्यायस्	वर्षिष्ठ ज्येष्ठ
स्थिर	स्थेयस्	स्थेष्ठ
स्थूल	स्थवीयस्	स्थविष्ठ
ह्रस्व	ह्रसीयस्	ह्रसिष्ठ

क्रियाओं और अव्ययों से भी 'अतिशय'के अर्थ में 'तर' 'तम' आते हैं और तब इनके आगे 'आम्' लगाया जाता है, जिससे इनके रूप 'तराम्' 'तमाम्' हो जाते हैं। जैसे—

क्रिया से—हसतितराम्। हसतितमाम्।
अव्यय से—उच्चैस्तराम्। उच्चैस्तमाम्।
श्याम अधिक हँसता है=श्यामः हसतितराम्।
शङ्कर अत्यन्त हँसता है=शङ्करः हसतितमाम्।
लड़का बहुत ऊंचे बोलता है=बालः उच्चैस्तरां भाषते।
मैं ऊंचे से ऊंचे चिल्ला रहा हूं पर कोई नहीं सुनता=
अहम् उच्चैस्तमाम् आक्रोशामि परं कश्चित् न शृणोति।—इत्यादि॥

[अव्यय जब क्रियाविशेषण होते हैं तभी इनसे अतिशयार्थ में 'तराम्' 'तमाम्' लगाए जाते हैं। परन्तु जब ये विशेषण के रूप में आते हैं तब इनसे भी 'तर' 'तम' ही आते हैं। उच्चैः, नीचैः, स्वस्ति आदि कुछ ही अव्यय विशेषण के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं।, जैसे—

उच्चैस्तरं गृहम्। उच्चैस्तमः वृक्षः।

उत्तर, उत्तम शब्दों में 'उद्' अव्यय से 'तर' 'तम' नहीं हुए,

किन्तु 'उद्गत' शब्द से 'तर' 'तम' लगकर बने हुए 'उद्गततर' 'उद्गततम' शब्दों के मध्यवर्ती 'गत' शब्द का 'मध्यमपदलोपी समास' से लोप होने पर ये (उत्तर, उत्तम) शब्द बने हैं—उद्गत+तर—तम। 'गत का लोप=उद्+तर—तम्=उत्तर, उत्तम।]।

अभ्यास

१ कालिदास से बढ़ कर सुयोग्य कवि और कोई नहीं। २ आजकल संसार में सब से बड़ा आदमी कौन है। ३ बम्बई में मालाबार हिल का दृश्य अत्यन्त मनोहर है। ४ इससे बढ़िया बादाम आपको और नहीं मिलेंगे। ५ तुम दोनों में कौन बड़ा है। ६ तीनों में जो रास्ता सब से समीप हो उससे चलो। ७ लाहौर से फीरोज़पुर की अपेक्षा जालन्धर दूर है। ८ यह मौसम निहायत बुरा है। ९ नादिरशाह से अधिक निर्दय और अत्याचारी आक्रमणकारी भारतवर्ष में कभी कोई नहीं आया। १० यह रोटी इस से ज्यादा मोटी है। ११ मेरी छड़ी तुम्हारी से छोटी है। १२ मोहन सब लड़कों से लम्बा है। १३ यह सन्दूक इससे भारी है। १४ काले काले बादलों की घटा। १५ बड़े से बड़े चालाक उसका मुकाबला नहीं कर सकते। १६ उसकी नज़र अभी इतनी तेज़ है कि बारीक से बारीक हर्फ़ भी बिना ऐनक के पढ़ लेता है। १७ क्षुद्र से क्षुद्र मनुष्य भी इस अपमान को नहीं सह सकता १८ यह लड़का कड़वी से कड़वी दवाई पी लेता है। १९ भोंदू भारी से भारी बोझ उठा सकता है। २० हरे हरे खेत। सावन की बादलों से घिरी अंधेरी अंधेरी रातें। २१ मीठे मीठे आम चुन कर नौकर के हाथ भेज दो। २२ इनमें चार बड़े बड़े पलंग हमारे घर पहुंचा दो।

चौथा अधिकरण ।

क्रिया ।

पहला अध्याय ।

'क्रिया' शब्दों के संस्कृत-अनुवाद में क्रियाओं के कालों (Tenses) के अनुवाद करने में विशेष कठिनाई उपस्थित होती है, क्योंकि हिन्दी में संदिग्ध-भूत, संदिग्ध-वर्तमान, सातत्य-बोधक आदि कुछ-एक काल ऐसे हैं जो संस्कृत में नहीं हैं । इसलिए यहां विशेषतः इसी विषय में कुछ लिखना है ।

भूतकाल (Past tense)

हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले भूतकाल के भेदों के संस्कृत-अनुवाद का प्रकार लिखने से पहले संस्कृत के भूतकाल के भेदों का संक्षेप से निर्देश कर देना आवश्यक है । संस्कृत में भूतकाल के तीन भेद हैं ।

१. परोक्षानद्यतन भूत (Past Perfect)

जो काम होता हुआ हमने न देखा हो (=परोक्ष) और जो आज (गुज़री रात के बारह बजे से इधर) न हुआ हो (= अनद्यतन = not of current day) अर्थात् आज से पहले हुआ हो, उसके लिए 'परोक्षानद्यतन भूत, आता है । इसमें 'लिट्' लकार का प्रयोग होता है ।

२. अनद्यतन भूत (Past Imperfect)

जो काम आज न हुआ हो (= अनद्यतन) अर्थात् आज से पहले हुआ हो उसके लिए 'अनद्यतन भूत' आता है। इस में 'लङ्' लकार का प्रयोग होता है।

ये दोनों ।(लिट् और लङ्) प्राय: ऐतिहासिक वर्णनों या दूर की घटनाओं में प्रयुक्त होते हैं।

समान्य भूत (Past Indefinite or Aorist)

साधारण भूतकालिक (Past) अर्थ को बोधित करने के लिए 'सामान्य भूत' आता है। इसमें 'लुङ्' लकार का प्रयोग होता है।

अनद्यतन (आज से पहले के) भूत में 'लिट्' और 'लङ्' का प्रयोग होता है। इसलिए शेष अद्यतन (आज के, of current day) भूत में, एवं समीपवर्ती भूत (Recent Past) में भी 'लुङ्' का प्रयोग होता है। 'लुङ्' का यह प्रयोग हिन्दी के आसन्नभूत या पूर्ण वर्तमान (Present Perfect) से बिल्कुल मिलता है।

[वेद ब्राह्मण आदि प्राचीन ग्रन्थों में जिनके निर्माणकाल में संस्कृत बोली जाती थी, ऊपर लिखे भूतकाल के भेदों का उनके उल्लिखित अर्थों में ही प्रयोग पाया जाता है । जैसे-- 'गावो ह जज्ञिरे (लिट) तस्मात्' (ऋग्वेद) "त्रिपादूर्ध्व उदैत् (लङ्) पुरुष: पादोऽस्येहाभवत् (लङ्) पुन:" (ऋग्वेद) "तम आसीत् (लङ्) तमसा गूढमग्रे" (ऋग्वेद) इत्यादि। इन मन्त्रों में अतीत घटनाओं के वर्णन में 'लिट्' ((Perfect) तथा 'लङ्' (Imperfect) का ही प्रयोग हुआ है। इसी

प्रकार ऐतरेय ब्राह्मण में भी अतीत घटनाओं के वर्णन में 'लिट्' या 'लङ्'का ही प्रयोग है,परन्तु कथोपकथन (Dialogue) में निकट भूत (Recent Past) की बातें 'लुङ्' (Aorist) द्वारा ही प्रकाशित की गई हैं। जैसे—"तस्य पुत्रो जज्ञे (लिट्) रोहितो नाम। तं होवाच (लिट्) अजनि (लुङ्) ते पुत्रो यजस्व मामनेनेति।" [ऐतरेय ब्राह्मण हरिश्चन्द्रोपाख्यान] (उसके [हरिश्चन्द्र के] रोहित नाम पुत्र पैदा हुआ। उसे [वरुण] बोला—तुम्हारे पुत्र पैदा हो गया है। इससे मेरी पूजा करो [इसकी मुझे बलि दो])—इत्यादि।

परन्तु ज्यों २ संस्कृत का बोला जाना (बोलचाल के व्यवहार में आना) कम होता गया त्यों २ भूतकाल के तीनों प्रकारों का ऊपर लिखा प्रयोगसम्बन्धी भेद अनन्तरवर्ती ग्रन्थकारों के ध्यान में न रहा और वे लिट् (परोक्षानद्यतनभूत) लङ् (अनद्यतनभूत) तथा लुङ् (सामान्यभूत तथा निकट भूत)—इन तीनों का समीपवर्ती,दूरवर्ती, तथा परोक्ष भूतकालिक कार्य के लिये प्रायः समानरूप से प्रयोग करने लग गये। जैसे—"अगृध्नुराददे (लिट्) सोऽर्थमसक्तः सुखमन्वभूत् (लुङ्)" [रघुवंश] "तदाहं किमकरवं (लङ्) क्वाऽगमं (लुङ्) किं व्यलपम् (लङ्) इति सर्वमेव नाज्ञासिषम् (लुङ्)।" [कादम्बरी]

"सा एकस्मिन् शिलातले विश्रब्धमुपाविशत् (लङ्)। तथा स्थितां तां चन्द्रापीड़ो निभृतमुपससार (लिट्) मुहूर्तमिव स्थित्वा च तां सविनयमवादीत् (लुङ्)। [कादम्बरी], इत्यादि।

इस प्रकार यह विषय यहां तक ध्यान से हट गया कि कई जगह लेखकों को अद्यतन अनद्यतन के भेद का भी ध्यान नहीं

रहा और अद्यतन भूत (लुङ्) की जगह भी अनद्यतन भूत (लङ्) का प्रयोग करने लग गये। जैसे—

"सेयम् अद्य रामभद्रतेजसा तस्मादेनसो निरमुच्यत (लङ्)" (महावीरचरित १ अङ्क)।

"सेयम् सम्प्रति अस्य रघुराजपुत्रस्य तेजसा तस्मादन्धकारान्निरमुच्यत (लङ्)" (अनर्घराघव २)।

"किं ब्रवीषि न मया भावोऽलक्ष्यत (लङ्) इति"

(चतुर्भाणी, उभयाभिसारिक, पृ. ५)

"सुवृत्ताऽस्मिन्नटवीमध्येऽद्य सुतमसूत (लङ्)"

(दशकुमारचरित)—इत्यादि ।

फिर भी और न सही तो इस बात का तो ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि अद्यतन (आजके) भूत में 'लङ्' या 'लिट्' का प्रयोग नहीं करना चाहिये ।]

हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले भूतकाल के भेदों और उनके कई प्रकार के प्रयोगों के अनुवाद की रीति–

१. सामान्यभूत

(क) सामान्यभूतकालिक क्रिया या घटना ।

इसके अनुवाद में लुङ्, लङ्, लिट् और यथायोग्य क्तवतु (तवत्) तथा क्त (त) का प्रयोग होता है। जैसे—

मेरे मन में चिन्ता पैदा हुई=मम मनसि चिन्ता समुदभूत् (लुङ्) "समुदभून्मे मनसि चिन्ता" (कादम्बरी)

वह जड़ से कटे वृक्ष की तरह ज़मीन पर गिर पड़ा=

"सः छिन्नमूलस्तरुरिव क्षितौ (भूमौ) अपतत् (लङ्)" (कादम्बरी)

सञ्जय बोला = "सञ्जय उवाच (लिट्)" (गीता)

उसने अच्छोद नाम सरोवर देखा =

"सः अच्छोदं नाम सरो दृष्टवान् (क्तवतु)" (कादम्बरी) ।

तेन अच्छोदं नाम सरो दृष्टम् (क्त) ।

वह पानी पीने के लिये यमुना के किनारे उतरा =

"सः पानीयं पातुं यमुनाकच्छम् अवतीर्णः (क्त)" (पञ्चतन्त्र) ।

(ख) आसन्नभविष्यत् के अर्थ में (सामान्यभूत) ।

इसके अनुवाद में 'क्त' का ही प्रयोग किया जाता है। क्तान्त शब्द के बाद प्रायः 'एव' लगाया जाता है (और पहले यथा-योग्य 'अयम्' 'एषः' पुं० 'इयम्' 'एषा' स्त्री० या 'इदम्' 'एतत्' नपुं० जो 'अभी' का अर्थ बोधित करते हैं) । जैसे—

अब यह बेमौत मरा (= मरजायगा) =

इदानीमयम् विनैव मृत्युं मृतः ।

(मृतोऽयमिदानीं विनैव मृत्युम्)

आप चलिये मैं अभी आया (= आऊंगा) =

भवान् गच्छतु (गच्छतु भवान्), अहम् अयम् (अयमहम्) आगत एव ।

मैं भी देवी (द्रौपदी) से मिल कर अभी आया (= आऊंगा)

"अहमपि एष देवीं दृष्ट्वाऽनुपदम् आगत एव" ।

(वेणीसंहार २ अङ्क) इत्यादि ।

[इसके लिये सामान्यभविष्यत् 'लृट्' का भी प्रयोग किया जा सकता है । जैसे—

अयमिदानीं विनैव मृत्युं मरिष्यति ।

गच्छतु भवान् अहं शीघ्रमागमिष्यामि ।

अहमपि देवीं दृष्ट्वा ऽनुपदमागमिष्यामि ।]

(ग) निश्चित भविष्यत् के अर्थ में (सामान्यभूत)।

इसके अनुवाद में सामान्यभविष्यत् 'लट्' का प्रयोग करना चाहिये। जैसे—

कुछ देर इन्तज़ार करो, ज्यों ही वारिश बंद हुई (=बंद-होगी) त्यों ही हम चले (=चल पड़ेंगे)=

कञ्चित् कालं प्रतीक्षस्व (प्रतीक्षस्व कञ्चित् कालं), यदैव वृष्टिर्निवर्तिष्यते तदैव चलिष्यामः (प्रस्थास्यामहे)।

जहां* तुमने कुछ कहा (=तुम कुछ कहोगे) वहां वह तुरन्त गया (=चला जाएगा=

यदैव त्वं किमपि कथयिष्यसि, तदैव स त्वरितं गमिष्यति।

[ऐसे संयुक्त वाक्यों के पहले वाक्य की क्रिया के अनुवाद में "क्तान्त" शब्द को आगे 'मात्र' जोड़ कर सप्तमी विभक्ति में भी रक्खा जा सकता है। इसमें विशेषण('क्तान्त' शब्द) और उसका विशेष्य दोनों 'सप्तमी' विभक्ति में आते हैं। ऐसा करने पर 'ज्यों-त्यों' 'जहां-वहां' का अनुवाद नहीं किया जाता। जैसे—

निवृत्तमात्रायां वृष्टौ प्रस्थास्यामहे।

त्वया ईषत् उक्तमात्रे (ईषदप्युक्ते) स त्वरितं गमिष्यति।

"अगर मैं शहर गया (=जाऊंगा) तो बाजा ले आऊंगा" इस प्रकार के वाक्यों में 'गया' का अनुवाद 'भविष्यत् क्रिया' (गमिष्यामि) के बदले 'क्तान्त' शब्द (गतः) से भी किया जा सकता है। जैसे—

यदि अहं नगरे गतः तर्हि (अहं नगरे गतश्चेत) वाद्यम् आनेष्यामि।

---

* ऐसे वाक्यों में 'जहां-वहां' का अनुवाद 'यदा-तदा' करना चाहिये।

"कल्लू-जैसा नटखट लड़का कब मानने लगा" इस प्रकार के वाक्यों में 'लगा' सा. भू. का अनुवाद 'लृट्' सा. भ. से करना चाहिये। यहां 'कब' के लिये 'कदा' न रख कर 'कथम्' रखना चाहिये।

जैसे—कल्लूसदृशः धूर्तो बालः (धूर्तवटुः) कथं विनयं ग्रहीष्यति (कथं विनयं ग्राहयितुं शक्यः) ।]

(घ) सामान्य भविष्यत् के अर्थ में (सामान्यभूत)।

"दो दिन धूप पड़ी (=पड़ेगी) और (तो) खेती पकी (=पक जाएगी)" इस प्रकार के संयुक्त वाक्यों के अनुवाद में दोनों वाक्यों में 'क्तान्त' शब्द का प्रयोग होता है। जैसे—

द्वे दिने (दिनद्वयम्) आतपः पतितश्चेत् (जातश्चेत्) सस्यं पक्वम्। *

पहले रामलाल को कहो उसने मान लिया तो सब ने मान लिया।

प्रथमं रामलालं कथय (ब्रूहि) तेन चेत् स्वीकृतं सर्वैः स्वीकृतम्।

—इत्यादि।)

---

* 'देवश्चेद् वृष्टो निष्पन्नाः शालयः (बारिश हुई तो धान हो गये)। तत्र भवितव्यं संपत्स्यन्ते शालय इति········ सिद्धमेतत्। कथम्? भविष्यत्प्रतिषेधात्। यल्लोको भविष्यद्वाचिनः शब्दस्य प्रयोगं न मृष्यति। कश्चिदाह। देवश्चेद्वृष्टः संपत्स्यन्ते शालयः इति। स उच्यते। मैवम् वोचः। संपन्नाः शालय इत्येवं ब्रूहि।" (वै० महाभाष्य ३।३।१३२ सूत्र पर)।

(ङ) सामान्यवर्तमान के अर्थ में (सामान्यभूत)

इसका अनुवाद 'क्त' से करना चाहिये और वर्तमान 'लट्' से भी।

जैसे—लो, मैं यह चला (=चलता हूं)=

ननु अहम् एष गतः (गच्छामि)।

(नन्वेष गतोऽहम्=गच्छाम्यहम्)।

जिसने अपनी सेहत खोदी (=जो-खोदेता है) उसने सब कुछ खो दिया (=वह...खो देता है)=

येन निजं स्वास्थ्यं नाशितम्, तेन सर्वं नाशितम्।

यः निजं स्वास्थ्यं नाशयति, स सर्वं नाशयति।

जिसने धन कमाया (=जो कमाता है) उसकी गरीबी दूर हुई (=होती है)

येन धनम् अर्जितम् तस्य दारिद्र्यम् दूरीभूतम् (नष्टम्)।

यः धनम् अर्जयति तस्य दारिद्र्यम् दूरीभवति (नश्यति)।

यह स्तोत्र जिसने ध्याया (इसे जो ध्याता है), जिसने सुना (=जो सुनता है) और जिसने पढ़ा (=जो पढ़ता है), उसने सब दान दिये (वह...देता है) और सारे देवता पूजे (=वह सारे देवताओं को पूजता है) =

"येन ध्यातः श्रुतो येन येनाऽयं पठितः स्तवः।

दत्तानि सर्वदानानि सुराः सर्वे समर्चिताः॥" (महाभारत)

इमं स्तवं यो ध्यायति, यः शृणोति, यः पठति सः सर्वदानानि ददाति, सर्वान् सुरान् समर्चति। इत्यादि।

[(भ) वर्तमानकालिक इच्छा सूचित करने वाले 'होना' क्रिया के 'सामान्यभूत' का अनुवाद वाक्य के आदि में वर्तमानकालिक

इच्छार्थक क्रिया रख कर 'लिङ्'* से करना चाहिए। 'सामान्यभूत' के इस अर्थ वाले वाक्य निषेधात्मक (Nagative) होते हैं, अनुवाद उनका विध्यात्मक (Affermative) रूप से करना चाहिए। जैसे—

मेरे कोई कन्या न हुई, नहीं तो मैं भी उसका दान करती =

इच्छामि (कामये) मम काचित् कन्या **भवेत्** येन अहमपि तस्या दानं कुर्याम्।

मैं वहां न हुआ नहीं तो तुम्हारा इतना नुकसान न होता =

इच्छामि अहं तत्र **स्याम्** येन तव इयती हानिर्न भवेत्।

परन्तु यदि ऊपर के वाक्यों में निषेधात्मक सामान्यभूत ('न हुई' 'न हुआ') का अर्थ विध्यात्मक हेतुहेतुमद्भाव ('होती' 'होता') लिया जाय तो अनुवाद में 'लृङ्' या 'लिङ्'×(Conditional) का प्रयोग किया जायगा। जैसे—

मम यदि काचित् कन्याऽभ**विष्यत्** तर्हि अहमपि तस्या दान**मकरिष्यम्**।

यदि अहं तत्र स्यां तर्हि तव इयती हानि **र्नभवेत्**।

(आ) "हम गरीब हुए (ठहरे) इतना धन कहां से लाएं"

इस प्रकार के वाक्यों में सामान्यभूत 'हुए' (ठहरे) का अनुवाद वर्तमान 'लट्' से करना चाहिए। जैसे—

वयं निर्धनाः स्मः, एतावद् धनं कुतः आनयेमहि।

(इ) "अच्छा, माना कि उसके पास धन नहीं पर बुद्धि तो है"।

---

* "इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ" (पाणिनि) ३।३।१५७

× 'लृङ्' के समान 'लिङ्' भी हेतुहेतुमद्भावार्थक (Conditonal) है, परन्तु दोनों के प्रयोग में भेद है। कैसे वाक्यों में लृङ्' और कैसे वाक्यों में 'लिङ्' आता है—इसका विवरण आगे 'हेतुहेतुमद्भूत' में देखिये।

इस प्रकार के वाक्यों में सा० भू० 'माना' आदि का अनुवाद 'क्त' या वर्तमान 'लट्' से करना चाहिए। जैसे—

भवतु, अभ्युपगतम् (अभ्युपगच्छामि) यत् तस्य सविधे धनं नास्ति, परं बुद्धिस्तु विद्यते ।

(भवतु, अभ्युपगतम् (अभ्युपगच्छामि) तस्य सविधे धनं नास्तीति, परं बुद्धिस्तु विद्यते ।)

इसी प्रकार 'कल्पना किया' सा० भू० का भी। जैसे— तुम्हारी दलील के मुताबिक कल्पना किया कि वह भूखा था =

भवद्युक्त्यनुसारेण कल्पितं (कल्पयामि) यत्स बुभुक्षितः आसीत् ।(भवद्युक्त्यनुसारेण कल्पितं (कल्पयामि) स बुभुक्षित आसीदिति ।)

(ई) "यदि मैं वहां गया भी तो क्या करूंगा" इस प्रकार के वाक्योंमें सा० भू० (गया आदि) का अनुवाद 'क्त' से करना चाहिए (इसमें 'यदि' और 'तो' का अनुवाद नहीं किया जाता) जैसे—

अहं तत्र गतोऽपि किं करिष्यामि ।

जल्दी जल्दी उठी भी तो क्या करूंगी =

"लघु लघु उत्थिताऽपि किं करिष्यामि" (शकुन्तला)

"यदि मैं वहां गया भी तो कोई लाभ नहीं" इस प्रकार के वाक्यों के अनुवाद में 'क्तान्त' शब्द को (और उसके अनुसार उसके विशेष्य को) तृतीया विभक्ति में रखना चाहिए। जैसे—

मया तत्र गतेनापि न कश्चित् लाभः ।]

२. आसन्नभूत (या पूर्णभूत वर्तमान Present Perfect)

(क) भूतकालिक क्रिया का वर्तमान में पूरा होना ।

इसके अनुवाद में 'लुङ्' और 'क्त' का प्रयोग होता है। जैसे—

तुम्हारे पुत्र पैदा हो गया है =

"अजनि ते पुत्रः" (ऐतरेय० ब्रा०)

हे देव, सुकेश के लड़कों ने हमारे स्थान हरलिए हैं =

"सुकेशतनयैर्देव स्थानान्यपहृतानि नः" (रामा० ७ । ६ । १४)

शहर में एक ज्योतिषी आए हैं = नगरे एकः ज्यौतिषिकः (दैवज्ञः, ज्योतिर्वित्) आगमत् (आगतः) ।

मैंने अभी खाना खाया है =

अहम् इदानीमेव (संप्रत्येव) भोजनम् अभुञ्जि । अभुक्षि

(मया इदानीमेव भोजनं भुक्तम्) ।

[कभी २ आस० भू० के अर्थ में 'क्तान्त' शब्दों के आगे 'अस् (होना)' धातु की वर्तमानकालिक क्रिया भी लगाई जाती है। जैसे—

रात को सुख से रहा हूं =

रात भर
निशां सुखम् (सुखेन) उषितोऽस्मि ।

"सुखमस्म्युषितो निशाम्" (रामा० ३ । ११ । ७३)

"भौंरे, इसे कैसे भूल गया है =

भ्रमर (मधुकर) इमां कथं विस्मृतोऽसि ।

"मधुकर विस्मृतोऽस्येनां कथम्" (शकुन्तला) ।]

बैठना, उठना, थकना, लेटना, पड़ना, गिरना आदि शरीर के विविध व्यापार अथवा स्थिति को बोधित करने वाली क्रियाओं के 'बैठा है, उठा है, थका है' आदि रूपों के साथ यदि आदि में वर्तमानकाल-बोधक अव्यय न हो तो इनके अनुवाद में 'अस्' धातु की वर्तमानकालिक क्रिया आगे लगा कर 'क्त' का प्रयोग करना चाहिए, 'लुङ्' का नहीं। जैसे—

कुत्ता बैठा है = कुक्कुरः उपविष्टः (निषण्णः) अस्ति ।

हाथ उठा है = हस्तः उत्थितोऽस्ति ।

लड़का थका है=बालकः श्रान्तोऽस्ति।

पनिहारी लेटी है=पानीयहारी (जलवाहिका) शयिताऽस्ति।

कुम्हार सोया है=कुम्भकारः सुप्तोऽस्ति।

आंगन में पत्ते पड़े हैं=अङ्गने पत्राणि पतितानि सन्ति।

रसोईघर में दूध कैसे गिरा है=रसवत्यां (महानसे, पाकशालायां) दुग्धं कथं पतितमस्ति।—इत्यादि।

वर्तमानकालवाचक अव्यय (अभी=इदानीमेव, संप्रत्येव आदि) यदि वाक्य में हों या प्रकरण से वर्तमानकाल की स्पष्ट प्रतीति होती हो तो आस० भू० के लिये 'क्तवतु' (तवत्) का भी प्रयोग किया जाता है। इसके साथ प्रायः 'अस्' धातु की वर्तमानकालिक क्रिया लगाई जाती है। जैसे—

मैं अभी जगा हूं=अहम् इदानीमेव जागरितवानस्मि (प्रबुद्धवानस्मि)

बालक को धीरे वृक्षसे उतार कर...आपके पास ले आया हूं=
"बालकं शनैरवनिरुहादवतार्य...भवन्निकटमानीतवानस्मि"
(दशकुमारचरित)।—इत्यादि।

(ख) पूर्णभूत के बदले (आसन्नभूत)

I. यह जब ऐतिहासिक घटना के कहने में आता है तब इसके अनुवाद में 'लिट्' 'लङ्' 'लुङ्' 'क्त' 'क्तवतु' इन सबका प्रयोग होता है। जैसे—

रामेश्वर के पास भगवान् रामचन्द्र ने समुद्र पर पुल बांधा है (=बांधा था)=

रामेश्वरस्य समीपे (अनुरामेश्वरम्) समुद्रे सेतुं भगवान्

रामचन्द्रः बबन्ध (लिट्)=अबध्नात् (लङ्)=अभांत्सीत (लुङ्) बद्धवान् (क्तवतु)=(रामेश्वरस्य समीपे सेतुः भगवता रामचन्द्रेण बद्धः (क्त)।

छत्रपति शिवा जी बड़ा वीर और बुद्धिमान् हुआ है(=था)= छत्रपतिः शिवाजीः महान् वीरो बुद्धिमांश्च बभूव (लिट्)= अभवत्=आसीत (लङ्)=अभूत(लुङ्)=*भूतवान् (क्तवतु)=भूतः (क्त) *।

अमरीका कोलम्बस ने खोजो है (=खोजी थी)=

अमरीकां कोलम्बसः अन्विवेष (लिट्)=अन्वैष्यत् (लङ्)= अन्वैषीत् (लुङ्)=अन्विष्टवान् (क्तवतु)=अमरीका कोलम्बसेन अन्विष्टा (क्त)—इत्यादि ।

II. किसी के कथन का अपने शब्दों में अनुवाद करने में (आसन्नभूत)।

इसके अनुवाद में 'लङ्' 'लुङ्' 'क्तवतु' 'क्त' इनका प्रयोग किया जाता है। जैसे—

तुम्हारे पिता ने कहा है (=कहा था) कि जल्दी चले आओ।

तव पिता अकथयत् (लङ्) यत् शीघ्रमागच्छ।

(तव पिता अकथयत् शीघ्रमागच्छेति)।

शीघ्रमागच्छेति तव पिता अचकथत् (लुङ्) = कथितवान् (क्तवतु)।

---

*'भूतवान्'का क्रिया के रूप में प्रयोग देखने में नहीं आता। 'भूतः' का प्रयोग भी "न भूतो न भविष्यति" इसके सिवा प्रायः नहीं मिलता।

शीघ्रमागच्छेति तव पित्रा कथितम् (क्त) ।*

III. किसी की उक्ति के उद्धरण में (आसन्नभूत)।

इसके अनुवाद में प्रधानतया 'क्त' या 'क्तवतु' का प्रयोग किया जाता है, वैसे तो 'लुङ्' का भी प्रयोग हो सकता है। जैसे—

तुलसीदास जी ने कहा है—"जहां सुमति तहँ सम्पति नाना"

श्रीतुलसीदासेन × उक्तम् (श्रीतुलसीदासः उक्तवान्) "यत्र सुमतिः तत्र नाना संपत्तयः" इति ।

[वेद में कहा है—"सच बोल" इस प्रकार के वाक्यों के अनुवाद में केवल 'क्त' का ही प्रयोग किया जाता है और उसके आगे भी प्रायः 'अस्' धातु की वर्तमानकालिक क्रिया लगाई जाती है। जैसे—वेदे उक्तमस्ति (प्रतिपादितमस्ति) "सत्यं वद" इति ।—इत्यादि ।]

IV. भूतकालिक क्रिया की आवृत्ति सूचित करने में (आसन्नभूत)

इसके अनुवाद में 'लङ्' 'लुङ्' 'क्त' 'क्तवतु' इन का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

---

* यहां "कहा है" के अनुवाद में 'कथ्' धातु की अपेक्षा 'सम् × दिश्' या 'सम्+आ+दिश्' धातु का प्रयोग अधिक अच्छा है। जैसे—

शीघ्रमागच्छेति तव पिता समदिशत् (समादिशत्)=सम (मा) दिष्टवान् = सं (समा) दिष्टवान् ।…तव पित्रा सं (समा) दिष्टम् ।

× जी के लिये अनुवाद में साधारणतः शब्द के आदि में 'श्री' जोड़ देना चाहिये। इसीलिये 'तुलसीदास जी ने' के लिये 'श्रीतुलसीदासेन' लिखा गया है। 'जी' के अनुवाद के और प्रकार पहले लिखे जा चुके हैं।

तुमने जब जब (जभी) विना भूख रोटी खाई है तब तब (तभी) बीमार हुए हो=

यदा यदा (यदैव) त्वं बुभुक्षां विना (असत्यां बुभुक्षायां) भोजनम् अकरोः (लङ्)=अकार्षीः (लुङ्)=कृतवान् (क्तवतु) तदा तदा (तदैव) रुग्णः अभवः (लङ्)=अभूः (लुङ्)=भूतवान् (क्तवतु)।

यदा यदा त्वया बुभुक्षां विना भोजनं कृतं (क्त) तदा तदा रुग्णो भूतः (क्त)+ ।

३. पूर्णभूत

(क) बहुत पहले कार्य हो चुकना ।

इसके अनुवाद में 'लिट्, 'लङ्' 'लुङ्' और यथायोग्य 'क्तवतु' का भी प्रयोग किया जाता है । जैसे—

रामचन्द्र जी रघुवंश में हुए थे=

श्रीरामचन्द्रः (भगवान् रामचन्द्रः) रघुवंशे बभूव (लिट्)=, अभवत् (लङ्)=अभूत् (लुङ्) ।

मेघनाद को लक्ष्मण जी ने मारा था=

मेघनादं लक्ष्मणः जघान (लिट्)=अहन् (लङ्)=अवधीत् (लुङ्) हतवान् (क्तवतु)=मेघनादः लक्ष्मणेन हतः (क्त)

सत्यवर्मा तीर्थयात्रा की अभिलाषा से इस देश में आया था=

"सत्यवर्मा तीर्थयात्राभिलाषेण देशमेनमागच्छत् (लङ्)"

(दशकुमारचरित)

वह (राज्य) मैं फिर तुम्हे देता हूं जैसे तुमने मुझे दिया था=

+ऐसे स्थलों में 'भू' धातु की अपेक्षा 'जन्' धातु का प्रयोग अधिक किया जाता है । जैसे—रुग्णो जातः=अजायत (लङ्)—इत्यादि ।

"तद्ददामि पुनस्तुभ्यं यथा त्वमददा मम." (रामा० ६ । १२८ । २)।

राम जब राजा था तब मैं तुम्हारी तरह आया था=

"रामो यदा राजाऽऽसीत् तदाऽहं त्वमिव समागमम् (लुङ्)।" (तन्त्राख्यायिक ५ । ३)।

मेरे भी यह इसी तरह सिर पर चढ़ा था=

"ममाऽपीत्थमेवैतच्छिरस्यारूढम् (क्त)।" (तन्त्राख्यायिक ५ । ३ ।)

['क्त' और 'क्तवतु' के आगे कभी २ 'भू' या 'अस्' धातु के भूतकालिक रूप भी लगाए जाते हैं । जैसे—

उसने आते हुए जो कुआ देखा था="तेन आगच्छता यः कूपो दृष्टोऽभूत्" (पञ्चतन्त्र) । (सः आगच्छन् यं कूपं दृष्टवान् अभूत्=आसीत्) ।

उसने मेरे आगे मछली का मांस कहा था=

"तया ममाग्रे मत्स्यामिषं कथितमासीत्" (तन्त्राख्यायिक ५ । १०)—इत्यादि ।]

परन्तु आज (Current day) के लिये आने वाले पूर्णभूत के प्रयोगों के अनुवाद में 'लुङ्, क्त तथा क्तवतु' ही रखने चाहिये, 'लिट् या लङ्' नहीं । जैसे—

मैं आज सवेरे घूमने गया था=

अहम् अद्य प्रातः भ्रमणार्थम् अगमम् (लुङ्) = गतः (क्त) = गतवान् (क्तवतु) । ['जगाम' या 'अगच्छम्' नहीं]

तुम सवेरे आठ बजे आये थे और मैं अब बारह बजे आया हूं =

त्वम् प्रातः अष्टनादे आगमः (लुङ्) = आगतः (क्त) =

आगतवान् (क्तवतु) अहं च अधुना (इदानीम्) द्वादशनादे आगमम्=आगतः = आगतवान् [आगतोऽस्मि= आगतवानस्मि] । —इत्यादि ।

इसी प्रकार प्रत्यक्ष (स्वयं देखी या अनुभव की हुई) घटना के लिये (अर्थात् उत्तम पुरुष में)'लिट्' (परोक्ष) का प्रयोग नहीं करना चाहिये । जैसे—

छः साल पहले मैंने आपको काश्मीर में देखा था =

षट् वर्षाणि पूर्वम् अहं भवन्तं काश्मीरेषु अपश्यम् (लङ्) = अद्राक्षम् (लुङ्) = दृष्टवान् (क्तवतु) ['ददर्श' नहीं] ।*— इत्यादि ।

(ख) आसन्नभूत के अर्थ में (पूर्णभूत) ।

इसके अनुवाद में भी 'लुङ्' 'क्त या क्तवतु' का ही प्रयोग होना चाहिए । जैसे—

---

* चित्तविक्षेप (मन का शून्य होना, बेहोशी, मतवालापन आदि) को सूचित करने के लिये उत्तम पुरुष में 'लिट्' का प्रयोग होता है । जैसे— सोए हुए (सुपने में) मैंने विलाप किया = "सुप्तोऽहं किल विललाप" मतवाली हुई २ मैंने उसके आगे बहुत बकवास किया = "बहु जगद पुरस्तात्तस्य मत्ता किलाऽहम्"—इत्यादि ।

रामायण में तो चित्तविक्षेप के बिना भी उत्तमपुरुष में 'लिट्' का प्रयोग बहुत आता है । जैसे—"आचचक्षे त्वहं तस्मै पुत्रव्यसनजं भयम् "। (२ । ६४ । १२) "ततोऽर्धगुणविस्तारो बभूवाहं क्षणेन तु" (६ । ५८ । ३०) "तस्मिन्मुहूर्ते च पुनर्बभूवाङ्गुष्ठसंमितः" (६ । ५८ । ३१)। इस प्रकार के रामायण, महाभारत आदि के प्रयोग 'आर्ष' कहे जाते हैं । ये व्याकरण (विशेषतः पाणिनि) के अनुकूल न होने से अनुकरणीय नहीं ।

अभी मैंने आपको इसलिये बुलाया था (= बुलाया है) कि आप से सारा समाचार पूछूं =

इदानीम् अहं भवन्तम् एतदर्थम् आह्वासि (लुङ्) = आहूतवान् (= संप्रति भवान् मया एतदर्थमाहूतः) यत् भवन्तं सर्वं वृत्तं पृच्छेयम्। (भवन्तं सर्वं वृत्तं पृच्छेयमिति इदानीम् अहं भवन्तम् आह्वासि.........संप्रति मया भवान् आहूतः) । —इत्यादि ।

(ग) हेतुहेतुमद्भाव (Conditional) में (पूर्णभूत) ।

इसमें दो में से किसी एक वाक्य में पूर्णभूत आता है। इसके अनुवाद में दोनों वाक्यों में 'लृङ्' या 'लङ्' का प्रयोग करना चाहिये (देखो हेतुहेतुमद्भूत) । जैसे—

यदि अच्छी बारिश न होती तो अकाल पड़ ही गया था=
यदि सुवृष्टिः नाऽभविष्यत् तर्हि दुर्भिक्षम् अपतिष्यदेव ।

मेरा काम तो बिगड़ ही चुका था यदि आप सहायता न करते= यदि भवान् सहायतां न कुर्यात् तर्हि ध्रुवं मम कार्यं विक्रियेत (कर्मकर्तरि) =ध्वंसेत्=नश्येत्–इत्यादि ।

(घ) दो भूतकालिक घटनाओं की समकालिकता सूचित करने के लिये (पूर्णभूत) ।

इसमें 'पूर्णभूत' पहले वाक्य में आता है । इसका अनुवाद क्तान्त शब्द से उसे तथा उसके विशेष्य को 'सप्तमी' विभक्ति में रख कर करना चाहिए । जैसे—

मैं अभी थोड़ी ही दूर गया था कि मोहन भी आ गया = मयि अल्पमेव दूरं (स्तोकमेवान्तरं) गते मोहनोऽप्यागच्छत् (आगमत्=आगतः=आगतवान्) ।

कथा पूरी न होने पाई थी कि सब लोग चले गये=अपूर्णाया-

मेव (सावशेषायामेव) कथायां सर्वे जनाः अगच्छन् (अगमन्= गताः=गतवन्तः)

[इस प्रकार के वाक्यों में से विध्यात्मक (Affermative) वाक्यों का अनुवाद पूर्णभूत क्रिया को यावत्–तावत् के बीच में 'वर्तमानकाल' में रख कर भी किया जाता है। जैसे—

अहं स्तोकमेवान्तरं यावद् गच्छामि तावत् मोहनोऽप्यागमत्।

तुम्हें ढूंढने के लिए चलने ही लगा था कि मुझे सिंहवर्मा ने अपनी सहायता के लिए बुला भेजा=

"यावत् त्वदन्वेषणाय प्रयाणोपक्रमं करोमि तावत् सिंहवर्मणा... ...... साहाय्याय आकारितः" (दशकुमार० ८)

रात को राजा आकाश की ओर आंखें लगाए खड़ा ही हुआ था कि गरुड़ पर चढ़े आकाश से उतरते हुए (जुलाहे को) देखा=

"रात्रौ राजा......गगननिवेशितदृष्टिः यावत् तिष्ठति तावत् गरुडारूढम्......आकाशादवतरन्तम् (कौलिकम्) अपश्यत्" (तन्त्राख्यायिक१।८)

उल्लू राज्याभिषेक के लिए सिंहासन पर बैठा ही था कि कहीं से कौआ आगया=

"उलूकोऽभिषेकार्थं यावत् भद्रासने उपविशति तावत् कुतोऽपि वायसः प्राप्तः" (पञ्चतन्त्र ३)

यावत् तावत् के बीच में पूर्णभूत क्रिया के लिए क्तान्त शब्द का भी प्रयोग पाया जाता है। जैसे—

प्रणाम करके बैठे ही थे कि उस त्रिकालज्ञ मुनि ने हमारा मनोरथ जान लिया=

"प्रणम्य यावत् स्थितौ तावदेव तेन त्रिकालवेदिना मुनिना विदितमेवाऽस्मन्मनीषितम्" (दशकुमार० ८)।]

४. अपूर्णभूत

(क) भूतकाल में क्रिया की अपूर्णता (पूरा न होना=जारी रहना) बोधित करना।

इसके अनुवाद में 'लङ्' Imperfect का प्रयोग करना चाहिये अथवा 'स्मान्त' ('स्म' अन्त में जोड़ कर) वर्तमानकालिक क्रिया रखनी चाहिए। परन्तु 'अपूर्णभूत' क्रिया यदि अद्यतन (आज की) हो तो स्मान्त वर्तमानकालिक क्रिया का ही प्रयोग करना चाहिये, लङ् का नहीं। जैसे–

उस समय वहां महर्षि स्वाध्याय करता था=

तस्मिन् काले........महान् ऋषिः। स्वाध्यायमकरोत् तत्र" (राम० ७।२।१६)

एक जंगल में भासुरक नाम सिंह रहता था=

कस्मिश्चिद् वने भासुरको नाम सिंहः प्रतिवसति स्म (पञ्चतन्त्र १)

श्याम पढ़ता था और शान्ता खेलती थी=श्यामः अपठत् (पठतिस्म) शान्ता च अखेलत् (खेलतिस्म)।

रामू पहले बहुत सोता था=रामूः पूर्वं बहु अस्वपत् (स्वपिति स्म)

श्रीरामचन्द्र जहां २ जाते थे वहां आकाश में बादल छाया करते थे=

श्रीरामचन्द्रः यत्र २ अगच्छत् (गच्छति स्म) तत्र २ आकाशे मेघाः छायाम् अकुर्वन् (कुर्वन्ति स्म)।

उसे मैं जितना दूध देता था उतना ही वह पी जाता था= अहं तस्मै यावत् दुग्धम् अददाम् (ददामि स्म) तावदेव सः अपिबत् (पिबति स्म)।

वह कल आप ही की तरफ जाता था = सः श्वः भवद्दिशि एव (भवन्तमुद्दिश्यैव) अगच्छत् (गच्छति स्म)।

श्यामलाल आज सवेरे ही दफ्तर को जाता था = श्यामलालः अद्य प्रातरेव कार्यालयं गच्छतिस्म ('अगच्छत्' नहीं)।

[स्मान्त' वर्तमानकालिक क्रिया अपूर्णभूत के समान सामान्य भूत तथा पूर्णभूत के लिए भी आती है। जैसे--मट्टी का ढेला उठाकर मैंने उस कौए को हटाया (सा० भू०) "तमहं लोष्टमुद्यम्य वारयामि स्म वायसम्" ऐसे किसने कहा था (पू०भू०)=एवं को ब्रवीति स्म। 'स्म' का प्रयोग प्रायः क्रिया के अनन्तर ही होता है, कहीं २ अन्यत्र भी देखा जाता है। जैसे 'मन्त्रे स्म हित-माख्यामि" = हितमाख्यामि स्म (भट्टि० १८।३६) मैंने मन्त्र में (सलाह पूछने पर) हितकारी बात कही थी। "गायन्तीःस्माङ्गना बह्वीः पश्यावो रक्तवाससः" (रामा० ४।६१।६) हम (दोनों) ने लाल वस्त्रों वाली गाती हुई बहुत सी स्त्रियों को देखा। इत्यादि।

अपूर्णभूत के अर्थ में वर्तमान का भी प्रयोग होता है। जैसे —

वैसे रोका हुआ (वह) भीख नहीं खाता था और न और कुछ खाता था। न दूध पीता था न (दूध के) झाग का उपयोग करता था। उसने एक दिन जंगल में भूख से पीड़ित होकर आक के पत्ते खा लिए = "तथा प्रतिषिद्धो भैक्ष्यं नाश्नाति नचाऽन्यच्चरति पयो न पिबति फेनं नोपयुङ्क्ते। स कदाचिदरण्ये क्षुधार्तोऽर्कपत्राण्यभक्षयत्।" (महाभारत १।३।५०) इत्यादि।

(ख) आसन्नभूत के अर्थ में (अपूर्णभूत)।

इसके अनुवाद में 'लुङ्' का और यथायोग्य 'क्त' या ,क्तवतु' का प्रयोग करना चाहिये। जैसे —

आप अभी कहते थे (=आपने अभी कहा था) कि कल जाएंगे=

भवान् अधुनैव (संप्रत्येव) अचकथत् (=अवादीत्) =कथितवान् यत् श्वः गमिष्यामः=

भवता संप्रत्येव कथितं यत् श्वः गमिष्यामः।—इत्यादि।

(ग) वर्तमान के अर्थ में (अपूर्णभूत)।

इसका अनुवाद 'लट्' (वर्तमानकालिक क्रिया) से करना चाहिये। जैसे—

मैं चाहता था (= चाहता हूं) कि आप भी मेरे साथ चलें =

अहम् इच्छामि यत् * भवानपि मया सह गच्छेत्।

५—सन्दिग्धभूत

इसके अनुवाद में 'क्तान्त' शब्द के आगे 'भू' या 'अस्' धातु की 'लिङ्' लकार की (Potential mood) क्रिया रखनी चाहिये (कई वाक्यों के अनुवाद में 'क्तान्त' शब्द को [तथा उसके विशेष्य को] 'तृतीया' विभक्ति में रखकर आगे 'भू' धातु की 'ण्यत्' 'तव्य' या अनीयर् प्रत्ययान्त क्रिया (Potential passive participle) का भी प्रयोग किया जा सकता है)। जैसे—

वह घर पहुंच गया होगा =

स गृहं प्राप्तो भवेत्।

(तेन गृहं प्राप्तेन भाव्यम् = भवितव्यम्)

कहीं बारिश हुई होगी; क्योंकि ठंडी हवा चल रही है=

---

* ऐसे वाक्यों में 'यत्' नहीं भी रखते। जैसे- -इच्छामि भवानपि मया सह गच्छेत्।

कच्चिद् वृष्टिः जाता भवेत् (= वृष्ट्या जातया भाव्यम् = भवितव्यम्), यतः शीतो वायुर्वहति ।

(शीतो वायुर्वहति । नूनं कच्चिद् वृष्टिः……)

कृष्णजी ने गोवर्धन कैसे उठाया होगा ? =

श्रीकृष्णेन गोवर्धनः कथम् उत्थापितो भवेत् ?

दीनदयाल ने एम. ए. पास कर लिया है । कर लिया होगा =

दीनदयालुना एम. ए. परीक्षा उत्तीर्णा । उत्तीर्णा भवेत् ।

(दीनदयालुः एम. ए. परीक्षाम् उत्तीर्णः । उत्तीर्णो भवेत्) ।

—इत्यादि ।

परन्तु संस्कृत में कुछ एक ऐसे प्रयोग भी मिलते हैं जिनके अनुसार संदिग्धभूत 'होगा' आदि के लिये 'लिङ्' के बजाय 'लृट्' (सा. भवि.) का भी प्रयोग किया जा सकता है । जैसे—

नट कहां गये होंगे =

"क्वनु खलु गताः कुशीलवा भविष्यन्ति" (मृच्छकटिक १)

—इत्यादि ।

[सन्दिग्धभूत के अर्थ में सामान्यभविष्यत् 'लृट्' का भी प्रयोग मिलता है । जैसे—

"तदयमपि हि त्वष्टुः कुन्दे भविष्यति चन्द्रमाः" (अनर्घराघव २।८०) इसलिये यह चांद भी त्वष्टा (विश्वकर्मा) के खराद पर रहा होगा ।

"नूनमस्मत्प्रवासदौर्मनस्यमम्बां पीडयिष्यति" (अनर्घ० ४)— हमारे प्रवास (बाहर रहने) का दुःख माता को अवश्य पीडित करता होगा ।

पाणिनि व्याकरण के अनुसार इन प्रयोगों की संगति विद्वानों के लिये विचार का विषय है । पहले प्रयोग ('भविष्यति') पर टीकाकार रुचिपत्यु-

पाध्याय ने तो "भविष्यत्येवेत्युक्तिविशेषे भूत एवेत्यर्थः" ('भविष्यति' यह एक उक्तिविशेष (कहने का विशेष ढंग) है, जिसका अर्थ "भूत एव" 'था ही' है)—यह कह कर टाल दिया है । क्योंकि 'भविष्यति' का 'भूत एव' (था ही) अर्थ संगत ही नहीं । यह अर्थ निश्चयात्मक है, प्रकरण में विवक्षित अर्थ है संदेहात्मक—'इससे प्रतीत होता है कि चांद भी (सूर्य की तरह) त्वष्टा के खराद पर रहा होगा'।

"प्रेषयिष्यति दुर्धर्षो रामो नह्यपरीक्षितम् ।" (रामा० ६।३६।११) रामचन्द्र ने बिना परीक्षा किये (विश्वासपात्र जाने बिना हनूमान् को) नहीं भेजा होगा ।

"न भविष्यति हन्त साधनं किमिवान्यत् प्रहरिष्यतो विधेः ।" (रघु० ११ सर्ग)—विधाता के पास और साधन न रहा होगा ।—इत्यादि ।

संदिग्धभूत के अर्थ में वर्तमानकाल 'लट्' का भी प्रयोग भी पाया जाता है । जैसे—

"नूनमेषा गुहा अस्य समागतस्य सदा समाह्वानं करोति परमद्भयान्न किञ्चिद् ब्रूते" (पञ्चतन्त्र) यह गुहा अवश्य आने पर इसे बुलाती होगी, परन्तु आज मेरे डर से कुछ नहीं बोलती —। इत्यादि] ।

६—हेतुहेतुमद्भूत (Conditional)

इसके अनुवाद में हेतुहेतुमद्भावार्थक (क्रियातिपत्ति) लङ् या लिङ् लकार का प्रयोग किया जाता है । जैसे—

अच्छी बारिश होती तो अकाल न पड़ता =

सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् तदा दुर्भिक्षं नाऽभविष्यत् ।

क्या अरुण अन्धकारों का नाश कर सकता यदि उसे सूर्य अपने आगे न करता =

"किंवाऽभविष्यदरुणस्तमसां वधाय
तं चेत्सहस्रकिरणो धुरि नाऽकरिष्यत्" (शाकुन्तला ७)

हे पुत्र, राम, यदि तुम मेरे शोक के लिये न पैदा होते तो सन्तानहीन (रहकर) मैं यह महान् दुःख न देखती=

"यदि पुत्र न जायेथा मम शोकाय राघव ।

न स्म दुःखमतो भूयः पश्येयमहमप्रजाः ॥" (रामा० २ । २० । ३६

और मैं भी घायल हो जाता यदि मैंने रथ को न मोड़ लिया होता =

"अहमपि च परिक्षतो भवेयं यदि न मया परिवर्तितो रथः स्यात्" (पञ्चरात्र २ । ५१)

यदि पिता यहां होते तो क्या होता=

"यदि तातोऽत्र सन्निहितो भवेत् ततः किं भवेत्"
(शकुन्तला १)

मैं न आता तो तुम कैसे जाते=

यदि अहं नाऽऽगच्छेयं तर्हि त्वं कथं गच्छेः।

जो मैंने अपनी लड़की न मारी होती तो अच्छा था (होता) =

यदि मया निजा कन्या (तनया, दुहिता) न हता भवेत् तर्हि शोभनं स्यात् ।

ऊपर के उदाहरण से स्पष्ट है कि हेतुहेतुमद्भूत में लङ् तथा लिङ् दोनों लकारों का प्रयोग होता है। परन्तु भेद इतना है कि लिङ् का प्रयोग उन हेतुहेतुमद्भावार्थक(Conditional) वाक्यों में किया जाता है जिनमें कार्य का सिद्ध न होना (क्रियातिपत्ति) निश्चय रूप से पाया जाय अथवा (दूसरे शब्दों में) दो वाक्यों में से पहिले वाक्य में कही हुई बात का

असिद्ध होना या न होना निश्चित तथ्य हो (जैसे—अच्छी वारिश होती तो अकाल न पड़ता—इसमें पहिले वाक्य में कही बात [अच्छी वारिश] का न होना निश्चित तथ्य है; अच्छी वारिश नहीं हुई इसी लिये अकाल पड़ा, यदि अच्छी वारिश होती तो अकाल न पड़ता—इत्यादि। इसलिये इस वाक्य के अनुवाद में 'लृङ्' का प्रयोग कियागया है—सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् तदा दुर्भिक्षं नाऽभविष्यत्) और जिन वाक्यों में केवल संभावना पाई जाय, किसी बात का न होना निश्चित रूप से न प्रतीत हो उनमें लिङ् का प्रयोग किया जाता है (जैसे—हे पुत्र राम यदि तुम ...... पैदा न होते तो मैं ...... दुःख न देखती—इसमें केवल संभावना पाई जाती है, निश्चित क्रियातिपति नहीं। इसी लिये इसमें 'लिङ्' का प्रयोग किया है—यदि न जायेथाः......दुःखं न पश्येयम्)।

[हेतुहेतुमद्भूत 'लृङ्' के अर्थ में वर्तमान 'लट्' का प्रयोग भी देखने में आता है। जैसे—"चौरोऽपि दूरं गत्वा खलीनाकर्षणेन तं स्थिरीकर्तुमारेभे। तद् यदि वाजी भवति (= अभविष्यत) तदा खलीनं गणयति (= अगणयिष्यत)।" (तन्त्राख्यायिक ५। ९) चोर भी दूर जाकर लगाम खैंचने से उसे ठहराने लगा। सो यदि (वह) घोड़ा होता तो लगाम की परवाह करता—इत्यादि।]

इसके अतिरिक्त—मैं क्या करता, आप हमारे घर एक वार तो आये होते, जब वे तुम्हारे घर आये थे, तो तुमने उनकी आवभगत तो की होती—इस प्रकार के वाक्यों के अनुवाद में 'लिङ्' का ही प्रयोग होता है। जैसे—

अहं किं कुर्याम्।

भवान् अस्माकं गृहे (अस्मद्गृहे) एकवारं (सकृत्) तु आगतः स्यात् (भवेत्) ।

यदा ते तव गृहे (त्वद्गृहे) आगच्छन् (आगता अभूवन्) तदा त्वया तेषाम् आतिथ्यं तु कृतं भवेत् ।

[ऐसे वाक्यों में 'लिङ्' के स्थान में सामान्यभविष्यत् 'लृट्' का भी प्रयोग देखा जाता है । जैसे—

जो मैं जबर्दस्ती रावण के शरीर से स्पर्श को प्राप्त हुई थी, सो स्वामि-हीन, बेबस और असमर्थ थी, क्या करती =

"यदहं गात्रसंसर्गं रावणस्य गता बलात् ।
अनीशा किं करिष्यामि विनाथा विवशा सती ॥"

(रामा० ५ । ३७ । ६३)

जो हृदय मेरे अधीन है वह तुम्हीं में है । मेरे अङ्ग पराधीन थे (रावण के काबू में थे) उनके विषय में शक्तिहीन मैं क्या करती =

"मदधीनं तु यत्तन्मे हृदयं त्वयि वर्तते ।
पराधीनेषु गात्रेषु किं करिष्याम्यनीश्वरी" ॥(रामा० ६। ११६ । ६)

कुमार, तुम्हारी आज्ञा से रामचन्द्र के दर्शन के लिये जनस्थान (दण्डकारण्य) को प्रस्थान करके मैं बीच में से कैसे लौट आता =

"कुमार, त्वन्नियोगाद् रामदर्शनार्थं जनस्थानं प्रस्थितः कथमहमन्तरा प्रतिनिवर्तिष्ये" (प्रतिमानाटक ६)

नहीं तो तुम्हारी पूजा कैसे न करते =

"अन्यथा कथं त्वां ..नार्चयिष्यामः" मालविका० २)

नहीं तो महारानी कैसे परिजन (नौकरानी) को आप पहनी हुई पायजेबों की जोड़ी (पहनने की) आज्ञा देती =

"अन्यथा कथं देवी स्वयं धारितं नूपुरयुगलं परिजनस्याऽभ्यनुज्ञास्यति" (मालविका० ३) ।–इत्यादि ।

इन प्रयोगों की व्याकरणदृष्टि से संगति कैसे हो सकती है—इस पर विद्वान् विचार करें। ऊपर लिखे प्रतिमानाटक आदि के प्रयोगों को तो एक दूसरे प्रकार में भी लिया जा सकता है (जिसका निर्देश 'सामान्यभविष्यत्' के प्रकरण में किया जाएगा यद्यपि वह प्रकार भी इसी के समान विचारणीय है) परन्तु रामायण का प्रयोग 'किं करिष्यामि = क्या करती' तो और किसी भी प्रकार में नहीं आसकता और पाणिनिव्याकरण में इस प्रकार के भूतकालिक अर्थ में सामान्यभविष्यत् 'लृट्' का विधान भी नहीं है।—इसलिये इस अर्थ में ये प्रयोग अनुकरणीय नहीं।*]

७. संभाव्यभूत

इसके अनुवाद में क्तान्त शब्द के आगे 'भू' या 'अस्' धातु की लिङ् लकार की क्रिया रखनी चाहिये। जैसे—

(क) भूतकालिक क्रिया की सम्भावना—

हो सकता है कि मोहन ने उसे देखा हो=

संभवति यत् मोहनेन स दृष्टो भवेत्।

(मोहनेन स दृष्टो भवेदिति संभवति [नाऽसंभाव्यम्])

तुमने जो सोचा हो उसे साफ-साफ कहो=

त्वया यत् चिन्तितं (विचारितम्) स्यात् तत् स्पष्टं कथय (आचक्ष्व, वद, ब्रूहि)।

मैंने कोई अपराध किया हो तो आप क्षमा कीजिये=

यदि मया कश्चित् अपराधः कृतः स्यात् तर्हि भवान् क्षमताम् (क्षाम्यतु)।

---

* विद्वानों से सानुरोध प्रार्थना है कि वे इन प्रयोगों तथा अन्यत्र दिखाए गए कतिपय और प्रयोगों के विषय में अपने विचार मुझे लिख भेजने की कृपा करें। आगामी संस्करण में वे विचार नामनिर्देशसहित प्रकाशित कर दिए जाएंगे।

(ख) आशङ्का या संदेह—

कहीं सिपाहियों ने उसे पकड़ न लिया हो=

कच्चित् रक्षापुरुषैः (रक्षिभिः) असौ गृहीतो न भवेत् ।

वह वहीं न गया हो=

स तत्रैव न गतो भवेत् ।

(ग) भूतकालिक उत्प्रेक्षा—

तुम तो मुझे ऐसे धमकाते हो मानो मैंने कोई भारी अपराध किया हो=

त्वं तु मां तथा तर्जयसि यथा नूनं मया कश्चिद् महान् अपराधः कृतः स्यात् (भवेत्) ।

बकरी ऐसे चिल्लाई मानो चीते ने पकड़ली हो=

वर्करी (छागी, अजा) तथा आक्रन्दत् (मडमडायिता) यथा नूनं चित्रकेण (द्वीपिना) गृहीता स्याव (भवेत्)

[ऐसे वाक्यों का अनुवाद निम्नलिखित प्रकार से उत्प्रेक्षार्थक वाक्य को समासद्वारा एक पद बना कर भी किया जा सकता है—

त्वं तु कृतमहापराधमिव मां तर्जयसि ।

वर्करी चित्रकगृहीतेव आक्रन्दत् ।]

विशेष

(क) प्रश्न जब बहुत दूरके भूतकालके विषय में न हो (किन्तु समीपवर्ती भूत के विषय में हो) तो लिट् तथा लङ् का प्रयोग होता है, परन्तु दूरवर्ती भूत के विषय में प्रश्न हो तो केवल 'लिट्' का प्रयोग होता है ।* जैसे—

श्याम चला गया क्या ?=

श्यामः अगच्छत् (=जगाम) किम् ?

---

* प्रश्ने चाऽऽसन्नकाले ३ । २ । ११७ । (अष्टाध्यायी)

कृष्ण ने कंस को मारा था क्या ?=

कृष्णः कंसं जघान ('अहन्' नहीं) किम् ?—इत्यादि ।

प्रश्न यदि अद्यतन या अतिसमीपवर्ती भूत के विषय में हो तो 'लुङ्' का ही प्रयोग होता है, 'लङ्' या 'लिट्' का नहीं । जैसे—

श्याम आज सबेरे ही गया था क्या ?

श्यामः अद्य प्रातरेव अगमत् किम् ?

चटाई बनाई है क्या ?

कटम् अकार्षीः किम् ?—इत्यादि ।

(ख) जब किसी भूतकालिक क्रिया का सातत्य (constant continuation) विवक्षित हो या क्रिया किसी समीपवर्ती भूत में हुई हो तो 'लुङ्' का ही प्रयोग होता है, 'लिट्' या 'लङ्' का नहीं* । जैसे—

वह उमरभर अनाथों को अन्न और वस्त्र देता रहा=

स जीवनपर्यन्तम् (यावज्जीवम्) अनाथेभ्यः अन्नं वस्त्राणि च (भोजनाच्छने) अदात ('ददौ' या 'अददात्' नहीं) ।

यह जो पूर्णमासी गुजरी है, इसको मोहन ने यज्ञ किया है=

येयं (या इयं) पौर्णमासी अतिक्रान्ता, अस्याम् (एतस्याम्) मोहनः यज्ञम् आकर्षीत ('अकरोत्' नहीं) ।—इत्यादि ।

(ग) यदि स्मरणवाचक शब्द का भूतकालिक क्रिया के साथ सम्बन्ध हो तो 'लङ्' के स्थान में 'लृट्' (सामान्यभविष्यत्) का प्रयोग होता है× । जैसे—

याद है कृष्ण, हम गोकुल में रहते थे=

---

* नाऽनद्यतनवत् क्रियाप्रबन्धसामीप्ययोः ३ । ३ । १३५ (अष्टाध्यायी)।

× "अभिज्ञावचने लृट्" ३ । २ । ११२ (अष्टाध्यायी)

स्मरसि कृष्ण, गोकुले वत्स्यामः।

यदि स्मरणवाचक शब्द का दो भूतकालिक क्रियाओं के साथ सम्बन्ध हो तो विकल्प से 'लङ्' और 'लृट्' दोनों आते हैं। जैसे—

याद है गोपाल, काश्मीर में रहते थे और वहां भात खाया करते थे=

स्मरसि गोपाल, काश्मीरेष्ववसाम तत्र चौदनमभुञ्ज्महि (=काश्मीरेषु वत्स्यामस्तत्र चौदनं भोक्ष्यामहे)।

परन्तु वाक्य में यदि 'यत्' (कि) हो तो 'लृट्' नहीं आता 'लङ्' ही आता है †। जैसे—

कृष्ण, तुम्हें याद है कि हम गोकुल में रहते थे=

स्मरसि कृष्ण, यत् गोकुले अवसाम ('वत्स्यामः' नहीं)।

---

† "न यदि" ३।२।११३ (अष्टाध्यायी)

दूसरा अध्याय ।

वर्तमान काल ।

१. सामान्य वर्तमान ।

इसके लिये 'लट्' लकार आता है । जैसे:—

(क) वर्तमानकालिक क्रिया—

जगत् के माता पिता पार्वती और परमेश्वर (शिव) को वन्दना करता हूं =

"जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ" (रघु० १ । १)

तुम क्या करते हो = त्वं किं करोषि ।

तोता पढ़ता है = शुकः पठति ।

(ख) स्थिर सत्य बातों (साधारण सिद्धान्त व नियमों) के बताने में (वर्तमानकाल)—

आत्मा अजर अमर है =

आत्मा जरोऽमरश्च (अजरामरः) अस्ति ।

गङ्गा सब पापों को हरती है =

गङ्गा सर्वाणि पापानि हरति ।

सूरज पूर्व में उदय होता है =

सूर्यः पूर्वस्थां दिशि उदेति (उदयति) ।

जंगलों में मृगों का मांस खाने वाले शेर भूखे (रहने पर भी) घास नहीं चरते =

"वनेषु सिंहाः मृगमांसभक्षा बुभुक्षिता नैव तृणं चरन्ति ।"

उत्तरदिशा में हिमालय नाम पर्वतराज है =

उत्तरस्यां दिशि हिमालयो नाम नगाधिराजः अस्ति ।

महात्माओं का कथन व्यर्थ नहीं होता =

महात्मनां कथनं (वचनम्, वाक्यम्) व्यर्थं न भवति (नाऽन्यथा भवति) ।--इत्यादि ।

(ग) स्वभाव या अभ्यास (Habit) बोधित करने में (वर्त०)

मैं खाना खाने के बाद ज़रूर पान खाता हूँ =

अहं भोजनानन्तरम् अवश्यं ताम्बूलं भक्षयामि ।

हम बड़े तड़के उठते (उठा करते) हैं =

वयं महति प्रभाते * उत्तिष्ठामः ।

गाड़ी दो पहर को आती है =

वाष्पयानं मध्यान्हे आगच्छति ।

महात्मा दूसरों के गुणदोषों का विचार नहीं करते =

महात्मानः परेषां गुणदोषान् न विचारयन्ति (गणयन्ति) ।

यहां लड़के खेलते (खेला करते) हैं =

इह कुमाराः क्रीडन्ति ।

हिरण्यक भोजन करके बिल में सोता (सोया करता) है=

"हिरण्यको भोजनं कृत्वा बिले स्वपिति (हितोपदेश) । इत्यादि ।

(घ) आसन्नभूत के अर्थ में (वर्त०)§—

मैं अभी अपने गांव से आता हूं (आया हूं)=

अहम् इदानीमेव निजाद् ग्रामात् (स्वग्रामात्) आगच्छामि (आगमम्, आगतोऽस्मि) ।—इत्यादि ।

---

*"महत्येव प्रत्यूषे दास्याः पुत्रैः शाकुनिकलुब्धकैः······प्रबोधितोऽस्मि" (शकुन्तला २) ।

(ङ) आसन्नभविष्यत् के अर्थ में (वर्त०)§—

मैं यह (अभी) आता हूं =

अयमहमागच्छामि (आगमिष्यामि) [शकुन्तला ३]।

कब जाओगे ? अभी जाता हूँ =

कदा गमिष्यसि ? एष गच्छामि (गमिष्यामि)।—इत्यादि।

(च) हेतुहेतुमद्भाव में (वर्त०)—

यदि मुझे भेजते हो तो मैं दूसरे कुओं के भी सारे मेंडकों को विश्वास दिला कर यहीं ले आता हूं =

"यदि मां प्रेषयसि तदान्येषामपि कूपानां विश्वास्य सर्वान् मण्डूकान् अत्राऽऽनयामि" (तन्त्राख्यायिका४। २)

जब चींटी की मौत आती है तो उसके पर निकलते हैं =

यदा पिपीलिकाया मृत्युः आगच्छति (संनिदधाति) तदा तस्या पक्षौ उद्गच्छतः (पक्षोद्गमो जायते)।

जो भागता है वह जीता है =

"यः परैति स जीवति" (तन्त्राख्यायिक ५।९)

(छ) ऐतिहासिक वर्तमान (Historical Present) अर्थात् भूतकालिक घटना को ऐसे वर्णन करना मानो अभी हो रही हो—

ताड़का आकर गर्जती है, रामचन्द्र जी विश्वामित्र का दिया दिव्यास्त्र छोड़ते हैं और छिन में उसे मार गिराते हैं =

ताडका आगत्य गर्जति (जगर्ज, अगर्जत्) श्रीरामचन्द्रः विश्वामित्रेण दत्तं दिव्यास्त्रं मुञ्चति (मुमोच, अमुञ्चत्),क्षणेन च तां हत्वा निपातयति (निपातयामास, न्यपातयत्)।

---

§"वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा" ३।३।१३१ (अष्टाध्यायी)

एक भेड़ा रसोई घर में प्रवेश कर जो कुछ देखता है (देखता था) वह सब खाजाता है (खा जाता था) और रसोइये जो कुछ लकड़ी आदि आगे देखते हैं (देखते थे) उससे मारते हैं (मारते थे) =

"एको (मेषः)...महानसे प्रविश्य यत् किञ्चित् पश्यति तत्सर्वं भक्षयति। तं च सूपकारा यत् किञ्चित् काष्ठादिकम अग्रे पश्यन्ति तेन ताडयन्ति।" (तन्त्राख्यायिक ५।८)

(ज) सातत्यबोधक वर्तमान (Present Continuous)

ये तपस्वियों की कन्याएं इधर ही आ रही हैं =

"एतास्तपस्विकन्यका इत एवाभिवर्तन्ते" (शकुन्तला १)

यह पानी ला रही है, यह सुगन्धित चीज़ें पीस रही है, यह विचित्र मालाएं गूंथ रही है =

"वहति जलमियं पिनष्टि गन्धानियमियमुद्ग्रथते स्रजो विचित्राः" (मुद्राराक्षस १)।

वह अपना पाठ पढ़ रहा है =

सः स्वं पाठं पठति (अधीते)।

सूरज बहुत तेज़ तप रहा है =

सूर्यः अतितीव्रं तपति।

अब लड़के खेल रहे हैं =

अधुना बालकाः क्रीडन्ति।—इत्यादि।

सातत्यबोधक क्रियाओं के लिये शतृप्रत्ययान्त शब्दों (Present Participles) के आगे 'अस्' (धातु) की क्रियाओं के रखने की चाल है। जैसे—पढ़ रहा है = पठन् अस्ति। गा रहे हैं = गायन्तः सन्ति।—इत्यादि। परन्तु ऐसा करने की आवश्यकता नहीं। साधारण 'पठति' आदि से ही 'पढ़ रहा है'

इत्यादि 'सातत्यबोधक वर्तमान' का अर्थ बोधित हो जाता है। क्योंकि "प्रारब्धापरिसमाप्तिर्वर्तमानः" वर्तमान कहते हैं प्रारम्भ की हुई क्रिया की समाप्ति न होना अर्थात् उसका ज़ारी रहना। इसलिये 'सातत्य' (Continuity) के अर्थ में वर्तमानकालिक क्रिया का ही प्रयोग होना चाहिए। इसी प्रकार सातत्यबोधक भूत के लिये साधारण 'लङ्' लकार की क्रिया या 'स्मान्त' वर्तमानकालिक क्रिया का और सातत्यबोधक भविष्यत् के लिये भविष्यत्कालिक क्रिया का प्रयोग पर्याप्त हैं। जैसे—

वह रामायण पढ़ रहा था=

स रामायणम् अपठत् (पठति स्म)।

जब तुम जाओगे तो वह रामायण पढ़ रहा होगा =

यदा त्वं गमिष्यसि तदा स रामायणं पठिष्यति (अध्येष्यते)

फिर भी कभी २ विशेष सातत्य (Continuity of act) बोधित करने के लिये शतृ शानच् प्रत्ययान्त शब्दों (Present Participles) के आगे 'आस्' (बैठना) या 'स्था' (खड़ा होना या ठहरना) और कभी २ 'अस्' या 'भू' (होना) धातु की क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

"लिखन् आस्ते भूमिम्"—ज़मीन को कुरेद रहा है।

प्रतीक्षमाणस्तिष्ठति—इन्तजार कर रहा है।

मछलियों को लाकर पका रही हूं =

"मत्स्यान् समानीय पचन्ती तिष्ठामि" (तन्त्राख्या० ५। १०)

आर्य (तुम) सुन रहे हो = "आर्य···शृण्वन्नसि" (मोहराजपराजय ५)

२. सन्दिग्ध वर्तमान ।

इसके लिये शतृ शानच् प्रत्ययान्त शब्दों (Present Participles) के आगे 'भू' या 'अस्' धातु की 'लिङ्' लकार की क्रिया का प्रयोग करना चाहिए * । जैसे—

श्यामा कहां है ? अन्दर सोती होगी=

श्यामा कुत्र (क्व) अस्ति ? अन्तः (अभ्यन्तरे) स्वपन्ती (शयाना) स्यात् (भवेत्) ।

मोहन क्या करता है ? खाना खाता होगा=

मोहनः किं करोति ? भोजनं भुञ्जानो भवेत् ।

मदनलाल आज ससुराल से वापस आ रहा होगा=

मदनलालोऽद्य श्वसुरालयात् प्रतिनिवर्तमानः (प्रत्यागच्छन्) भवेत् ।

[कई वाक्यों का अनुवाद इस प्रकार भी किया जाता है:—

वह अब पढ़ता होगा=सः संप्रति पठने व्यापृतो भवेत् (स्यात्),
सः सम्प्रति पठनपरो भवेत् ।
सः संप्रति पठने तत्परो भवेत् ।
सः संप्रति पठने संलग्नो भवेत् ।

श्यामा लिखती होगी= श्यामा लेखने तत्परा भवेत् (स्यात्) ।
श्यामा लेखने व्यापृता भवेत् ।

---

* सन्दिग्ध वर्तमान का अनुवाद सम्भवतः इसी रीति से किया जा सकता है । संस्कृत-साहित्य में सन्दिग्ध वर्तमान का प्रयोग अभी मुझे नहीं मिला । मिल जाने पर ही इसके अनुवाद का निश्चित प्रकार बताया जा सकता है । यदि किसी विद्वान् को संस्कृत-साहित्य में कहीं इसका प्रयोग मिले तो मुझे सूचित करने की कृपा करें ।

श्यामा लेखने संलग्ना भवेत् ।
श्यामा लेखनपरा भवेत् ।—इत्यादि ।

'लिङ्' लाकर की क्रिया की अपेक्षा 'भू' धातु की 'यग्त्' या 'तव्य' प्रत्यान्त क्रिया (Potential Passive Participle) का प्रयोग करना अधिक उपयुक्त है । जैसे—

श्यामा कुत्र अस्ति ? अन्तः स्वपन्त्या भाव्यम् (भवितव्यम्) ।

मोहनः किं करोति (मोहनेन किं क्रियते) ? भोजनं भुञ्जानेन भाव्यम् ।

मदनलालेन अद्य श्वसुरालयात् प्रतिनिवर्तमानेन (प्रत्यागच्छता) भाव्यम् ।]

"क्या बाबू जी यहां आते हैं ? आते होंगे" इस प्रकार के उदासीनता या तिरस्कार बोधक संदिग्ध वर्तमान के अनुवाद में 'भवेत्' पहिले रखकर अनन्तर 'लिङ्' लकार की क्रिया रखनी चाहिए । जैसे—

अपि बाबू महोदय : अत्राऽऽगच्छति ? भवेदाऽऽगच्छेत् ।

हमारे विद्यार्थी हररोज़ सन्ध्या करते हैं ? करते होंगे=

अस्माकं (अस्मदीयाः) विद्यार्थिनः प्रतिदिनं सन्ध्याम् उपासते । भवेत् उपासीरन् । इत्यादि ।

३. सम्भाव्य वर्तमान

इसके अनुवाद में भी 'सन्दिग्धवर्तमान' के समान शतृ शानच् प्रत्ययान्त शब्दों के आगे 'भू' या 'अस्' धातु की 'लिङ्' लकार की क्रिया का प्रयोग करना चाहिए । जैसे—

सम्भव है उस कमरे में कोई सोता हो=

संभवति (संभाव्यते) तस्मिन् प्रकोष्ठे कश्चित् स्वपन् (शयानः) भवेत् (स्यात्) ।

शायद इस गाड़ी में मेरा भाई आता हो=

कदाचित् अस्मिन् वाष्पयाने मम भ्राता आगच्छन् स्यात् ।

मुझे डर है कहीं कोई देखता न हो=

भयं मे (बिभेमि) कच्चित् कश्चित् पश्यन् (प्रेक्षमाणः) न भवेत् । इत्यादि ।

["मुझे ऐसा घोड़ा चाहिए जो घण्टे में दस मील जाता हो । हम ऐसा घर चाहते हैं जिसमें धूप आती हो । कोई सुनता भी हो" । इस प्रकारके वाक्यों में सम्भाव्य वर्त० का अनुवाद साधारण 'लिङ्' लकार की क्रिया से ही करना चाहिए । जैसे—

मया ईदृशो घोटकः (अश्वः) इष्यते यः एकया घण्टया (होरया) दश मीलानि गच्छेत् (गन्तुं शक्तः स्यात्) ।

वयम् एतादृशं गृहम् इच्छामः, यत्र आतपः आगच्छेत् । कश्चित् शृणुयादपि ।]

भविष्यत्काल ।

१. सामान्य भविष्यत्

इसके लिये 'लृट्' और 'लुट्' लकार का प्रयोग होता है । दोनों के प्रयोग में भेद यह है कि 'लृट्' का प्रयोग भविष्यत्सामान्य (Future in general), अद्यतन (आज के) भविष्यत् तथा समीपवर्ती (Recent) भविष्यत् के लिये होता है और 'लुट्' का प्रयोग अनद्यतन (not of current day) भविष्यत् और दूरवर्ती भविष्यत् (Remote future) के लिये होता है । जैसे—

आज शकुन्तला जाएगी=

"यास्यत्यद्य शकुन्तला" (शकुन्तला ४)

(अद्य शकुन्तला यास्यति ['गन्ता' नहीं])
मैं कल जाऊंगा =
अहं श्वः गन्तास्मि (गमिष्यामि)
पांच छः दिन को हम ही वहां जाएंगे =
"पञ्चषैरहोभिर्वयमेव तत्र गन्तारः (गमिष्यामः)" (मुद्रा० ५)
बारिश कब होगी ? आज या कल होगी =
वृष्टिः कदा भविष्यति ? अद्य श्वो वा भविष्यति ('भविता' नहीं) *
ऐसा वर और कहीं न मिलेगा =
ईदृशो वरः अन्यत्र क्वापि न मिलिष्यति ('लप्स्यते, प्राप्स्यते)।
उस काम का करना बड़ा कठिन होगा =
तस्य कार्यस्य संपादनम् अतिकठिनं भविष्यति =
क्या आप कल वहां चलेंगे =
अपि भवान् श्वः तत्र गन्ता (गमिष्यति)
यह काम किसी न किसी तरह हो जाएगा =
इदं कार्यं यथाकथञ्चित् भविष्यति (सेत्स्यति)।

इसके अतिरिक्त 'हेतुहेतुमद्भावार्थक भविष्यत्' के लिये 'हेतुहेतुमद्भूत' के समान यदि क्रियातिपत्ति (कार्य की असिद्धि या न होना) निश्चित रूप से पाई जाय तो 'लृङ्' का प्रयोग करना चाहिए (देखो हेतुहेतुमद्भूत) अन्यथा 'लिङ्' या 'लृट्' का प्रयोग करना चाहिए। जैसे—

यदि अच्छी बारिश होगी तो सुभिक्ष होगा (क्रियातिपत्ति) =

---

* 'लुट्' (भविता) अनद्यतन भविष्यत् में आता है और यहां 'अद्य = आज' का भी निर्देश है। इसलिये ऐसे वाक्यों में 'लृट्' ही आता है।

सुवृष्टिश्चेद्भविष्यत् तदा सुभिक्षमभविष्यत् ।

अगर हवा चलेगी तो गर्मी कम हो जाएगी (क्रियाति०)=

यदि वायुः अचलिष्यत् (अवास्यत्) तदा तापः न्यूनताम् अया-स्यत् (अल्पंतामगमिष्यत्, अह्रसिष्यत्) ।

यदि रोगी की सेवा होगी तो वह अच्छा हो जाएगा=

यदि रोगिणः सेवा (परिचर्या) भविष्यति (भवेत्) तर्हि सः नीरोगो भविष्यति (भवेत्) ।

यदि तुम कहोगे तो वह आजाएगा=

यदि त्वं कथयिष्यसि (कथयेः) तर्हि सः आगमिष्यति (आगच्छेत्) —इत्यादि ।

यदि कभी तीखे सींगों से स्वामी पर प्रहार करेगा तो बड़ा अनर्थ हो जाएगा=

"यदि कदाचित्तीक्ष्णशृङ्गाभ्यां स्वामिनं प्रहरिष्यति (प्रहरेत्) तर्हि महान् अनर्थः संपत्स्यते (सम्पद्येत)" (पञ्च० १) ।

और यदि तुम अहङ्कार से नहीं सुनोगे तो नष्ट हो जाओगे =

"अथ चेत्त्वमहङ्कारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि" (गीता १८।५८)

[ऐसे वाक्यों में वर्त० 'लट्' का भी प्रयोग होता है । जैसे—

प्रश्नों को नहीं बताओगे तो तुम्हें खालूंगा=

"न चेद् ब्रवीषि (=वक्ष्यसि) प्रश्नान् अश्नामि (=अशिष्यामि) त्वाम्" (दशकुमार०) ।

यदि कुम्भकर्ण मेरा भर्ता नहीं होगा तो मैं आग या जल में प्रवेश कर जाऊंगी अथवा विष खालूंगी=

"यदि लम्बकर्णो भर्ता न भवति (=भविष्यति) तदहमग्निं जलं वा

प्रविशामि (=प्रवेदयामि) विषं वा **भक्षयामि** (=भक्षयिष्यामि)" (तन्त्राख्या० ४ । २)

कभी २ भविष्यत्काल के अर्थ में 'तव्य' 'ण्यत्' 'यत्' या 'अनीयर्' का भी प्रयोग होता है। जैसे=तुम्हारे पंखों के बल से मैं भी सुख से **चला जाऊंगा**=

"युवयोः पक्षबलेन मयाऽपि सुखेन **गन्तव्यम्**" (हितोपदेश ४)। —इत्यादि ।

संदेहबोधक भविष्यत् के लिये 'लृट्' या 'लिङ्' का प्रयोग करना चाहिए। जैसे—

किस देवता का स्थान **होगा**=

"कस्य नु खलु दैवतस्य स्थानं **भविष्यति**" (प्रतिमा ३)

यह कौन होगा=

"कोऽयं **भविष्यति**" (तन्त्राख्या० ४।१)

श्याम मोहन का भाई **होगा**=

श्यामो मोहनस्य भ्राता **भवेत्** (**भविष्यति**) ।

नौकर इस समय बाज़ार में **होगा**=

किङ्करः (सेवकः, भृत्यः) सम्प्रति विपण्यां **भवेत्** (**भविष्यति**) इत्यादि ।

"वह **जायगा** तो **जायगा** नहीं तो मैं जाऊँगा" इस प्रकार के वाक्यों में पहले भविष्यत्प्रयोग (जायगा) के लिये 'लिङ्' का प्रयोग करना चाहिए और दूसरे भवि० प्रयो० के लिये 'वरम्, साधु या शोभनम्' शब्द का प्रयोग करना चाहिए। जैसे—

यदि स **गच्छेत्** तर्हि (स गच्छेत् चेत्) **वरम (साधु, शोभनम्)**, अन्यथा अहं गमिष्यामि ।

वह वहां होगा तो होगा, नहीं तो तुम उसे बुला लेना=
स तत्र भवेत् चेत् वरम्, अन्यथा त्वया स आकारणीयः ।—इत्यादि]

२. संभाव्यभविष्यत् ।

इसके लिये प्रधानतया 'लिङ्' का और कभी २ 'लोट्' का भी प्रयोग होता है । जैसे—

(क) सम्भावना (लिङ्)

सम्भव है आज महाराज आवें=
सम्भाव्यते, अद्य महाराजः आगच्छेत् ।
(अद्यः महाराजः आगच्छेत्—इति सम्भाव्यते)
शायद, वह कल अम्बाले जाए=
कदाचित् सः श्वः अम्बालयम् (अम्बालां) गच्छेत् ।
मैं पहचानता नहीं, शायद तुम रामलाल ही होओ=
अहं न (नाऽहं) परिचिनोमि, कदाचित् त्वं रामलाल एव भवेः (स्याः) ।

[ऐसे वाक्यों में वर्तमान 'लट्' का भी प्रयोग होता है । जैसे—
शायद शरण में आए हुए मुझे बचा ले=
"कदाचिच्छरणागतं मां रक्षति" (पञ्चतन्त्र)
शायद गुरु (बड़े भाई) दुःखी हों=
"कदाचित् खिद्यते गुरुः" (वेणीसं० १) ।]

(ख) इच्छा (लिङ्, लोट्)

तुम जल्दी राज़ी हो जाओगे । अच्छा तुम्हारा वचन सच्चा हो=

त्वं शीघ्रं नीरोगो भविष्यसि । अस्तु (साधु), तव वचनं सत्यं भवेत् (भवतु) ।

मैं चाहता हूं आपका लड़का बी. ए. तक पढ़े=

इच्छामि (कामये) भवतः पुत्रः बी. ए. पर्यन्तं पठेत् (पठतु) । *

(ग) शपथ (सौगन्द), शाप आदि (लिङ्, लोट्)—

मैंने कभी भी ऐसा नहीं किया। जिसने किया हो उसका सात जन्म तक भला न हो=

मया कदाप्येवं न कृतम् ! येन कृतं स्यात् तस्य सप्त जन्मानि (आजन्मसप्तकम्, सप्तजन्मपर्यन्तं), भद्रं (शुभं, श्रेयः, कल्याणं) न स्यात् (अस्तु, भवेत्, भवतु) ।

मैं चण्डाल होऊं जो आज से तुम्हारी दहलीज़ भी लांघूं=

अहं चाण्डालः स्यां (भवेयं) यदि अद्यप्रभृति तव देहलीमपि

---

* इच्छार्थेषु लिङ्लोटौ ३ । ३ । १५७ (पाणिनि) यदि वाक्य में, इच्छार्थक क्रिया साथ हो (जैसे कि ऊपर के वाक्य में 'इच्छामि' है) तो दूसरी क्रिया में लिङ् या लोट् का प्रयोग होता है। परन्तु यदि इच्छार्थक क्रिया और दूसरी क्रिया का कर्ता एक ही हो तो दूसरी क्रिया में केवल 'लिङ्' आता है। जैसे—पढूं—यह चाहता है=पठेयम् (अधीयीय) इति इच्छति ("लिङ् च" ३ । ३ । १५८ पाणिनि)। इच्छा कामना आदि संज्ञा-शब्दों का यदि दूसरी क्रिया से सम्बन्ध हो तो उस क्रिया से केवल 'लिङ्' आता है ("कामप्रवेदनेऽकच्चिति" ३ । ३ । १५३ पाणिनि)। जैसे—मेरी इच्छा है आप हमारे यहां भोजन करें =इच्छा मे (कामो मे) भवान् अस्मद्गृहे भोजनं कुर्यात् (भुञ्जीत)—इत्यादि ।

लङ्घयेयम् †

ऋषि ने शाप दिया कि सांप होजा=

ऋषिः शापं ददौ (शशाप) सर्पो भव † इति ।

जो मुझे राक्षस कहता है उसके दस पुत्र मर जाएं=

यो मां राक्षस इति कथयति (इत्याह) तस्य दश पुत्रा म्रियेरन् (म्रियन्ताम्) ।

परन्तु जिन शापार्थक वाक्यों में सामान्य भविष्यत्काल का प्रयोग होता है उनके अनुवाद में 'लृट्' का ही प्रयोग करना चाहिए, 'लिङ्' या 'लोट्' का नहीं । जैसे—

अन्धे मुनि ने दशरथ को कहा जैसे मैं पुत्रशोक से मर रहा हूं वैसे तू भी पुत्रशोक से ही मरेगा=

अन्धो मुनिर्दशरथमुवाच यथाऽहं पुत्रशोकेन म्रिये तथा त्वमपि पुत्रशोकेनैव मरिष्यसि । इत्यादि ।

(घ) औचित्य, हेतु आदि (लिङ्)—

तुम माता पिता की सेवा करो—यही उचित है=

त्वं माता पित्रोः (पित्रोः) सेवां कुर्या इत्येवोचितम् ।

ऐसा करो जिसमें बदनामी न हो=

एवं (तथा) कुरु येन (यथा) अपवादः (निन्दा) न भवेत् (स्यात्) ।

यह चिट्ठी ले जाओ ताकि उसे विश्वास हो जाय=

---

† उत्तम पुरुष में प्रायः 'लोट्' का प्रयोग नहीं होता । इसलिये 'लङ्घयेयम् (लिङ्)' लिखा गया है 'लङ्घयानि (लोट्)' नहीं और मध्यम पुरुष में प्रायः 'लोट्' का प्रयोग नहीं होता । इसलिये 'भव (लोट्)' लिखा गया है 'भवेः (लिङ्)' नहीं ।

इदं पत्रम् (इमां पत्रीं) नय येन तस्य विश्वासः (प्रत्ययः) जायेत ।

(ङ) निराशासूचक विचार—

इसमें वर्त० 'लट्' का प्रयोग होता है § । जैसे—

क्या करूं कहां जाऊं=

किं करोमि, क्व गच्छामि ।

क्या तपोवन को जाऊं=

किं गच्छामि तपोवनम् (मुद्रारा० ६)—इत्यादि ।

कौन जाने क्या होगा=

को जानाति किं भविष्यति (किं भावि) ।

(च) प्रश्न या वितर्क (लिङ्, लोट्)—

यह लड़की किसको दूं ?=

इमां कन्यां कस्मै दद्याम् (ददानि) ।

अपने धन को हरती हुई माता पर बाण छोड़ूं या निर्दोष छोटे भाई भरत को मारूं=

---

§ "किंवृत्ते लिप्सायाम्" ३ । ३ । ६ (पाणिनि) प्रश्नार्थक 'किम्' शब्द और उससे बनने वाले कतर; कत्र आदि शब्दों के साथ आने वाली क्रिया में भविष्यत् 'लृट्' के अर्थ में विकल्प से 'वर्त० लट्' का प्रयोग होता है, जब कि वाक्य से कहने वाले की लिप्सा (किसी बात के प्राप्त करने की इच्छा) सूचित होती हो । जैसे—किं करोमि (=करिष्यामि), क्व गच्छामि (=गमिष्यामि) । कं नु पृच्छामि (=प्रक्ष्यामि) दुःखार्ता । कतरोऽन्नं ददाति (=दास्यति) कतमो वस्त्रम् । परन्तु साधारण प्रश्न हो (लिप्सा सूचित न होती हो) तो 'लृट्' भवि० ही आता है, 'लट्' वर्त० नहीं । जैसे—कः पाटलिपुत्रं गमिष्यति (कौन पटने जाएगा) ?

"मुञ्चानि (=मुंचेयम्) मातरि शरं स्वधनं हरन्त्थां दोषेषु बाह्यमनुजं भरत हनानि (=हन्याम्)" (प्रतिमा ?)

(छ) आशीर्वाद।

इसके लिये 'आशीर्लिङ्' और 'लोट्' * का प्रयोग होता है। जैसे—

ईश्वर तुम्हारा भला करे=

ईश्वरस्ते भद्रं क्रियात् (करोतु, कुरुतात् †)

बेटा, तुम दीर्घायु होओ=

वत्स,त्वं दीर्घायुः भूयाः (भव, भवतात् †)

अपने गुणों के अनुकूल (गुणी) पुत्र पाओ=

"पुत्रं लभस्वाऽऽत्मगुणानुरूपम्" (रघुवंश ५)

(ज) हेतुहेतुमद्भाव (लिङ्)—

तुम चाहो तो अभी झगड़ा मिट जाय=

त्वमिच्छेश्चेत् इदानीमेव कलहो नश्येत्।

मैं चाहूं तो ग़रीब को अमीर बना दूं=

वहमिच्छेयं चेत् निर्धनं धनिनं (धनवन्तं, धनपतिं) कुर्याम् —इत्यादि।

[तुहेतुमद्भाव में 'लिङ् के स्थान में 'लट्' वर्त० का भी प्रयोग होता है। जैसे—

यदि अकस्मात् मेरी दृष्टि से दूर न हो जाय, या कैलास की चोटी पर न चढ़ जाय अथवा आकाश को न उड़ जाय तो यह सब उसके पास जाकर पूछूं=

---

* "आशिषि लिङ्लोटौ" ३। ३। १३७ (पाणिनि)।

† "तुह्योस्तातङ्ङाशिष्यन्यतरस्याम्" ७। १। ३५ (पाणिनि)

"यदि मे सहसा दर्शनपथान्नाऽपयाति, नाऽऽरोहति वा कैलासशिखरम्, नोत्पतति वा गगनतलम्, ततः सर्वमेतत् एनाम् उपसृत्य पृच्छामि" (कादम्बरी)।

यदि तू अपनी आधी उमर दे दे तो तेरी ब्राह्मणी जी जाए=

"यदि त्वं स्वकीयजीवितस्यार्धं ददासि ततस्ते जीवति ब्राह्मणी" (तन्त्राख्या० ४ । ५)—इत्यादि ।

"तुम जाओ न जाओ, मैं तो जरूर जाऊंगा" इस प्रकार के वाक्यों में दूसरी क्रिया (जाओ) का अनुवाद नहीं करना चाहिए । जैसे—

त्वं गच्छ मा वा (कामं मा गच्छ), अहन्त्ववश्यं गमिष्यामि ।

तुम मानो न मानो, मैंने जो कहना था सो कह दिया=

त्वं स्वीकुरु मा वा, मया यत्कथनीयं (वक्तव्यं) तद् कथितम् (उक्तम्) ।

"देखें, तुम इतना रुपया कहां से लाते हो" इस प्रकार के वाक्यों में 'देखें' का अनुवाद 'पश्यामः' वर्त० 'लट्' से करना चाहिए 'लिङ्' से (पश्येम)नहीं । जैसे—पश्यामः,इयत्(एतावत्) धनं कुत आनयसि—इत्यादि ।

"तुम तो ऐसे बातें करते हो मानो माउंट एवरैस्ट पर खुद चढ़ आए होओ" इस प्रकार के (उत्प्रेक्षायुक्त) वाक्यों का अनुवाद "त्वं तु तथा भाषसे यथा नूनं गौरीशङ्करशिखरम् आरुह्य आगतो भवेः" इस प्रकार करने की अपेक्षा 'त्वं तु गौरीशङ्करशिखरमारुह्याऽऽगत इव (आरूढगौरीशङ्करशिखर इव) भाषसे' इस प्रकार करना अधिक संस्कृतप्रयोगानुसारी है ।]

प्रवर्तनार्थक

१. प्रत्यक्षविधि

इसमें 'लोट्' और 'लिङ्' का प्रयोग होता है ।

(क) आज्ञा, अनुमति, निर्देश आदि (लोट्, कभी २ लिङ्)—

इधर आओ=इतः आगच्छत

आओ, आओ, इस आसन पर बैठो=

"एह्यागच्छ, समाश्रयाऽऽसनमिदम्" (पञ्चतन्त्र) ।

आप चलें, मैं भी जल्दी आता हूं=

गच्छतु भवान्, अहमपि शीघ्रं (त्वरितम्) आगच्छामि ।

मुझे अपने घर जाने की आज्ञा दो=मां स्वगृहं गन्तुम् आज्ञापय (अनुजानीहि मां स्वगृहगमनाय)

सब सिपाही लौट जाएं=सर्वे सैनिकाः प्रतिनिवर्तन्ताम्

पानी लेकर जाओ=
"तोयमादाय गच्छेः (=गच्छ)" (मेघदूत)

(ख) अनुमति या परामर्श लेना (लिङ्, लोट्)—

क्या जाऊं ? = गच्छेयं (गच्छानि) किम् ?

क्या ये कसेरे जाएं ? =
इमे कांस्यकाराः गच्छेयुः (गच्छन्तु) किम् ?

(अपि गच्छेयुरिमे कांस्यकाराः ?)

आप मुझे यह तो बताएं कि मैं उसके पास जाकर क्या कहूं=

भवान् मामेतत् तूपदिशतु यत् तमुपगत्य किं कथयेयम् (किं कथयानि) । (तमुपेत्य किं कथयेयम् (कथयानि) इति तावदुपदिशतु भवान् माम्)

आप ही बताएं हम उसे कैसे मनाएं=

भवानेवोपदिशतु वयं तं कथं प्रसादयेम (प्रसादयाम) इत्यादि ।

(ग) प्रार्थना, अनुरोध (लिङ्, लोट् ,—

आज आप यहां भोजन करें=अद्य भवान् इह भुञ्जीत (भुङ्क्ताम्)

आप यहां बैठें=इह आसीत (आस्तां) भवान् ।

मुझ दीन पर कृपा करो="दीने मयि कृपां कुरु (कुर्याः)"

पहले महाराज मुझे अभयदान दें=

प्रथमं महाराजो मह्यम् अभयदानम् (अभयवाचं) ददातु (दद्यात्)।

आप बैठें तो सही=

आस्ताम् (आसीत) तावद् भवान्।

महाराज ठहरें तो सही=

तिष्ठतु (तिष्ठेत्) तावन्महाराजः।—इत्यादि।

(घ) उपदेश, विधान (लिङ्, लोट्)—

बेटा, कभी झूठ न बोलो=

वत्स, कदापि असत्यम् (अनृतम्) न वदेः (मा वद)।

सत्य बोले, प्रिय बोले=सत्यं ब्रूयात्, प्रियं ब्रूयात्"

बिना सोचे विचारे काम न करें=

"सहसा विदधीत न क्रियाम्" (किरात)

दो बरस से कम (बच्चे को मरने पर) गाड़ देवें=

"ऊनद्विवर्षं (बालं मृतं) निखनेत्" (याज्ञवल्क्य ३।१)
—इत्यादि।

आदरार्थक 'कीजिये, बैठिये' आदि का अनुवाद 'करोतु, आस्ताम्' आदि कर्तृवाच्य (Active voice) में करने की अपेक्षा 'क्रियताम् आस्यताम्' आदि कर्मवाच्य (Passive voice) में करना अधिक उपयुक्त है और ऐसा करने में 'लोट्' का ही प्रयोग करना चाहिये, 'लिङ्' का नहीं। जैसे—

महाराज, मैं अनाथ हूं, मुझ पर दया कीजिए=

महाराज, अहमनाथोऽस्मि, मयि दया क्रियताम्।

यह आसन है, बैठिए= "एतदासनम्, आस्यताम् ।

मैं अपराधी हूं, तो भी प्राण-भिक्षा दीजिए=

अहमपराधी अस्मि, तथापि प्राणभिक्षा दीयताम् ।

नाथ मेरी इतनी विनती मानिए=नाथ,मम एतावान् विनयः (इयती प्रार्थना) मान्यताम् (स्वीक्रियताम्) ।—इत्यादि ।

[ऊपर के रूप ('कीजिए' आदि) कभी २ "संभाव्य भविष्यत्" के अर्थ में भी आते हैं । तब इनका अनुवाद 'कर्तृवाच्य' में प्रायः 'लिङ्' से और 'कर्मवाच्य' में 'लोट्' और 'लिङ्' से, परन्तु हेतुहेतुमद्भावार्थक वाक्यों में 'कर्मवाच्य में' केवल 'लिङ्' से करना चाहिए । जैसे—

मन में आती है कि सब छोड़छाड़ यहीं बैठे ईश्वर का नाम जपा कीजिये (=जपाकरें)=

मनसि आयाति (भवति) यत् सर्वं परित्यज्य अत्रैव आसीनाः ईश्वरस्य नाम जपेम ("'आसीनैः"' जप्यताम्, जप्येत)

इन मूर्खों में इतनी समझ कैसे पाइये (=पाएं)=

एषु मूर्खेषु एतावन्तं बोधम् (इयतीं बुद्धिं) कथमुपलभेमहि ।

एषु मूर्खेषु एतावान् बोधः (इयती बुद्धिः) कथम् उपलभ्यताम् (उपलभ्येत) ।

अगर दिये के आस-पास गन्धक और फिटकरी छिड़क दीजिये (=छिड़क दें) तो कैसी ही हवा चले दिया न बुझेगा=

यदि दीपस्य समन्तात् (दीपं परितः) गन्धकः स्फुटिका च विकीर्येतां (गन्धकं स्फुटिकां च विकिरेम) तर्हि महत्यपि वाते दीपो न निर्वायात् (निर्वास्यति) इत्यादि ।

"देखिये, इसका क्या फल होता है" इस प्रकार के वाक्यों में 'देखिये' का अनुवाद 'पश्यामः' अथवा 'द्रष्टव्यम्' करना चाहिये ।

जैसे—पश्यामः (द्रष्टव्यम्) किमस्य फलं भवति । इत्यादि ।

"ले, मैं जाता हूं । लो, मैं यह चला । लो, अब कुछ देरी नहीं है । चलो, आपने यह काम कर लिया" इत्यादि वाक्यों में 'ले, लो, चलो' का अनुवाद 'अस्तु' या 'भवतु' से करना चाहिये । जैसे—

अस्तु, अहं गच्छामि (गच्छाम्यहम्) । भवतु, एष गतोऽहम् ।

भवतु, नास्ति साम्प्रतम् अल्पोऽपि (कोऽपि) विलम्बः ।

भवतु, भवता एतत्कार्यं कृतम् (साधितम्) । (भवतु, कृतमेतत्कार्यं भवता) । इत्यादि ।]

२. परोक्षविधि

जाइयो, कीजियो, कीजो आदि परोक्षविधि के रूपों तथा परोक्षविधि के अर्थ में आने वाली जाना, करना आदि क्रियार्थक संज्ञाओं से आज्ञा, प्रार्थना आदि के साथ भविष्यत् काल का अर्थ बोधित होता है । 'आप' के साथ जाइयो आदि के बदले 'जाइयेगा' आदि रूप आते हैं । इनके अनुवाद में 'लृट्' (सामान्य भविष्यत्) का प्रयोग करना चाहिये । जैसे—

कल सबेरे चला जाइयो (चले जाना)=

"श्वः कल्ये साधयिष्यसि (=गमिष्यसि)"(रामा० २।२४।३४)

मानसरोवर को पीछे से चला जाइयो (चले जाना)=

"पश्चात्सरः प्रति गमिष्यति मानसम्" (विक्रमोर्वशीय ४)

(मानसं सरः प्रति पश्चाद् गमिष्यसि)

हे विशाल भुजाओं वाले पुत्र, अब जाओ । फिर कुशल से आकर मुझे आनन्दित कीजियो (करना)=

"गच्छेदानीं महाबाहो क्षेमेण पुनरागतः ।

नन्दयिष्यसि मां पुत्र......" (रामा० २।२४।३७)

यह (बात) भूल न जाइयो (जाना)="मा इदं विस्मरिष्यसि"
(शकुन्तला ४)

कल आप मोहन से मिलकर जरूर हमारे यहां आइयेगा=
श्वो भवान् मोहनं दृष्ट्वाऽवश्यमस्मद्गृहम् आगमिष्यति।

['आइयेगा' इत्यादि प्रयोग 'भविष्यत काल'के अर्थ में भी आते हैं । जैसे—

जब आप कराची जाइयेगा (=जाएंगे) तो मेरे लिये क्या लाइयेगा (= लाएंगे) ? = यदा भवान् कराच्यां (कराची) गमिष्यति तदा मदर्थं किम् आनेष्यति ?

फिर कब दर्शन दीजियेगा?=पुनः कदा दर्शनं दास्यति ? इत्यादि ।

परोक्षविध्यर्थक 'जाइयो' और 'जाना' आदि के लिये कभी २ 'तव्य, 'ण्यत्, यत्, या अनीयर्' प्रत्यान्त क्रियाएं भी आती हैं। जैसे—

वहां जाना (जाइयो) और उसे पूछना (पूछियो)=
तत्र गन्तव्यम्, सच प्रष्टव्यः ।

तुम मेरे वचन से (मेरी ओर से) उस राजा को कहियो (कहना)=
"वाच्यस्त्वया मद्वचनात् स राजा" (रघुवंश १५) इत्यादि ।

निषेधार्थक विधिवाक्यों में 'लोट्' या 'लिङ्' के स्थान में 'मा' के साथ आने वाले 'लुङ्' के और 'मास्म' के साथ आने वाले 'लङ्' और 'लुङ्' के रूप (जिनका पहला 'अ' लुप्त हो जाता है) आते हैं।

जैसे-शोक मत करो=मा शुचः । शोची:

परमार्थ को जानने वाले विद्वानों का अपमान मत करो=
"अधिगतपरमार्थान् पण्डितान् माऽवमस्थाः" (भर्तृहरि)

पति के प्रतिकूल मत चलो=
"भर्तुः......मा स्म प्रतीपं गमः" (शकुन्तला ४)

हठ मत करो=हठं मास्म करोः ।

फिर कहीं ऐसा न करना="मैवं कार्षीः पुनः क्वचित्"

भरत मेरा अन्तिम संस्कार न करें=

"मास्म मे भरतः कार्षीत् प्रेतकृत्यम्" (रामा० २ ।)

मैं आज ही विष पी लूंगी (ताकि) शत्रुओं के वस न पड़ूं=

"विषमद्यैव पास्यामि मा वशं द्विषतां गमम्" (रामा० २।२०।१६)

इत्यादि]

अभ्यास

१ संभा० भवि०—शायद तुम घर से ही आए होओ। ईश्वर आप का भला करे। जिसने ये बातें कही हों उसकी ज़बान कट जाए! जैसे तूने मुझे सताया है वैसे तू भी सताया जाएगा। बड़ों का कहा मानो। सच बोलो और किसी की निन्दा न करो। क्या करूं कहां जाऊं। आज भूख कम है, रोटी खाऊं या न खाऊं। तुम्हारी रोज़ रोज़ तरक्की हो।

२ सा० भवि०—मैं कल घर जाऊंगा। श्याम आज या कल लाहौर जाएगा। तनखाह मिल जाएगी तो गुज़ारा हो जायगा। मैं कहूंगा तो वह चिढ़ जाएगा। सम्भव है आज बारिश हो जाए।

३ प्रत्यक्षविधि--खाना खाकर जाओ। यहां मत ठहरो। लड़के पढ़ना शुरू करें। आपके लिये फल लाऊं या दूध? आइये, बैठिये। महाराज, क्षमा कीजिये।

४ परोक्षविधि—माता को मेरा प्रणाम कहियो। फिर कब आइयेगा? गर्मी की छुट्टियां कहां बिताइयेगा?

तीसरा अध्याय ।

१. क्रियार्थक संज्ञा ।

'जाना' आदि परोक्षविधि के अर्थ में आने वाली क्रियार्थक संज्ञाओं का अनुवाद परोक्षविधि के समान होता है—यह पहले (परोक्षविधि-प्रकरण में) लिखा जा चुका है ।

'जाना है' और 'जाना होगा' आदि के लिये 'तव्य', 'ण्यत्', 'यत्' या 'अनीयर्' प्रत्ययान्त कृदन्त क्रियाएं रखनी चाहिये । जैसे—

मुझे वहां जाना है=मया तत्र गन्तव्यम्*

आपको इसमें क्या करना है=भवता अत्र किं कर्तव्यम् ।

रामलाल को आज वहां जरूर हाज़िर होना है=

रामलालेन अद्य तत्र अवश्यम् उपस्थातव्यम् ।

न मालूम इसका क्या फल होना है=

न जानीमः (न ज्ञायते) अस्य किं फलं भाव्यम् (भावि= भविष्यति) । इत्यादि ।

तुम्हें वहां जाना होगा=त्वया तत्र गन्तव्यम् ।

---

*''जाना है'' के लिये 'गतव्यम्' आदि के बाद 'अस्' धातु की वर्तमानकालिक क्रिया लगाने की आवश्यकता नहीं । हां, जहां 'गतव्यम' आदि संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होते हैं वहां 'अस्' धातु की क्रिया लगाई जाती है । जैसे–"गन्तव्यमस्ति कियत्" (कितना जाना है)।इसमें 'गन्तव्य' शब्द 'जाने योग्य अर्थात् रास्ता' इस अर्थ में संज्ञा के रूप में आया है, क्रिया के रूप में नहीं ।

गोपाल को दवाई पीनी होगी=

गोपालेन ओषधिः पातव्या (पानीया)।

मुझे अब चाण्डालों के साथ एक जगह बैठना होगा =

"मयाऽधुना......चाण्डालैः सहैकत्र स्थातव्यम्" (कादम्बरी) --इत्यादि ।

'जाना था' आदि के लिये पूर्ववत् 'तव्य' आदि प्रत्ययान्त कृदन्त क्रियाओं के आगे 'अस्' धातु की भूतकालीन ('लङ्') या 'लुङ्' लकार की) क्रियाएं रखनी चाहिये। जैसे-

मुझे वहां जाना था = मया तत्र गन्तव्यम् आसीत् (अभूत्)। जो होना था सो होलिया= यद् भाव्यम् आसीत् (अभूत्) तत् जातम् ‡। इत्यादि ।

जब 'जाना' आदि क्रियार्थक संज्ञाएं संप्रदामकारक में आती हैं तब इनका अर्थ 'निमित्त' या 'प्रयोजन' होता है। इन के अनुवाद में प्रधानतया 'तुम् (तुमुन्)' प्रत्ययान्त क्रियाएं (Infinitive mood) आती हैं और भाववाचक कृदन्त संज्ञाओं का भी 'चतुर्थी विभक्ति' में प्रयोग होता है। ('तुमन्त' क्रियाओं के कर्म में जहां 'द्वितीया विभक्ति' आती है वहां भाववाचक संज्ञाओं का प्रयोग करने पर 'षष्ठी विभक्ति' आती है)। जैसे---

किशोर घर जाने को तय्यार हो रहा है=

किशोरः गृहं गन्तुं (गृहे* गमनाय) संनह्यति ।

---

‡ ऐसे वाक्यों में 'आसीत्' या 'अभूत्' क्रिया बिना लिखे भी जानी जाती है। इसलिये 'यद् भाव्यं तत् जातम्' ऐसे भी लिखा जाता है।

*गमनार्थक संज्ञाओं के योग में 'षष्ठी' के बदले 'सप्तमी' रखना अधिक अच्छा है। इसी लिए यहां 'गृहे' सप्तमी रक्खी है, 'गृहस्य' षष्ठी नहीं।

मैं फल लाने (=लाने को) जाता हूं=

अहं फलानि आनेतुम् (आहर्तुम्) गच्छामि ।

अहं फलानाम् आनयनाय गच्छामि ।

रघु ने उसके बाद फारसवालों को जीतने के लिए प्रस्थान किया=

"(रघुः) पारसीकांस्ततो जेतुं प्रस्थे" (रघुवंश ४)

रघुः पारसीकानां जयाय प्रतस्थे ।

मकान बनाने को सामान खरीदना है=

गृहं (भवनं) निर्मातुं (गृहस्य निर्माणाय) सामग्री क्रेतव्या (= उपकरणानि क्रेतव्यानि, उपकरणजातं क्रेतव्यम्) । —इत्यादि ।

["जाने को तो मैं वहां जा सकता हूँ "—इस प्रकार के वाक्यों में 'जाने को' आदि का अनुवाद 'तव्य, ण्यत्, यत् या अनीयर्' प्रत्ययान्त शब्दों से उनके आगे 'एव' लगा कर करना चाहिए । जैसे—

गन्तव्यमेव चेत् अहं तत्र गन्तुं शक्नोमि ।

लाने को तो मैं लाहौर से भी अनार ला सकता हूं=

आनेतव्यान्येव चेत् अहं लवपुरादपि दाडिमानि आनेतुं शक्नोमि । इत्यादि ।

'जाने को है, जाने को हुआ, जाने को था'—इत्यादि के लिए 'तुमन्त' क्रिया के आगे 'उद्यत' शब्द रखना चाहिए और आवश्यकता के अनुसार यथायोग्य वर्त० 'है' आदि के लिए 'अस्ति' आदि और भूत० 'हुआ' 'था' आदि के लिए 'अभूत्' 'आसीत्' आदि 'अस्' धातु की क्रियाएं लगानी चाहिए । जैसे—

श्यामलाल जाने को है = श्यामलालः गन्तुमुद्यतः (गन्तुमुद्यतोऽस्ति) ।

जभी मैं जाने को हुआ तभी बारिश आ गई =

यदैवाऽहं गन्तुम् उद्यतः (उद्यतोऽभूवम्) तदैव वृष्टिः आगता(प्रवृत्ता)।

वह कल कलकत्ते जाने को था =

स ह्यः कलिकातां गन्तुमुद्यतोऽभूत् (गन्तुमुद्यत आसीत्)। इत्यादि।

"गाड़ी आने को है" इस प्रकार के वाक्यों में 'आने को है' आदि का अनुवाद (वाष्पशकटी) 'आगन्तुमुद्यता' न करके 'आसन्नाऽऽगमना' या 'इदानीमेव (शीघ्रमेव) आगमिष्यति' ऐसा करना चाहिए और 'आने को हुई या थी' का 'आसन्नाऽऽगमना अभूत् (आसीत्)' करना चाहिए।

इसी प्रकार 'जाने को है' का अनुवाद 'इदानीमेव (संप्रत्येव) गमिष्यति' इस प्रकार भी किया जा सकता है। जैसे—

श्यामलाल जाने को है=

श्यमलालः इदानीमेव (संप्रत्येव) गमिष्यति।—इत्यादि।

'नहीं' या 'कब' के साथ 'षष्ठी' विभक्ति में आने वाली 'जाना' आदि क्रियार्थक संज्ञाओं के लिए 'लृट्' लकार (सामान्यभविष्यत्) की क्रियाएं रखनी चाहिए (और 'कब' के लिए प्रायः 'कदा' न रखकर 'न' ही रखना चाहिए)। जैसे—

मैं वहां जाने का नहीं=अहं तत्र न (नाऽहं तत्र)गमिष्यामि।

यह यहां से कब उठने का है=अयम् इतः नोत्थास्यति।—इत्यादि।

"यह कब पढ़ने का है जो पाठशाला में कभी नहीं जाता" इसप्रकार के निन्दार्थक वाक्यों में 'लृट्' के बदले 'लुट्' लकार का प्रयोग करना चाहिये और 'कब' के लिये 'कदा' ही रखना चाहिये। जैसे—

अयं कदाऽध्येता ('अध्येष्यते' नहीं) यः (योऽयं) कदापि पाठशालां न गच्छति।—इत्यादि]

अभ्यास

मुझे आज बहुत से काम करने हैं। मुझे आज दस बजे कचहरी हाज़िर होना है। तुम्हें ऐसे ही कहना होगा। कुछ खाने को तय्यार है। मैं मेला देखने जाता हूं। करने को तो मैं सब कुछ कर सकता हूं। बादल बरसने को है। मैं जाने को हुआ और रामलाल भी आगया। मोहन परसों घर जाने को था। यह तुम्हारा कहा मानने का नहीं। वह यहां कब आने का है। जो मेरी ही नहीं सुनता वह तुम्हारी कब मानने का है।

२. संयुक्त-क्रिया

हिन्दीमें आने वाली बहुतसी संयुक्तक्रियाओं के लिये संस्कृत की साधारण क्रियाएं ही रक्खी जाती हैं। जैसे—

जैसे २ पानी बढ़ता जाता है वैसे २ कमल भी ऊंचा होता जाता है=

यथा २ पानीयं (जलम्, सलिलम्) वर्धते तथा २ कमल-मपि उच्चं भवति (उन्नमति)।

जब तक बारिश होती रहेगी तब तक बाहिर नहीं जा सकेंगे=

यावद् वृष्टिर्भविष्यति तावद् बहिर्गन्तुं न शक्ष्यामः।

जब तक काम करते रहोगे तब तक तनखाह पाते रहोगे=

यावत् कार्यं करिष्यसि तावत् वेतनं प्राप्स्यसि (लप्स्यसे)।

चांदी की सारी चमक जाती रही=

रजतस्य सर्वा दीप्तिः गता (नष्टा)। मैं पढ़रहा हूं=अहं पठामि।

मुनि तप कर रहे थे=मनुयः तपः अकुर्वन् (कुर्वन्तिस्म)

लड़का वहीं सो रहा =बालः तत्रैव अस्त्रपत्
यहीं बैठ (ठा) रह=अत्रैव आस्स्व ।

श्यामू बचपन से रामलाल ही के घर नौकरी करता आता है (करता आ रहा है)=

श्यामूः बाल्यात रामलालस्यैव गृहे किंकरतां (सेवा-कर्म) करोति ।

वह हर रोज़ हमारे यहां आया करता है=
स प्रतिदिनम् अस्मद्गृहे आगच्छति ।

गोपाल हररोज़ पाठशाला जाया करता था और मन लग कर पढ़ा करता था=

गोपालः प्रतिदिनं पाठशालायां गच्छति स्म मनोयोगेन (एकाग्रमनसा) च पठति स्म ।

सोहन पकाता जाता था, मोहन खाता जाता था=
सोहनः पचतिस्म (अपचत्), मोहनः भक्षयति स्म (अभक्षयत्) ।
भिखारी भीख लेकर चलता बना (चल दिया ,=चला गया)=भिक्षुकः भिक्षाम् आदाय गतः (अगच्छत्) ।

तेज़ बदबू के मारे सिर फटा जाता था=
तीव्रेण दुर्गन्धेन शिरः स्फुटति स्म ।

मेरे रोंगटे खड़े हुए जाते हैं=
मम रोमाणि हृष्यन्ति (मम रोमाञ्चो जायते)।
यह मुझे निगले जाता है=अयं मां निगिलति ।
इस बच्चे को किसके पास छोड़े जाती हो=
इमं बालं कस्य पार्श्वे विसृजसि ।
जो दे दोगे वही लेलूंगा=यद् दास्यथ तदेव ग्रहीष्यामि ।
आप खाले पीले (खापीले) और औरों की भलाई कर ले=

स्वय भुङ्क्ष्व, पिब (इष्टान् भोगान् भुङ्क्ष्व), अन्येषां चोपकारम् (हितम्) कुरु (आचर)।

जो गुरु समझाता है उसे वह अच्छी तरह समझ लेता है=
यद् गुरुः बोधयति तद् अयं सम्यक् बुध्यते (अवगच्छति)।
जो तुम्हारे मन में है सो कहदो=
यत् तव मनसि वर्तते तत् कथय।
इस तोते को छोड़दे=इमं शुकं मुञ्च।
कोई कहानी सुनादे=काञ्चित् कथां श्रावय।
इस कली को खिलादे=इमां कलिकां विकासय।
तुम आजकल श्याम से बोलते-चालते नहीं=
त्वम् अद्यत्वे श्यामेन नाऽऽलपसि (न संभाषसे)।
समझ बूझकर काम करो=विचार्य कार्यं कुरु।
अपना काम देखो-भालो=स्वकार्यम् अवेक्षस्व।

वह पंछी कभी २ खेतों में दिखाई देता (पड़ता) है = देख पड़ता है=असौ पक्षी कदाचित् २ क्षेत्रेषु दृश्यते।

अचानक कड़कड़ की अवाज़ सुनाई दी (पड़ी)=सुनपड़ी=
अकस्मात् कडकडाशब्दः अश्रूयत (श्रुतिपथं गतः)।
यह बछड़ा पकड़ाई नहीं देता=
अयं वत्सतरः न गृह्यते (ग्रहीतुं न शक्यते)।
बर्तन हाथ से गिर पड़ा=पात्रं हस्तात् पतितम् (भ्रष्टम्)।
हम आज ही चलपड़ेंगे=वयमद्यैव प्रस्थास्यामहे।
एक ही तीर से शेर मारडाला=

एकेनैव बाणेन सिंहः मारितः (हतः, अहन्यत) ।
घड़ा फोड़ डाला=घटः स्फोटितः (भग्नः) ।
इस कामको जल्दी कर डाल=एतत् कार्यं शीघ्रं कुरु (विधेहि)
तेरा काम ज़रूर कर छोड़ूंगा=तव कार्यम् अवश्यं करिष्यामि ।
ये पुस्तकें तेरे लिये रख छोड़ेंगे=
एतानि पुस्तकानि त्वदर्थं रक्षिष्यामः ।
घड़ा पत्थर पर दे मारा (दे पटका)=घटः प्रस्तरे क्षिप्तः ।
मेरी प्रार्थना स्वीकार करें=मम प्रार्थनां स्वीकरोतु ।
इस दवा से सब रोग नाश हो जाते हैं=
अनेन औषधेन (अनया ओषध्या) सर्वे रोगाः नश्यन्ति ।
कल काम आरम्भ होजाएगा=श्वः कार्यम् आरप्स्यते ।
दूसरे का कष्ट मुझ से सहन नहीं होता=
अन्यस्य कष्टं मया न सह्यते (सोढुं न शक्यते)
तुम्हारा अन्न नहीं ग्रहण करूंगा=तव अन्नं न ग्रहीष्यामि ।
इतनी दौलत कैसे उपार्जन की=
एतावती सम्पत्तिः कथम् उपार्जिता ।
झूठ बोलना त्याग दे=असत्यभाषणं त्यज ।
कथा श्रवण करो=कथां शृणुत ।
यह पुस्तक किसने सम्पादन की ?=एतत् पुस्तकं केन सम्पादितम्?
जब तक बातचीत नहीं होलेती=यावद् वार्तालापो न जायते ।

(ख) क्रियार्थक संज्ञा 'जाना' आदि के साथ 'पड़ना' या 'होना' क्रियाओं के योग से बनने वाली संयुक्तक्रियाओं के लिये 'तव्य, ण्यत्, यत् या अनीयर्' प्रत्ययान्त शब्दों के आगे 'भू' धातु की अर्थानुसार वर्तमान, भूत या भविष्यत् काल की

क्रियाएं रक्खी जाती हैं। जैसे--

मुझे हर रोज़ घर जाना पड़ता है (होता है)=
मया प्रतिदिनं गृहं गन्तव्यं भवति ।

तुझे दवा पीनी पड़ेगी (होगी)=
त्वया औषधं पातव्यं भविष्यति* ।

इच्छा न रहने पर भी मुझे खाना खाना पड़ता था (होता था)=

इच्छाऽभावेऽपि (अनिच्छतापि) मया भोजनं भोक्तव्यं भवति स्म (अभवत्) ।

मुझे सारा काम करना पड़ा=
मया सर्वं कार्यं कर्तव्यमभूत्
(सर्वं कार्यं मम कर्त्व्यतयाऽऽपतितम्)—इत्यादि ।

(ग) 'जाना चाहिये' 'करना चाहिये' आदि संयुक्तक्रियाओं के लिये भी 'तव्य, ण्यत्, यत्, या अनीयर्' प्रत्ययान्त क्रियाएं ही आती हैं। जैसे--

मुझे वहां जाना चाहिये=मया तत्र गन्तव्यम् ।

आप को यह काम करना चाहिये=
भवता एतत् कार्यं कर्तव्यम् ।

अब क्या करना चाहिये किस तर्फ जाना चाहिये=

---

*भविष्यत्कालिक क्रिया के लिये 'भविष्यति' आदि लगाने की आवश्यकता नहीं, केवल 'पातव्यम्' से भी 'भविष्यत्' का अर्थ बोधित हो जाता है—त्वया औषधं पातव्यम्=तुझे दवा पीनी पड़ेगी ।

"किमिदानीं कर्तव्यम्, कां दिशं गन्तव्यम्" (कादम्बरी)- इत्यादि ।

'देखा चाहिये' क्रिया चाहिये, आदि का अनुवाद भी ऊपर लिखे प्रकार से ही किया जाता है । जैसे-

देखा चाहिये क्या होता है=द्रष्टव्यं किं भवति ।

ऐसे काम किया चाहिये=एवं कार्यं कर्तव्यम् । इत्यादि ।

'जाना चाहिये था' आदि के लिये 'गन्तव्यम्' आदि के बाद 'अस्' धातु की भूतकालिक क्रिया लगानी चाहिये । जैसे-

तुझे वहां जाना चाहिये था= त्वया तत्र गन्तव्यम् आसीत् ।

आपको उस दिन घर पर ही रहना चाहिये था=

भवता तस्मिन् दिने गृहे एव अवस्थातव्यमासीत् ।

[इन ('चाहिये'वाली) संयुक्तक्रियाओं के लिये 'तुमन्त' क्रियाओं के बाद 'उचितम्' 'योग्यम्' 'युक्तम्' 'सांप्रतम्' या 'युज्यते' भी रक्खा जाता है और ऐसा करने पर 'मुझे' आदि के लिये तृतीया विभक्ति 'मया' आदि के बदले प्राय: षष्ठी विभक्ति 'मम' आदि लगाई जाती है । जैसे—

तुझे वहां जाना चाहिये=

तव तत्र गन्तुम् उचितम् (योग्यम्,युक्तम् सांप्रतम्, युज्यते)-।

आप को ऐसे करना चाहिये था=

भवतः एवं कर्तुम् उचितम् (योग्यम्, सांप्रतम्,युक्तम्) आसीत् (युज्यते स्म) । इत्यादि ।]

(घ) 'जाने लगना, करने लगना' आदि आरम्भबोधक सं० क्रि० के लिये 'तुमन्त' क्रिया के आगे अर्थानुसार कालों में आ+रभ्, प्र+वृत्, उद्+यम् धातुओं की क्रियाएं लगाई जाती हैं । जैसे—

हम जब जाने लगते हैं तभी तुम मना करते हो=
वयं यदा गन्तुम् आरभामहे (प्रवर्तामहे, उद्यच्छामः) तदैव त्वं प्रतिषेधसि ।

वह अपना काम करने लगा=
सः स्वकार्यं कर्तुम् आरब्धः (प्रवृत्तः, आरभत, प्रावर्तत)
जब खाने लगूंगा तो तुझे बुला लूंगा=
यदा भोक्तुम् आरप्स्ये (प्रवर्तिष्ये, प्रवर्त्स्यामि) तदा त्वाम् आकारयिष्यामि (आह्वयिष्यामि)। आह्वास्यामि

["हम वहां क्यों जाने लगे; यह रूखासूखा भोजन आपको कब पसन्द आने लगा" इस प्रकार के वाक्यों के अनुवाद में भविष्यत्-काल की क्रिया रखनी चाहिये और 'क्यों' या 'कब' के लिये ' न खलु ' या 'कथम्' शब्द रखना चाहिये । जैसे—न खलु वयं तत्र गमिष्यामः ।

इदं रूक्ष-शुष्कम् (अमृष्टं) भोजनं भवते कथं रोचिष्यते ।
राजकुमारी इस सुन्दर युवा को छोड़ इन खूंसटों को क्यों वरने लगी=
राजकुमारी इमं सुन्दरं युवानं त्यक्त्वा (विहाय) एतान् वृद्धान् (स्थविरान्) कथं वरिष्यति ।]

(ङ) 'जाने देना' आदि अनुमतिबोधक सं० क्रि० के लिये 'तुमन्त' क्रिया के बाद दानार्थक धातुओं ('दा' आदि) की क्रियाएं और कहीं २ 'अनु+मन्' या अनु+ज्ञा' धातुओं की क्रियाएं अर्थानुसार काल में रखनी चाहिये । जैसे—

मुझे जाने भी नहीं देता=मह्यं* गन्तुम् अपि न ददाति ।
(मां गन्तुम् अपि न अनुमन्यते = अनुजानाति)
शोर न मचाओ, मुझे काम करने दो=

कोलाहलं मा कुरुत, मह्यं कार्यं कर्तुं दत्त (दिशत)।

अप्सराओं को स्वर्ग का स्मरण नहीं करने देते=

"स्मर्तुं दिशन्ति न दिवः सुरसुन्दरीभ्यः" (किरात ५ । २८) –इत्यादि ।

परन्तु "मुझे जाने दो" इस प्रकार के वाक्यों का अनुवाद मां गन्तुम् अनुजानीहि=अनुमन्यस्व ('अनुजानीहि मां गन्तुम्") इस प्रकार ही करना चाहिये "मह्यं गन्तुं देहि" इस प्रकार नहीं ।

(च) 'जाने पाना, 'जाना मिलना' आदि अवकाशबोधक सं० क्रि० के लिये 'तुमन्त' क्रिया के आगे प्र+आप् (आप्), लभ् या प्राप्त्यर्थक किसी दूसरे धातु की क्रियाएं अर्थानुसार कालों में रखनी चाहिये । जैसे--

यहां से कब जाने पाऊंगा=इतः कदा गन्तुम् प्राप्स्यामि(लप्स्ये)।

यहां से एक पग भी न जाने पाएगा=

इतः एकं पदमपि (पदमेकमपि=पदात्पदमपि) गन्तुं न प्राप्स्यसि (लप्स्यसे) ।

कुछ भी नहीं करने पाते=किमपि कर्तुं न प्राप्नुमः(लभामहे) ।

'जाना मिलना' आदि के लिये 'तुमन्त' क्रिया के आगे लगाई जाने वाली क्रियाएं कर्मवाच्य में रखनी चाहिये (वैसे तो 'जाने पाना' आदि के समान कर्तृवाच्य में भी रक्खी जा सकती हैं) ! इसके लिये 'लभ्' धातु की क्रियाओं का प्रयोग अधिक होता है । जैसे—

मुझे घर के धन्धों के कारण कहीं जाना नहीं मिलता=

मया गृहव्यापारकारणात् क्वचिद् गन्तुं न लभ्यते।

(अहं......क्वचिद् गन्तुं न लभे)—

इसका अहङ्कार नाशकरना नहीं मिलता=

"न लभ्येत ऽस्य............दर्पः शातयितुम्" (वेणीसंहार ३)

बहुतों को जो सुनना भी नहीं मिलता=

बहुभिर्यः श्रोतुमपि न लभ्यते।

"श्रावणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः" (उपनिषत्)-इत्यादि।

'जाया करना' 'किया करना' आदि अभ्यास (सातत्य) बोधक सं० क्रि० के लिये साधारण क्रियाओं के पहिले यदि वाक्य में 'अक्सर, प्रायः, हमेशा, हर रोज' आदि शब्द न हों तो भी यथायोग्य 'अभीक्ष्णम्, प्रायः, सततम्, निरन्तरम्, नित्यम्, सदा' आदि शब्द लगाए जाते हैं। जैसे--

मैं उसके यहां जाया करता हूं (अक्सर जाया करता हूं)=

अहं तस्य सविधे (गृहे) प्रायः गच्छामि।

मैं मूंग की दाल खाया करता हूं=

अहं सदा मुद्गदालिं भक्षयामि।

वह यहीं नहाया करता है=स नित्यम् (सदा)अत्रैव स्नाति।

गोपाल यही काम किया करता है=

गोपालः सततम् एतदेव कार्यं करोति।

तुम हमें देखो न देखो, हम तुम्हें देखा करें=

त्वं माम् (अस्मान्) पश्य मा वा, अहम् (वयं) त्वां सततम् पश्येयम् (पश्येम)। इत्यादि।

(ज) 'बोल उठना, रो उठना' आदि 'आकस्मिकता, के अर्थ में आने वाली सं० क्रि० के लिये साधारण क्रियाओं के पहले 'सहसा' या 'अकस्मात्' शब्द रखना चाहिये। जैसे--

इतने में भीम बोल उठा =

एतस्मिन्नन्तरे भीमः सहसा कथयामास (जगाद) ।

लड़की कभी २ सोई हुई योंही रो उठती है =

बालिका कदाचित् २ (प्रायः) सुप्ता अस्माकस्मादेव रोदति ।

बिल्ली को देखते ही कबूतर चिल्ला उठते हैं =

विडालीं पश्यन्त एव (दृष्ट्वैव, दृष्टमात्रायामेव बिडाल्यां) कपोताः सहसा आक्रन्दन्ति ।—इत्यादि ।

[इस प्रकार की क्रियाओं (बोल उठना आदि) का 'तुमन्त' क्रिया के आगे 'प्र+वृत्' या 'आ+रभ्' धातु की क्रियाएं लगाकर भी अनुवाद किया जा सकता है । जैसे:—

एतस्मिन्नन्तरे भीमः सहसा कथयितुम् प्रावर्तत (आरभत)

बालिका कदाचित २ सुप्ता अकस्मादेव रोदितुं प्रवर्तते ।

विडालीं पश्यन्त एव कपोताः सहसा आक्रन्दितुमारभन्ते]

(झ) 'कह बैठना, चढ़ बैठना, मार बैठना' आदि के लिए साधारण क्रियाओं के पहले यथायोग्य 'सहसा,अविमृश्य हेलया (लीलया), बलात्, झटिति' आदि शब्द रक्खे जाते हैं । जैसे:—

जो बेमतलब की बात कह बैठते हैं वे मूर्ख कहाते हैं =

ये सहसा (अविमृश्य) व्यर्थं (निरर्थकं) वचः कथयन्ति ते मूर्खाः कथ्यन्ते ।

श्याम भौंदू को गिरा उसकी छाती पर चढ़ बैठा = उर आरूढवान्

श्यामो भौंदूं निपात्य बलात् (हेलया) तस्य उरसि आरूढवान् ।

घोड़ा बेलगाम हो गया था फिर भी सवार उस पर चढ़ बैठा =

अश्वः उद्दामः (उच्छृङ्खलः) आसीत् तथापि अश्ववारः (अश्वारोहः) झटिति (हेलया) तम् अधिरूढवान् ।

मैं बच्चे को मार बैठा, इसी से मालिक नाराज़ हो गया=

अहं शिशुम् सहसा (मूर्खतया) ताडितवान् अतएव स्वामी क्रुद्धो जातः। इत्यादि।

आवाज़ सुनते ही मैं उठ बैठा=

शब्दं शृण्वन्नेव (श्रुत्वैव, शब्दे श्रुतमात्र एव) अहं सहसा उदतिष्ठम्।

(ञ) 'देख आना, लौट आना' आदि में से कुछ के लिए 'क्त्वा' प्रत्ययान्त क्रियाओं के बाद साधारण क्रियाएं रक्खी जाती हैं, और कुछ के लिए केवल साधारण क्रियाएं ही आती हैं। जैसे:—

जाओ, इसका घर देख आओ=

गच्छ अस्य गृहं दृष्ट्वा आगच्छ।

आओ, उससे रूपये ले आओ=

गच्छ, तस्मात् रूप्यकाणि गृहीत्वा आगच्छ।

जल्दी लौट आ = शीघ्रं प्रत्यावर्तस्व।

ये फल हमारे घर पहुंचा आ=एतानि अस्मद्गृहं प्रापय।

कभी २ एक ही क्रिया का भिन्न २ वाक्यों में अर्थानुसार दोनों प्रकार से अनुवाद किया जाता है। जैसेः—

यह किताब पहले श्याम को दे आ फिर रोटी खाना=

इदं पुस्तकं प्रथमं श्यामाय दत्त्वा आगच्छ ततः (पश्चात्) भोजनं भोक्ष्यसे (भोक्तव्यम्)।

मैं सारे फल मंगतों को दे आया हूं=

अहं सर्वाणि फलानि याचकेभ्यः प्रादाम्(प्रदत्तवान्)। इत्यादि।

(ट) 'लिए लेना, दिए देना, किए देना, खाए डालना, पिए डालना' आदि के लिए साधारण क्रिया के पहले कर्ता के विशेषण के रूप में 'एतद्' या 'इदम्' शब्द के प्रथमा विभक्ति के

रूप 'एषः, अयम' आदि या कभी २ 'इदानीमेव, संप्रत्येव, अद्यैव' आदि शब्द रक्खे जाते हैं। जैसेः—

मैं यह पुस्तक लिए लेता हूं= * अहमेष इदं पुस्तकं गृह्णामि (एष गृह्णामि पुस्तकमिदम्)।

श्याम किसे कपड़ा दिये देता है ?=
एष श्यामः कस्मै वस्त्रं ददाति ?
(एष कस्मै ददाति वस्त्रं श्यामः ?)

आप जाएं, मैं सारा काम किए देता हूं=
भवान् गच्छतु (गच्छतु भवान्), अहम् अद्यैव (संप्रत्येव, इदानीमेव) सर्वं कार्यं संपादयामि।

बचाओ २, राक्षस मुझे खाए डालता है=
परित्रायध्वम् २, एष राक्षसो मां भक्षयति।

लल्लू सारा दूध पिए डालता है =
एष लल्लूः सर्वं दुग्धं पिबति। इत्यादि।

(ठ) 'खा चुकना, जा चुकना, ले चुकना' आदि का अनुवाद नीचे लिखे प्रकारों से किया जाता है—

१. भूतकाल में क्तवत्वन्त (कभी २ क्तान्त) क्रियाओं से और कभी २ पञ्चम्यन्त भाववाचक संज्ञा के बाद 'नि+वृत् या वि+रम्' धातु की भूतकालिक क्रियाएं रखने से। जैसेः—

जब हम खा चुके तब वह आया=
यदा वयं भुक्तवन्तस्तदाऽसौ (सः) आगतः।
(अस्मासु भुक्तवत्सु असौ आयातः)

---

* ऐसे वाक्यों में प्रायः 'अहम्' 'आवाम्' या 'वयम्' का प्रयोग नहीं होता।

यदा वयं भोजनात् न्यवृतामहि (निवृत्ताः व्यरमाम, विरताः) तदा स आगतः ।

जब हम पहुंचे तब वे जा चुके थे=
यदा वयं प्राप्ताः तदा ते गतवन्तोऽभूवन् (गता आसन्) ।
हम अपना हिस्सा ले चुके हैं=वयं स्वं भागं गृहीतवन्तः=
(अस्माभिः स्वकीयो भागो गृहीतः)

२-वर्तमान काल में कर्ता और क्तवत्वन्त क्रियाओं को सप्तमी विभक्ति में रखने से और कभी २ भाववाचक संज्ञा के बाद 'नि+वृत्' या 'वि+रम्' धातु की वर्तमानकालिक क्रियाएं रखने से । जैसे—जब हम खा चुकते हैं तब तुम जाना=

* अस्मासु भुक्तवत्सु त्वया गन्तव्यम् ।
यदा वयं भोजनात् निवर्तामहे (विरमामः) तदा त्वया गन्तव्यम् ।
जब ये अपना हिस्सा ले चुकते हैं तब तुम्हें देंगे=
एतेषु स्वभागं गृहीतवत्सु तुभ्यमपि दास्यामः ।

३-भविष्यत्काल में सप्तमी विभक्ति में क्तवत्वन्त (कभी २ क्तान्त)क्रियाओं से और कभी२ भाववाचक संज्ञा के बाद सप्तमी विभक्ति में क्तान्त 'नि+वृत्' या 'वि+रम्' धातु की क्रियाओं से या क्तान्त शब्दों के बाद 'भू' धातु की भविष्यत्कालिक क्रिया से । जैसे—

जब ये खाचुकेंगे तब तुझे भी देंगे=
एतेषु भुक्तवत्सु (भोजनात् निवृत्तेषु, विरतेषु) तुभ्यमपि मः ।

---

* इस प्रकार में 'यदा तदा' का अनुवाद नहीं किया जाता ।

उनके आने तक हम दूर जा चुकेंगे=

तेषाम् आगमनपर्यन्तम् (यावत् ते आगच्छन्ति तावत्) वयं दूरं गता भविष्यामः । (अस्माभिर्दूरं गतैर्भाव्यम्) * इत्यादि ।

(ड) 'जा सकना, कर सकना' तथा 'जाते बनना, करते बनना' आदि शक्तिबोधक सं० क्रियाओं के लिए 'तुमन्त' क्रियाओं के बाद 'शक्, प्र+भू, पारय्' आदि 'सकना' अर्थ वाले धातुओं की क्रियाएं रक्खी जाती हैं। जैसे—

मैं मुश्किल से दो कोस जा सकता हूं=

अहं कथंचित् (कृच्छ्रेण) द्वौ क्रोशौ (क्रोशद्वयं) गन्तुं शक्नोमि (प्रभवामि, पारयामि) ।

मैं क्या कर सकता हूं=अहं किं कर्तुं शक्नोमि (प्रभवामि) ।

ऐसी धूप में मुझसे नहीं जाते बनता=

एवंविधे आतपे मया गन्तुं न शक्यते (अहं गन्तुं न शक्नोमि)।

(ढ) 'जाना चाहना=जाया चाहना, करना चाहना=किया चाहना' आदि इच्छार्थक सं० क्रियाओं के लिये 'तुमन्त' क्रियाओं के आगे इच्छार्थक धातुओं की क्रियाएं लगाई जाती हैं या सन्-प्रत्ययान्त (सन्नन्त) क्रियाएं रक्खी जाती हैं। जैसे—

तुम कहां जाना (जाया) चाहते हो=

त्वं कुत्र (क्व) गन्तुमिच्छसि (जिगमिषसि) ।

रावण घोर तप करना (किया) चाहता था=

---

*ऐसे वाक्यों में भविष्यत्काल की साधारण क्रिया भी रक्खी जा सकती है। जैसे—तेषाम् आगमनं यावत् वयं दूरं गमिष्यामः। इत्यादि।

रावणः घोरम् (उग्रम्) तपः कर्तुमिच्छति स्म (चिकिर्षति स्म, कर्तुमैच्छत् = अचिकीर्षत) ।

कुत्ता मरा चाहता है = श्वा । मुमूर्षति ।

किनारा गिरा चाहता है = कूलं पिपतिषति । इत्यादि ।

[इस प्रकार के वाक्यों का अनुवाद इस प्रकार भी किया जाता है—

श्वा आसन्नमरणः (मरणासन्नः) । गृहम् आसन्नपतनम । "आशङ्कायां सन् वक्तव्यः" (वार्तिक ३।१।७ सूत्र पर) श्वा मुमूर्षति = शङ्के मरिष्यति । कूलं पिपतिषति = शङ्के पतिष्यति । इत्यादि ।

इस प्रकार 'मरा चाहता है' आदि का 'शङ्का है मर जायगा' इस अर्थ में 'सन्नन्तक्रिया से अनुवाद करना चाहिये और 'मरने को है या जल्दी मर जाएगा' इस अर्थ में 'आसन्नमरणः' 'अतिशीघ्रं मरिष्यति' इस प्रकार करना चाहिये । परन्तु 'गाड़ी आया चाहती है, खाना पका चाहता है' इस प्रकार के वाक्यों में 'आया चाहती है' आदि का 'आने को (आने वाली) है' यही अर्थ है, इसलिए इनका अनुवाद 'वाष्पशकटी आसन्नगमना (= अतिशीघ्रमागमिष्यति),' भोजनम् आसन्नपाकम् (= अतिशीघ्रं पक्ष्यते = सेत्स्यति)' भोजन इस प्रकार ही करना चाहिए ।]

(ग) 'भस्म होना, भस्म करना' आदि के लिए 'भस्म' आदि शब्दों से 'च्वि' प्रत्यय लगकर बनने वाली 'भू', 'कृ' आदि धातुओं की क्रियाएं आती हैं । जैसे—

दिए पर गिरके पतङ्ग आप ही भस्म होते हैं =

दीपे पतित्वा पतङ्गाः स्वयमेव भस्मीभवन्ति । (भस्मसाद् भवन्ति) ।

मेरी क्रोधाग्नि तुझे शीघ्र भस्म करेगी =

मम क्रोधाग्निः त्वाम् शीघ्रम (आशु) भस्मीकरिष्यति ।

शोक से उसका मुख मलिन हो गया =

शोकेन तस्य मुखं मलिनीभूतम् (मलिनं जातम्) ।

अपने निर्मल वंश को मलिन न करो =
स्वं निर्मलं वंशं (कुलं) मा मलिनीकुरु (मलिनय)।

—इत्यादि।

चौथा अध्याय

(१) प्रेरणार्थक क्रिया (Causative verbs)

हिन्दी की प्रेरणार्थक क्रियाओं का अनुवाद संस्कृत की प्रेरणार्थक (णिजन्त) क्रियाओं से किया जाता है। जैसे—

(पहली प्रेरणा)

लड़के को पढ़ाता है = बालकं पाठयति
,, जगाता है = ,, जागरयति
,, समझाता है = ,, बोधयति
रात बिताता है = रात्रिं यापयति
चाक को घुमाता है = चक्रं भ्रमयति
सोने को पिघलाता है = सुवर्णं द्रावयति
बच्चे को सुलाता है = शिशुं स्वापयति
बच्चे को दूध पिलाता है = शिशुं दुग्धं पाययति
,, लिटाता है = ,, शाययति
दूध को बढ़ाता है = दुग्धं वर्धयति—इत्यादि।

(दूसरी प्रेरणा)

तुम रोज़ मुझ से ही रोटी पकवाते हो =
त्वं प्रतिदिनं मयैव भोजनं पाचयसि।

नौकर से दरवाज़ा खुलवाओ =सेवकेन द्वारम् उद्घाटय ।

धाय से बच्चे के कपड़े बदलवाओं =

धात्र्या शिशोः वस्त्राणि परिवर्तय ।

यह सोना सुनार से पिघलवाओ =

इदं सुवर्णं सुवर्णकारेण द्रावय ।

मैंने सेठ से उसे सौ रुपये दिलवा दिये =

अहं श्रेष्ठिना तस्मै शतं रूप्यकाणि अदापयम् । इत्यादि ।

ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट है कि प्रेरणार्थक वाक्यों के अनुवाद में किसी प्रकार का विशेष परिवर्तन नहीं करना पड़ता। जो विभक्तियां हिन्दी में आती हैं वही संस्कृत में भी रक्खी जाती हैं। केवल कुछ एक धातुओं के योग में संस्कृत में 'प्रयोज्य कर्ता' में नियत अथवा विकल्प से हिन्दी में आने वाली विभक्ति से अन्य विभक्ति (द्वितीया अथवा तृतीया) आती है। जैसे—

बच्चे को अन्न खिलाता है = बटुना अन्नम् आदयति (खादयति)।

राम ने देवदत्त को गुड़ खिलाया = रामः देवदत्तेन गुडम् अभक्षयत् ।

इन वाक्यों में हिन्दी में 'बच्चे को' 'देवदत्त को' द्वितीया विभक्ति है परन्तु संस्कृत में अद्, खाद् और भक्ष् धातुओं के योग से तृतीया विभक्ति आती है—'बटुना' 'देवदत्तेन'।

नौकर से चटाई बनवाता है (लिवाले जाता है) =

भृत्येन (भृत्यं) कटं कारयति (हारयति)।

इसमें 'कृ' और 'हृ' धातुओं के योग से संस्कृत में 'तृतीया' विभक्ति के स्थान में विकल्प से 'द्वितीया' भी आती है।—इत्यादि। (विशेष व्याकरण में देखिये)।

(२) कर्मवाच्य और भाववाच्य।

हिन्दी में अधिक कर्तृवाच्य का ही व्यवहार होता है। कर्मवाच्य तथा भाववाच्य का उपयोग सर्वत्र नहीं होता। कर्मवाच्य सकर्मक क्रियाओं में और भाववाच्य अकर्मक क्रियाओं में होता है। हिन्दी के कर्मवाच्य तथा भाववाच्य प्रयोगों का अनुवाद संस्कृत के कर्मवाच्य तथा भाववाच्य प्रयोगों द्वारा करना चाहिए (कर्मवाच्य-भाववाच्य प्रयोगों के बनाने के नियम व्याकरण में देखिये)। जैसे—

कपड़ा सिया जाता है = वस्त्रं सीव्यते।

सूत काता जाता है = सूत्रं कर्त्यते।

चिट्ठी भेजी जाती है = पत्रं प्रेष्यते।

सख़्त सज़ा दी जाएगी = तीव्रो दण्डः प्रदास्यते।

ऐसा कहा जाता है = एवम् उच्यते (कथ्यते)।

गवाह पेश किए जाएं=साक्षिणः उपस्थाप्येरन् (उपस्थाप्यन्ताम्)

भैरव राग सवेरे गाया जाता है = भैरवरागः प्रातः गीयते।

पगड़ी ऐसे बांधी जाती है=उष्णीषम् एवं बध्यते।

यहां कपड़े मशीन से धोए जाते हैं = अत्र वस्त्राणि यन्त्रेण धाव्यन्ते (क्षाल्यन्ते)।

तरावट के लिए तेल मला जाता है = स्निग्धतायै तैलं मर्द्यते।

आज हुक्म सुनाया जाएगा = अद्य आज्ञा श्रावयिष्यते।
चोर पकड़ा गया है, = चोरः अग्राहि (गृहीतः)।
परसों लड़ाई में सौ सिपाही मारे गए थे =
परश्वः युद्धे शतं सैनिकाः अमार्यन्त (अहन्यन्त)।

आपका काम फिर किया जाएगा = भवतः कार्यं पुनः (अन्यदा) करिष्यते।

नौकर बुलाए गए हैं = सेवकाः (किङ्कराः) आकारिषत (आह्वायिषत, आकारिताः, आहूताः)।

तुमको इत्तिला दी जाती है = तुभ्यं सूचना दीयते (त्वं सूच्यसे)।
भार उतरवा लिया जाय = भारः अवतार्येत (अवतार्यताम्)।
यहां कैसे बैठा जाएगा = अत्र कथं (कथमत्र) स्थास्यते (स्थातुं शक्यते)। इत्यादि।

[संस्कृत में हिन्दी के समान कर्मवाच्य में कर्ता तृतीया विभक्ति में और कर्म प्रथमा विभक्ति में रक्खा जाता है तथा भाववाच्य में कर्ता तृतीया में रक्खा जाता है (कर्म इसमें होता ही नहीं)। (कर्मवाच्य-भाववाच्य बनाने के नियम व्याकरण में देखिये)। द्विकर्मक क्रियाओं का कर्मवाच्य में एक कर्म प्रथमा में रक्खाजाता है और एक द्वितीया में। दुह्, याच्, पच् दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, तथा नी, हृ, कृष्, वह्—ये धातु शुद्ध (primitive) क्रिया में भी द्विकर्मक होते हैं। अन्य सकर्मक धातु प्रेरणार्थक (causatsve) होने पर द्विकर्मक होते हैं।

दुह्—से मुष् तक बारह धातुओं के कर्मवाच्य में गौण कर्म(secondary object) प्रथमा में रक्खा जाता है तथा नी, हृ, कृष्, वह्, इन चार धातुओं के कर्मवाच्य में प्रधान कर्म (principal object) प्रथमा

में रक्खा जाता है। जैसे — गौः दुग्धं दुह्यते। भिक्षुकेण श्रेष्ठी वस्त्रं याच्यते। पथिकेन गोपः मार्गं पृच्छ्यते। धूर्तेन गोपालः रूप्यकाणि मुष्यते—इत्यादि तथा अजापालेन अजा ग्रामं नीयते (ह्रियते, कृष्यते, उह्यते)।

प्रेरणार्थक द्विकर्मक धातुओं के कर्मवाच्य में प्रधान कर्म प्रथमा में रक्खा जाता है। जैसे—तेन भृत्यः ग्रामं गम्यते (प्रेष्यते)। मोहनेन कारुः (शिल्पी) कटं कार्यते—इत्यादि।

परन्तु जिन प्रेरणार्थक धातुओं का अर्थ ज्ञान और खाना हो या जिनका कर्म शास्त्र (literary work) हो उनके कर्मवाच्य में इच्छानुसार प्रधान अथवा गौण दोनों में से कोई सा एक कर्म प्रथमा में रक्खा जाता है। जैसे—* गुरुणा शिष्यः धर्मं बोध्यते अथवा शिष्यं धर्मः बोध्यते। रामेण अतिथिः ओदनं भोज्यते अथवा अतिथिम् ओदनः भोज्यते। गुरुणा शिष्यः वेदम् अध्याप्यते अथवा शिष्यं वेदः अध्याप्यते। इत्यादि।

हिन्दी की कर्मवाच्य क्रियाएं बहुधा और भाववाच्य क्रियाएं प्रायः सब "सकना" के अर्थ में आती हैं (यह अर्थ प्रायः निषेधार्थक वाक्यों में ही आता है)। उनके अनुवाद में तुमुन्नन्त क्रिया या चतुर्थ्यन्त भाववाचक संज्ञा के आगे कर्मवाच्य अथवा कर्तृवाच्य में 'शक्' या उसकी समानार्थक दूसरी धातु का प्रयोग करना चाहिए। जैसे—

मुझसे खाना नहीं खाया जाता = मया भोजनं भोक्तुं न शक्यते (पार्यते)। अहं भोजनं भोक्तुं न शक्नोमि।

धूप में चला नहीं जाता = आतपे गन्तुं न शक्यते।

---

* गौणे कर्मणि दुह्यादेः प्रधाने नीहृकृष्वहाम्।
बुद्धिभक्षार्थयोः शब्दकर्मकाणां निजेच्छया॥
प्रयोज्यकर्मण्यन्येषां ण्यन्तानां लादयो मताः।

मुझसे कड़वी दवा नहीं पीजाती = मया कटु औषधं पातुं न शक्यते। अहं कटु औषधं पातु न शक्नोमि।

मुझसे आपके सामने नहीं गाया जाएगा = मया भवतः संमुखे गातुं न शक्यते। अहं भवतः संमुखे गातुं न शक्ष्यामि।

मुझसे झूठ नहीं बोला जाता = मया असत्यं भाषितुं न शक्यते। अहम् असत्यं भाषितुं न शक्नोमि।

मुझसे तुम्हारा दुःख नहीं देखा जाता = मया तव दुःखं द्रष्टुं न शक्यते। अहं तव दुःखं द्रष्टुं न शक्नोमि। इत्यादि।

'करते नहीं बनता, जाते नहीं बनता, ठहरते नहीं बनता'— इस प्रकार की क्रियाओं का अनुवाद भी ऊपर लिखी रीति से ही करना चाहिए। जैसे—

कर्तुं न शक्यते। गन्तुं न शक्यते। स्थातुं न शक्यते। इत्यादि।

["ऐसा सुनते हैं" का अनुवाद कर्तृवाच्य "एवं शृणुमः" की अपेक्षा कर्मवाच्य "एवं श्रूयते" करना अधिक अच्छा है।]

(३) कर्मकर्तृवाच्य

जिसमें कर्ता विवक्षित नहीं होता और कर्म को ही (उसकी विशेषता दिखाने के लिए) कर्ता मान लिया जाता है, उस प्रयोग को 'कर्मकर्तृवाच्य' कहते हैं। जैसे—चावल पकते हैं। चावल अचेतन होने से अपने आप तो नहीं पक सकते, इसलिए उनके पकाने वाला कोई और (चेतन) ही होता है। अतः 'चावल' पकाना क्रिया के कर्म हैं। जब हम कर्ता को नहीं कहना चाहते और कर्म 'चावलों' को ही कर्ता मान लेते हैं तब हम कहते हैं—'चावल पकते हैं'। इस प्रकार के वाक्यों

का अनुवाद 'कर्मकर्तृवाच्य' द्वारा करना चाहिए (इसके बनाने की रीति कर्मवाच्य के समान ही है। व्याकरण देखिये)। जैसे—

चावल पकते हैं = तण्डुलाः पच्यन्ते ।
लकड़ी चिरती है = काष्ठं (दारु) भिद्यते ।
कपड़े सिलते हैं = वस्त्राणि सीव्यन्ते ।
उसी वक्त दरवाज़ा खुला =
तत्कालमेव द्वारम् उदघाट्यत (अपाव्रियत)।
जूती घिसती है = उपानद् घृष्यते ।
ताला लग गया = तालकम् अयुज्यत ।
अंगुली कट गई = अङ्गुलिः अच्छिद्यत ।
गांठ बंधती है = ग्रन्थिः बध्यते ।
चार आदमी दिखते हैं = चत्वारो जनाः दृश्यन्ते ।
गेहूं के साथ घुन भी पिसता (पिस जाता) है =
गोधूमेन सह घुणोऽपि पिष्यते ।
आंधी से कई वृक्ष उखड़ गए (पड़े) =
वात्यया अनेके वृक्षा उदखन्यन्त (उत्खाताः)।
पांव ज़मीन में गड़ गए =
पादौ भूमौ न्यखन्येताम् (निखातौ)।
बेचारा मुफ़्त में लुट गया =
वराकः (तपस्वी) मुधैव अलुण्ट्यत (अमुष्यत)।
यहां कपड़े धुलते हैं = अत्र वस्त्राणि धाव्यन्ते (क्षाल्यन्ते)।
जो शरारत करते हैं वे पिटते हैं =
ये धौर्त्यम् आचरन्ति ते ताड्यन्ते ।
यहां अनाज तुलता है = अत्र अन्नं तोल्यते । इत्यादि ॥
["आना', 'पड़ना' और 'देना' 'देखना' के योग से बनने वाली 'सुनने में

आता है' 'सुनाई देता है' 'देख पड़ता है'—आदि संयुक्तक्रियाओं का अनुवाद भी कर्मकर्तृवाच्य द्वारा ही करना चाहिए। जैसे—ऐसा सुनने में आता है (सुनाई देता है)=एवं श्रूयते। सब कुछ आगे देख पड़ेगा (दिखाई दे जाएगा)=सर्वं पुरस्तात् द्रक्ष्यते। ऐसा जान पड़ता है=एवं प्रतीयते—इत्यादि।]

अभ्यास

ब्याह के कपड़े सिल रहे थे। सब दरवाजे आप ही खुल गए। बेड़ियां कट गईं। यह आदमी चोर दिखता है। सीधे आदमी यों ही लुट जाते हैं। तीर ज़मीन में गड़ गया। गढ़े में पानी भर गया। यहां बोरियां बनती हैं। इस मशीन में लकड़ियां आपही छिलती और चिरती हैं। हमारी चक्की में आटा बहुत बारीक पिसता है। आम बिकते हैं।

पांचवां अधिकरण

अव्यय

(१) क्रियाविशेषण

क्रियाविशेषण अनन्त हैं। अनुवाद के लिए उनका कोष लिखना इस पुस्तक का विषय नहीं है। यहां केवल अधिक प्रयोग में आने वाले तथा विशिष्ट क्रियाविशेषणों के विशेष प्रयोगों के अनुवाद की रीति बताई जाती है:—

(१) स्थानवाचक क्रियाविशेषण—

आगे=(यथायोग्य) अग्रे, अग्रतः, पुरस्तात्, पुरः, पुरतः। जैसे—

आगे चलो = अग्रे (अग्रतः, पुरः, पुरतः) गच्छ (याहि)।

आगे हो कर बोला = अग्रे = अग्रतः भूत्वा (अग्रतः = पुरतः समेत्य = पुरस्तात् = पुरः समुपस्थाय) अवदत् ।

पीछे=पृष्ठे, पृष्ठतः, पश्चात् । जैसे—

वह पीछे आ रहा है = सः पश्चात् (पृष्ठतः) आगच्छति ।
पीछे मत देखो = पृष्ठे (पृष्ठतः) मा पश्य ।

जो बड़ों का कहना नहीं मानते वह पीछे दुख उठाते हैं = ये गुरूणां कथनं न मानयन्ति (नाऽनुवर्तन्ते, नाऽनुसरन्ति) ते पश्चात् दुःखं भुञ्जते (प्राप्नुवन्ति) ।

जीवन दौड़ है । इसमें बलवान् आगे निकल जाते हैं और निर्बल पीछे रह जाते हैं = जीवनं धावनम् (धावनस्पर्धाप्रतिमम्) । अत्र बलवन्तः अग्रे (पुरः) प्रयान्ति (प्रसरन्ति) निर्बलाश्च पृष्ठे (पृष्ठतः) अवहीयन्ते ।

पास=पार्श्वे, समीपे, सविधे, अन्तिके, निकटे आदि । जैसे—

मेरे पास रुपये नहीं हैं = मम पार्श्वे (सविधे) रूप्यकाणि न सन्ति ।

गांव पास ही है = ग्रामः समीपे (अन्तिके, निकटे) एव अस्ति ।

['पास' जब कालवाचक क्रियाविशेषण के रूप में आता है तब इसका अनुवाद 'समीपे' आदि ही करना चाहिए 'पार्श्वे' नहीं । जैसे— अब दीवाली पास ही है =, इदानीम् (सांप्रतम्) दीपावली समीपे एव (आसन्ना एव) अस्ति । इत्यादि ।]

दूर=दूरे, दूरम् (दूरेण, दूरात्) । जैसे—

दूर मत जाओ = दूरे (दूरम्) मा गच्छ ।

पास हो या दूर = समीपे (अन्तिके) स्यात् दूरे वा ।

['दीवाली दूर है (कालवा०) = दीपावली दूरे (विप्रकृष्टा) वर्तते ।]

कहां (किधर)=कुत्र, क्व (कस्मिन् स्थाने) । जैसे—

श्याम कहां (किधर) गया = श्यामः कुत्र (क्व) गतः ।

["कहां गंगा और कहां गंदी नाली"—इस प्रकार के दो बातों में बड़ा अन्तर सुचित करने वाले वाक्यों में 'कहां' के लिये 'क्व' ही रखना चाहिए। जैसे—

क्व गङ्गा क्व च मलवाहिनी कुल्या । कहां जंगल में जटा बांधना और कहां तुम्हारा यह मनोहर शरीर = "विपिने क्व जटानिबन्धनं तव चेदं क्व मनोहरं वपुः" । इत्यादि । कहां से (किधर से), =कुतः । जैसे—कहां से आया = कुतः आगतः ।]

कहीं = (यथायोग्य) कुत्रचित्, कुत्रापि, क्वचित्, क्वापि (और कहीं = अन्यत्र कुत्रापि = क्वापि = क्वचित्) । जैसे—

कहीं गया होगा = कुत्रचित् (क्वचित्, क्वापि) गतो भवेत् ।

इसे मैंने कहीं देखा है = इमम् अहं क्वचित् (कुत्रचित्, क्वापि) दृष्टवानस्मि (अयं मया क्वचित्=कुत्रचित्=क्वापि दृष्टः) ।

इतना बड़ा वृक्ष और कहीं नहीं है = एतावान् विशालो वृक्षः अन्यत्र क्वापि (कुत्रापि) नास्ति । इत्यादि ।

["वह मुझसे कहीं सुखी है" इस प्रकार के वाक्यों में 'कहीं' का अर्थ 'अधिक' होता है । इसका अनुवाद इस प्रकार करना चाहिए— सः मत् (मत्तः, मदपेक्षया) अधिकं सुखी सुखितरः)—इत्यादि ।

कहीं से = कुतश्चित् । जैसे—कहीं से आता है कहीं चला जाता है = कुतश्चित् आगच्छति क्वचिद् गच्छति । इत्यादि ।]

यहां (इधर) =अत्र । वहां (उधर)=तत्र । जहां (जिधर)=यत्र । (यहीं=अत्रैव । वहीं=तत्रैव । सब जगह=

सर्वत्र । और जगह=अन्यत्र । और सब जगह=अन्यत्र सर्वत्र)। जैसे—

यहां रहो या वहां = अत्र निवस तत्र वा ।

जहां जाओगे वहीं सुख पाओगे =
यत्र गमिष्यसि तत्रैव सुखं प्राप्स्यसि ।

जिधर नज़र डालोगे उधर बिजली गिराओगे =
यत्र दृष्टिं (दृशं) क्षेप्स्यसि तत्र विद्युतं पातयिष्यसि ।

['कहां तक, यहां तक' आदि के लिये 'कुत्र, अत्र' आदि के आगे 'यावत्' या 'पर्यन्तम्' लगाया जाता है—कुत्रयावत् (कुत्रपर्यन्तम्) अत्रयावत् (अत्रपर्यन्तम्) इत्यादि । ये 'कहां तक' आदि जब परिमाण-वाचक होते हैं तब इनके लिये क्रम से 'कियत्, इयत, तावत्, यावत्' आते हैं । जैसे—

कहां तक (कितना) वर्णन करें = कियत् वर्णयेम (कियद् वर्णयेत)

यहां तक पढ़ा = इयत् (एतावत्) पठितम् । इत्यादि ।

जहां तहां = यत्र तत्र (सर्वत्र) । जैसे—

मैले कपड़ों से जहां तहां (जहां कहीं) बैठा जा सकता है=
मलिनैर्वस्त्रैर्यत्रतत्र=सर्वत्र (यत्र क्वापि) उपविश्यते ।

जहां का (की,के)तहां=पूर्वस्मिन्नेव स्थाने, यथावस्थितम । जैसे—सब चीजें जहां की तहां हैं=सर्वाणि वस्तूनि पूर्वस्मिन्नेव स्थाने (यथावस्थितम्) वर्तन्ते । इत्यादि ।

इधर (इधर से)=इतः । उधर (उधर से) = ततः ।
किधर (किधर से) = कुतः ।
जिधर (जिधर से) = यतः । जैसे—

इधर तपस्वियों का कार्य उधर बड़ों की आज्ञा =
"इतस्तपस्विकार्यम्, ततो गुरुजनाज्ञा" (शकुन्तला)

इधर बाघ उधर खाई = इतो व्याघ्रस्ततस्तटी ।

मुझे छोड़ किधर गई = मां विहाय कुतो गता।

जिधर जाता है उधर ही ठहर जाता है =
यतो याति तत एवाऽवतिष्ठते।

आप किधर से आ रहे हैं ? उधर से ही जिधर से आप =
भवान् कुतः आयाति ? तत एव, यतो भवान्।

इधर से जाना = इतो गन्तव्यम्। इत्यादि।

सामने =(यथायोग्य) संमुखे, पुरः, पुरस्तात्, पुरतः, अग्रतः। जैसे—

वह हमारा गांव सामने दिखाई देता है = असौ अस्माकं ग्रामः संमुखे (पुरः, पुरतः, पुरस्तात्) दृश्यते।

बाहर = बहिः। भीतर (अन्दर) = अन्तः (अभ्यन्तरे)। नीचे=नीचैः, अधः, अधस्तात्। ऊपर = उपरि (उपरिष्टात्)। जैसे—

कई बाहर जाते हैं, कई भीतर जाते हैं, कोई नीचे और कोई ऊपर= केचित् बहिः गच्छन्ति (निर्गच्छन्ति), केचित् अन्तः गच्छन्ति (प्रविशन्ति); केचित् नीचैः (अधः अधस्तात्) गच्छन्ति केचिच्च उपरि (उपरिष्टात्)।

['बाहर से, भीतर से, नीचे से, ऊपर से' के लिए क्रम से 'बहिस्तः (बाह्यतः), अन्तस्तः (अभ्यन्तरतः), नीचैस्तः (अधस्तः), उपरितः' आते हैं। जैसे—, बाहर से खींचो = बहिस्तः आकर्ष। ऊपर से गिरा = उपरितः पतितः। इत्यादि।]

परे = परतः। दाहिने = दक्षिणतः। बाएं = वामतः। जैसे—

परे जाओ = परतो गच्छ।

दाहिने या बाएं मत देखो, सामने ही देखो =
दक्षिणतो वामतो वा मा पश्य, संमुखे (पुरः) एव पश्य।

[उत्तर की ओर, पश्चिम की ओर आदि के लिये उत्तरतः, पश्चिमतः आदि। सब ओर = सर्वतः (समन्तात्, विष्वक्)। जैसे— उत्तर की ओर जाओ, पच्छिम की ओर नहीं = उत्तरतो गच्छ मा पश्चिमतः। सब ओर घूमता है = सर्वतः (समन्तात, विष्वक्) भ्रमति। इत्यादि।]

(२) कालवाचक

आज = अद्य। (पिछले) कल = ह्यः। (आने वाले) कल = श्वः। परसों = परश्वः। जैसे—

मैं कल आया हूं आज ठहर कर कल या परसों वापस जाऊंगा = अहं ह्यः आगमम् अद्य स्थित्वा श्वः परश्वो वा प्रतिगमिष्यामि (प्रतिनिवर्तिष्ये)।

[आज से = अद्यप्रभृति, अद्यारभ्य, अद्यतः। कल से = ह्यस्तः, ह्यः प्रभृति, श्वस्तः, श्वः प्रभृति—इत्यादि। आज तक = अद्य यावत्, अद्यपर्यन्तम, कल तक = ह्यो यावत्, ह्यःपर्यन्तम्, श्वो यावत्, श्वः-पर्यन्तम्—इत्यादि।]

अब = इदानीम्, अधुना, संप्रति, सांप्रतम्। तब = तदा, तदानीम्। जब = यदा। कब = कदा। कभी = कदाचित् (कदाचन), कदाचिदपि, कदापि। जैसे—

अब यहीं ठहरो जब मैं चलूंगा तब चलना = इदानीम् (अधुना, संप्रति, सांप्रतम्) अत्रैव तिष्ठ, यदा अहं गमिष्यामि तदा (तदानीम्) गन्तव्यम् (गमिष्यसि)। कब गया = कदा गतः। कभी आना = कदाचित (कदाचन) आगन्तव्यम्। वह कभी नहीं आएगा = सः कदापि (कदाचिदपि) न आगमिष्यति। इत्यादि।

[अब से = इतः प्रभृति, इत आरभ्य । तब से = तदाप्रभृति तदाऽऽरभ्य, ततः प्रभृति, तत आरभ्य । इसी प्रकार 'जब से' आदि के लिए 'यतः प्रभृति, यदाऽऽरभ्य' आदि । अभी = इदानीमेव, अधुनैव आदि । तभी = तदैव । जभी = यदैव । फिर = पुनः । पहले = प्रथमम्, पूर्वम्, प्राक् । पीछे = पश्चात्, अनन्तरम् । जैसे—अब से कब तक यहां ठहरना होगा = इतः प्रभृति कदापर्यन्तम् अत्र स्थातव्यं भविष्यति । परन्तु "अब से चार घड़ी पहले आया था" इस प्रकार के वाक्यों में 'अब से' के लिये केवल 'इतः' आता है । इतः चतस्रो घटिकाः पूर्वम् आगमत् । अभी जाओ = इदानीमेव गच्छ । परन्तु "अभी ठहरो" इस प्रकार के वाक्यों में 'अभी' के लिए 'तावत्' रखना चाहिए । तिष्ठ तावत् । इत्यादि ।

कभी कभी = अन्तरा अन्तरा (कदाचित् २)। कभी कभी आता है = अन्तरा अन्तरा आगच्छति । इत्यादि ।

जब तब (कभी न कभी, कभी तो) = यदा तदा । जब तब (एक न एक दिन) होना ही है = यदा तदा भाव्यमेव । कब का (के की) = कब से = चिरात्, बहोः कालात्, कः कालः । जैसे—मैं कब का (कबसे) तुम्हें ढूंढ रहा हूं = कः कालः (चिरात्, बहोः कालात्) त्वाम् अन्विष्यामि । इत्यादि ।]

इतने में = एतस्मिन्नन्तरे । आज कल = अद्यत्वे । लगातार = निरन्तरम्, अविरतम्, सन्ततम् । अक्सर = प्रायः । कई बार = अनेकशः । एक (पहले), दूसरे, तीसरे आदि = प्रथमम् (प्रथमतः), द्वितीयम् (द्वितीयतः), तृतीयम् (तृतीयतः) आदि । निदान = आखिर = अन्ते । जैसे—

इतने में गोपाल दूध ले आया =
एतस्मिन्नन्तरे गोपालो दुग्धम् आनीतवान् ।
आज कल आप क्या करते हैं =
अद्यत्वे भवान् किं करोति (किंव्यापारः) ?
सारा दिन लगातार लोग आते रहते हैं =
सर्वं दिनं निरन्तरम् (अविरतम) लोकाः (जनाः) आगच्छन्ति ।
मैं अक्सर वहां जाया करता हूं = अहं प्रायः तत्र गच्छामि ।

एक मैं बीमार, दूसरे कुनबे का भार, तीसरे सम्बन्धियों का अत्याचार =

प्रथमम् (प्रथमतः) अहं रुग्णः, द्वितीयम् (द्वितीयतः) कुटुम्बस्य भारः, तृतीयम् (तृतीयतः) संबन्धिनाम् अत्याचारः । निदान उसने कहा = अन्ते तेन कथितम् । इत्यादि ।

(३) परिमाणवाचक

बहुत = बहु, प्रभूतम् । बिलकुल = सर्वथा, अत्यन्तम् । खूब=(यथायोग्य) साधु, शोभनम्, बहु, प्रभूतम् । जैसे—

बहुत मत बोल = बहु मा भाषस्व (जल्प) ।
यह बहुत (खूब) खाता है = अयं बहु प्रभूतम् भुङ्क्ते ।
अब बुखार बिलकुल उतर गया है =
संप्रति ज्वरः सर्वथा (अत्यन्तम्) अपगतः ।
खूब कही = साधु उक्तम् । खूब दौड़ता है = साधु धावति ।

कुछ (तनिक, ज़रा) = किञ्चित्, ईषत्, मनाक् । ज़्यादा = अधिकम् । थोड़ा (कम) = अल्पम् (न्यूनम्) । सिर्फ़ = केवलम् । बस = अलम् । काफ़ी = अलम्,

पर्याप्तम् । चाहे = कामम् । ठीक = सम्यक् (साधु, यथार्थम्) । जैसे--

कुछ बोलो = किञ्चिद् वद ।

ज़रा हट जाओ = किञ्चित् (ईषत्, मनाक्) अपसर ।

ज़्यादा दौड़ोगे तो थक जाओगे =

अधिकं (बहु) धाविष्यसि चेत् श्रान्तो भविष्यसि ।

वह थोड़ा (बहुत थोड़ा) बोलता है =

सः अल्पम् (अत्यल्पम्) भाषते ।

यह तो सिर्फ़ गाता है, बजाता नहीं =

अयं तु केवलं गायति (गायत्येव), न वादयति ।

बस, अब न कहो = अलम्, इदानीं मा ब्रूहि ।

यह घोड़ा काफ़ी दौड़ता है = अयं घोटकः पर्याप्तम् (अलम्) धावति ।

चाहे अभी ले जाए = कामम् इदानीमेव नयेत् ।

काम ठीक करो = कार्यं सम्यक् (साधु) संपादय ।

ठीक (ठीक ठीक) बतादो = यथार्थं कथय (निर्दिश) ।

इतना, उतना आदि के लिये इयत्, (एतावत्), तावत् आदि (पूर्वोक्त) । कम से कम = अवरतः । ज़्यादा से ज़्यादा = अधिकतः । बारी बारी से = वारशः, पर्यायेण । एक-एक-करके = एकैकशः । टुकड़े २ = खण्डशः । तिल २ = तिलशः । अक्षर २ = अक्षरशः । (दाना २ करके) = कणशः । इत्यादि । जैसे—

इतना मत हँस = एतावत् (इयत्) मा हस ।

कितना शर्माओगे = कियत् लज्जिष्यसे ।

कम से कम बीस और ज्यादा से ज्यादा तीस आदमी लाना = (भवान्) अवरतः विंशतिम् अधिकतश्च त्रिंशत् जनान् आनेष्यति । (अवरतो विंशतिः अधिकतश्च त्रिंशत् जना आनेतव्याः)

बारी २ से सब आएं = वारशः (पर्यायेण) सर्वे आगच्छन्तु ।

एक-एक-करके सब चले गए = एकैकशः सर्वे गताः ।

लकड़ी टुकड़े २ करदी = काष्ठं खण्डशः कृतम् ।

तिल २ करके काट दिया = तिलशः कृत्तम् ।

अक्षर २ सत्य है = अक्षरशः सत्यम् ।

कबूतरों ने चावल दाना २ (दाना २ करके) चुग लिये = कपोतैः तण्डुलाः कणशः भक्षिताः । इत्यादि ।

(४) रीतिवाचक ।

कैसे (क्योंकर) = कथम् । ऐसे (यों) = एवम् । जैसे (ज्यों) = यथा । वैसे (त्यों) = तथा । जैसे—

कैसे (क्योंकर) करूंगा = कथं करिष्यामि ।

ऐसे (यों) करो = एवं कुरु ।

जैसे लेते हो वैसे देदो = यथा गृह्णासि तथा देहि ।

ज्यों ज्यों इलाज करते हैं त्यों त्यों रोग बढ़ता है ।

यथा यथा प्रतिकारः (उपचारः, चिकित्सा) क्रियते तथा तथा रोगो वर्धते ।

[यों ही = अकारणम् (अकारणमेव), अनिमित्तम् (अनिमित्तमेव), 'एवमेव' नहीं । जैसे:—

योंही क्यों चिल्लाते हो = अकारणम् (अनिमित्तम्) किमिति (किम्) आक्रन्दसि ।

यह लड़का योंही आया करता है =

अयं बालकः अकारणमेव (अनिमित्तमेव) आगच्छति ।

जैसे तैसे (ज्यों त्यों करके, किसी तरह) = कथञ्चित्, कथमपि, कृच्छ्रेण। जैसे:—

जैसे तैसे (ज्यों त्यों करके) घर पहुंचा=
कथञ्चित् (कथमपि, कृच्छ्रेण) गृहं प्राप्नवम् (प्राप्तः)।
जिस तरह भी हो=येन केन प्रकारेण।
जिस तरह भी हो पुरुष प्रसिद्ध हो जाए (प्रसिद्धि प्राप्त करे) = "येन केन प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत्"।]

धीरे = शनैः (मन्दम्) । अचानक (एकाएक, एकदम)= अकस्मात्, सहसा । साथ साथ = सह (सहैव), एकपदे, युगपत्। जैसे:—

धीरे (धीरे २) चलो=शनैः (मन्दम् २) गच्छ (याहि)।
अचानक बीमार हो गया=अकस्मात् रुग्णो जातः।
एकाएक सब चिल्ला पड़े=
अकस्मात् (सहसा) सर्वे आक्रन्दितुं प्रवृत्ताः।
हम साथ साथ चलेंगे=वयं सहैव गमिष्यामः।
दोनों काम साथ साथ (एकसाथ) हो जाएंगे=
उभे कार्ये युगपत् भविष्यतः (संपत्स्येते)।

यह अचानक (एकदम) मुझे उस प्रिया से असह्य वियोग उपस्थित हुआ है=
"अयमेकपदे(सहसा)तया वियोगः प्रियया चोपनतः सुदुःसहो मे"
(शकुन्तला ६)

(५) कुछ अन्यक्रियाविशेषण।

इसलिए = एतदर्थम्, एतन्निमित्तम् । किसलिए = किमर्थम्, किंनिमित्तम् । जिसलिए = यदर्थम्, यन्निमित्तम्) । जैसे:—

वह इसलिए जाता है कि उसके विना गये काम नहीं होगा= सः एतदर्थम् (एतन्निमित्तम्) याति यत् तस्मिन् अगते कार्यं न सेत्स्यति (तस्मिन्नगते कार्यं न सेत्स्यतीति (इत्यतः) स याति । किसलिए जाते हो = किमर्थं (किंनिमित्तं) यासि ।

सचमुच = सत्यम् । जैसे--

सचमुच ऐसा ही हूं="सत्यम् इत्थंभूत एवास्मि" (शकुन्तला ३)
सचमुच मैं वहां नहीं जाऊंगा = सत्यं नाहं तत्र गमिष्यामि ।

हां (क्यों नहीं, और क्या)=आम्, बाढम्, अथ किम् । जैसे-

क्या नहाओगे ? हां (क्यों नहीं) =
अपि स्नास्यसि (स्नास्यसि किम्) ? आम् (बाढम्, अथ किम्।)

सच पूछिये तो (सचमुच)=यत्सत्यम् । जैसे—

सच पूछिये तो मेरे मन में भी बड़ी प्रसन्नता हो रही है = "यत्सत्यं........ममापि चेतसि सुमहान् परितोषः प्रादुर्भवति "। (मुद्राराक्षस १) इत्यादि ।

अभ्यास

आगे २ देखिए होता है क्या । यहां पास ही रहता हूं । सामने देखो । कहां बाज़ कहां चिड़िया ? सरसों यहीं बोओ, और सब जगह गेहूं । कहीं रहो, हमें क्या । अभी चलो ? इधर से आया, उधर चला गया । वह बहुत दूर रहता है । मैंने पुस्तक को अक्षर २ याद कर लिया है । सिर्फ़ ईश्वर के भरोसे मनों गेहूं खेतों में दाना २ करके बिखेर दिया है । चाहे नौकर वहीं मर जाए, उनको इससे क्या । अचानक पटाख़ा हुआ । ऊपर, नीचे, बाहर, भीतर, दाएं, बाएं समीप, दूर, सब जगह वही दिखाई देता है । जहां जाऊंगा वहीं कमाकर

खाऊंगा। राम नहाने लगा इतने में श्याम भी आगया। सचमुच मुझे याद नहीं। इसीलिए आया हूं। राम और श्याम साथ-साथ आ रहे थे। दोनों एकसाथ गिरपड़े। ज्यों २ उमर बढ़ती हैं त्यों २ चिन्ता भी बढ़ती है। इतना क्यों चिल्लाते हो। आहिस्ता बोलो। ज्यों त्यों करके खर्च पूरा करता हूं। योंही गालियां देने लग गया। सच पूछिए तो मुझे इससे रत्ती भी दुख नहीं। जैसे कहोगे वैसे करूंगा। एकदम (अचानक) रो पड़ा। तुमने तो मुझे बिल्कुल भुला दिया। ऐसा क्यों कहते हो। घोड़े को ठीक चलाओ।

दूसरा अध्याय

(२) सम्बन्ध-बोधक

आगे, पीछे, पहले, नीचे, ऊपर आदि क्रिया-विशेषण ही बहुधा (संज्ञा शब्दों या उनके समान दूसरे शब्दों के आगे) सम्बन्ध-बोधक के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। इसलिए इनका अनुवाद पूर्वोक्त ही होगा (अत एव इनके विषय में विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं)। जैसे:—

आगे चलो = अग्रे (अग्रतः) गच्छ (क्रियावि०) । यह उसके आगे रक्खो = इदं तस्य अग्रे (अग्रतः) निधेहि (सम्बन्धबो०)।

नीचे जाओ = नीचैः (अधस्तात्) याहि (क्रियावि०)।

खाट के नीचे देख = खट्वाया अधस्तात् पश्य (सम्बन्धबो०) इत्यादि।

पहले (क्रियावि०) नहाओ = प्रथमं (पूर्वं) स्नाहि।

खाने से पहले (सम्बन्धबो०) नहाओ = भोजनात् पूर्वं (प्राक्) स्नाहि। इत्यादि।

इनमें से बहुत से सम्बन्ध-बोधकों के पहले आने वाले संज्ञाशब्दों के आगे हिन्दी में और विभक्तियां आती हैं और उनके संस्कृत अनुवाद में और आती हैं। यह बात ध्यान देने योग्य है। (इसके लिए आगे कारक प्रकरण देखिये)।

'बदले, बाबत, ज़बानी, मुताबिक़, बनिस्बत, ज़रीये, मार्फ़त' के लिए क्रम से 'स्थाने, विषये, मुखात्, अनुसारम्, अपेक्षया,

द्वारा', आते हैं जिनका सम्बन्धी शब्द के साथ प्रायः समास हो जाता है। जैसे—

मोहन के बदले श्याम को भेज दो=
मोहनस्य स्थाने (मोहनस्थाने) श्यामं प्रेषय।
राम की बाबत कहा= रामस्य विषये कथितम्।
श्याम की ज़बानी सुना= श्यामस्य मुखात् श्रुतम्।
मेरे कहे मुताबिक काम करो=मम कथनानुसारं कार्यं कुरु।
श्याम मोहन की बनिस्बत ज्यादा समझदार है = श्यामो मोहनापेक्षया (मोहनात्) अधिकं बुद्धिमान् (बुद्धिमत्तरः)।
यह काम आपके ज़रीये होगा=
इदं कार्यं भवद्द्वारा (भवद्द्वारेण) भविष्यति (संपत्स्यते)।
मेरी चिट्ठियां आपकी मार्फ़त आएंगी=
मम पत्राणि भवद्द्वारा आगमिष्यन्ति।—इत्यादि।

[मैं यहां (क्रियावि०) रहता हूं=अहं अत्र वसामि। परन्तु 'यहां' जब सम्बन्धबोधक होता है तब इसका अनुवाद यथायोग्य 'गृहे, सविधे' आदि करना चाहिए। जैसे:—

श्याम मेरे यहां (सम्बन्धबो०) रहता है =
श्यामो मम गृहे (सविधे) वसति।]

अभ्यास १०

सीता लक्ष्मण के आगे और राम के पीछे जारही थी। खाने से पहले नहाना चाहिए। भूमि के ऊपर और आकाश के नीचे। घर से दूर। उसका मकान हमारे मकान से परे है। आज हम श्यामलाल के यहां रहेंगे। घर के अन्दर रोशनी दिखाई देती है। इसके बाद क्या करना

है। तुम्हारे लिए ही सब लोग यहां आये हैं। आप की ख़ातिर फल मंगवाये हैं। मेरी बनिस्वत तुम ज़्यादा कमाते हो। मोहन की बाबत क्या २ मालूम हुआ। तुम्हारे ही सहारे जीते हैं। पहाड़ से परे नदी है। श्याम की ज़बानी सब हाल मालूम हुआ। उसके बदले मैं चला जाऊंगा। कौन मूर्ख महल के पलटे झोंपड़ी लेगा। वे तुम्हारे ज़रीये वहां पहुंचे। रोटी के पलटे फल दिये।

(२) योजक

और, तथा, एवं = च * । भी = अपि । जैसे—

तुम खाना खाओ और मैं पानी पीता हूं =
त्वं भोजनं भुङ्क्ष्व अहं च जलं पिबामि।
राम और लक्ष्मण गये =
रामो लक्ष्मणश्च (रामश्च लक्ष्मणश्च) गतौ।
उसने तीर छोड़ा और शेर गिरा =
तेन बाणः (शरः) मुक्तः सिंहश्च पतितः।

[ऐसे वाक्यों में 'और' से दोनों क्रियाओं का समकाल में होना सूचित होता है। ऐसे वाक्यों में संस्कृत में प्रायः दोनों क्रियाओं के आगे 'च' रक्खा जाता है। जैसेः—

मैं उत्कण्ठित होकर पश्चात्ताप से रो रहा हूं और वसन्तमास का सुख आ रहा है =

---

* हिन्दी में 'और' के समान संस्कृत में 'च' दो वाक्यों या शब्दों के बीच में नहीं आता। 'च' प्रायः दूसरे वाक्य के पहले शब्द के बाद या उसकी क्रिया के बाद आता है और जहां यह दो शब्दों को मिलाता है वहां दूसरे शब्द के या दोनों शब्दों के बाद आता है, जैसे कि ऊपर संस्कृत वाक्यों में आया है ('या' के लिये आने वाले 'वा' की स्थिति भी 'च' के समान ही है)।

"अनुशयादनुरोदिमि चोत्सुकः सुरभिमाससुखं समुपैति च" (शकुन्तला ६)

इसी अर्थ में 'इधर—उधर' आते हैं । इनका अनुवाद भी 'च' से (या कभी २ 'एकतः,–अन्यतः (अपरतः)'से और कहीं२ भाववाचक संज्ञा के आगे 'समकालम्' जोड़ कर अथवा अन्त में 'मात्र' या 'एव' लगा कर 'क्तान्त' शब्द से) करना चाहिए । जैसेः—

इधर मुझे रोग की चिन्ता सता रही है उधर शादी आ रही है = रोगचिन्ता च मां बाधते (व्यथयति) विवाहश्च संनिधत्ते ।
(रोग-चिन्ता मां बाधते च विवाहः सन्निधत्ते च)
एकतः रोग चिन्ता मां बाधते अन्यतः (अपरतः) विवाहः संनिधत्ते ।)
इधर वह बाहर निकला उधर मकान की छत गिर पड़ी =
तस्य बहिरागमनसमकालमेव तस्मिन् बहिरागतमात्रे=बहिरागत एव) भवनस्य छादनमपतत । इत्यादि ।]

राम ने धनुष उठाया तथा खैंच कर तोड़ डाला =
रामेण धनुः उत्थापितम्, आकृष्य भग्नं च ।
मैं उसे देख विस्मित एवं मुग्ध हो गया =
अहं तं दृष्ट्वा (विलोक्य) विस्मितो मुग्धश्च अभूवम् ।
मैं भी जाऊंगा = अहमपि गमिष्यामि ।

["उठो भी" "दो भी"—इस प्रकार के वाक्यों में 'भी' का अनुवाद 'तावत्' या 'अवश्यम् ' से करना चाहिए । जैसे—

उत्तिष्ठ तावत् (अवश्यम उत्तिष्ठ) । देहि तावत् (अवश्यं देहि) । इत्यादि ।

"तुम वहां जाओगे भी" इस प्रकार के वाक्यों में 'भी' का अनुवाद 'इति न विश्वसिमि (प्रत्येमि)'या 'इति न मे विश्वासः (प्रत्ययः)' करना चाहिए । जैसे—त्वं तत्र गमिष्यसि—इति न विश्वसिमि (प्रत्येमि) = इति न मे विश्वासः (प्रत्ययः) । इत्यादि ।]

ही नहीं—भी (= न केवल–भी)=न केवलम्-अपि।
जैसे—

मालविका रूप में ही नहीं शिल्प में भी अद्वितीय है =
"मालविका न केवलं रूपे शिल्पे ऽपि अद्वितीया।"
(मालविकाग्नि० १)

मोहन के पिता ही नहीं, चचा भी माने हुए वैद्य हैं =
न केवलं मोहनस्य पिता तस्य पितृव्योऽपि प्रतिष्ठितो वैद्यः।

उस राजा का धन ही नहीं, उसका गुणवान् होना भी परोपकार के लिये ही था =

"वसु तस्य विभोर्न केवलम्, गुणवत्ताऽपि परप्रयोजना" इत्यादि। (रघुवंश ८। ३१)

या = (यथायोग्य) वा, उत, आहो, आहोस्वित्, नु।
जैसे—

इनमें से कौन जाएगा, राम या गोविन्द ? =
एतयोः कः (कतरः) गमिष्यति रामो (रामो वा) गोविन्दो वा (राम उत गोविन्दः) ?

इस काम को दो ही कर सकते हैं श्याम या मनोहर =
इदं कार्यम् द्वौ एव कर्तुं शक्नुतः (प्रभवतः) श्यामः (श्यामो वा) मनोहरो वा।

यह मूर्ख है या विद्वान् ?=अयं मूर्खो विद्वान् वा ?
(अयं मूर्ख उत (आहोस्वित्) विद्वान् ?)

वह सुपना था या माया थी या बुद्धिभ्रम था =
तत् "स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु" (शकुन्तला ५)

['या' के अर्थ में आने वाले 'चाहे' और 'कि' का अनुवाद भी 'वा' से ही करना चाहिये। जैसे—अपने देश में रहे चाहे परदेश में =
स्वदेशे (स्वदेशे वा) निवसेत् परदेशे वा।

चाहे राम जाए चाहे श्याम = रामो (रामो वा) गच्छेत् श्यामो वा। आओगे कि नहीं = आगमिष्यसि न वा।]

नकि, नहीं = नतु । जैसे—

ये सुख भोगने के लिए आए हैं नकि दुख उठाने के लिए=
इमे सुखं भोक्तुम् आगता नतु दुःखमनुभवितुम् ।
हम पढ़ने आए हैं, खेलने नहीं =
वयं पठितुम् आगता नतु क्रीडितुम् ।

नहीं तो = नोचेत् (नैवंचेत्), अन्यथा । जैसे—

पास हो जाओगे तो अगली जमायत में जाओगे नहीं तो इसी में रहना पड़ेगा =

यदि उत्तीर्णो भविष्यसि तर्हि (उत्तीर्णो भविष्यसि चेत्) अग्रिमायां श्रेण्यां गमिष्यसि अन्यथा (नोचेत्, नैवंचेत्) अस्यामेव अवस्थातव्यं भविष्यति।

परहेज़ से रहो, नहीं तो बीमार हो जाओगे =
संयमेन वर्तस्व, नोचेत् (अन्यथा) रुग्णो भविष्यसि ।

पर (लेकिन) = परम्, किन्तु । जैसे—

वहां तो मैं जाऊंगा पर (लेकिन) यहां कौन रहेगा =
तत्र तु अहं गमिष्यामि परम् अत्र कः स्थास्यति ।

दोनों ही शास्त्रज्ञ और प्रयोग में चतुर हैं लेकिन शिष्या के विशेष गुण के कारण गणदास का उपदेश ऊंचा (बढ़कर) है =

"द्वावपि किलागमिनौ प्रयोगनिपुणौ च किन्तु शिष्यागुण-विशेषेण गणदास उन्नमितोपदेशः" (मालविकाग्नि० १)

बरन (बल्कि) = प्रत्युत, अपितु । जैसे—

यह (मेरा) पुत्र न केवल जीवित ही है वरन (बल्कि) हाथ जोड़े हुए गरुड़ द्वारा उपासना किया जा रहा है = "अयं वत्सो न केवलं ध्रियते प्रत्युत (अपितु) प्राञ्जलिना गरुडेन पर्युपास्यमानस्तिष्ठति" (नागानन्द ५)।

वह (बच्चों का जोड़ा) न सिर्फ उस (मुनि) के वरन पशु-पक्षियों के भी हृदयों को स्नेह युक्त बना रहा है =

"तत् (दारकद्वयम्) खलु न केवलं तस्य, अपितु तिरश्चामपि अन्तःकरणतत्त्वानि उपस्नेहयति" (उत्तरराम० २)

इसलिए (इस कारण, इस वास्ते)—इति, अतः, इत्यतः (इसीलिए = अत एव)। जैसे—

मुझे भूख नहीं है इसलिए (इस कारण, इस वास्ते) मैं खाना नहीं खाऊंगा = मम बुभुक्षा नास्ति–इति (अतः) भोजनं न भोक्ष्ये।

यहां मेरा मन नहीं लगता, इसलिये जाता हूं = अत्र मे मनो न रमते इति (इत्यतः) गच्छामि।

तुम नहीं जाती इसीलिए मैं जाता हूं =

त्वं न गच्छसि अत एव अहं गच्छामि।

तपोवनवासियों के कार्य में बाधा न हो, इसलिए रथ को यहीं रक्खो =

"तपोवनवासिनामुपरोधो मा भूत्, इति इहैव रथं स्थापय" (शकुन्तला १)

[इसलिए कि = यतः, इति। जैसे–तुम किसलिए बोलते हो? इसलिए कि मेरा अधिकार है = त्वं किमर्थं ब्रूषे (वदसि)? यतो ममाऽधिकारः। 'इति' से इसका अनुवाद करने में वाक्य का क्रम बदल दिया जाता है ('इसलिए' वाले वाक्य को पीछे रक्खा जाता है)। जैसे—पत्र इसलिए भेजा था कि

तुम जल्दी आजाओ = त्वं शीघ्रम् आगच्छेः इति पत्रं प्रेषितमासीत् (प्रैष्यत)।

"कुआं, इसलिए कि वह पत्थरों से बना हुआ था, अपनी जगह पर शिखर की तरह खड़ा रहा" इस प्रकार के वाक्यों के अनुवाद में 'इसलिये कि' वाले वाक्य के आगे अथवा उसका एक समस्तपद (कुएं का विशेषण) बना कर उसके आगे 'इति' लगाना चाहिए या उस समस्तपद से 'त्व' भाववाचक प्रत्यय लगाकर उसे पञ्चमी विभक्ति में रखना चाहिए। जैसे-- कूपः प्रस्तरैर्निर्मितः (घटितः, निबद्धः) आसीत् इति (= प्रस्तरनिर्मित इति) स्वस्थाने शिखरवत् अवातिष्ठत (कूपः प्रस्तरनिर्मितत्वात् शिखरमिव स्वस्थाने अवातिष्ठत = स्वस्थानान्नाऽचलत्)।]

क्योंकि = यतः। जैसे—

मैं तुम्हारे साथ नहीं जासकता, क्योंकि मुझे आज बहुत से काम हैं =

अहं त्वया सह (साकं, सार्धं) गन्तुं न शक्नोमि, यतो ममाऽद्य भूयांसि कार्याणि वर्तन्ते (ममाऽद्य भूयांसि कार्याणि वर्तन्ते इति नाऽहं त्वया सह गन्तुं पारयामि)।

ताकि (जिससे, जिसमें) = येन, यथा। जैसे—

जल्दी आओ ताकि देर न हो जाय =
शीघ्रम् आगच्छ येन (यथा) विलम्बो न जायेत।

तू उस चोर सिंह को (मुझे) दिखा ताकि मार डालूं =
"त्वं दर्शय तं चौरसिंहं यथा व्यापादयामि" (पञ्चतन्त्र १।८)

स्वामिन्, मेरे प्राणों से (अपनी) प्राणरक्षा कीजिए जिससे मुझे दोनों लोकों (में पुण्य) की प्राप्ति हो =

"स्वामिन्, मम प्राणैः प्राणयात्रा विधीयतां येन ममोभय-

लोकप्राप्तिर्भवति" (पञ्चतन्त्र १। ११)

अभी मेरे पास आओ जिसमें (ताकि) तुम्हें सब कुछ समझा दूं =

इदानीमेव मम पार्श्वे (मम सविधे, मदन्तिकम्) आगच्छ येन त्वां सर्वं बोधयेयम्।

जो—तो = यदि (चेत्)—तर्हि (तदा, ततः)। जैसे—

जो भूख नहीं तो मत खाओ =

यदि बुभुक्षा नास्ति तर्हि मा भक्षय।

['चेत्' को दूसरे वाक्य में रक्खा जाय तो 'तर्हि' नहीं रक्खा जाता। जैसे—बुभुक्षा नास्ति चेत् मा भक्षय। वाक्यों का क्रम बदल दिया जाय तो भी 'तर्हि' नहीं रक्खा जाता। जैसे—मा भक्षय यदि बुभुक्षा नास्ति। "क्रियते यदि एषा कथयति"। (उत्तरराम० १)]

जो तू गया तो मैं भी जाऊंगा =

यदि त्वं गतः (गमिष्यति) तदा अहमपि गमिष्यामि।

(त्वं गतश्चेत् अहमपि गमिष्यामि)

जो धन हो तो भी न दूं =

यदि धनं स्यात् तदाऽपि न दद्याम्।

जो उसने पूछा तो मेरा नाम बता देना =

यदि तेन पृष्टं तदा मम (मदीयं) नाम निर्देष्टव्यम्।

जो नहीं खाया तो क्या = यदि न भुक्तं ततः किम्।

यद्यपि—तोभी (फिर भी) = यद्यपि—तथापि (चाहे—तोभी = कामं—तथापि)। जैसे—

यद्यपि मैं जा सकता हूं तो भी (फिर भी) आप के बिना काम नहीं होगा =

यद्यपि अहं गन्तुं पारयामि तथापि भवन्तं विना (भवन्तमन्तरेण) कार्यं न भविष्यति (संपत्स्यते)।

ईश्वर सदा सहायता करता है तोभी (फिरभी) मनको धीरज नहीं =

(यद्यपि) ईश्वरः सदा साहाय्यं करोति तथापि मनसो धैर्यं न भवति (मनो धैर्यं नालम्बते)।

चाहे—परन्तु = कामम्—परम्। जैसे—

चाहे कितना समझाइए परन्तु मूर्ख के मन चेत नहीं =
कामं भूयः प्रबोध्यताम्, परं मूर्खस्य मनसि न प्रबोधः।

कि (=इतने में) = वर्तमानकालिक क्रिया के साथ यावत्—तावत् या केवल यावत्। जैसे—

मैं जाने को ही था कि (इतने में) आप आगए =

यावत् अहं गन्तुमिच्छामि (जिगमिषामि) तावद् भवान् आगतः। अहं गन्तुमुद्यत एव (गमनोन्मुख एव, जिगमिषुरेव) अभूवम् यावद्भवान् आगतः।

कि (जो) = यत्। जैसे—

मैं चाहता हूं कि इसे कुछ पूछूं =
अहमिच्छामि यत् इमं किञ्चित् पृच्छेयम्।
बहुतों को यह मालूम नहीं कि ज़मीन घूमती है =
बहूनामेतत् न विदितं (बहवो नैतज्जानन्त) यत् पृथ्वी भ्रमति (पृथ्वी भ्रमतीति बहवो न जानन्ति)।
क्या पागल हो गया है जो इस तरह ऊटपटांग बकवास करता है=किम् उन्मत्तोऽसि यत् एवमसम्बद्धं प्रलपसि।
अच्छा किया जो तू आगया =
साधु कृतं यत् त्वम् आगतः।

[जब आश्रित वाक्य मुख्य वाक्य के पहले आता है तब 'कि' का लोप हो जाता है और मुख्य वाक्य के आदि में योजक के रूप में 'यह' आता है, जिसका अनुवाद 'इति' किया जाता है। जैसे—मैं नहीं जानता था कि तुम भी आओगे = तुम भी आओगे यह मैं नहीं जानता था = त्वमपि आगमिष्यसि-इति अहं नाऽज्ञासिषम् ।]

ऐसा (ऐसे, ऐसी)—कि, इतना (इतने, इतनी)—कि= तथा—यथा । जैसे—

चोर ऐसा भागा कि एकदम गायब हो गया =

चौरः तथा पलायितो यथा एकपद एव अलक्षितो जातः (तिरोहितः)।

रोग इतना बढ़ा कि जीने की आशा न रही =

रोगः तथा वृद्धिं गतो यथा जीवनस्याऽऽशाऽपगता ।

[यहां तक कि= यद्विवा—अपि (किं बहुना—अपि) । जैसे—उसके नौकर चाकर, यहां तक कि घोड़े और गाय भैंसें भी बढ़िया मकानों में रहते हैं = तस्य सेवका यद्विवा (किं बहुना) अश्वा गोमहिष्यश्चाऽपि उत्कृष्टेषु गृहेषु वसन्ति ।]

अभ्यास १८

जल्दी जाओ और बाज़ार से फल ले आओ। बादल उठे और बारिश शुरू हो गई। इधर घण्टी बजी उधर खेल शुरू हुआ। इधर बहुत सा काम बाक़ी है उधर टाइम ख़त्म हो रहा है। यह अपने घर ही नहीं दूसरों के यहां भी शरारत से बाज़ नहीं आता। उठो काम करो या सो जाओ। मूंग की दाल खाओ चाहे दूध पियो। रात यहीं रहोगे कि चले जाओगे। ये गहने तुम्हें दिखाने के लिए लाया हूं न कि बेचने के लिए। फूल देखने के लिए हैं, तोड़ने के लिए नहीं। होश से काम करो नहीं तो नौकरी से हटा दिए

जाओगे। हम जाने को तो तैयार हैं पर छुट्टी मिलना मुश्किल है। उन्हें न सिर्फ़ फ़ीस ही देनी पड़ेगी बरन जुर्माना भी देना होगा। इस जल्से में ऊंची जाति के लोग ही नहीं बल्कि भंगी-चमार भी शामिल होंगे। तुम्हें इसलिए बुलाया है कि तुम भी एक नया खेल देखलो।

———

(४) विस्मयादि-बोधक

(क) हर्षबोधक —

आहा = हन्त। वाहवा = साधु, शोभनम्, सुष्ठु। जैसे—

आहा! बारिश शुरू हो गई =
हन्त! वृष्टिः प्रवृत्ता (प्रवृत्ता वृष्टिः)।
आहा! संगीत शुरू हो गया =
"हन्त! प्रवृत्तं संगीतकम्" (मालविकाग्नि० १)
वाहवा! आप भी आगए =
साधु (शोभनम्), भवानपि आगतः!

शाबाश (फ़ारसी-शाद-बाश = खुश रहो) = स्वस्ति (भद्रम), साधु। जैसे—

शाबाश! बेटा शाबाश! = स्वस्ति (भद्रम, साधु) वत्स! स्वस्ति (भद्रम, साधु)।

(ख) शोकबोधक—

आह (ऊह) = आः, हन्त, बत, अहो। हाय = हा, अहह। अफ़सोस (शोक) = अये, हन्त। जैसे—

आह! (ऊह!) बड़ा दर्द है =
आः! महती पीडा (वेदना)।

आह ! क्या हो गया ?
किं बत (हन्त) जातम् ? (अहो ! किं जातम्) ।
हाय ! मेरा बच्चा कहां चला गया =
हा ! मम वत्सकः क्व गतः ।
(हा ! क्व गतो मे वत्सकः)
हाय ! कैसा भयंकर परिणाम हुआ =
"अहह ! दारुणो विपाकः"।
शोक ! स्वामी के चरणसेवक की यह दशा =
"अये ! देवपादपद्मोपजीविनोऽवस्थेयम्" (मुद्राराक्षस १)

दइया रे = हा विधे । बाप रे = हा पितः । जैसे—

दइया रे ! मर गया = हा विधे ! हतोऽस्मि ।
बापरे ! अब कहां जाऊं = हा पितः ! क्वेदानीं गच्छामि ।

[केवल संज्ञाएं और क्रियाएं भी शोक, दुःख, करुणा आदि बोधित करने के लिए 'विस्मयादिबोधक' के रूप में प्रयुक्त होती हैं । उनका अनुवाद संज्ञा और क्रिया शब्दों से ही किया जाता है (संज्ञा शब्द बिना विभक्ति के ही रक्खे जाते हैं) । जैसे राम ! राम ! यह तो बहुत बुरा हुआ = राम ! राम ! इदं तु महदनिष्टं जातम् । शिव ! शिव ! आज सिंह के द्वार पर गीदड़ों का कोलाहल (शोर) मचा है = "हरेरद्य द्वारे शिव ! शिव ! शिवानां कलकलः" (भामिनीविलास) । कबूतर का बच्चा अकेला है; सैंकड़ों बाज़ भूख से उसके सामने झपट रहे हैं; आकाश में छिपने की जगह नहीं है; हरे ! हरे ! विधाता की दया ही उसको बचानेवाली है = "एकः कपोतपोतः श्येनाः शतशः क्षुधाऽभिधावन्ति । अम्बरमावृतिशून्यं हरि ! हरि ! शरणं विधेः करुणा ।"(साहित्यदर्पण) । बचाओ ! बचाओ ! अरे कोई बचाओ ! = त्रायताम्, त्रायताम्, भोः कश्चित् त्रायताम् ! — इत्यादि ।]

(घ) आश्चर्यबोधक

ओहो (वाहवा), = अहो, अये। हैं (ऐं) = नाम। क्या = किम्। जैसे—

ओहो ! इतनी ताक़त = अहो ! एतावद् बलम्।

ओहो ! भगवती अरुन्धती हैं = "अये ! भगवत्यरुन्धती"

(उत्तररामचरित ५)

वाहवा ! कैसी सुन्दरता है = अहो ! सौन्दर्यम्।

हैं (ऐं), अन्धा पर्वत पर चढ़ जाता है ! =

अन्धो नाम पर्वतम् आरोहति !

क्या अन्धे को दीखने लग गया ! =

किम् अन्धो दर्शनसमर्थो जातः !

(ङ) अनुमोदन और स्वीकार बोधक—

ठीक (वाह, अच्छा) = एवम्, साधु, शोभनम् (सम्यक्)। हाँ = आम्, एवम्, अथ किम्। जी हाँ = अङ्ग, एवम्। जैसे—

सीता—ओहो, मालूम होता है मैं उसी जगह और उसी समय में वर्तमान हूं।

राम—ठीक ! =

"सीता—अहो जाने तस्मिन्नेव प्रदेशे तस्मिन्नेव काले वर्ते।—

रामः—एवम्।" (उत्तररामचरित १)

पुत्र—मैं अगले साल एम. ए. पास कर लेना चाहता हूं ?

पिता—अच्छा ! (वाह, बहुत अच्छा !)

पुत्रः—अहम् आगामिनि वत्सरे एम. ए. परीक्षाम् उत्तरितुमिच्छामि (उत्तितीर्षामि)

पिता—साधु=सम्यक् (हन्त, अतिशोभनम्)।

क्या आप भोजन कर चुके हैं ? हाँ (जी हाँ)=

अपि भवान् भोजनं कृतवान् (भुक्तवान्) ? आम्=एवम्= अथ किम् (अङ्ग, एवम्)।

(च) तिरस्कारबोधक—

अबे=(अरे, रे, स्त्री० अरी, री)=अरे रे। छिः=धिक्। हट (दूर)=अपेहि। जैसे—

अबे सोहन, इधर आ = अरे (रे) सोहन, इतः एहि।

छिः यह क्या करते हो = धिक्! किमिदं करोषि।

हट पाजी != अपेहि जाल्म!

(छ) संबोधनबोधक—

ओ=भोः। अबे=अरे, रे। ऐ=हे, भोः, अयि। अजी=अङ्ग, अयि। जैसे—

ओ काले घोड़े के असवार !=

भोः कृष्णाश्व (कृष्णवाजि) वाहन!

(भोः कृष्णाश्वनिषादिन्)

अबे धोबी != अरे (रे) रजक!

ऐ स्वामी != हे (अयि) स्वामिन्!

ऐ प्राणनाथ! जीते हो ?=

"अयि जीवितनाथ, जीवसि ?" (कुमारसं० ४)

ऐ तपस्वियो != भोः तपस्विनः।

अजी! कहां जाते हो = अङ्ग क गम्यते।

अजी! कहां चली हो = अयि क प्रस्थितासि।— इत्यादि।

अभ्यास

अबे लल्लू, इधर आ। अरी नन्ही, कहां जा रही है ? छिः ! क्यों गालियां बकते हो। अजी ! तुम्हें इससे क्या। ऐ मोहन, मुझे क्यों सताते हो। ओ नंदलाल, कहां चले हो। चल, दूर हो यहां से ! शिव शिव ! तुमने तो बड़ा अनर्थ कर डाला। हरे हरे यह क्या हो गया ! आहा ! यही मोहन है। वाह ! यह क्या कहते हो। तुम मेले चलोगे ? हां (जी हां)। पानी पियोगे ? हां। काम कर आए हो ? और क्या।

छठा अधिकरण।

कृदन्त

१. कर्तृवाचक कृदन्त

जाने वाला, आदि कर्तृवाचक कृदन्त शब्दों के लिये तृ (तृच्), अक (ण्वुल्), अ (अण्, क) आदि प्रत्ययों से बने शब्द रखने चाहिये (प्रत्ययों के लिये देखो व्याकरण)। इन (कर्तृवाचक कृदन्तों) के कर्म का इनके साथ समास भी हो जाता है। जैसे—

फल खाने वालों को फल दो=

फलानां भोक्तृभ्यः (फलभोक्तृभ्यः) फलानि देहि।

सब खाने वाले ही हैं, कमाने वाले नहीं =

सर्वे भोक्तारः एव सन्ति नोपार्जयितारः (तृच्)।

कौन जाने वाला है ? = को गन्ता ? (तृच्)

यह अच्छा पकाने वाला है = अयं दक्षः पाचकः (ण्वुल्)।

यहां शास्त्रों का जानने वाला कोई नहीं है=

अत्र शास्त्राणाम्, अभिज्ञः (क) = ज्ञाता (तृच्) कोऽपि नास्ति।

इस गाँव में घड़े बनाने वाला भी रहता है=

अस्मिन् ग्रामे घट (कुम्भ) कारः*अपि कश्चित् वसति (अण्)।

किये कर्मों का फल देनेवाला परमात्मा है=

कृतानां कर्मणां फलप्रदः (क)*परमात्मा अस्ति।

---

* इस प्रकार के कृदन्त शब्दों का अपने कर्म आदि के साथ नित्य समास रहता है। इन्हें 'सोपपदकृत' कहते हैं और इनके समास को 'उपपद समास'।

नाश होने वाले शरीर का क्या विश्वास =
नाशिनः (णिनि) शरीरस्य को विश्वासः। इत्यादि।

अभ्यास

मारने वाले से बचाने वाला बड़ा है। टूटने वाली छड़ी। सोने वाले, जागो। कर्मों का फल देने वाला ईश्वर है। शोक मिटाने वाला उपदेश। आनन्दित करने वाला राग। मोहन बड़ा तैराक (तैरने वाला) है। पठान बड़े लड़ाके (लड़ने वाले) होते हैं। बाज़ बड़ा उड़ाका है। रामू बड़ा कुदक्कड़ (कूदने वाला) है। यहां के वनिये लुटेरे (लूटने वाले) हैं। बंसी के बजैया (बजाने वाले) श्याम। यहां के गवैये (गाने वाले) मशहूर हैं। ऐ हीरों के पारखी (परखने वाले)। तुम बड़े छलिया (छलने वाले) हो।

२. भूतकालिक कृदन्त

खाया (खाई), खाया हुआ (खाई हुई), पिया (पी), पिया हुआ (पी हुई) आदि भूतकालिक कृदन्त शब्दों का अनुवाद क्त (त) प्रत्ययान्त कृदन्त शब्दों से किया जाता है (उनके बनाने के नियम व्याकरण में देखिये)। ये विशेषण होते हैं, इसलिये इनके लिङ्ग, वचन आदि विशेष्य के अनुसार रक्खे जाते हैं। जैसे—

खाया (खाया हुआ) अन्न हज़म नहीं होता =
खादितं (भुक्तम्, भक्षितम्) अन्नं न जीर्यति (परिपाकं नैति)।
फटी (फटी हुई) दीवारों की मरम्मत करो =
विदीर्णानां भित्तीनां संस्कारं कुरु।
सेज बिछी हुई थी = शय्या आस्तीर्णा आसीत्
किये का फल भोगना पड़ता है =
कृतस्य फलं भोग्यं भवति।

कटे पर नोन डालना = "क्षते क्षारनिक्षेपः"

खा चुका (खा चुका हुआ) आदि का अनुवाद 'क्तवतु (तवत्)' प्रत्ययान्त और कभी २ 'क्त (त)' प्रत्ययान्त शब्दों से करना चाहिये। जैसे—

खा चुके (खा चुके हुए, जो खा चुके हैं वे) ब्राह्मण दक्षिणा ले लें=भुक्तवन्तः ब्राह्मणा दक्षिणां गृह्णन्तु।

दूध पी चुके (पी चुके हुए, जो दूध पी चुके हैं उन बछड़ों को बांध दो=दुग्धं पीतवतः वत्सान् बधान। बीज बो चुके हुए (जो बीज बोचुके हैं वे) किसान बारिश की इन्तज़ार कर रहे हैं=

बीजानि उप्तवन्तः कृषिकाः वृष्टिं प्रतीक्षन्ते।

अब तक भेजी जा चुकी (जो भेजी जा चुकी हैं उन) चीज़ों की लिस्ट दो=इदानीं यावत् प्रेषितानां वस्तूनां सूचीं देहि।

कल तक चले जा चुके (जो चले जा चुके हैं उन) सिपाहियों की तनखाह वहीं भेज दो=

ह्यो यावत् गतवतां (गतानां) सैनिकानां वेतनं तत्रैव प्रेषयत। इत्यादि।*

---

* संस्कृत में 'क्त, क्तवतु (त, तवत्)' प्रत्ययान्त शब्दों का भूतकालिक क्रिया के रूप में भी प्रयोग होता है (जैसे कि पीछे जगह २ प्रयोग आए हैं) क्त प्रत्यय सकर्मक धातुओं से कर्म में होता है। इसमें कर्ता 'तृतीया' विभक्ति में रक्खा जाता है और कर्म 'प्रथमा' में। क्तप्रत्ययान्त शब्द के लिङ्ग-वचन कर्म के अनुसार होते हैं। जैसे—

मैंने पानी पिया=मया जलं पीतम् (आपः पीताः)। मैंने दो फल खाए=मया द्वे फले भुक्ते। इत्यादि।

अकर्मक धातुओं से क्त प्रत्यय कर्ता और भाव दोनों में होता है। 'कर्ता' में होने पर कर्ता और उसके अनुसार क्तान्त

अभ्यास

सोया हुआ मुसाफिर। हिमालय बर्फ से ढँका रहता है। कमरे में चादरें बिछी हुई हैं। मेरी बोई हुई खेती। मरे को मत मारो। हाथ आई चीज़ को मत छोड़ो। भागा हुआ कैदी पकड़ा गया। गिरा हुआ फूल। जला हुआ पत्ता। फटे कपड़े। पिया हुआ दूध। घर आचुके बटोही को मत निकालो। वर्दी पहन चुके हुए सिपाही फौरन चले जाएं। अपनी कमाई खो चुके हुए कमीने लोग। लूटा हुआ माल।

शब्द 'प्रथमा' विभक्ति में आता है; जैसे–राम गया=रामः गतः, और 'भाव' में होने पर कर्ता 'तृतीया' विभक्ति में और क्त-प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग प्रथमा के एकवचन में आता है; जैसे–राम गया=रामेण गतम्। इसी प्रकार–राम लजाया=रामः लज्जितः=रामेण लज्जितम्—इत्यादि। क्तवतु प्रत्यय सकर्मक, अकर्मक सब धातुओं से 'कर्ता' में ही होता है। इसमें कर्ता और उसके अनुसार क्तवत्वन्त शब्द 'प्रथमा' विभक्ति में और कर्म 'द्वितीया' में आता है। जैसे—

मैंने पानी पिया=अहं पानीयम् (अपः) पीतवान्।
राम लक्ष्मण ने राक्षस मारे=रामलक्ष्मणौ राक्षसान् हतवन्तौ।
राम गया=रामः गतवान्।
राम लजाया=रामः लज्जितवान्। -इत्यादि।

इच्छार्थक, बुद्ध्यर्थक तथा पूजार्थक धातुओं से वर्तमान अर्थ में भी 'क्त' प्रत्यय आता है। इसमें कर्ता 'षष्ठी' विभक्ति में आता है (और कर्म 'प्रथमा' में)। जैसे—प्रजाएं राम को चाहती हैं, मानती हैं, पूजती हैं=प्रजानां रामः इष्टः, मतः, पूजितः इत्यादि।

कुएँ से खैंचा हुआ पानी । धुले हुए फूल । बरस चुके हुए बादल हल्के हो जाते हैं । सूई हुई कुतिया । उगे हुए जौ । पीसी हुई हल्दी । घिसा हुआ चँन्दन । अपने हाथ से सींची हुई बेल । गया वक्त फिर हाथ आता नहीं । परखा हुआ नौकर । उठा हाथ । भुने चने ।

---

३. पूर्णक्रिया द्योतक कृदन्त

खाये (खाये हुए) आदि पूर्णक्रिया-द्योतक कृदन्त शब्दों का अनुवाद क्तप्रत्ययान्त शब्दों से, कहीं २ भाववाचक संज्ञाओं से और कहीं २ दोनों प्रकारों से किया जा सकता है । इनके पहले आने वाले कर्तृवाचक शब्दों को (हिन्दी में चाहे वह सम्प्रदान, सम्बन्ध या कर्ता कारक में हों) अर्थानुसार तृतीया, षष्ठी या सप्तमी विभक्ति में रक्खा जाता हैं । उनके षष्ठी या सप्तमी में रखने पर 'क्रान्त' शब्द भी उसी विभक्ति में रक्खे जाते हैं और उनके 'तृतीया' में रखने पर 'क्रान्त' शब्द अर्थानुसार विभक्ति में आते हैं । जैसे—

मेरे गुड़ खाये (खाये हुए) बरस हो गया है =
मया गुडस्य भुक्तस्य वर्षं जातम् (वत्सरो गतः) ।
मुझे ससुराल गये पांच महीने बीत गये हैं =
मम श्वसुरालये गतस्य पञ्च मासाः व्यतीताः (गताः) ।
आदमी जानिये बसे = पुरुषो ज्ञायते वासेन (सहवासेन) ।
(पुरुषः सहवासेन ज्ञायते)
सोना जानिये कषे = सुवर्णं ज्ञायते कषणेन (निघर्षणेन) ।
(सुवर्णं ज्ञायते कषितम् (निघृष्टम्) ।
(सुवर्णं कषणेन [कषितं] ज्ञायते) ।

उसके गये कया होगा =

तस्मिन् गते (तस्य गमनेन) किं भविष्यति ।

तुम्हारे कहे कुछ न होगा=

त्वया कथिते (तव कथनेन) किमपि न भविष्यति (संपत्स्यते, सेत्स्यति) ।

हम दिन छिपे घर पहुंचेंगे=

वयं दिने (दिवसे) अस्तं गते (दिनस्य अस्तगमने=अवसाने) गृहं प्राप्स्यामः ।

कितने-एक दिन बीते वह फिर हमारे घर आया=

कतिपयेषु दिनेषु व्यतीतेषु (गतेषु)=कतिपयानां दिवसानाम् अपगमे स पुनः अस्माकं गृहे आगतः । इत्यादि ।

जब सकर्मक पूर्णक्रियाद्योतक कृदन्त और मुख्य क्रिया का कर्ता एक ही होता है तब उसका अनुवाद यथायोग्य क्त्वा-प्रत्ययान्त क्रिया से या क्तान्त शब्द से*उसको तथा उसके कर्म को बहुव्रीहि समास से समस्त करके करना चाहिये (जब धातु उपसर्गयुक्त होता है तब 'क्त्वा' को 'ल्यप् (य)' हो जाता है । जैसे—हस्-हसित्वा । वि+हस्-विहस्य-इत्यादि) ।

शेर मुंह फाड़े आरहा था=सिंहः मुखं व्यादाय (व्यात्तमुखः) आगच्छति स्म ।

मैंने शिर झुकाए हुए देवी को प्रणाम किया=

अहं शिरो नमयित्वा (नमितशिराः) देवीं प्राणमम् ।

तुम्हारा नौकर फल लिये जा रहा था=

तव भृत्यः फलानि आदाय (गृहीत्वा)=आत्त (गृहीत) फलः गच्छति स्म ।

---

* दोनों क्रियाओं का कर्ता एक न होने पर भी क्तान्त शब्द से अनुवाद किया जाता है ।

यह कौन महाभयङ्कर भेस, अङ्ग में भभूत पोते, एड़ी तक जटा लटकाए त्रिशूल घुमाता आ रहा है=

अयं कः (कोऽयं) महाभयङ्करवेषः अङ्गे (गात्रे, शरीरे) भस्म लिप्त्वा (लिप्तभस्मा), पार्ष्णिपर्यन्तम् (आपार्ष्णि) जटा लम्बयित्वा (लम्बितजटः) त्रिशूलं भ्रमयन् आगच्छति।

सांप मुंह में मेंढक लिये था=सर्पः मुखे गृहीतमण्डूकः आसीत् (सर्पेण मुखे मण्डूको गृहीत आसीत्)।

सिपाही ने चोर को माल लिये हुए पकड़ा=रक्षिणा चौरः गृहीतलोप्त्रः (सलोप्त्रः) गृहीतः *। इत्यादि।

पूर्णक्रियाद्योतक कृदन्त की द्विरुक्ति, नित्य, बार २, निरन्तर आदि अर्थ में आती है। इसका अनुवाद यथायोग्य 'क्तप्रत्ययान्त' शब्दों या क्त्वाप्रत्ययान्त क्रिया से अथवा ऊपर लिखे अनुसार बहुव्रीहि समास से करना चाहिये और आदि में अर्थानुसार नित्यम्, वारम् २ (पुनः २), निरन्तरम्, अविरतम् आदि शब्द रखने चाहिये। जैसे—मैं बैठे बैठे उकता गया हूं=अहं निरन्तरम् उपविष्टः खिन्नोऽस्मि। सिर पर बोझ लादे-लादे वह बहुत दूर चला गया=अविरतं (शिरसि, शिरसा) भारं धृत्वा (अविरतं शिरसि धृतभारः) स बहु दूरं गतः। इत्यादि।

जब भूतकालिक कृदन्त शब्द बिना के साथ आते हैं (बिना खाये आदि) तब इनका अनुवाद अर्थ और प्रयोग के अनुसार यथायोग्य नञ्समासयुक्त क्तवतु या क्त प्रत्ययान्त शब्दों से उन्हें सप्तमी विभक्ति में रख कर या नञ्-समासयुक्त क्त्वाप्रत्ययान्त (पूर्वकालिक) क्रिया से

---

* पूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त और मुख्य क्रिया का कर्ता एक न होने से यहां क्त्वाप्रत्ययान्त शब्द से अनुवाद नहीं किया गया।

अथवा भाववाचक संज्ञाओं को 'द्वितीया' तृतीया', या 'पञ्चमी' विभक्ति में रखकर उनके आगे (या पीछे) विना, (या उसके समानार्थक अन्तरा, अन्तरेण आदि जिनके योग में भाववाचक संज्ञा 'द्वितीया' में आती है) लगाकर करना चाहिये। परन्तु जब इनके पहले कोई सम्बन्धी शब्द हो (जैसे-मेरे गये बिना या बिना मेरे गये) तब इनका अनुवाद नञ्-समासयुक्त क्त या क्तवतु प्रत्ययान्त शब्दों से उन्हें 'सप्तमी' विभक्ति में रखकर या कभी २ ऊपर लिखे अनुसार भाववाचकसंज्ञाओं से करना चाहिये (जब 'क्तान्त' शब्द क्रिया के रूप में प्रयोग किये जाएँ तब कर्ता 'तृतीया' में रखना चाहिये और जब वह विशेषण के रूप में आएँ तब 'कर्ता' को भी 'सप्तमी' में रखना चाहिये)। जैसे—

बिना खाये नहीं जाऊंगा=

अभुक्तवान्=अभुक्त्वा (अभुक्ते*) न गमिष्यामि।

भोजनं (भोजनेन, भोजनात्) विना= (अन्तरा अन्तरेण) न गमिष्यामि।

मेरे बिना खाये (जब तक मैं न खालूं) यह नहीं खाएगी=

मया अभुक्ते (अभुक्ते मया, अभुक्तवति मयि) इयं न (नेयं) भोक्ष्यते।

वह बुलाये बिना यहां न आएगा=

सः अनाहूतः (आह्वानं विना) अत्र नाऽऽगमिष्यति।

बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय=

विना विचारं (विचारमन्तरा, अविचार्य) यः करोति स पश्चात्तप्यते। इत्यादि।

---

* ऐसे अनुवाद करने पर विशेष्य 'भोजने' आदि की स्वयं प्रतीति (अध्याहार) हो जाती है। जैसे—अभुक्ते (भोजने) न गमिष्यामि—इत्यादि।

अभ्यास २२

मुझे यहां पहुचे कुछ ही मिनट हुए हैं । इसको हँसे मुद्दत हो गई। भूखे को बिना खाए चैन कहां। बिना काम पूरा किये आराम न लूंगा। न सुख घर रहे न बन गये। मज़दूर बोझ उठाए आ रहा है। वह कब से रास्ता रोके हुए खड़ा है। कल श्याम को घर छोड़े चार साल हो जाएंगे। यह कौन मुंह छिपाए सो रहा है। बिना बुलाए जाने से बेइज़्ज़ती होती है। बांए हाथ पर मुँह रक्खे क्या सोच रहे हो। खेती सूख गई अन्न बरसे क्या होगा। चांद चढ़े भोजन करेंगे।

---

४. वर्तमानकालिक कृदन्त

खाता (खाती), खाता हुआ (खाती हुई),पीता (पीती), पीता हुआ (पीती हुई),लजाता (लजाती), लजाता हुआ (लजाती हुई), बढ़ता (बढ़ती), बढ़ता हुआ (बढ़ती हुई), सोता (सोती), सोता हुआ (सोती हुई), आदि वर्तमानकालिक कृदन्त शब्दों का अनुवाद संस्कृत के शतृ-शानच् प्रत्ययान्त कृदन्त शब्दों से किया जाता है। परस्मैपदी धातुओं से 'शतृ (अत्)' और आत्मनेपदी धातुओं से 'शानच् (मान, आन)' प्रत्यय आता है। जैसे—

खादन् (खादन्ती)=भक्षयन्, (भक्षयन्ती), पिबन् (पिबन्ती), लज्जमानः (लज्जमाना),वर्धमानः(वर्धमाना), शयानः (शयाना)।

खाता हुआ न चले=खादन् न गच्छेत् ।

पानी पीता न हंसे=पानीयं पिबन् न हसेत्।

बहू लजाती आती है=वधूः लज्जमाना आगच्छति ।

बढ़ती हुई लहरें किनारे को गिराती हैं=

वर्धमानाः (उल्लसन्त्यः) लहर्यः तटं पातयन्ति।

सोते बच्चे को न जगाओ=
शयानं बालं मा प्रबोधय ।
भागतों को मारना बहादुरी नहीं=
पलायमानानां हननं न वीरता ।
डूबते को तिनका भी सहारा होता है=
मज्जतः तृणमपि अवलम्बो भवति ।
घोड़े को दौड़ाता हुआ लाऊंगा=
अश्वं धावयन् आनेष्यामि ।
सिपाही हंसते हुए लड़ाई में जाते हैं=
सैनिका हसन्तः संग्रामे (रणे) गच्छन्ति ।
लड़की रोती हुई आई=
बाला (कन्या) रुदन्ती आगता—इत्यादि ।
[स्त्रियां रसोई करती करती (=करती हुई) गारही थीं=
स्त्रियः पाकं कुर्वन्त्यः (कुर्वाणाः)-पचन्त्यः, (पचमानाः) गायन्ति स्म । धोबी कपड़े धोता-धोता (=धोता हुआ) शूहू २ करता है=
रजकः वस्त्राणि क्षालयन् शूत्करोति ।]

———

५. अपूर्णक्रियाद्योतक कृदन्त

खाते (खाते हुए), पीते (पीते हुए) आदि (एकारान्तरूप में) आने वाले कृदन्त शब्दों का अनुवाद भी ऊपर लिखी रीति से संस्कृत के शतृशानच्प्रत्ययान्त शब्दों से ही करना चाहिये और उन्हें उसी विभक्ति और वचन में रखना चाहिये जिसमें विशेष्य रक्खा जाए । जैसे—

उसे खाते (खाते हुए) देख मैं भी खाने लग गया=

तं खादन्तं (भक्षयन्तं, भुञ्जानं) दृष्ट्वा अहमपि खादितुं (भक्षयितुं, भोक्तुं) प्रवृत्तः ।

कल मैंने उसे बाज़ार में दूध पीते (पीते हुए) देखा था=
अहं ह्यस्तं विपण्यां दुग्धं पिबन्तम् दृष्टवान् (अद्राक्षम्)।
ह्यो मया असौ विपण्यां दुग्धं पिबन् दृष्टः (अदर्शि)।
मैं कल शाम को तुम्हें खेत में गाते हुए सुन रहा था=
अहं ह्यः सायं त्वां क्षेत्रे गायन्तम् अश्रृणवम् (आकर्णयम्)।
उसने चलते हुए मुझे यह कहा था=
तेन प्रतिष्ठमानेन अहम् इदम् उक्तः (मां प्रतीदमुक्तम्)।
(स प्रतिष्ठमानः माम् इदम् उक्तवान्)
भला करते भी वह बुरा मानता है=
हितम् कुर्वन्तम् अपि असौ अहितं मन्यते ।
परहेज़ करते हुए भी वह बीमार पड़ गया=
पथ्यं सेवमानोऽपि असौ रुग्णो जातः ।*

[वह मरते-मरते (=मरते हुए) भी सच न बोला=सः म्रियमाणोऽपि सत्यं न अभाषत । मल्लाह हसते-हँसते (=हँसते हुए) दरया में कूद पड़े=नाविकाः (कर्णधाराः) हसन्तः नद्याम् अकूर्दन्त (झम्पाम् अदुः) ।]

["उसको हमारे यहां रहते दो साल हो गये । मुझे खाते हुए कभी प्यास नहीं लगती । वहां से लौटते मुझे रात हो जाएगी" इस प्रकार के संप्रदानकारक-(उसको, मुझे)-युक्त वाक्यों के अनुवाद में 'चतुर्थी' न लगाकर 'षष्ठी' विभक्ति लगानी चाहिये । जैसे—तस्य अस्माकं गृहे (अस्मत्सविधे)

---

* कहीं २ इस (अपूर्णक्रियाद्यो० कृ०) के लिये 'क्तान्त' शब्द का भी प्रयोग मिलता है । जैसे—मेरे रहते यह कौन चन्द्रगुप्त को जीतना चाहता है="क एष मयि स्थिते चन्द्रगुप्तमभिभवितुमिच्छति" (मु० १)।

निवसतः (अस्मत्सविधे निवसतस्तस्य) द्वे वर्षे जाते (वर्षद्वयं व्यतीतम्)। भुञ्जानस्य मम कदापि पिपासा न जायते। ततः प्रतिनि-(प्रत्या)-वर्तमानस्य मम रात्रिर्भविष्यति —इत्यादि।

"मेरे रहते और कौन जीतेगा। आपके होते क्यों ऐसा हो रहा है" इस प्रकार के संबन्ध-कारक-(मेरे, आपके)-युक्त वाक्यों और "दिन रहते ही मैं आजाऊंगा" इस प्रकार के कर्ता-कारक-(दिन)—युक्त वाक्यों के अनुवाद में 'षष्ठी' और 'प्रथमा' न लगाकर 'सप्तमी' विभक्ति लगानी चाहिये। जैसे—मयि विद्यमाने (तिष्ठति) कोऽन्यो जेष्यति। भवति विद्यमाने कथमेवं भवति। दिने विद्यमाने (सावशेषे) एव अहम् आगमिष्यामि। इत्यादि।

परन्तु अनादर या लापरवाही सूचित करने में सम्बन्धकारकयुक्त वाक्यों के अनुवाद में 'षष्ठी' विभक्ति भी लगाई जाती है। जैसे—राक्षस के देखते (उसकी परवाह न करके) नन्द पशुओं की भांति मार दिये—

"नन्दाः पशव इव हताः पश्यतो राक्षसस्य" (मुद्रा० १)

पुत्र के रोते २ (उसकी परवाह न करके) पिता ने संन्यास लेलिया=

रुदति पुत्रे (रुदतो वा पुत्रस्य) पिता प्राव्राजीत् (सिद्धान्तकौ०)।

इस प्रकार पाणिनि "षष्ठी चाऽनादरे") के अनुसार 'षष्ठी' विभक्ति अनादर सूचित करने में ही आती है, परन्तु संस्कृतसाहित्य में बहुधा अनादर सूचित न होने पर भी 'षष्ठी' के प्रयोग पाये जाते हैं। जैसे—

देवताओं के देखते २ (देवी) वहीं अन्तर्धान हो गई=

"पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत" (सप्तशती) इत्यादि।

अभ्यास

बिस्तरे से उठते हुए तुमने आज किसे देखा था। उसने मुझे जाते-जाते रोका। वह ज़ीने से उतरते-उतरते गिर पड़ा। मुझे पढ़ते हुए नींद आजाती है। बोलते-बोलते उसकी ज़बान

अटक जाती है। तुम्हें नहाते कितनी देर लगेगी ? पाण्डवों के देखते (उनकी परवाह न करके) द्रौपदी को केशों से खैंचते हुए दुःशासन सभा में ले आया। काम करते-करते अभ्यास हो जाता है। यहां रहते-रहते मुझे शहर की काफ़ी वाकफ़ीयत हो गई है। पुस्तक पढ़ते हुए जो कठिन शब्द आएं उन पर निशान कर छोड़ना।

---

६. तात्कालिक कृदन्त

'खाते ही, पीते ही' आदि तात्कालिक कृदन्त शब्दों का अनुवाद भी अपूर्ण-क्रिया-द्योतक कृदन्त शब्दों के समान ही करना चाहिए, केवल अन्त में 'ही' के लिये 'एव' और जोड़ देना चाहिये। भाववाचक शब्द (भोजन पान आदि) के आगे 'समकालमेव' या 'समनन्तरमेव' जोड़ कर अथवा मात्र (मात्रच्) प्रत्ययान्त क्तान्त शब्द के अन्त में 'एव' लगाकर (और कभी २ क्त्वा प्रत्ययान्त क्रिया से भी आगे 'एव' लगा कर) इनका अनुवाद किया जा सकता है। जैसे—

खाना खाते ही मैं उसके पास गया=

भोजनसमकालमेव (भोजनसमनन्तरमेव, भोजने भुक्तमात्र एव) अहं तस्य पार्श्वे गतः।

पानी पीते ही वह होश में आ गया=

जलं पिबन्नेव (जलपानसमकालमेव, जलपानसमनन्तरमेव, जले पीतमात्र एव) स लब्धसंज्ञः संवृत्तः।

पैसा पाते ही लड़का भाग गया=

पणकं प्राप्नुवन्नेव (लभमान एव, पणकप्राप्तिसमकालमेव, पणके

प्राप्तमात्र एव) बालः पलायितः ।

उसने आते ही शोर मचा दिया=

तेन आगच्छतैव (आगतमात्रेणैव) कोलाहलः प्रवर्तितः ।

सिपाही को देखते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गया=

रक्षिणं पश्यन्नेव (दृष्ट्वैव, रक्षिदर्शनसमनन्तरमेव, रक्षिणि दृष्टमात्र एव) चौरः प्रनष्टः (विद्रुतः, पलायितः) ।

यह सुनते ही वह आगबबूला हो गया=

एतत् शृण्वन्नेव श्रुत्वैवैतत्, एतच्छ्रवणसमकालमेव, एतस्मिन् श्रुतमात्रएव) स क्रोधोद्दीप्तो जातः ।

[बाप के (सम्बन्धका०) मरते ही लड़कों ने धन गँवाना शुरू कर दिया= पितृमरणसमकालमेव (मृतमात्र एव पितरि) पुत्रैः धनं नाशयितुमारब्धम् (पुत्राः धनं नाशयितुमारब्धाः) ।

श्याम के आते ही मोहन चलागया=श्यामे आगच्छत्येव (आगतमात्र एव, श्यामागमनसमकालमेव) मोहनो गतः ।

सूरज (कर्ता-का०) निकलते ही बारिश लग पड़ी=

सूर्ये उदयत्येव (उदयत्येव सूर्ये, उदितमात्र एव सूर्ये, सूर्योदयसमकालमेव) वृष्टिः प्रवृत्ता ।

बीमारी होते ही इलाज करना चाहिये=रोगे जायमान एव (उत्पद्यमान एव, जातमात्र एव, उत्पन्नमात्र एव, रोगोत्पत्तिसमकालमेव) प्रतीकारः कर्तव्यः (चिकित्सा विधेया) ।

[तात्कालिककृदन्त की द्विरुक्तिवाले सम्प्रदानकारकयुक्त तथा संबन्धकारकयुक्त दोनों प्रकार के वाक्यों के अनुवाद में पहले (अपूर्णक्रियाद्योतक कृदन्त प्रकरण में) लिखे अनुसार 'सप्तमी' और 'षष्ठी' दोनों विभक्तियां रक्खी जा सकती हैं । जैसे—

देवताओं के देखते ही देखते (देवी) वहीं अन्तर्धान हो गई=

+ अत्र शेषषष्ठ्या विषयः। नहि भारतीय लेखनेन लक्षितो भवति।

"पश्यतामेव देवानां (पश्यत्स्वेव देवेषु) तत्रैवान्तरधीयत" (सप्तशती)
पुस्तक लिखते ही-लिखते आपको (संप्रदानका०) चार महीने लग जाएंगे=

पुस्तकं लिखत्येव भवति (लिखत एव भवतः) चत्वारो मासा लगिष्यन्ति (यास्यन्ति) । इत्यादि ।]

अभ्यास

यह सुनते ही वह बैठ गया। घर पहुंचते ही खाना तय्यार पाया। शुद्ध भाव से ईश्वर का ध्यान करते ही सब संकट दूर हो जाते हैं। भौंदू को देखते ही मुझे हंसी आजाती है। रोटी खाते ही पेट में दर्द शुरू हो गया। चार पाई पर लेटते ही नींद आ गई। सिर मुँडाते ही ओले पड़े। चने चबाते ही दांत दुखने लग गए। काश्मीर को रवाना होते ही बुखार घटने लग गया। चूल्हे पर से खिचड़ी उतारते ही आग बुझ गई। मशीन से लगाते ही बड़ी २ गेलियां बात की बात में चिरजाती हैं। लैंप बुझाते ही गली में अंधेरा छा गया। इम्तहान ख़त्म होते ही सब विद्यार्थी चले जाएंगे। पास होने की ख़बर पाते ही मोहन के हर्ष की सीमा न रही।

७. भविष्यत्कालिक कृदन्त

'खानेवाला' 'जानेवाला' आदि 'वाला' प्रत्ययान्त शब्द जहां 'कर्तृवाचक' होते हैं वहां 'भविष्यत्कालवाचक' भी होते हैं। इनका अनुवाद भविष्यत्कालवाचक 'शतृ-शानच्' प्रत्ययान्त शब्दों से किया जाता है। भविष्यत्कालवाचक 'शतृ', 'शानच्' प्रत्ययों के रूप क्रम से 'स्यत्' और 'स्यमान' होते हैं। जैसे—

खाने वाले (जो खाएंगे उन) लोगों को अन्दर बैठाओ=

भक्षयिष्यः (भोक्ष्यमाणान्) जनान् अन्तः (अभ्यन्तरे) उपवेशय।

आज तनखाह पानेवाला नौकर बहुत खुश है=

अद्य वेतनं प्राप्स्यन् (लप्स्यमानः) किङ्करः अति प्रसन्नो वर्तते ।

वन को जाने वाले राम ने सीता को बुलाया=

वनं गमिष्यन् रामः सीतामाकारयत् ।

(वनं गमिष्यता रामेण सीता आकारिता) ।

माउंट एवरेस्ट पर चढ़नेवाले साहसी वीर तय्यारियां कर रहे हैं=

गौरीशङ्करशिखरमारोक्ष्यन्तः साहसिनो वीराः संनह्यन्ति ।

कल लड़ाई को जानेवाले सिपाही अपने संवन्धियों से विदा ले रहे हैं=

श्वः युद्धाय प्रस्थास्यमानाः सैनिकाः स्वसंबन्धिनः आपृच्छन्ति ।

फुटबाल खेलनेवाले लड़के प्लेग्राउंड को जा रहे हैं=

पादकन्दुकेन क्रीडिष्यन्तः बालाः क्रीडाभूमिं (क्रीडाक्षेत्रं) गच्छन्ति ।

कल लड़नेवाले सिपाही आज आराम कर रहे हैं=

श्वः योत्स्यमानाः सैनिकाः अद्य विश्राम्यन्ति । इत्यादि ।

[कुछ शब्दों में भविष्यत्कालवाचक 'इन्' प्रत्यय भी आता है । जैसे— गमी (गमिष्यन्)=जानेवाला । आगामी (आगमिष्यन्)=आनेवाला । भावी (भविष्यन्)=होनेवाला । प्रस्थायी=प्रस्थास्यमानः)=प्रस्थान करनेवाला ।]

अभ्यास २५

कल मेले में जानेवालों के लिये खाना बना रही हूं । आज शाम तक आनेवाले महमानों को महमानखाने में ठहराओ । समझदार

होनेवाली बात को पहले ही समझ जाते हैं। वैसाखी को रावी में नहानेवाले लोग चार बजे से जाने शुरू हो जाएंगे। इम्तहान देनेवाले आजकल दिन रात एक कर रहे हैं। आनेवाली गर्मियों में शिमले में रहनेवाले मेरे मित्र पहले ही रहने का इन्ज़ाम कर लेंगे। कल मेले में माल बेचनेवालों को आजही जगह संभाल लेनी चाहिये।

---

८. पूर्वकालिक कृदन्त

खाकर(करके), पीकर आदि पूर्वकालिक कृदन्तों का अनुवाद 'क्त्वा' (त्वा) प्रत्ययान्त शब्दों से किया जाता है। जब धातु के पहले कोई उपसर्ग लगा हो तब 'क्त्वा' के स्थान में 'ल्यप् (य)' प्रत्यय होता है (जब यह 'य' ह्रस्व के बाद आता है तब इसके पहले 'त्' लगकर इसका रूप 'त्य' हो ज़ाता है (आ+ह+य=आहृत्य)। जैसे—

खाना खाकर जाओ=भोजनं भुक्त्वा गच्छ।

उसे देखकर कौन प्रसन्न नहीं होता=

तं दृष्ट्वा (विलोक्य) कः प्रसन्नो न भवति (को न प्रसीदति)।

तुम ब्राह्मण होकर संस्कृत नहीं जानते=

त्वं ब्राह्मणो भूत्वा (ब्राह्मणः सन्) संस्कृतं न वेत्सि।

मेरे घर आकर अपनी चीज़ें ले जाओ=

मम गृहम् आगत्य स्वानि वस्तूनि नय।

उनको आदर करके अन्दर ले आओ=

तान् आदृत्य (सत्कृत्य) अभ्यन्तरे आनय (प्रवेशय)

संस्कृत में 'क्त्वा' प्रत्यय तभी होता है जब पूर्वकालिक क्रिया और मुख्य क्रिया का कर्ता एक हो, परन्तु हिन्दी में पूर्वकालिक क्रिया के ऐसे भी प्रयोग आते हैं जिनमें दोनों (मुख्य और

पूर्वका०) क्रियाओं के कर्ता भिन्न २ होते हैं । उनमें से (क) जिन वाक्यों की दोनों क्रियाओं का कर्ता संस्कृत में एक हो सकता है उनमें पूर्वका० के लिए 'क्त्वा' प्रत्ययान्त क्रिया (और कभी क्तान्त शब्द) रखनी चाहिये और (ख) जिन वाक्यों में वैसा नहीं हो सकता उनके अनुवाद में पूर्वका० के लिये भाव-वाचक संज्ञा के बाद 'अनन्तरम्' लगाना चाहिये या 'क्तान्त' शब्द और उसके विशेष्य को 'सप्तमी' विभक्ति में रखना चाहिये । जैसे—

(क) आगे चलकर उन्हें एक गांव मिला=

अग्रे गत्वा (गतैः) तैः एको ग्रामः प्राप्तः ।

पास जाकर सब कुछ साफ़ २ दिखाई दे गया=

पार्श्वे (समीपे) गत्वा (गतैः) सर्वं सुस्पष्टम् अदृश्यत (दृष्टम्) ।

यहां 'दिखाई दे गया' कर्मकर्तृवाच्य है । इसका कर्मवाच्य में अनुवाद करने पर दोनों क्रियाओं का कर्ता एक हो जाता है और तब 'क्त्वा' से अनुवाद ठीक रहता है । परन्तु यदि 'दिखाई दे गया' का अनुवाद 'कर्मकर्तृवाच्य' से किया जाय तो दोनों क्रियाओं का कर्ता भिन्न २ होने से 'क्त्वा' नहीं आएगा और अनुवाद इस प्रकार होगा—अग्रे गतानां तेषामेको ग्रामोऽदृश्यत ।

पांच बजकर बारह मिनट हो गये=

पञ्चनादान्तरं द्वादश कला जाताः ।

ख़र्च काटकर दस रुपये बचते हैं=

व्ययेऽपनीते (परिशोधिते, व्ययपरिशोधनानन्तरम्) दस रूप्यकाणि शिष्यन्ते ।

आज अर्ज़ी पेश होकर हुकम सुनाया जाएगा =

अद्य प्रार्थनापत्रे उपस्थापिते (प्रार्थनापत्रोपस्थापनानन्तरम्) आज्ञा श्रावयिष्यते ।

दुःख मिटकर चित्त शान्त होगया =

दुःखे नष्टे (अपगते, दुःखापगमानन्तरम्) चित्तं शान्तम् अभवत् ।

[नीचे लिखी पूर्वकालिक क्रियाओं का उनके विशेष अर्थ के अनुसार अनुवाद करना चाहिये । जैसे–पढ़ने में मोहन श्याम से बढ़कर और राम से उतरकर है = पठने मोहनः श्यमात् अधिकः (विशिष्यते) रामाच्च न्यूनः (हीयते) ।

कुआँ मकान से कुछ हटकर (दूर) है =

कूपः गृहात् किञ्चित दूरे (नातिदूरे) वर्तते ।

वे ठीकरीबाबा करके (नामसे) प्रसिद्ध हैं =

स ठीकरीबाबानाम्ना ('ठीकरीबाबा' इति) प्रसिद्धोऽस्ति ।

एक बार हम जंगल में होकर किसी गाँव को जारहे थे =

एकदा वयं जङ्गलमार्गेण कञ्चिद् ग्रामम् अगच्छाम ।

सबेरे से लेकर शाम तक वहीं रहते हैं =

प्रातः आरभ्य सायं यावत् तत्रैव तिष्ठामः ।

आजकल धर्म को लेकर कई झगड़े होते हैं =

अद्यत्वे धर्मम् अधिकृत्य अनेके (नाना) कलहाः (विवादाः) जायन्ते ।—इत्यादि ।]

अभ्यास ।

घर को मुझ से मिलकर जाना । हमारे घर होकर जाना । रास्ता खेत में होकर निकलता है । आजकल तो ज़रा २ सी बात को लेकर झगड़े हो जाते हैं । गाने में यह मोहन से बढ़कर नहीं है । इस दवाई से दर्द मिटकर घाव भरजाता है । पत्ते सड़कर पानी में बदबू पड़ जाती है । मुझे छोड़कर कहाँ जाते हो । आमतौर पर उसे लपोड़संख

कहकर पुकारते हैं। बांह छुड़ाकर क्यों जाते हो ॥ बोझ उठाकर चलना। सोकर उठना। सब काम बड़ों से पूछकर करने चाहिये।

दूसरा अध्याय
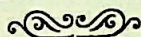
कारक

हिन्दी के कारक और उनकी विभक्तियां तथा उनके लिये आनेवाली संस्कृत-विभक्तियां पहले (उपक्रम में) बताई जाचुकी हैं। जिन वाक्यों के संस्कृत-अनुवाद में वही विभक्तियां आती हैं जो हिन्दी में हैं, उनके विषय में लिखने की आवश्यकता नहीं। यहां केवल उन वाक्यों के विषय में लिखना है जिनमें हिन्दी में और विभक्ति होती है और उनके संस्कृत-अनुवाद में और विभक्ति आती है।

कर्मकारक।

कर्मवाच्य के भावेप्रयोग में कर्म कर्मकारक में रहता है। उसे संस्कृत में 'द्वितीया' विभक्ति में न रख कर 'प्रथमा' में रखना चाहिये। जैसे—

उसी वक्त सब सिपाहियों को बुलायागया=

तत्कालमेव सर्वे सैनिकाः आकार्यन्त (आकारिताः)

श्यामलाल को घर को भेजा जाए=श्यामलालः गृहं प्रेष्येत।

उसे वहीं पूछलिया जायगा=सः तत्रैव प्रक्ष्यते।—इत्यादि।

हिन्दी में कालवाचक शब्द जब अधिकरण के अर्थ में कर्मकारक में आते हैं तब उनको संस्कृत में 'सप्तमी' विभक्ति में रखना चाहिये। जैसे—

मोहन दोपहर को आएगा=मोहनः मध्यान्हे आगमिष्यति।

म रातको तुम्हारे ही पास रहूंगा=

अहं रात्रौ* तवैव सविधे निवत्स्यामि।

ऐतवार को सहभोज होगा=

आदित्य (रवि) वासरे सहभोजः (सग्धिः) भविष्यति।

अगले साल को तुम्हें कराची लेजाएंगे=

अग्रिमे वर्षे त्वां कराचीं नेष्यामः—इत्यादि।

[गमनार्थक क्रियाओं के कर्म (स्थान) में संस्कृत में द्वितीया के बदले कभी २ 'सप्तमी' अथवा 'चतुर्थी' विभक्ति भी आती है। जैसे—

घर को (में) गया = गृहं (गृहे) गतः।

गांव को जाता है = ग्रामं (ग्रामाय) गच्छति। इत्यादि।

णिजन्त दृश् (दिखाना) धातु के प्रयोज्य कर्म में 'द्वितीया' के बदले कभी २ 'चतुर्थी' विभक्ति का भी प्रयोग होता है। जैसे—

"कृती (हनुमान् ने) अभिज्ञानरत्न (निशानी चूडामणि) राम को दिखाई =

"ततोऽभिज्ञानरत्नं च रामायाऽदर्शयत् कृती।" (सुन्दरकां० रामा०)

इसी प्रकार कथ्, ख्या, चक्ष्, ब्रू, वच् और शंस् (बताना-कहना) धातुओं के गौणकर्म में प्रायः 'द्वितीया' के बदले 'चतुर्थी'† विभक्ति आती है। जैसे—

---

* कहीं २ 'द्वितीया' विभक्ति का भी प्रयोग मिलता है। जैसे- "यामेव रात्रिं ते दूताः प्रविशन्तिस्म तां पुरीम्" [रामायण] (जिस रातको वे दूत उस पुरी में दाखल हुए)। इसी प्रकार "यामेव रात्रिं प्रथमामुपैति गर्भे निवासं नरवीर लोकः।" [महाभा०]—इत्यादि।

† कहीं २ 'षष्ठी' और 'सप्तमी' का प्रयोग भी मिलता है। जैसे— आपको सब कुछ बताता हूं= कथयामि सर्वं भवतः" (वेणीसं० ६)। यह तुझे नहीं कहेगा (बताएगा) = "न ह्येष त्वयि वक्ष्यति" (रामा० ३।१८।२६)

मोहन ने श्याम को सारा हाल कहा (बताया) =
मोहनः श्यामाय सर्वं वृत्तं अकथयत् (आचष्ट, अशंसत) ।
तुझे सच्ची बात कहता हूं = "कथयामि ते (तुभ्यं) भूतार्थम्"
(शकुन्तला १) ।

उसे सब कुछ बता दिया = "तस्मै सर्वमाख्यातवान्" ।
क्या महाराज को झूठ बताया जाएगा =
"किमन्यथा वक्ष्यते महाराजाय" (वेणीसं० ६)
(राजा ने) उसका प्रसन्न होना प्रिया को बताया =
"तस्याः...प्रसादं...प्रियायै शशंस" (रघु० २।६८) ।
उसे ब्रह्मचारी ने प्रस्तुत (मतलब की) बात बता दी (कह दी) =
"...तस्मै...वर्णी...प्रस्तुतमाचचक्षे" (रघु० ५ । १९) इत्यादि ।]

करणकारक ।

कहना (बताना), वर्णन करना, निवेदन करना, द्रोह करना, ईर्ष्या करना, असूया करना आदि के योग में गौण कर्म से आने वाली करणकारक विभक्ति 'से' के लिये कथ्, ख्या आदि पूर्वोक्त धातुओं, वर्णन करने के अर्थ में वि + वृ या वर्णय् धातुओं तथा निवेदन करने के अर्थ में नि + वेदय् धातु के योग में 'चतुर्थी' विभक्ति का प्रयोग करना चाहिये। परन्तु 'प्रति' के योग में इन धातुओं के रहते भी 'द्वितीया' का ही प्रयोग होता है । जैसे—

सः रामाय (रामं प्रति) सर्वं वृत्तम् अकथयत् (आख्यातवान्, व्यवृणोत्, न्यवेदयत्) ।—इत्यादि ।

कालू मुझसे द्रोह (ईर्ष्या, असूया) करता है=
कालूः मह्यं द्रुह्यति (ईर्ष्यति, असूयति) ।
'प्रतिज्ञा करना' के योग में जिसके प्रति प्रतिज्ञा की जाती है

उससे 'से' (करणकारक विभक्ति) आती है । उसके अनुवाद में 'प्रति + श्रु या आ + श्रु' धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति आती है और 'प्रति + ज्ञा' धातु के योग में 'षष्ठी'। जैसे—

काकुत्स्थ (रामचद्र ने) उनसे विघ्न मिटाने की प्रतिज्ञा की= "प्रतिशुश्राव काकुत्स्थस्तेभ्यो विघ्नप्रतिक्रियाम्" (रघु॰ १५- ४)
मैंने उससे अभय की प्रतिज्ञा करदी=

"मया तस्य अभयं प्रतिज्ञातम्"

'प्रार्थना करना' के योग में आनेवाली करणका॰ विभक्ति 'से' के लिये संस्कृत में 'अर्थय्' धातु के योग में 'द्वितीया' आती है । जैसे—नौकर ने मालिक से छुट्टी के लिये प्रार्थना की= सेवकः स्वामिनम् अवकाशाय प्रार्थयत (प्रार्थितवान्) ।

'बदलना' के योग में आनेवाली करणका॰ विभक्ति 'से' के लिये संस्कृत में णिजन्त परि + वृत् (परिवर्तय्) धातु के योग में 'तृतीया' ही आती है परन्तु जब 'बदलने' के अर्थ में 'प्रति' पूर्वक 'दा' आदि धातु रक्खे जाते हैं तब पञ्चमी विभक्ति आती है । जैसे—

तिलों से उड़द बदलता है = तिलैः माषान् परिवर्तयति ।
तिलेभ्यः प्रति यच्छति (ददाति) माषान् ।

करण-कारक के सामान्य उदाहरण—
आंखों से देखते हैं हाथों से काम करते हैं =
अक्षिभ्यां पश्यन्ति हस्ताभ्यां कार्यं कुर्वन्ति ।
बंदूक से मारता है = नालीकेन हन्ति ।
आपके आने से खुशी हुई = भवतः आगमनेन हर्षो जातः ।
धन से इज्ज़त बढ़ती है = धनेन संमानः (प्रतिष्ठा) वर्धते ।
वह किसी पाप से कोढ़ी हुआ =
स केनचित् पापेन कुष्ठी जातः ।

इस ढिठाई से शर्मिन्दा हूं=अनेन धार्ष्ट्येन लज्जितोऽस्मि ।

यह थोड़े से भी सन्तुष्ट हो जाता है=
स्वल्पकेनापि (स्तोकेनापि) संतुष्यति ।

मैं उसकी चतुराई से हैरान होगया=
अहं तस्य प्रावीण्येन (चातुर्येण) व्यस्मये ।

इनको क्रमसे दाखल करो=एतान् क्रमेण प्रवेशय ।

उसने मुझे क्रोध से देखा=स मां क्रोधेन अपश्यत् ।

धीरज से दुख कटते हैं=धैर्येण दुःखानि नश्यन्ति (निस्तीर्यन्ते) ।

बड़ी धूमसे जल्सा हुआ=महता समारोहेण उत्सवः संपन्नः ।

वह किस ओर से गया=
सः कतमया दिशा (कतमेन दिग्भागेन) गतः ।

रेज़ोल्यूशन सब की राए से पास हुआ=
प्रस्तावः सर्वसंमत्या स्वीकृतः ।

उससे मेरा रिश्ता है=तेन मम सम्बन्धः अस्ति ।

दवा घी से खाना=औषधं घृतेन भोक्तव्यम् ।

मैं धर्म से कहता हूं= अहं धर्मेण वच्मि ।

शरीर से हट्टाकट्टा, स्वभाव से क्रोधी=
शरीरेण पीनः (मांसलः), स्वभावेन (प्रकृत्या) क्रोधनः ।

आँख से काना=अक्ष्णा काणः ।

हमें इससे क्या= किमस्माकमेतेन ।

हमें इससे क्या काम (मतलब, फ़ायदा)=
अस्माकम् एतेन किं कार्यम् (को गुणः किं प्रयोजनम्, कोऽर्थः,को लाभः) ।

ज़मीन किसके सहारे (से) खड़ी है=
पृथ्वी कस्य आश्रयेण (अवलम्बेन) स्थित वर्तते ।

आँखों (से) देखा, कानों (से) सुना=
अक्षिभ्यां दृष्टम्, कर्णाभ्यां श्रुतम् ।
भूखों (=भूखों से) मरना=बुभुक्षया मरणम् ।—इत्यादि ।

संप्रदानकारक ।

नीचे लिखे वाक्यों में (तथा) इनके समान दूसरे वाक्यों में संप्रदानकारक विभक्ति 'को' (और कुछ सर्वनामों में 'ए' 'एं' जैसे उसे, उन्हें) के लिये संस्कृत में 'तृतीया' विभक्ति रखनी चाहिये ।

मुझको (मुझे) कुछ नहीं करना है=
मया किमपि न कर्तव्यम् (कार्यम्) ।
तुमको (तुम्हें) इसमें कुछ कहना है ?=
त्वया अत्र किञ्चिद् वक्तव्यम् ?
(वक्तव्यमत्र त्वया किञ्चित् ?)
उसको (उसे) जाना पड़ा=तेन गन्तव्यमभूत् ।
तुमको यह काम करना होगा=त्वया एतत् कार्यं कर्तव्यम् ।
तुझे ऐसा नहीं कहना था=त्वया नैवं वक्तव्यम् ।
तुझे सब कुछ देख पड़ेगा = त्वया सर्वं द्रक्ष्यते (द्रष्टव्यम्) ।
मुझे वहां जाना है= मया तत्र गन्तव्यम् ।
मुझे कुछ न सुनपड़ा=मया किमपि न अश्रूयत (श्रुतम्) ।
आपको क्या चाहिये = भवता किमिष्यते ।
मुझे विचित्र शब्द सुनाई पड़ा दिया) =
मया विचित्रः शब्दः अश्रूयत (श्रुतः) ।
यह किताब चार आने को मिलती है =
इदं पुस्तकं चतुर्भिराणकैर्लभ्यते ।

नीचे लिखे वाक्यों में (तथा इनके समान दूसरे वाक्यों में) आनेवाली संप्रदानकारक विभक्ति के लिये संस्कृत में 'षष्ठी' विभक्ति रखनी चाहिये। जैसे—

उसको देह की भी सुध न रही =

तस्य देहसंज्ञाऽपि न स्थिता।

उसे दुःख, भय, क्रोध, शोक आदि कुछ नहीं =

तस्य दुःखभयक्रोधशोकादि किमपि नास्ति।

इसमें किसीको शङ्का न होगी =

अत्र कस्यापि (कस्याप्यत्र) शङ्का न भविष्यति।

तुम्हें दया नहीं आती = तव दया न जायते।

"हमको तुम एक अनेक तुम्हें हम" =

अास्मकं त्वमेकोऽसि तव च वयमनेके।

ऐसा कहना आपको नहीं सोहता (शोभा देता) =

एवं कथनं भवतो न शोभते।

यह महापुरुषों को उचित (योग्य) नहीं =

इदं महापुरुषाणां नोचितम् (न सदृशम, नाऽनुरूपम्, न सांप्रतम्, न योग्यम्, न युक्तम्)। (महापुरुषाणामिदं न युज्यते)

हमें इससे क्या = किम् अस्माकम् एतेन।

हमें इससे क्या लाभ (मतलब) =

अस्माकम् एतेन को लाभः (को गुणः, किं प्रयोजनम्, कोऽर्थः)।

आपको ये गहने खूब ही सजते हैं =

भवत्या एतानि भूषणानि अतितरां शोभन्ते।

उसकी बातचीत मुझे मतलबभरी प्रतीत (मालूम) होती है (भासती है) =

तस्य आलापः मम स्वार्थपूर्णः (स्वार्थपरः) प्रतीयते (भासते, भाति)।

उसे बुखार आता (होता) है = तस्य ज्वरो भवति।

श्याम को संकट पड़ा = श्यामस्य संकटम् आपतितम्।

तुझे क्या हुआ = तव किं जातम्।

आपको सब कुछ सुलभ है पर मुझे दुर्लभ =
भवतः सर्वं सुलभं परं मम दुर्लभम्।

यह करना आपको कठिन है और मुझे सहज =
एतस्य सम्पादनं भवतः कठिनम् (दुष्करम्) मम च सरलम् (सुकरम्)।

मुझे चलते ही दिन बीता = मम गच्छत एव दिनं व्यतीतम्।

मोहन को गये एक महीना हुआ =
मोहनस्य गतस्य एको मासो जातः।

मुझे लौटते रात हो जाएगी =
मम प्रत्यावर्तमानस्य रात्रिर्भविष्यति।

मुझे यहां रहते कई साल हो गये =
मम अत्र निवसतः अनेके वत्सराः जाताः (गताः)।

आपको धन्यवाद = भवतो धन्यवादः। इत्यादि।

सम्प्रदानकारक के सामान्य उदाहरण—

भिखारी को भोजन दो = भिक्षुकाय भोजनं देहि।

सुनने को कान और देखने को आंखें =
श्रवणाय (श्रवणार्थम्, श्रोतुम्) कर्णौ दर्शनाय (दर्शनार्थम्, द्रष्टुम्) च अक्षिणी।

सैर को जाएंगे = भ्रमणाय (भ्रमणार्थम्, भ्रमितुम्) गमिष्यामः।

यह सामान सजावट के लिये है =

एष संभारः (एतदुपकरणजातम्) शोभायै (प्रसाधनार्थम्) अस्ति ।

आपके दर्शन को आया हूं = भवतो दर्शनाय आगतोऽस्मि ।

मुझे केला अच्छा लगता है (रुचता है, पसन्द आता है) = मह्यं कदलीफलं रोचते* (स्वदते) ।

भोज ने रघु को दूत भेजा =

"भोजेन दूतो रघवे ‡ विसृष्टः (प्रहितः, प्रेषितः)"

(भोजो रघवे दूतं विसृष्टवान्) (रघु० ५।३९)

पिता को पत्र भेजा = पित्रे पत्रं प्रैषयम् (प्राहिणवम्)

दरवाज़े के लिये लकड़ी = द्वाराय दारु ।

विष्णु दैत्यों के लिये काफ़ी है =

"दैत्येभ्यो हरिःअलम् (प्रभुः, शक्तः, समर्थः, प्रभवति)" [सिद्धान्तकौ०]

प्रजाओं को स्वस्ति = प्रजाभ्यः स्वस्ति (कुशलम्, भद्रम्) ।

गुरु को नमस्कार = गुरवे नमः ।

['नमः + कृ' धातु के योग में साधारणतः 'द्वितीया' और कभी २ 'चतुर्थी' विभक्ति भी आती है । जैसे—

---

* रुच् के योग में षष्ठी का प्रयोग भी मिलता है । जैसे—"नेदानीं त्वदृते सीते स्वर्गोऽपि मम रोचते" (रामा० २।३१।६२) "मम प्रतिप्रदानं हि रावणस्य न रोचते" (रामा० सुन्दर० ३७।१०)

‡ परन्तु स्थानवाचक शब्द से 'द्वितीया' विभक्ति आती है । जैसे—मैंने खत लाहौर को भेजा = अहं पत्रं लवपुरं प्रेषितवान् । माधव को पद्मावती (को) भेजते हुए देवरात ने अच्छा किया = "माधवं पद्मावतीं प्रहिण्वता देवरातेन साधु कृतम्" (मालतीमाधव १) । कहीं २ षष्ठी का भी प्रयोग मिलता है । जैसे—" तं च व्यसृजद्भरतस्य (उत्तरराम० ४) ।

मुनित्रय (तीन मुनियों) को नमस्कार करके=
"मुनित्रयं नमस्कृत्य" (सिद्धान्तकौ०)
नृसिंह को नमस्कार करते हैं="नमस्कुर्मो नृसिंहाय" (सिद्धान्तकौ०)
'प्रणम् और प्रणिपत्' धातुओं के योग में 'द्वितीया' और 'चतुर्थी' दोनों ही आती हैं। जैसे—
उसे भक्तियुक्त चित्त से प्रणाम किया=
"तां भक्तिप्रवणेन चेतसा प्रणनाम" (कादम्बरी)
देवताओं को प्रणाम नहीं करते=
"न प्रणमन्ति देवताभ्यः" (कादम्बरी)
धाता(ब्रह्मा)को प्रणाम करके="धातारं प्रणिपत्य"(कुमारसं०२।३)
देवता उसे प्रणाम करके="प्रणिपत्य सुरास्तस्मै" रघु० १०।१५)
प्रणाम (प्रणति), स्वागत और आशीर्वाद में प्रयुक्त होने वाले कुशल, भद्र, सुख, हित, अर्थ, आयुष्य शब्दों के योग में 'चतुर्थी' और 'षष्ठी' दोनों विभक्तियां आती हैं। जैसे—

शिव को प्रणाम किया="वृषभध्वजाय प्रणामं चकार" (कुमार सं० ३।६२)

द्रोण और कृप को प्रणाम किया="प्रणामं द्रोणकृपयोः... अकरोत्" (महाभारत)

उसे स्वागत कहा=तस्मै......स्वागतं व्याजहार" (मेघदूत ४)
देवी को स्वागत = "स्वागतं देव्यै" मालविका० १)
तपस्विनी को स्वागत="स्वागतं तपोधनायाः" (उत्तरा० २)
आपको सुख हो=भवते (भवतः) सुखं (कुशलम्, भद्रम्) भूयात्।
—इत्यादि।

दानार्थक धातुओं के योग में संप्रदान में अर्थात् जिसे अपना स्वत्व छोड़ कर वस्तु दी जाय उसके वाचक शब्द से 'चतुर्थी' होती है। जैसे—ब्राह्मण

को गाय देता है=“विप्राय गां ददाति”। परन्तु जहां अपना स्वत्व न छोड़ा जाय और वस्तु देकर फिर लेलेनी हो वहां ‘षष्ठी’ विभक्ति आती है, ‘चतुर्थी’ नहीं। जैसे धोबी को कपड़े देता है =रजकस्य वस्त्राणि ददाति।

परन्तु कहीं २ इसके विपरीत सम्प्रदान में भी ‘षष्ठी’ के प्रयोग पाए जाते हैं। जैसे—“दयाश्चक्रे सतां तस्माद् भवान् वित्तम्” (वाग्भटालङ्कार) “दीयतां ब्राह्मणस्य पादोदकम्” (मृच्छकटिक ३)।

दानार्थक धातुओं के योग में (संप्रदान में) ‘सप्तमी’ भी आती है। जैसे—“वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे” उत्तरा० २।)। इत्यादि ॥]

अपादान कारक

वियोग, वियुक्त, हीन, विकल आदि शब्दों के योग से आने वाली अपादान विभक्ति ‘से’ के लिये संस्कृत में ‘तृतीया’ विभक्ति रखनी चाहिये। जैसे—

यह अकस्मात् उससे वियोग उपस्थित हुआ=
“अयमेकपदे तया वियोग···उपनतः” (विक्रमो० ४)
मित्र से वियुक्त=मित्रेण वियुक्तः।
धन से हीन=धनेन हीनः (रहितः)।
अङ्गों और वाणी से विकल=“गात्रैर्गिरा च विकलः” (अनर्घ०)

दुहना, मांगना, पूछना, चुनना, जीतना और मथना के योग से आनेवाली अपादान विभक्ति ‘से’ के लिये ‘अपादान’ की अविवक्षा में संस्कृत में द्वितीया विभक्ति आती है। जैसे—
गाय से दूध दुहता है=गां दुग्धं दोग्धि।

भिखारी धनी से कपड़े मांगता है=
भिक्षुकः धनिनं वस्त्राणि याचते (भिक्षते)।
बटोही ने ग्वाले से रास्ता पूछा=
पथिकः गोपालं मार्गम् अपृच्छत्।
माली वेलों से फूल चुनता है=
मालाकारः लताः पुष्पाणि अवचिनोति।
दुर्योधन ने जूए में युधिष्ठिर से सारा राज्य जीत लिया=
दुर्योधनो द्यूते युधिष्ठिरं सर्वं राज्यम् अजयत्।
देवताओं और दैत्यों ने क्षीरसागर से अमृत मथा=
देवा दैत्याश्च क्षीरसागरम् अमृतम् अमथ्नन् (ममन्थुः)।

"इन फलों में से तुम्हें कौन सा पसन्द है" इस प्रकार के वाक्यों में 'निर्धारण' के अर्थ में (अधिकरणका० विभक्ति के बाद आने वाली) अपादानका० विभक्ति 'से' के लिये 'षष्ठी' या 'सप्तमी' विभक्ति आती है। जैसे—

एषां फलानाम् (एषु फलेषु) तुभ्यं कतमत् रोचते।
इन लड़कों में से मोहन चालाक है=
एषां बालानाम् (एषु बालेषु) मोहनो धूर्तः। —इत्यादि।

[परन्तु "पानी नाली में से बहता है; रास्ता जंगल में से जाता है" इस प्रकार के वाक्यों में 'नाली में से' आदि के लिये 'तृतीया' विभक्ति रखनी चाहिये। जैसे—जलं नाल्या (कुल्यया) वहति। मार्गो जङ्गलेन (वनेन) याति।—इत्यादि।]

आपादानकारक के सामान्य उदाहरण—

पहाड़ से गिरा=पर्वतात् पतितः।
गङ्गा हिमालय से निकलती है =
गङ्गा हिमालयात् प्रभवति (उद्गच्छति)।

गोबर से बिच्छू पैदा होता है=गोमयाद् वृश्चिको जायते ।

लोभ से क्रोध होता है= लोभात् क्रोधः प्रभवति (प्रजायते) ।

लल्लू घर से निकाल दिया=लल्लूः गृहात् निष्कासितः (निर्वासितः)

गांव से आया हूं=ग्रामात् आगतोऽस्मि ।

गुरु से पढ़ता है=गुरोः अधीते ।

जादूगर से जादू सीखता है=

ऐन्द्रजालिकात्=इन्द्रजालं शिक्षते ।

मौत से मत डर=मृत्योः मा बिभीहि *

अब भीम से दुःशासन को बचा=

इदानीं भीमात् दुःशासनं रक्ष (पाहि, त्रायस्व)

"रक्षेदानीं भीमाद् दुःशासनम्" (वेणी०)

इस जगह से हट जाओ= अस्मात् स्थानात् अपसर (अपेहि) ।

'उत्पत्ति (पैदा होना)' अर्थ वाले धातुओं के योग में 'सप्तमी' विभक्ति भी आती है । जैसे—शुकनास के भी रेणुका से पुत्र पैदा हुआ= "शुकनासस्यापि रेणुकायां तनयो जातः" (कादम्बरी) पर्वतराज ने वह (पार्वती) उस (मेनका) से पैदा की="सा भूधराणामधिपेन—तस्याम्......उदपादि" (कुमार० १ । २२) ।

महल से (महल पर चढ़कर) देखता है=

प्रासादात् (=प्रासादमारुह्य) पश्यति (प्रेक्षते) ।

---

* कहीं २ भयार्थक धातुओं के योग में 'षष्ठी' के भी प्रयोग मिलते हैं । जैसे—

तुझसे सब डरते हैं="तव सर्वे हि बिभ्यति"

कौन शत्रु उससे नहीं डरता="कः शत्रुस्तस्य नोद्विजेत्" (रामा० ५ । ३७ । १६)

बहू ससुर से लजाती है=वधूः श्वशुरात् (श्वसुरं दृष्ट्वा) लज्जते ।
पाप से घृणा करते हैं=पापात् घृणां कुर्वन्ति (जुगुप्सन्ते) ।
बुरे कामों से हटो=दुष्कर्मभ्यो विरम (निवर्तस्व) ।
वह घर से कब लौटेगा=स गृहात् कदा निवर्तिष्यते ।
सत्सङ्गति पाप से हटाती (रोकती, निवारण करती) है=
सत्सङ्गतिः पापात् निवारयति ।
राम विद्या में श्याम से अधिक और मोहन से न्यून है=
रामो विद्यायां श्यामात् अधिकः (विशिष्यते, अतिरिच्यते) मोहनाच्च न्यूनः (अवहीयते) ।
श्याम से राम सुखी है=श्यामात् रामः सुखितरः ।
उससे बढ़कर पापी कौन है=
तस्मात् अधिकः पापः (पापतरः, पापीयान्) कः ।
पढ़ने से जी चुराता है=पठनात् पराजयते ।
लाहौर से शाहदरा दो मील है=
लवपुरात् शाहदरा द्वे मीले (मीलद्वयम्) ।
मोहन के ब्याह से सोहन का ब्याह एक महीने में है=
मोहनस्य विवाहात् सोहनस्य विवाहो मासे ।
कृष्ण माता से छिपता है=कृष्णो मातुः निलीयते (अन्तर्धत्ते) ।
श्याम क्रोध से राम को मारता है=
श्यामः क्रोधात् रामं ताडयति ।
इससे अतिरिक्त (अन्य) कौन चोर हो सकता है=
अस्मात् अतिरिक्तः (अन्यः, भिन्नः, इतरः, ऋते) कः चौरः संभवति ।

यह पोथी उससे अलग है=इदं पुस्तकं तस्मात् भिन्नम् (पृथक्, अन्यत्) ।

आज से मैं आपसे जुदा (अलग) हो गया =
"अद्यप्रभृति भिन्नोऽहं भवद्भ्यः" (वेणी०)

गोकल से मथुरा न्यारी = गोकलात् मथुरा भिन्ना (विशिष्टा)।

तुम्हारा गांव इस जगह से पूर्व है या पश्चिम, दक्षिण है या उत्तर = तव ग्रामः अस्मात् स्थानात् पूर्वः पश्चिमो वा (पूर्वस्यां, = पूर्वायां दिशि, पश्चिमायां = पश्चिमस्यां वा) दक्षिणः उत्तरो वा (दक्षिणा, दक्षिणाहि, दक्षिणस्यां = दक्षिणायां दिशि, उत्तरस्याम् = उत्तरायां वा)।

लाहौर से पहले अमृतसर है = लवपुरात् प्राक् (पूर्वम्) अमृतसरमस्ति ।

मेरा घर श्याम के घर से परे (उधर) है और मोहन के घर से वरे (इधर) =

मम गृहं श्यामस्य गृहात् परम् (परतः) मोहनस्य गृहात् अवरम् (अवरतः) अस्ति ।

मेरा घर तुम्हारे घर से दूर और मोहन के घर से समीप है = मम गृहं तव गृहात् दूरे (दूरम्, दूरेण, दूरात्) मोहनस्य गृहात् समीपे (समीपम्, समीपेन, समीपात्) अस्ति ।

इस जगह से उस जगह तक = अस्मात् स्थानात् तत् स्थानं यावत् ।

जन्म से लेकर आज तक कभी मांस नहीं खाया =

जन्मनः आरभ्य = प्रभृति (आ जन्मनः) अद्य यावत् कदापि मांसं न भुक्तम् ।

हिमालय से लेकर विन्ध्याचल तक = हिमालयात् आरभ्य (आ हिमालयात्) विन्ध्याचलं यावत् (आविन्ध्याचलम्) ।—इत्यादि ।

सम्बन्ध-कारक

(संस्कृत व्याकरण में 'सम्बन्ध' को 'कारक' नहीं माना। क्योंकि इसका सम्बन्ध क्रिया से न होकर संज्ञा आदि से होता है)।

नीचे लिखे तथा इनके समान अन्य वाक्यों में सम्बन्ध-कारक की विभक्ति के लिये संस्कृत में 'द्वितीया' विभक्ति आती है :—

मुष् (चुराना, लूटना) धातु के योग में सम्बन्धका० विभक्ति के लिये 'द्वितीया' रखनी चाहिये। जैसे—

चोरों ने श्याम का सौ रुपया चुरा लिया =

चौराः श्यामं शतं रूप्यकाणि अमुष्णन्।

इर्दगिर्द (आसपास) या सब ओर का 'अभितः' 'परितः' या 'सर्वतः' से अनुवाद करने पर सम्बन्धका० विभक्ति के लिये 'द्वितीया' आती है, परन्तु 'समन्तात्' से करने पर 'षष्ठी' ही आती है। जैसे—

हमारे गांव के इर्दगिर्द (आसपास, सब ओर) बागों में आम फूले हुए हैं =

अस्माकम् ग्रामम् अभितः (परितः, सर्वतः परन्तु ग्रामस्य समन्तात्) उद्यानेषु आम्राः पुष्पिताः (विकसिताः) सन्ति।

'दोनों ओर' का 'उभयतः' से अनुवाद करने पर 'द्वितीया' आती है परन्तु 'उभयोः पार्श्वयोः = दिशोः' से करने पर 'षष्ठी'। जैसे—

मेरे घर के दोनों ओर गलियां हैं =

मम गृहम् उभयतः (गृहस्य उभयोः पार्श्वयोः) प्रतोल्यौ स्तः।

'बिना (बगैर, सिवा, अलावा)' का अन्तरा, अन्तरेण, विना या पृथक् से अनुवाद करने पर इनके योग से आनेवाली

सम्बन्धकां० विभक्ति के लिये 'द्वितीया' आती है। 'विना और पृथक्' के योग में 'तृतीया' तथा 'पञ्चमी' भी आती है। ('ऋते' से अनुवाद करने पर पञ्चमी आती है)। जैसे—

सीता को राम के बिना (बगैर, सिवा) सुख कहां=

सीतायाः रामम् विना (अन्तरा, अन्तरेण, पृथक्) क्व सुखम्।

सीतायाः रामेण (रामात्) विना (पृथक्) क्व सुखम्)।

सीताया रामात् ऋते क्व सुखम्।

तुम्हारे विना (बगैर, अलावा, अतिरिक्त) कौन वहां जा सकता है =

त्वाम् विना (अन्तरा, अन्तरेण) = त्वत् ऋते कस्तत्र गन्तुं शक्नोति।

'बारे में (विषय में)' का 'अन्तरेण' या 'प्रति' से अनुवाद करने पर सम्बन्धका० विभक्ति के लिये 'द्वितीया' आती है, परन्तु 'विषये' से करने पर 'षष्ठी' जैसे—

इस समय वैशम्पायन मेरे बारे में (विषय में) क्या सोचता होगा =

"अस्यां वेलायां किन्नु खलु माम् अन्तरेण (मम विषये) चिन्तयति वैशम्पायनः" (कादम्बरी)

तूने एक (बात) शिव के बारे में ठीक कही =

"त्वमेकमीशं प्रति (ईशस्य विषये) साधु भाषितम्" (कुमार० ५। ८१)

'बीच में (दर्म्यान में)' का 'अन्तरा' या 'अन्तरेण' से अनुवाद करने पर 'द्वितीया' आती है परन्तु 'मध्ये' 'अन्तरे', या 'अन्तः' से करने पर 'षष्ठी'। जैसे—

पाञ्चाल देश यमुना और गङ्गा के बीच में (दर्म्यान में)

"पाञ्चालाः यमुनां त्रिपथगां चान्तरा" (बालरामायण)

(पाञ्चालाः यमुनायाः गङ्गायाश्च मध्ये) ।

गन्धमादन और माल्यवान् (पर्वतों) के बीच में (मध्य में) उत्तरकुरु देश है—"अन्तरेण गन्धमानं माल्यवन्तं चोत्तराः कुरवः।"

(गन्धमादस्य माल्यवतश्चान्तरे [अन्तः, मध्ये] उत्तरकुरवः)

'प्रति' के योग में आनेवाली सम्बन्धका० विभक्ति के लिये संस्कृत में 'द्वितीया' आती है। जैसे—

राम सीता के प्रति बोला=रामः सीतां प्रत्यभाषत ।

['ठीक (एकदम) नीचे' और 'ठीक (एकदम) ऊपर' का अनुवाद 'अधोऽधः' और 'उपर्युपरि' से (जिनसे नीचे और ऊपर के अर्थ के साथ समीपता का अर्थ बोधित होता है) करने पर 'द्वितीया' आती है और अन्य शब्दों से करने पर 'षष्ठी'। जैसे –

नये बड़े बादलों के ठीक नीचे (उनके बिल्कुल समीप नीचे)=
"नवानधोऽधो वृहतः पयोधरान्" (शिशुपालवध १ । ४)
(नवानां बृहतां मेघानां समीपाधःप्रदेशे)

पहाड़ की चोटी के ठीक ऊपर (बिल्कुल समीप ऊपर) बादल=
उपर्युपरि पर्वतशिखरं (गिरिशृङ्गं) मेघाः ।—इत्यादि ।

परन्तु जब ऊपर लिखे अनुसार 'समीपता' का अर्थ विवक्षित नहीं होता तब इनके योग में 'षष्ठी' ही आती है । जैसे--

तेज से सूर्य के समान सब के ऊपर ही ऊपर (सब से उत्कृष्ट)=
"उपर्युपरि सर्वेषामादित्य इव तेजसा" (महाभारत) ।]

नीचे लिखे तथा इनके समान अन्य वाक्यों में सम्बन्धका० विभक्ति के लिये संस्कृत में 'तृतीया' आती है —

भूतकालिक कृदन्तों 'लिखा, लिखा हुआ, दिया, दिया हुआ' के लिये आनेवाले संस्कृत के क्तप्रत्ययान्त शब्दों के योग में

'तृतीया' विभक्ति आती है *। जैसे—

राम का लिखा (लिखा हुआ) पत्र=रामेण लिखितं पत्रम् ।

राजा का दिया हुआ घोड़ा=राज्ञा दत्तो घोटकः ।

आपके किये सब कुछ हो सकता है=भवता कृतं सर्वं संभवति ।

दूध का जला छाछ भी फूंककर पीता है=

दुग्धेन दग्धस्तक्रमपि फूत्कृत्य पिबति ।

भूख का मारा क्या नहीं करता=

बुभुक्षया पीडितः किं न करोति ।—इत्यादि ।

करण के अर्थ में आनेवाली सम्बन्धका० विभक्ति के लिये 'तृतीया' आती है । जैसे—

कलम का लिखना=कलमेन (लेखन्या) लि(ले)खनम् ।

मोल का लिया=मूल्येन गृहीतः ।—इत्यादि ।

समानार्थक समान, सम, सदृश, तुल्य, बराबर आदि के योग में सम्बन्धका० विभक्ति के लिये संस्कृत में 'तृतीया' आती है और 'षष्ठी' भी । जैसे—

कर्ण के समान (बराबर) दानी कौन है=

कर्णेन (कर्णस्य) समानः (समः, सदृशः, तुल्यः) को दाता । —इत्यादि ।

इसी प्रकार नीचे लिखे तथा इनके समान अन्य वाक्यों में

---

* परन्तु वर्तमानार्थक तथा भावार्थक क्तप्रत्ययान्त शब्दों के योग में 'षष्ठी' ही आती है । जैसे—

मैं ही राजा का (राजा द्वारा) माना हुआ हूं="अहमेव मतो महीपतेः" (रघु०)

लड़के का हंसना, मोर का नाचना=

बालस्य हसितम् (हासः), मयूरस्य नृत्तम् (नर्तनम्) इत्यादि ।

आनेवाली सम्बन्धका० विभक्ति के लिये भी संस्कृत में 'तृतीया' ही आती है। जैसे—

आंख का अंधा = अक्ष्णा अन्धः। जाति का ब्राह्मण = जात्या ब्राह्मणः।
स्वभाव का रूखा = स्वभावेन (प्रकृत्या, निसर्गेण) रूक्षः।
ज़बान का मीठा = वाचा मधुरः।
शरीर का हल्का = शरीरेण लघुः।
जन्म का दरिद्री = जन्मना दरिद्रः*।
सीता राम के साथ गई =
सीता रामेण सह (साकम्, सार्धम्, समम्) † गता।

नीचे लिखे तथा इनके समान अन्य वाक्यों में सम्बन्धका० विभक्ति के लिए 'पञ्चमी' विभक्ति आती है। जैसे—

लाहौर का चला हुआ = लवपुरात् प्रस्थितः।
सवेरे का चला हुआ रात को घर पहुंचा =
प्रातःकालात् (प्रत्यूषात्) प्रचलितः (प्रस्थितः) रात्रौ गृहं प्राप्तः।
सवेरे का यहीं बैठा हूं = प्रातःकालात् + अत्रैव उपविष्टोऽस्मि।
उस दिन के बाद (पीछे, उपरान्त) मैंने कभी उसे नहीं देखा =

---

* 'आ जन्मनः दरिद्रः' इस प्रकार आरम्भार्थक 'आ' लगाकर उसके योग में 'पञ्चमी' भी रक्खी जा सकती है।

† 'साथ' के लिये 'सह' आदि के बदले यदि 'अनु' रक्खा जाए तो 'द्वितीया' आती है। जैसे—दिन सूर्य के साथ अस्त हो गया = "दिवसोऽनु मित्रमगमद्विलयम्" (शिशुपालवध) इत्यादि।

+ प्रातःकालात् = प्रातःकालमारभ्य। ल्यब्लोपे पञ्चमी। आरम्भार्थक 'आ' लगाकर 'आ प्रातःकालात् प्रचलितः...' इत्यादि भी किया जा सकता है।

तस्मात् दिनात् अनन्तरं (परम्, पश्चात्, ऊर्ध्वम्) अहं कदापि तं न अपश्यम् ।

["मैं उसके पीछे चला" इस प्रकार के वाक्यों में जहां 'पीछे' स्थानबोधक होता है वहां इसके लिये आनेवाले 'पश्चात् या पृष्ठे' के योग में 'षष्ठी' ही आती है । जैसे—अहं तस्य पश्चात् (पृष्ठे) अगच्छम् । यदि इसके लिए 'अनु' रक्खा जाए तो 'द्वितीया' आती है । जैसे—अहं तम् अनु अगच्छम्=अन्वगच्छम् । इत्यादि ।

'खिलाफ, विपरीत, विरुद्ध, प्रतिकूल, प्रतीप'—इनके योग में आनेवाली सम्बन्धका० विभक्ति के लिये संस्कृत में यथायोग्य 'पञ्चमी' और 'षष्ठी' दोनों आती हैं । जैसे—

तुम्हारी राय मेरी राय के खिलाफ (विरुद्ध, विपरीत) है=
तव मतं मम मतात् विपरीतम् (विरुद्धम्, प्रतिकूलम्, प्रतीपम्)।
श्याम के खिलाफ कुछ न कहो=श्यामस्य प्रतिकूलं (विरुद्धं) किमपि मा ब्रूहि । इत्यादि ।]

'घर का सिला कुर्ता, गोद का खिलाया बच्चा, हवाई जहाज़ का बैठना, खेत का उपजा हुआ'-इत्यादि में आनेवाली सम्बन्धका० विभक्ति के लिये संस्कृत में 'सप्तमी' आती है । जैसे—

श्याम को घर का सिला कुर्ता पसन्द नहीं आता=
श्यामाय गृहे स्यूतं कञ्चुकं न रोचते ।

गोद का खिलाया बच्चा लायक निकले तो किसे खुशी नहीं होती=क्रोडे (उत्सङ्गे) लालितो वत्सः (बालः) योग्यः संपद्येत चेत् को न हृष्यति (हृष्येत्) ।

हवाई जहाज़ का बैठना खतरे से खाली नहीं=
वायु (व्योम) याने उपवेशनं न भयेन शून्यम् (भीतेरपेतम्) ।

अपने खेत के उपजे हुए तिनके में भी ममता होजाती है = आत्मीये (स्वीये) क्षेत्रे (आत्मक्षेत्रे, स्वक्षेत्रे) उत्पन्ने तृणेऽपि ममता जायते ।—इत्यादि ।

कुछ विशेष सम्बन्धकारक के प्रयोगों का अनुवाद नीचे लिखे अनुसार करना चाहिये—

(क) 'सौ पन्ने की पुस्तक, तीन खंड का मकान, पांच गज की धोती' इत्यादि में यथायोग्य केवल बहुव्रीहि समास से, 'आत्मक' या 'परिमाण' शब्दान्त बहुव्रीहि समास से अथवा 'मित' शब्दान्त तत्पुरुष समास से। जैसे—

शतपर्णं = शतपर्णात्मकम् (पर्णशतात्मकम्) = शतपर्ण (पर्णशत) परिमाणम् = शतपर्ण (पर्णशत) मितं पुस्तकम् ।

त्रिखण्डं (त्रिभूमिकं) = त्रिखण्डात्मकं = त्रिखण्डपरिमाणं = त्रिखण्डमितं भवनम् ।

पञ्चगजा = पञ्चगजात्मिका = पञ्चगजपरिमाणा = पञ्चगजमिता शाटिका । इसी प्रकार—

दो हाथ की लाठी = द्विहस्ता = द्विहस्तपरिमाणा = द्विहस्तमिता यष्टिः ।

कम लम्बाई की दीवार=अल्पदैर्घ्या (बहुव्रीहि) भित्तिः । इत्यादि ।

(ख) 'कालिदास का रघुवंश, रविवर्मा के चित्र' इत्यादि में 'षष्ठी' विभक्ति के अतिरिक्त, यथायोग्य तद्धित 'छ (ईय)' प्रत्यय से या कृत, निर्मित आदि क्तान्तशब्दान्त तत्पुरुष समास से। जैसे—कालिदासस्य = कालिदासीयं = कालिदासकृतं रघुवंशम् ।

रविवर्मणः=रविवर्मनिर्मितानि चित्राणि ।

पाणिनि की अष्टाध्यायी=पाणिनेः=पाणिनीया=पाणिनिप्रोक्ता अष्टाध्यायी ।

इसी प्रकार 'सोने का गहना, मट्टी का घड़ा, चांदी का रथ' इत्यादि में षष्ठी के अतिरिक्त यथायोग्य 'मयट्' और 'अण्' तद्धित प्रत्ययों से। जैसे—

सुवर्णस्य = सुवर्णमयम् = सौवर्णम् (अण्) भूषणम्। मृत्तिकायाः (मृदः) मृत्तिकामयः (मृन्मयः) घटः। रजतस्य = रजतमयः = राजतः (अण्) रथः।—इत्यादि।

(ग) 'भरोसे का नौकर, काम की चीज़' इत्यादि में अर्थानुसार 'विश्वासपात्रम् = विश्वसनीयः (विश्वासयोग्यः) सेवकः ('विश्वासस्य सेवकः' नहीं), 'कार्य (प्रयोजन) साधकं = प्रयोजनीयम् = उपयोगि वस्तु ('कार्यस्य वस्तु' नहीं)' इत्यादि।

(घ) 'घोड़े की गाड़ी, बैल का छकड़ा, गधे का बोझ' इत्यादि में 'वाह्य' शब्द से (जो तत्पुरुष समास से समस्त हो जाता है) अथवा मध्यमपदलोपी समास से 'वाह्य' शब्द का लोप करके। जैसे - अश्ववाह्यं यानम् = अश्वयानम्। वृषभवाह्यं शकटम् = वृषभशकटम्। गर्दभवाह्यो भारः।

(ङ) 'अस्सी वर्ष का बूढ़ा, छः महीने का बच्चा, महीने की तनख़ाह, सौ वर्ष का इतिहास, आज का माखन' इत्यादि में प्रायः 'षष्ठी' के बदले यथायोग्य छ (ईय) आदि तद्धित प्रत्ययों से ही। जैसे—अशीतिवर्षीयो वृद्धः, षाण्मासिकः शिशुः, मासिकं (मासस्य) वेतनम्, शतवार्षिकः (वार्षशतिकः) इतिहासः, अद्यतनं नवनीतम्।—इत्यादि।

(च, लाहौर का शहर, आम का पेड़, जेठ का महीना, दमे की बीमारी, चिन्ता का चक्कर, जय की ध्वनि' इत्यादि में कर्मधारय-समास से (या कभी २ बिना समास के समानाधिकरण शब्दों से) जैसे-लवपुरनगरम्। आम्रवृक्षः। ज्येष्ठमासः (ज्येष्ठो मासः)। श्वासरोगः। चिन्ताचक्रम्। जयध्वनिः।

परन्तु 'पकड़ो, मारो की आवाज़' इत्यादि में सम्बन्धका० विभक्ति के लिये 'इति' रखना चाहिये। जैसे—गृह्णीत ताडयत इति शब्दः। इत्यादि।

['कुनबा का कुनबा (या सारा का सारा कुनबा), गाँव का गाँव (या सारा का सारा गाँव), खेत का खेत (या सारा का सारा खेत)' इत्यादि में सम्बन्ध का० विभक्ति का अनुवाद समस्त, सर्व, सकल आदि समस्तार्थक शब्दों से करना चाहिये (शब्द की पुनरुक्ति नहीं करनी चाहिये)। जैसे—समस्तः (सर्वः) कुटुम्बः, समस्तः (सकलः) ग्रामः, सर्वं (संपूर्णं) क्षेत्रम्। इत्यादि।

'मूर्ख का मूर्ख, दूध का दूध, खड़े का खड़ा' इत्यादि के अनुवाद में (पुनरुक्ति न करके) 'एव' रखना चाहिये। जैसे—वह तो आज भी मूर्ख का मूर्ख है = स तु इदानीमपि **मूर्ख एव** अस्ति। यह तो दूध का दूध है, दही नहीं जमा = इदन्तु **दुग्धमेवा**ऽस्ति, दधि न जातम्। मकान गिर गया मगर खम्भे खड़े के खड़े बने हैं = गृहं पतितम् (ध्वस्तम्) परं स्तम्भाः **स्थिता एव** सन्ति।—इत्यादि।

'ऐतवार के ऐतवार, दोपहर के दोपहर, हफ्ते के हफ्ते, दीवाली के दीवाली' इत्यादि का अनुवाद (पुनरुक्ति त्याग कर) 'प्रति' पूर्वक अव्ययीभाव समास से करना चाहिये। जैसे—प्रत्यादित्यवासरम्। प्रतिमध्याह्नम्। प्रतिसप्ताहम्। प्रतिदीपाबलि।—इत्यादि।

'विक्रम **नाम** का राजा' इत्यादि का अनुवाद इस प्रकार किया जाता है—नाम्ना विक्रमो राजा = विक्रमो नाम राजा = विक्रमनामा राजा।]

अधिकरण-कारक।

रहना, सोना और बैठना क्रियाओं के योग में आने वाली अधिकरणका० विभक्ति के लिये इन क्रियाओं का क्रम से 'अधि' 'आ' पूर्वक 'वस्' 'अधि' पूर्वक 'शी' और 'अधि' पूर्वक

'स्था' या 'अधि' पूर्वक 'आस्' धातुओं से अनुवाद करने पर 'द्वितीया' विभक्ति आती है। जैसे—

लाहौर में रहता है = लवपुरम् अधिवसति (लवपुरे वसति)।

मैं अर्थपर होकर (धन के लिये) दुनिया में नहीं रहना चाहता = "नाहमर्थपरो देवि लोकमावस्तुमुत्सहे" (रामा० २।१९।२०)

पलंग पर सोता है = पर्यङ्कम् अधिशेते।

शिला पर बैठता है = शिलाम् अधितिष्ठति (अध्यास्ते)। इत्यादि।

नीचे लिखे तथा इनके समान अन्य वाक्यों में अधिकरण-कारक विभक्ति के लिये संस्कृत में 'तृतीया' विभक्ति आती है। जैसे—

यह पुस्तक कितने में मिलती है =
इदं पुस्तकं कियता (मूल्येन) लभ्यते।

श्याम ने पचास रुपये में गाय खरीदी =
श्यामेन पञ्चाशता रूप्यकैः गौः क्रीता।

यह मकान कितने किराये पर लिया =
इदं भवनं कियता भाटकेन गृहीतम्।

क्रोध में शरीर घटता है =
क्रोधेन * शरीरं ह्रसति (अपक्षीयते)।

ऐसा करो जिसमें तकलीफ दूर हो =
एवं (तथा) कुरुध्वं येन कष्टं नश्येत्।

मैं एक घण्टे में घर पहुंचूंगा =
अहम् एकया घण्टया गृहं प्राप्स्यामि।

वह अमरीका से चार साल में वापस आया =
सः अमरीकायाः चतुर्भिर्वर्षैः प्रत्यागतः।

---

* कारण का अर्थ होने से यहां 'पञ्चमी' भी आसकती है। जैसे— क्रोधात् शरीरं ह्रसति।

[जहां इष्ट कार्य में सफलता (फलप्राप्ति) सूचित की जाती है वहां देश (स्थान)-काल-वाचक शब्दों से 'तृतीया' होती है अन्यत्र 'द्वितीया'। जैसे—एक कोस में गीता के १० अध्याय पढ़ लिये = एकेन क्रोशेन गीतायाः दश अध्याया अधीताः (पठिताः)। एक दिन में आधी पुस्तक पढ़ गया = एकेन दिनेन अर्धं पुस्तकस्य (पुस्तकार्धं) पठितवान्। दिनभर (सारा दिन) मेहनत की, पैसा एक भी न मिला = सर्वं दिनं परिश्रान्तम्, पण एकोऽपि न प्राप्तः।—इत्यादि।]

निर्धारण में अधिकरणका० के लिये विकल्प से 'षष्ठी' विभक्ति आती है। जैसे—पुरुषों में श्रेष्ठ = पुरुषाणां (पुरुषेषु वा) श्रेष्ठः। सब लड़कों में समझदार = सर्वेषु बालकेषु (सर्वेषां बालकानां) बुद्धिमत्तः।—इत्यादि।

अधिकरणकारक के साधारण प्रयोग—

नीम में कड़वाहट = निम्बे काटवम्।

रास्ते में मिला = मार्गे मिलितः।

ज़मीन में समागया = भूमौ विलीनः।

घड़े में पानी = घटे पानीयम्।

आप में अनेकगुण हैं = भवति अनेके गुणाः सन्ति।

वह सुख में है = स सुखे वर्तते।

अनार में बीज = दाडिमे बीजानि।

पैर में जूता = पादे उपानत्।

हाथ में कड़ा = हस्ते कङ्कणः।

गले में माला कण्ठे माला।

कमर में करधनी = कटौ काञ्ची।

तुझ पर विश्वास है—त्वयि विश्वासः

महल पर चढ़ा = भवने* आरूढ़:

पांव पड़ कर मनाओ = पादयोः पतित्वा प्रसादय।

किसी दूसरे समय आना = कस्मिंश्चिदन्यस्मिन् समये आगन्तव्यम्।

मेरा घर सड़क पर है = मम गृहं राजमार्गे वर्तते।

भिखारी द्वार पर खड़ा है = भिक्षुको द्वारे (द्वारि) तिष्ठति।

समय पर आना = समये (यथासमयम्) आगन्तव्यम्।

एक कोस के अन्तर पर = एकक्रोशान्तरे।

मुझ में तुझ में कोई भेद नहीं = मयि त्वयि च न कोपि भेदः (विशेषः)।

कटे पर नोन = क्षते क्षारम्।

हमारी कोठी गङ्गा पर है = अस्मद्भवनं गङ्गायां (गङ्गातटे) विद्यते।

सिपाही फाटक पर रहता है = रक्षापुरुषो गोपुरे (वहिर्द्वारे) निवसति। इत्यादि।

["नौकर काम में है' इस प्रकार के अनुवाद में सप्तम्यन्त के वाद यथायोग्य 'लग्न, व्यापृत' आदि शब्द रखने चाहिये। जैसे—किङ्करः कार्ये लग्नः (व्यापृतः) वर्तते। इत्यादि।

'भाई भाई में प्रीति' इत्यादि का अनुवाद 'भ्रात्रोः परस्परं (मिथः) प्रीतिः' इस प्रकार होना चाहिए 'भ्रातरि भ्रातरि प्रीतिः' इस प्रकारे नहीं।

"गाड़ी बीस मिनट पर आएगी है" इत्यादि में अधिकरणका० विभक्ति (पर)के लिए 'अनन्तरम् या उत्तरम्'को शब्दके साथ समस्त करना चाहिए। जैसे—

वाष्पशकटी विंशति कलानन्तरम् (विंशतिकलोत्तरम्) आगमिष्यति (= वाष्पशकटी विंशतिकलासु गतासु आगमिष्यति)। दो वजकर पन्द्रह

---

* आ + रुह्' धातु के योग में 'द्वितीया' भी आती है। जैसे—भवनम् आरूढः।

मिनट पर यहां से चलेंगे = द्विनाडात् परतः पञ्चदशकलानन्तरम् (पञ्चदशकलासु गतासु) इतः प्रस्थास्यामहे । परन्तु "यह पत्र बीस मिनट में लिख लूंगा" इस प्रकार के वाक्यों में अधिकरणका० विभक्ति 'में' के लिए 'अभ्यन्तरे' आदि को शब्द के साथ समस्त करना चाहिये । जैसे—

इदं पत्रं विंशतिकलाऽभ्यन्तरे लेखिष्यामि ।

"चिट्ठियों पर चिट्ठियां आती हैं । सिपाही पर सिपाही मरते हैं" इस प्रकार के वाक्यों में शब्द की द्विरुक्ति और अधिकरणका० विभक्ति, 'पर' सातत्य या नैरन्तर्य के अर्थ में हैं, इसलिए इनके अनुवाद में 'सततम्, अतिरतम्. निरन्तरम्' आदि शब्द रखने चाहिए । जैसे—

निरन्तरम् (अविरतम्) पत्राणि आगच्छन्ति ।

निरन्तरम् (अविरतम्) सैनिका म्रियन्ते ।

क़र्ज़ पर क़र्ज़ चढ़ता जा रहा है =

सततम् (निरन्तरम्, अविरतम्) ऋणम् आक्रामति (उपचीयते) ।

"दिन पर दिन गर्मी बढ़ रही है" इत्यादि में 'दिन पर दिन' आदि का अनुवाद 'प्रति' लगाकर अव्ययीभाव समास से (प्रतिदिनम्) या सप्तमी विभक्ति में शब्द की द्विरुक्ति से (दिनेदिने)करना चाहिए । जैसे—

प्रतिदिनं (दिने दिने) घर्मो वर्धते । इत्यादि ।

"मेरे जाने पर वह आगया । पत्र आने पर इन्तज़ाम हो जायगा" इत्यादि में 'जाने पर, आने पर' आदि अधिकरणकारक में आने वाली भाववाचक संज्ञाओं का अनुवाद क्तप्रत्ययान्त और कहीं २ क्तवतुप्रत्ययान्त शब्दों से भी उन्हें और उनके सम्बन्धी शब्द को 'सप्तमी' विभक्ति में रखकर किया जाता है । जैसे—

मयि गते (गतवति) सः आगमिष्यति ।

पत्रे आगते (आगतवति) प्रबन्धो भविष्यति ।

वैसा करने पर (जब वैसा किया गया तो) सब लोग प्रसन्न होगये =

तथा कृते (अनुष्ठिते) सर्वे जनाः प्रसन्ना जाताः ।

फलों के पकने पर (जब फल पकते हैं तब) तोते आजाते हैं=

फलेषु पक्केषु शुकाः आगच्छन्ति ।

दीपक जलने पर अंधेरा नष्ट हो जाता है=

"दीपे प्रज्वलिते प्रणश्यति तमः" (भर्तृहरि)

"मेरे कई बार समझाने पर भी वह बुरी आदत नहीं छोड़ता" इस प्रकार के वाक्यों का ऊपर लिखे अनुसार "मयि बहुशः बोधितवत्यपि स दुःस्वभावं न मुञ्चति (त्यजति, जहाति)" इस प्रकार अनुवाद करने की अपेक्षा "मया बोधितोऽपि दुःस्वभावं न त्यजति" इस प्रकार करना चाहिये । इसी प्रकार—

मेरे मना करने पर भी वह घर को चला गया =

मया प्रतिषिद्धोऽपि स गृहं गतः ।

मोहन के बुलाने पर भी श्याम न आया =

मोहनेन आहूतोऽपि श्यामो नाऽऽयातः ।—इत्यादि

कहीं २ शतृशानच्प्रत्ययान्त शब्दों से भी उन्हें और उनके विशेष्य को 'सप्तमी' में रखकर अनुवाद किया जाता है । जैसे—

आपके वहां होने पर मुझे कोई खतरा नहीं=

भवति तत्र सति (विद्यमाने) मम न कापि शङ्का (न किमपि भयम्) ।

जिसके जीने पर (जीते रहने पर) बहुत (लोग) जीते हैं वही यहां जिये="यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहवः सोऽत्र जीवतु" (पञ्चतन्त्र १)

कभी २ भाववाचक संज्ञा के बाद यथायोग्य उसके साथ समस्त या असमस्त अनन्तरम्, ऊर्ध्वम् आदि लगाये जाते हैं । जैसे—

भाई के आने पर जा सकता हूं =

भ्रातुरागमनानन्तरम् (भ्रात्रागमनानन्तरम्, भ्रातुरागमनादूर्ध्वम्, भ्रातरि आगते) गन्तुं शक्नोमि ।

मेरे जाने पर जैसी इच्छा होगी करना =

मम गमनानन्तरम् (मद्गमनादूर्ध्वम्, मयि गते) यथेच्छं कर्तव्यम् । इत्यादि ।

कभी २ क्त्वाप्रत्ययान्त क्रिया से भी अनुवाद किया जाता है । जैसे—

उसे पूछने पर निश्चय करूंगा =

तं पृष्ट्वा (तस्मिन् पृष्टे) निश्चयं करिष्यामि (निश्चेष्यामि) ।

यत्न करने पर फल पाओगे =

यत्नं कृत्वा (यत्ने कृते) फलं प्राप्स्यसि ।

घर जाने पर तमाशा देखोगे =

गृहे गत्वा (गृहे गतः) कौतुकं द्रक्ष्यसि ।

इस प्रकारके कई प्रयोगोंका अनुवाद ऊपर लिखे दोनों तीनों प्रकारों से भी किया जा सकता है और इसके अतिरिक्त कई प्रयोगों के अनुवाद में क्तान्तशब्दयुक्तबहुव्रीहि समास का भी प्रयोग होता है । जैसे—

गरीबों का गिड़गिड़ाना सुनने पर भी उसका मन न पसीजा=

दीनानां करुणावचनानि श्रुत्वाऽपि (श्रुतवतोऽपि, करुणवचनेषु श्रुतेष्वपि) तस्य मनो नाऽद्रवत् (न दयार्द्रमभवत्) ।

अर्जुन के शस्त्र त्यागने पर कृष्ण उसे समझाने लगे=

अर्जुनेन शस्त्रेषु त्यक्तेषु (अर्जुने शस्त्राणि त्यक्तवति, त्यक्तशस्त्रे [बहुव्री०]) कृष्णस्तं प्रबोधयितुम् (उपदेष्टुम्) प्रवृत्तः ।

परीक्षा पास करने पर मैं युरोप जाऊंगा=

परीक्षायाम् उत्तीर्णायाम् (परीक्षाम् उत्तीर्णवान्, उत्तीर्य, उत्तीर्णपरीक्षः [बहुव्री०]) अहं युरोपं गमिष्यामि ।—इत्यादि ।

"अच्छे लड़के अपने बड़ों की चाल पर चलते हैं । लड़के मां बाप के स्वभाव पर होते हैं । अन्त में वह अपनी जाति पर गया" इस प्रकार के वाक्यों के अनुवाद में धातु के पहले 'अनु' उपसर्ग लगाया जाता है, जिसके योग में अधिकरण का० विभक्ति के लिये 'द्वितीया विभक्ति रक्खी जाती है । जैसे—

सन्तो बालकाः स्वगुरूणां पद्धतिम् अनुसरन्ति । बालाः माता-पित्रोः (पित्रोः) स्वभावम् अनुवर्तन्ते । अन्ते स स्वजातिम् अनुगतः ।

तुम अपनी बात पर नहीं रहते हो=

त्वं स्ववचनं नाऽनुरुध्यसे (न पालयसि) । इत्यादि ।

शुद्धिपत्रम्

पृष्ठ	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम
१६	७	प्रणष्टः	नष्टः
१८	१२	उपतिष्ठन्तु	उपतिष्ठन्ताम्
२४	१०	तिरहुतनगरम्	तिरहुतप्रदेशः
,,	,,	इत्याख्यं (नामकं, नगरम्	इत्याख्यः प्रदेशः
२५	६	वाल्हिकांश्चां	वाल्हिकांश्च ॰
२६	१९	विक्रमस्य	विक्रमेण
,,	,,	चन्द्रगुप्तस्य	चन्द्रगुप्तेन
,,	२०	॰वर्धनस्य	वर्धनेन
,,	,,	'कारणात्'	इति न पठनीयम
२८	१	॰गान्धीच॰	॰गान्धिच॰
३१	४	कलकत्तः	कलकत्ताः
,,	५	कलकत्ति	कलकत्तो
३४	७	नहरू	नेहरू
४०	६	हराविलास	हरविलास
४६	१	भरापन	भारीपन
४९	१४	काटवस्य (कटुतायाः)	काटवेन (कटुतया)
,,	,,	'कारणात्'	इति न पठनीयम्
,,	२०	ताण्डुला	तण्डुला
५९	१३	झटति	झटिति
६०	२	॰मूल्यतम्ः	॰मूल्यतमः
६५	४	[illegible]	[illegible]

पृष्ठे	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
८१	१५	अप	आप
८८	४	दानानां	दीनानां
८९	१	शैकपीयरः	शैक्सपीयरः
९७	२०	समर्थ्य	सामर्थ्य
१०२	६	मारणेन हत्यया	'हत्यया' इति न पठनीयम्
१०८	१३	अहमिव (मादृशः	'अहमिव' इति न पठनीयम्
११०	१८	०विशेयण	विशेषण
१११	२	काम नहीं	कम नहीं
११५	४	ग्रसति	ग्रसते
,,	११	जानाः	जनाः
,,	१५	निर्मितातित	निर्मितानि
११९	१६	एकोनपञ्चारिंशत्	एकोनपञ्चाशत्
१२६	१६	तण्जुलानाम्	तण्डुलानाम्
,,	१९	वाणिज्यायां	वणिज्यायां
१२७	१३	उपा	उप
,,	१७	० सहस्राणि	सहस्राणि
१३१	२४	छयसीवीं	छयासीवीं
१३९	२१	वाञ्छति	वाञ्छन्ति
१४२	१७	४.	६.
१४४	१५	पसा	पैसा
१४६	२१	दसगज०	दशगज०
१४७	२	चिड़वे	चिवड़े
१५३	२	मथुराः	माथुराः

पृष्ठ	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
१५३	१९	या अतिरिच्यते	या 'बढ़कर' का अतिरिच्यते
,,	२०	(वि+शिष्) क्रियाओं से (वि+शिष्) अतिशेते (अति+शी), अतिक्राम (म्य) ति (अति+क्रम्) क्रियाओं से और 'उतर कर' का 'हीयते' आदि क्रियाओं से अर्थानुसार कालों में।	
१५३	२३	'मोहनाच्च न्यूनः अस्ति' इत्यस्मादनन्तरम् 'रामः पठने श्यामात् अतिरिच्यते (विशिष्यते)= श्यामम् अतिशेते (अतिक्रामति) मोहनाच्च हीयते' इति अधिकं पठनीयम्।	
१५४	२१	गुणवचस्य	गुणवचनस्य
१५५	११	०रक्ताः	०रक्तः
,,	२०	स्वाविकी	स्वाभाविकी
१५६	१८	अथ	अर्थ
१५७	४	निकलकर	निकालकर
,,	२३	बुद्धिमतितम	बुद्धिमतितमा,
१६४	६	हश्चिरन्द्रो०	हरिश्चन्द्रो०
१७५	८	०तुलसीदासेन	०तुलसिदासेन
,,	,,	०तुलसीदासः	०तुलसिदासः
,,	२३	०तुलसीदासेन	०तुलसिदासेन
१७६	३	(यद्वै)	(यदैव)
१८६	१६	उदाहरण से	उदाहरणों से
,,	२१	लिङ् का	लृङ् का
१८७	१२	०तिपति	०तिपत्ति
१९६	२१	शतृप्रत्ययान्त	शतृशानच्प्रत्ययान्त

पृ०	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
१९७	९	प्रर्याप्त	पर्याप्त
२०४	३	अद्य:	अद्य
२०८	११	पुंत्र	पुत्रं
,,	१८	[तुहेतु०	[हेतुहेतु०
२१३	१९	गमिष्यति	गमिष्यसि
२२४	१३	सयुक्त०	संयुक्त
,,	१८	कार्य	कार्य
२३२	२२	म:	दास्याम:
२३४	३	श्वा । सुमू०	श्वा सुमू०
,,	१४	आसन्नगमना	आसन्नागमना
,,	१६	भोजन इस प्रकार	इस प्रकार ('भोजन' इति न पठनीयम्)
,,	२१	०भवन्ति । (भस्म०	०भवन्ति (भस्म०
२३९	५	प्रधान कर्म	प्रयोज्य कर्म
,,	१०	प्रधान अथवा गौण	प्रयोज्य अथवा साधारण
२४२	८	आदामी	आदमी
२४९	६	लाका:	लोका:
,,	१७	बहु प्रभूतम्	बहु (प्रभूतम्)
२५३	२३	।दर्खाइ	दिखाई
२५६	२३	घर क	घर के
२५९	१	केवलम् अपि	केवलम्-अपि
२६१	१५	नही	नहीं
,,	१८	रक्खो	ठहराओ
२६२	८	प्रस्तनि०	प्रस्तरनि०

पृ०	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
२६४	२०	०ज्ञानन्त	०ज्ञानन्ति
२७३	६	हैं उन	हैं उन)
२७४	२०	इच्छाथक	इच्छार्थक
२८८	२४	दस	दश
२८९	११	किञ्चित	किञ्चित्
,,	,,		'(नातिदूरे)' इति न पठनीयम्
२९१	१	म	मैं
,,	१४	दिखाई	दिखाया
२९२	२	वृत्तं	वृत्तम्
,,	२०	'जैसे—' इत्यस्मादनन्तरम् 'उसने राम से सारा वृत्तान्त कहा' इति पठनीयम ।	
२९३	५	प्रतिकियाम्	प्रतिक्रियाम्
,,	८	अर्थय्	'प्र + अर्थय्
,,	१८	ददा त	ददाति
,,	२१	अक्षिभ्गां	अक्षिभ्यां
२९४	३	स्वल्पके:	अयं स्वल्पके०
,,	२६	स्थित	स्थिता
२९५	१७	द्राक्ष्यते	द्रक्ष्यते
,,	२१	दिया)	(दिया)
२९६	५	देहसंज्ञापि	देहस्यापि संज्ञा
,,	१३	साहता	सोहता
२९९	६	प्रमाण	प्रणाम
३०३	२	पापात् घृणां···०प्सन्ते	पापात् जुगुप्सन्ते (पापे घृणां कुर्वन्ति)

पृ०	पङ्क्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
३०४	३	गोकल से…गोकलात्	गोकुल से…गोकुलात्
,,	१३	गृहात्	गृहाच्च
,,	१५	सभीपेन	समीपेन
३०६	२०	त्वमैक०	त्वयैक०
३०७	४	गन्धमादस्य	गन्धमादनस्य
३११	४	कुछ	कुछ-एक
३१२	७	भरोस	भरोसे
३१५	११	बुद्धिमत्तः	बुद्धिमत्तमः
३१६	१	आरूढ़ः	आरूढः
,,	१४	वहिद्वारे	वहिर्द्वारे
,,	२२	साय	साथ
३१७	९	अतिरतम्	अविरतम्
३१८	८	बोधितोऽति	बोधितोऽपि

———